ग्रन्थालय वर्गीकरण

डॉ. जी. डी. भार्गव

मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

ग्रन्थालय वर्गीकरण
(सिद्धान्त एवं प्रयोग)

Library Classification
(THEORY AND PRACTICE)

पाँचवाँ संशोधित संस्करण

डॉ० जी० डी० भार्गव
एम० ए०, पी-एच० डी०, एम० लिब० एस-सी०
अध्यक्ष, ग्रन्थालय-विज्ञान विभाग
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म० प्र०)

'वर्ग-निर्माण का ज्ञान प्राप्त करना स्वयं में एक शिक्षा है'
TO LEARN TO CLASSIFY IS IN ITSELF AN EDUCATION.
—Alexander Bain



मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

ग्र न्था ल य व र्गी क र ण
LIBRARY CLASSIFICATION

प्रकाशक :
मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,
भोपाल

प्रादेशिक भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रन्थों और साहित्य के लिए भारत सरकार के शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय (संस्कृति विभाग) की केन्द्र प्रवर्तित योजना के अन्तर्गत मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल द्वारा प्रकाशित ।

प्रथम संस्करण : 1971
द्वितीय संस्करण : 1979
तृतीय संस्करण : 1981
चतुर्थ संस्करण : 1984
पाँचवाँ संस्करण : 1988

मूल्य : पच्चीस रुपये

मुद्रक : देश सेवा प्रेस, 10 सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद-211 003

ग्र० व०/पाँ० सं०/3000/पु० वि०/म० प्र० हि० ग्र० अ०/88

प्रथम संस्करण की प्रस्तावना

गत पचास वर्षों के भीतर ज्ञान के क्षेत्र में आशातीत प्रगति हुई है। न जाने कितनी नयी बातें प्रकाश में आयीं, कितने सिद्धान्तों ने नया रूप ग्रहण किया, कितनी मान्यताएँ खण्डित हुईं और कितनी इस बीच प्रतिष्ठापित हुई हैं। उद्योगों एवं तकनीक के विकास के साथ देशों के बीच की दीवारें टूट गयी हैं और एक देश के ज्ञान को उन्मुक्त रूप से दूसरे देश ने आत्मसात् कर लिया है। भाषाओं के बीच अन्तर कम हुआ है और अब शायद ही कोई ज्ञान का अंश किसी देश-विशेष की अपनी निजी सम्पत्ति रह गया हो। स्थूल से सूक्ष्म की ओर बढ़ते जाने का परिणाम यह हुआ है कि एक ही विषय से शाखाओं के समान अनेक नये विषय निकले हैं। विश्वविद्यालयों में अध्ययन के विषयों की संख्या पहले से कई गुनी हो गयी है। प्रतिदिन होने वाले अनुसन्धानों ने मनुष्य के चिन्तन पर बोझ डाल दिया है। साथ ही बड़ी-बड़ी मशीनों के निर्माण ने पुस्तकों की संख्या में अद्भुत वृद्धि कर दी है और उनके सहारे किसी भी ज्ञान के विषय को विश्व के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचाया जाने लगा है।

स्वाभाविक था कि इस सब का प्रभाव ज्ञान के प्रसार पर पड़ता। पुस्तकों के पाँच-पाँच लाख संस्करण एक सप्ताह के भीतर समाप्त हो जाते हैं। ज्ञान को संचित कर रखने की लालसा भी मनुष्य में कुछ कम नहीं है। इसलिए पढ़ने का अवसर हो या न हो, वह उपयुक्त समय के लिए ग्रन्थ एकत्र कर रखना चाहता है। निजी पुस्तकालयों की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। सार्वजनिक पुस्तकालयों का तो कहना ही क्या! स्कूलों, कालेजों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय इतने बड़े हैं कि उनकी व्यवस्था समस्या बन गयी है। उचित ही था कि इसके लिए कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया जाता, क्योंकि विश्व-भर की भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान को व्यवस्थित कर सुनियोजित ढंग से पाठक तक पहुँचाना कोई सामान्य बात नहीं है। पुस्तक-व्यवस्थापन, सूचीकरण, वर्गीकरण एवं प्रबन्ध आदि बातों के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है और इस प्रकार यह विषय धीरे-धीरे विज्ञान बन गया है। प्रायः सभी प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय-विज्ञान पाठ्यक्रम का अंग है।

भारत में पुस्तक आन्दोलन की गति इतनी तीव्र नहीं रही, जितनी यूरोप, अमेरिका और आगे चलकर रूस में हुई। फिर भी स्वतन्त्रता के बाद इस देश में पुस्तकालयों की बाढ़ सी आ गयी है। इसलिए अब पुस्तकालयों का दायित्व पहले की अपेक्षा कहीं अधिक हो गया है। पुस्तकालय-विज्ञान के अनेक अंगों में से 'ग्रन्थालय वर्गीकरण' एक महत्त्वपूर्ण विषय है। यह विषय अब स्वयं विज्ञान का रूप ले चुका है। वर्गीकरण की कई पद्धतियाँ विश्व में प्रचलित हैं और उसमें थोड़ी-सी भूल से अव्यवस्था

उत्पन्न हो सकती है। वर्गीकरण स्वयं में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य है और उसी परिमाण में पुस्तकालय-विज्ञान के पाठ्यक्रम में उसे एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

भारत में इस विषय के साहित्य के प्रणयन की ओर बहुत कम लोगों का ध्यान गया है। भारतीय भाषाओं में तो पुस्तकालय-विज्ञान पर और भी कम लिखा गया है। जैसे-जैसे अच्छे पुस्तकालय-प्रबन्धकों या ग्रन्थपालों की माँग बढ़ती जा रही है, उनके प्रशिक्षण के लिए अच्छे साहित्य की माँग भी उसी परिमाण में बढ़ रही है।

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ने शिक्षित जगत में, मुख्यतः विश्वविद्यालयों में, इस प्रकार के साहित्य की माँग देखकर अनेक ग्रन्थों के प्रणयन की योजना बनायी है। प्रस्तुत ग्रन्थ 'ग्रन्थालय वर्गीकरण' इसी योजना का एक अंग है। मेरे आग्रह पर विक्रम विश्वविद्यालय के पुस्तकालय-विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ० जी० डी० भार्गव ने बड़े मनोयोग से इस ग्रन्थ का प्रणयन किया है। ग्रन्थ के प्रत्येक पृष्ठ पर लेखक की विद्वत्ता एवं चिन्तन का प्रभाव स्पष्ट है। प्राध्यापक होने के नाते डॉ० भार्गव को विद्यार्थियों की आवश्यकता का अनुभव है। इसलिए यह ग्रन्थ न केवल विद्यार्थियों, अपितु देश भर में बिखरे हुए सहस्रों-सहस्रों ग्रन्थपालों और सामान्य पाठकों के लिए रुचिकर एवं उपयोगी होगा।

संचालक
मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी



पाँचवें संस्करण पर

ग्रन्थालय वर्गीकरण अकादमी का एक लोकप्रिय तथा प्रतिष्ठित प्रकाशन है। विषय के विद्यार्थियों, अध्येताओं तथा सामान्य रुचि के पाठकों ने इस पुस्तक का व्यापक रूप से स्वागत किया है। पुस्तक की उपादेयता तथा लोकप्रियता इसी बात से प्रमाणित है कि अत्यल्प अवधि में हमें इसका पाँचवाँ संस्करण प्रकाशित करना पड़ रहा है। बेशक इस उपलब्धि के लिए ग्रन्थ के लेखक डॉ० जी० डी० भार्गव साधुवाद के पात्र हैं। अकादमी उनका सम्मान भी इस करण कर चुकी है। इस अवसर पर हम उनका तथा अपने प्रिय पाठकों का अभिनंदन करते हैं।

प्रस्तुत संस्करण में यथास्थान आवश्यक संशोधन तथा परिवर्तन भी किए गये हैं। विद्यार्थियों के उपयोग की और सामग्री भी जोड़ी गई है तथा पुस्तक को अद्यतन बनाया गया है।

रमाकांत दुबे
संचालक
मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

भूमिका

ज्ञान के क्षेत्र में विकसित नवीन विषयों एवं ग्रन्थालय में पुस्तकों के वर्गीकरण के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध है। ज्ञान एवं वर्गीकरण के स्वरूप में परिवर्तन की परम्परा सदियों से प्रचलित है। एक शताब्दी में पूर्ण तथा उपयुक्त एवं उपयोगी वर्गीकरण पद्धतियाँ दूसरी शताब्दी में अनुपयुक्त हो जाती हैं। साहित्य में हुई वृद्धि एवं उसके प्रयोग में विस्तार के कारण पुस्तकों को फलकों में सुव्यवस्थित रखना ग्रन्थपालों के लिए आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण कार्य बन गया है तथा वे इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये विभिन्न उपायों की खोज में व्यस्त हैं।

आज के युग में ग्रन्थालय विज्ञान एक प्रमुख विषय माना जाता है तथा वर्गीकरण इसका महत्त्वपूर्ण अंग बन गया है। प्रचलित वर्गीकरण पद्धति से स्पष्ट है कि प्रत्येक वर्गाचार्य अपनी पद्धति को अधिकाधिक उपयुक्त एवं वैज्ञानिक बनाने का प्रयत्न कर रहा है। ज्ञान का विकास इतनी द्रुतगति से हो रहा है कि उसके वर्गीकरण के लिये तथा ज्ञान की शाखोपशाखाओं को समुचित स्थान प्रदान करने के लिये प्रत्येक वर्गाचार्य को उसमें संशोधन करना पड़ रहा है। विश्व में प्रचलित सात वर्गीकरण पद्धतियों में से दो पद्धतियाँ—दशमलव एवं द्विबिन्दु—ही इस समय अधिक प्रचलित हैं।

वर्तमान में भारत के लगभग तीस विश्वविद्यालयों में ग्रन्थालय विज्ञान विषय में प्रशिक्षण प्रदान करने की व्यवस्था है। यद्यपि इस विषय पर आंग्ल भाषा में पुस्तकें समुचित संख्या में उपलब्ध हैं तथापि हिन्दी भाषा में इनकी संख्या नगण्य है। भारत शासन ने हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी ग्रन्थ अकादमी स्थापित कर एक अभिनन्दनीय कदम उठाया है। इस अकादमी द्वारा प्रत्येक राज्य में स्नातकोत्तर एवं स्नातक स्तर पर विभिन्न विषयों के मौलिक ग्रन्थों की रचना का कार्य किया जा रहा है। प्रस्तुत ग्रन्थ मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी द्वारा ग्रन्थालय विज्ञान विषयों पर लिखे गये ग्रन्थों में से एक है। विक्रम विश्वविद्यालय के ग्रन्थालय विज्ञान विभाग में गत पन्द्रह वर्षों से स्नातक-उपाधि के विद्यार्थियों को ग्रन्थालय वर्गीकरण विषय का अध्यापन करते समय मैंने यह अनुभव किया कि विषय की दुरूहता को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों के लिये निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार इस विषय पर एक पुस्तक की अत्यन्त आवश्यकता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु अगस्त 1969 में इस पुस्तक का कार्य आरम्भ किया गया। इसमें वर्गीकरण विषय के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक दोनों ही पक्षों का समावेश किया गया है। इस दृष्टि से, भारत में इस विषय पर हिन्दी भाषा में प्रकाशित यह प्रथम पुस्तक है।

ग्रन्थालय विज्ञान के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक में सरल एवं सुगम्य भाषा का प्रयोग करने का विशेष प्रयत्न

किया गया है । केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित एवं डॉ० रंगनाथन द्वारा रचित पुस्तक 'ग्रन्थालय वर्गीकरण के मूलतत्त्व' में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली में से ही विषय से सम्बन्धित तकनीकी शब्दों का प्रयोग किया गया है । विषय के अध्ययन को अधिक सरल बनाने के लिये अन्त में हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में वर्णक्रमानुसार पारिभाषिक शब्दावली की भी व्यवस्था की गई है । मैं यह आशा करता हूँ कि जिन पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया गया है, वे सामान्यतया स्वीकार कर लिये जावेंगे तथा इनके लिए उदार दृष्टिकोण अपनाया जावेगा ।

मेरा विश्वास है कि हिन्दी माध्यम द्वारा ग्रन्थालय वर्गीकरण विषय का अध्ययन-अध्यापन करने वाले शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं विषय में रुचि रखने वाले अन्य ग्रन्थालय प्रेमी पाठकों के लिये प्रस्तुत पुस्तक उपयुक्त एवं उपयोगी सिद्ध होगी । लेखक सदैव सीखने के लिये प्रस्तुत है तथा उसे सहायता करने की प्रवृत्ति से भाषा, शब्दावली अथवा विषय वस्तु में सुधार के लिये जो भी सुझाव दिये जायेंगे, उनके लिए मैं अत्यधिक अनुगृहीत रहूँगा ।

उज्जैन

डॉ० जी० डी० भार्गव

प्राक्कथन

म० प्र० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पिछले डेढ़ दशक से आपके बीच काम कर रही है। शिक्षा के उच्च-स्तरों पर मातृभाषा हिन्दी में पढ़ने वाले छात्र और पढ़ाने वाले प्राध्यापकगण अकादमी के काम से अपरिचित न होंगे। विज्ञान और मानविकी के लगभग 25 विषयों की तीन सौ से अधिक पुस्तकें प्रकाशित करके अकादमी ने यह सिद्ध कर दिया है कि हिन्दी भाषा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को समझने और व्यक्त करने में पूरी तरह सक्षम है। अंग्रेजी न जानने वाले बहु-संख्यक छात्रों ने इन पुस्तकों को अपना आधार बनाया है और इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा है।

1969 में अकादमी की स्थापना करते हुए केन्द्र सरकार ने संस्था से यह अपेक्षा की थी कि उच्च-शिक्षा के हर स्तर पर हिन्दी माध्यम की पुस्तकें सुलभ रहें, हिन्दी में पाठ्य-पुस्तक लेखन की परम्परा बने तथा शिक्षा केन्द्रों में एक ऐसी प्रक्रिया चले जो माध्यम परिवर्तन के विचार को उसकी अंतिम परिणतियों तक पहुँचाये। अकादमी ने अपने दायित्व को निबाहते हुए शिक्षा केन्द्रों से जुड़े विद्वत्जनों के सहकार का दायरा बढ़ाने की लगातार कोशिश की और उनके अच्छे परिणाम निकले। अनेक प्राध्यापकों ने मूल हिन्दी में लेखन किया और कर रहे हैं तथा छात्रों ने शोध स्तर तक हिन्दी को बेहिचक अपना माध्यम बनाया और ऐसे छात्रों की संख्या दिनोंदिन बढ़ रही है। इससे अकादमी का उत्तरदायित्व बढ़ गया है, इस बढ़े हुए उत्तरदायित्व को निबाहने के लिए संस्था प्राध्यापकों तथा शिक्षा केन्द्रों के पुस्तकालयों से और अधिक सक्रिय सहयोग की अपेक्षा रखती है। अकादमी की पुस्तकों को छात्रों तक पहुँचाने में प्राध्यापकों और पुस्तकालयों की बहुत बड़ी भूमिका है और मैं आश्वस्त हूँ कि सम्बन्धितों को अपनी भूमिका की पूरी-पूरी चेतना है। पुस्तकों का स्तर सुधारने की आवश्यकता भी मैं अनुभव करता हूँ

और समझता हूँ कि छात्रों और अध्यापकों को समय-समय पर अकादमी से सीधा-सीधा सम्पर्क करके पुस्तकों के गुण-दोष की समीक्षा करनी चाहिए।

आपके हाथों में यह पुस्तक सौंपते हुए मैं आशा करता हूँ कि इससे आपकी एक आवश्यकता पूरी होगी।

(चित्रकांत जायसवाल)

मन्त्री, उच्च शिक्षा एवं अध्यक्ष
मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

विषय-सूची

⊙

का रूप ले लेता है। इस प्रकार जब जिज्ञासु (मनुष्य) किन्हीं ज्ञातव्यों (विचारों अथवा वस्तुओं) की जानकारी प्राप्त कर उन्हें स्वीकार कर लेता है तब यह कहा जाता है कि ज्ञान का सृजन हुआ है।

कुछ जिज्ञासुओं एवं ज्ञातव्यों को निम्न प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :

जिज्ञासु (Knower)	ज्ञातव्य (Knowee)	
	वस्तु (Things)	विचार (Concept)
अरस्तू (Aristotle)	मेज (Table)	गणतन्त्र (Democracy)
न्यूटन (Newton)	पेनीसिलिन (Penicilline)	सापेक्षिकता (Relativity)
कीट्स (Keats)	नक्षत्र (Stars)	प्रेम (Love)
गाँधी (Gandhi)	पुस्तक (Books)	अहिंसा (Non-violence)
आदि (Etc.)	आदि (Etc.)	आदि (Etc.)

2. सुव्यवस्थित ज्ञान (Organised Knowledge)

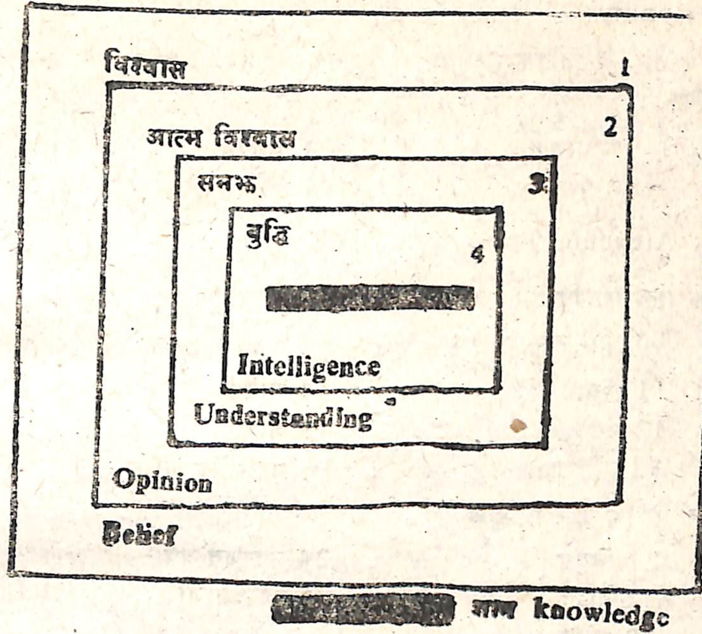
जब मनुष्य का मस्तिष्क गतिशील होकर किसी ज्ञातव्य के विषय में जाँच एवं विचार करता है तथा प्रयोग एवं विश्लेषण द्वारा किसी निष्कर्ष पर पहुँचता है तब उसे सुव्यवस्थित ज्ञान कहा जाता है। उदाहरणार्थ, किसी मेज को छूने पर हमें उसकी कठोरता का अनुभव होता है अथवा आरम्भिक ज्ञान प्राप्त होता है। किन्तु मेज की कठोरता को किसी पुस्तक अथवा लौह की कठोरता से तुलना कर जाँच एवं विश्लेषण द्वारा यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मेज की कठोरता पुस्तक की कठोरता से अधिक तथा लौह की कठोरता से कम है। इस प्रकार का निष्कर्ष जाँच एवं विश्लेषण पर आधारित होने के कारण सुव्यवस्थित ज्ञान हो जाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि अमूर्त (Abstract) ज्ञान जब मूर्त (Concrete) ज्ञान हो जाता है तब वह सुव्यवस्थित ज्ञान कहलाता है।

मनुष्य तर्कपूर्ण प्राणी है। सदैव से उसका यह प्रयत्न रहा है कि अमूर्त वस्तुओं एवं विचारों का उचित विश्लेषण कर उन्हें अधिक मूर्त अथवा व्यावहारिक बनाया जाय। उसका यही प्रयत्न किसी ज्ञातव्य के प्रारम्भिक ज्ञान को सुव्यवस्थित ज्ञान में परिवर्तित कर देता है।

व्यावहारिक ज्ञान को कुछ धारणाओं के आधार पर संगठित किया जाता है तथा अनेक अवस्थाओं में होकर यह सुव्यस्थित ज्ञान हो जाता है। वास्तव में व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् ही सुव्यवस्थित ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

ज्ञान की प्राप्ति के लिए चार तत्वों से अवगत होना आवश्यक है :

1	विश्वास (Belief)	व्यावहारिक ज्ञान (Commonsense Knowledge)
2	आत्म-विश्वास (Opinion)	
3	समझ (Understanding)	सुव्यवस्थित ज्ञान (Organised Knowledge)
4	बुद्धि (Intelligence)	



1 विश्वास

मस्तिष्क में किसी विशेष सत्व के अस्तित्व के विषय में **धारणा बनाना**। इस धारणा से मनुष्य पूर्णरूप से परिचित होता है।

2 आत्म विश्वास

किसी सत्व के अस्तित्व से परिचित होने के पश्चात् उस सत्व पर सोच-विचार कर अपना **मत निश्चित करना**। मत निश्चित करते समय एक अमूर्त सत्व को मूर्त रूप देने का प्रयत्न किया जाता है।

3 समझ

किसी सत्व को विश्लेषण कर उसके विषय में निर्णयात्मक मत निश्चित करना अथवा उसकी वास्तविकता को समझना।

4 बुद्धि

किसी सत्व को बुद्धि का प्रयोग कर पूर्णतया मूर्तरूप प्रदान करना। इस कार्य में मानसिक प्रक्रिया का व्यापक प्रयोग किया जाता है।

अत: यह कहा जा सकता है कि विश्वास, आत्म विश्वास, समझ एवं बुद्धि तत्वों का सम्पूर्ण योग ही सुव्यवस्थित ज्ञान कहलाता है। साथ ही सुव्यवस्थित ज्ञान निरन्तर चेतन मानसिक प्रक्रिया का परिणाम है।

3 ज्ञान-जगत (Universe of Knowledge)

जगत (Universe) एक संदिग्ध पद है। वास्तव में इसका उचित महत्व ज्ञात करने के लिए कुछ आवश्यक तत्वों को स्पष्ट करना अनिवार्य है। यह तत्व निम्न हैं :

1 सजीव Existent

अनिश्चित स्वीकृत पद।

2 सत्व **Entity**

कोई भी वास्तविक अथवा काल्पनिक सजीव अर्थात् एक वस्तु अथवा विचार।

1 एक बालक
2 एक पुस्तक
3 मधुरता
4 दर्शन पद्धति

3 गुण **Attribute**

एक सत्व की विशेषता अथवा परिमाणात्मक माप।

1 एक बालक के लिए कुछ गुण :
11 ऊँचाई
12 रंग
13 बुद्धिमत्ता
14 चरित्र
15 आयु
16 शारीरिक शक्ति

एक पुस्तक के लिए कुछ गुण :
21 विषय
22 लेखक
23 भाषा
24 प्रकाशन वर्ष
25 जिल्दसाजी

4 संग्रह **Aggregate**

बिना किसी विशेष व्यवस्था के एकत्रित किए गए सत्व।

1 बालकों का समूह
2 पुस्तकों का संग्रह
3 देशों का समूह
4 दर्शन पद्धतियाँ

5 सम्पूर्ण जगत **Universe**

दिए गए संदर्भ में विचार हेतु एक संग्रह।

51 परिमित जगत **Finite Universe**

सत्वों की परिमित संख्या सहित जगत

1 एक कक्षा में विद्यार्थी
2 कम से कम 1,000,000 जनसंख्या वाले नगर

52 अनन्त जगत **Infinite Universe**

तत्वों का अनन्त संख्या सहित जगत

1 सम्पूर्ण मानव-जगत, भूतकालीन, वर्तमान तथा भविष्य।

3 पूर्णांक जगत। अंकों की संख्या निश्चित होने पर भी विद्यमान अंकों में अन्य अंक जोड़कर अधिक बड़ा बनाया जा सकता है। इसी कारण पूर्णांक जगत को अनन्त कहा गया है।

53 विकासशील जगत **Growing Universe**

नवीन सत्वों को सम्मिलित किया हुआ जगत अथवा समय-समय पर जगत में व्युत्पन्न सत्व।

1 ग्रन्थालयों में पुस्तकें

2 अध्ययन के विषय

कुछ सीमित स्रोतों के कारण ज्ञान-जगत परिमित होता है। किन्तु इस संदर्भ में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि ज्ञान की प्राप्ति में मनुष्य साध्य है तथा सत्व अर्थात् वस्तु एवं विचार उद्देश्य हैं। मनुष्य कुछ निश्चित दिशाओं में ज्ञान प्राप्त करता है। वह प्रकृति, स्वयं तथा समाज का अध्ययन कर सकता है। अतः मनुष्य की इस सीमा के कारण ज्ञान तीन क्षेत्रों में सीमित हो गया है :

1 मनुष्य एवं प्रकृति **Man and Nature**	प्राकृतिक शास्त्र **Natural Sciences**
2 मनुष्य एवं स्वयं **Man and Self**	मानविकी **Humanities**
3 मनुष्य एवं समाज **Man and Society**	सामाजिक शास्त्र **Social Sciences**

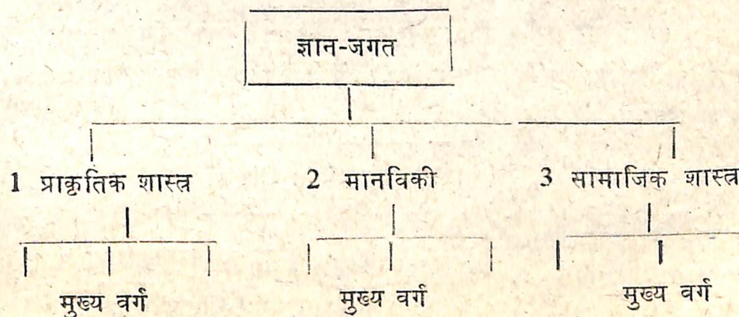
आदिकाल से ही मनुष्य चिन्तनशील रहा है। मनुष्य का प्रथम सम्पर्क **प्रकृति** से होने के कारण उसने प्रकृति का अध्ययन किया। इसके परिणामस्वरूप **प्राकृतिक शास्त्रों** की उत्पत्ति हुई। प्रकृति का अध्ययन करने के पश्चात् मनुष्य ने **स्वयं** का तथा **अन्य मनुष्यों** के विचारों का अध्ययन किया। इसके फलस्वरूप **मानविकी विषयों** की उत्पत्ति हुई। एक सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य के लिए अधिक समय तक एकाकी रहकर स्वयं के बारे में सोचना सम्भव नहीं हो सका। अतः मनुष्य ने **समाज** का अध्ययन किया तथा इस प्रकार **सामाजिक शास्त्रों** की उत्पत्ति हुई।

1 प्राकृतिक-शास्त्र	2 मानविकी	3 सामाजिक शास्त्र
Natural Sciences	**Humanities**	**Social Sciences**

उपर्युक्त तीनों क्षेत्रों का संकलित रूप ज्ञान-जगत (**Universe of Knowledge**) कहलाता है।

4 मुख्य वर्ग (Main Classes)

ज्ञान-जगत के उपर्युक्त तीनों क्षेत्रों को निम्न रेखा-चित्र द्वारा अधिक व्यापक विषयों में रखा जा सकता है :



उपरोक्त तीन क्षेत्रों से व्युत्पन्न विभिन्न विषयों को मुख्य वर्ग (Main Classes) कहा जाता है। वास्तव में यह कहना उचित है कि "मुख्य वर्ग यथार्थ रूप से सजातीय एवं रूढ़िगत ज्ञान का क्षेत्र है, जो मिलकर वर्गों की प्रथम पंक्तिक्रम की रचना करता है। ये मुख्य वर्ग आपस में पृथक् हैं तथा ज्ञान-जगत से पूर्णरूपेण निःशेष हैं।" डॉ० रंगनाथन ने 'प्रोलेगोमेना' में मुख्य वर्ग की परिभाषा इस प्रकार की है :

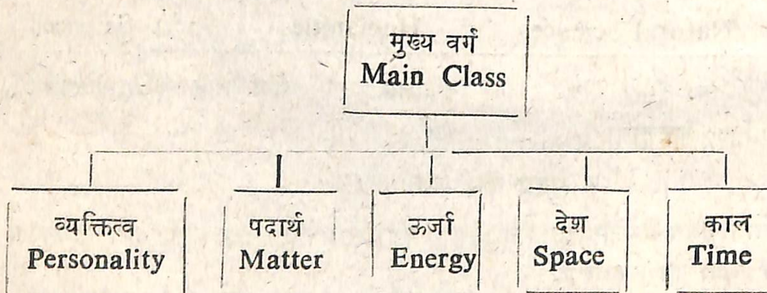
"ज्ञान-जगत की वर्गीकरण पद्धति के प्रथम पंक्तिक्रम में अंकित कोई भी वर्ग मुख्य वर्ग कहा जाता है। यह परिभाषा किसी सम्बन्धित पद्धतियों के लिए ही प्रामाणिक है।"

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि समस्त वर्गीकरण पद्धतियों में एक ही प्रकार के मुख्य वर्गों का समावेश सम्भव नहीं है। किन्तु ज्ञान-जगत के मुख्य भागों के रूप में विभाजित वर्ग उस पद्धति के मुख्य वर्ग होते हैं। ज्ञान-वर्गीकरण में यथार्थ मुख्य वर्गों का निर्धारण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वास्तव में, प्रत्येक मुख्य वर्ग के उचित स्वभाव बोध पर ही उसका आगे विभाजन सम्भव है।

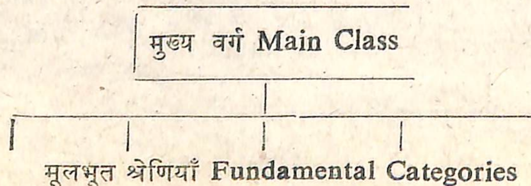
5 पाँच मूलभूत श्रेणियाँ (Five Fundamental Categories)

ज्ञान-जगत को अनेक मुख्य वर्गों में सुव्यवस्थित करने के पश्चात् प्रत्येक मुख्य वर्ग को कुछ सम्भावित श्रेणियों में विभाजित करना आवश्यक है। प्रत्येक मुख्य वर्ग में से व्युत्पन्न विषयों को किसी मूलभूत श्रेणी से सम्बन्धित किया जाता है। डॉ० रंगनाथन ने पाँच मूलभूत श्रेणियों की धारणा को प्रचलित किया है। इन श्रेणियों के विषय में उनका कथन है कि, "विभिन्न विषयों के पक्षों का निरीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि उन सबको पाँच मूलभूत श्रेणियों में किसी एक अथवा दूसरे से सम्बन्धित किया जा सकता है।"

डा० रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित मूलभूत श्रेणियों को निम्न रेखा-चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :



इस प्रकार प्रत्येक विषय अथवा मुख्य वर्ग को पाँच मूलभूत श्रेणियों में विभाजित किया गया है। दूसरे शब्दों में इन्हें एक विषय के पाँच पक्ष (Facets) अथवा अवयव कहा जा सकता है :



पाँच मूलभूत श्रेणियों को मूर्तता के ह्रास के अनुसार निम्न क्रम में रखा जा सकता है :

[व्य] [प] [ऊ] [दे] [का]
, [P]; [M] : [E] . [S] ' [T]

इसी क्रम के आधार पर पाँच मूलभूत श्रेणियों को अपने संक्षिप्त रूप में **PMEST** कहा जाता है।

एक विषय में एक या इससे अधिक एकल पक्ष आ सकते हैं। किन्तु प्रत्येक एकल पक्ष को पाँच मूलभूत श्रेणियों में से केवल एक ही श्रेणी को अभिव्यक्ति माना जा सकता है।

वर्गांक में पाँच मूलभूत श्रेणियों को विभिन्न पक्षों द्वारा अभिव्यक्त किया जा सकता है। यह निम्न उदाहरण से स्पष्ट है :

ग्रन्थालय विज्ञान में मूलभूत श्रेणी क्रम

द्विबिन्दु वर्गांक	विषय	एकल पक्ष
234	विश्वविद्यालयीन ग्रन्थालय	व्यक्तित्व
2; 46	ग्रन्थालय में पत्रिकाएँ	पदार्थ
2: 55	ग्रन्थालय में प्रसूचीकरण	ऊर्जा
2. 44	भारत में ग्रन्थालय	देश
2 'N	बीसवीं शताब्दी में ग्रन्थालय	काल
234; 46:55.44'N	बीसवीं शताब्दी में भारत के विश्वविद्यालयीन ग्रन्थालयों में पत्रिकाओं का प्रसूचीकरण	समस्त पक्ष

इस वर्गांक की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है :

2		ग्रन्थालय-विज्ञान		
34	=	[व्य] पक्ष में (एकल अंक)	=	विश्वविद्यालयीन ग्रन्थालय
;	=	[प] पक्ष का (योजक चिह्न)		
46	=	[प] पक्ष में (एकल अंक)	=	पत्रिकाएँ
:	=	[ऊ] पक्ष का (योजक चिह्न)		
55	=	[ऊ] पक्ष में (एकल अंक)	=	प्रसूचीकरण
.	=	[दे] पक्ष का (योजक चिह्न)		
44	=	[दे] पक्ष में (एकल अंक)	=	भारत
'	=	[का] पक्ष का (योजक चिह्न)		
N	=	[का] पक्ष में (एकल अंक)	=	बीसवीं शताब्दी

उपर्युक्त वर्गांक में [व्य] पक्ष के योजक चिह्न को प्रयुक्त नहीं किया गया है। यह इस धारणा के अनुसार किया गया है कि **द्विबिन्दु वर्गीकरण में आधार वर्ग (Basic class) के तुरन्त बाद [व्य] पक्ष जोड़ने के लिए योजक चिह्न का प्रयोग आवश्यक नहीं है।** साथ ही इससे यह भी स्पष्ट है कि सर्वप्रथम विषय के आधार पक्ष को

तथा इसके पश्चात् ही अन्य पक्षों को रखा गया है। जो पक्ष जिस मूलभूत श्रेणी को अभिव्यक्त करे, उसे इस प्रकार व्यवस्थित करे कि वह मूलभूत श्रेणियों की मूर्तता के ह्रास के क्रम में आ जाय। ऐसा करने में शर्त यह है कि एक विषय में एक से अधिक आधार वर्ग नहीं हों तथा किसी एक मूलभूत श्रेणी की एक से अधिक अभिव्यक्ति न हो।

मूलभूत श्रेणियों में अवशेष रीति—किसी भी विषय में मूलभूत श्रेणियों को ज्ञात करने के लिए डॉ० रंगनाथन ने अपनी पुस्तक **'पुस्तकालय वर्गीकरण के मूल तत्व'** में एक रीति को स्पष्ट किया है : "सबसे कम कठिनाई शायद **काल** की श्रेणी में होगी, क्योंकि यह स्वयं में स्पष्ट है। **देश** की श्रेणी की अभिव्यक्ति प्रायः भौगोलिक क्षेत्र के रूप में हुआ करती है। अतः किसी भी विषय में इस पक्ष के आने पर इसे पहचानने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। **ऊर्जा** की श्रेणी में थोड़ी सावधानी की आवश्यकता है। वास्तव में यदि हम याद रखें कि इसमें किसी न किसी प्रकार के कार्य का होना पाया जाता है, तो इस श्रेणी को पहचानना कोई कठिन नहीं है। इसमें रचना (आकृति विज्ञान), कार्य (शरीर विज्ञान), रोग, वातावरण से सम्बन्धित कार्य या परिस्थिति, विज्ञान, जाति विकास, मानव विकास तथा कुछ इसी प्रकार के विचार आ सकते हैं। **पदार्थ** की श्रेणी के विषय में सत्यता यह है कि इसकी अभिव्यक्ति किसी वस्तु या इसी के समान किसी पदार्थ के रूप में होती है। किसी भी विषय में इस श्रेणी को पहचानना कठिन नहीं होता। इसके अतिरिक्त सामान्य पुस्तकों के अधिकांश विषयों में पदार्थ श्रेणी नहीं पाई जाती। **व्यक्तित्व** श्रेणी की धारणा वास्तव में कुछ कठिन है। इसे केवल पृथक् करके ही पहचाना जा सकता है। किसी विषय में से काल, देश, ऊर्जा तथा पदार्थ श्रेणियों की अभिव्यक्तियों को पृथक् करने के पश्चात् जो कुछ भी शेष रहता है वह प्रायः व्यक्तित्व ही होता है। क्योंकि शेष पक्ष पाँच मूलभूत श्रेणियों में से किसी एक श्रेणी का अवश्य ही होगा तथा इस प्रकार जो शेष रहता है वह अन्य चार श्रेणियाँ निकाल लेने के पश्चात् ही रहेगा। इस रीति को शेष निकालने (अवशेष) की रीति कहा जा सकता है।"

यह यहाँ ध्यान में रखना उचित होगा कि पाँच मूलभूत श्रेणियों में से केवल व्यक्तित्व, पदार्थ एवं ऊर्जा अत्यावश्यक हैं। देश एवं काल की श्रेणियाँ वर्गांक में उसी समय प्रयुक्त होती हैं जिस समय कि विशिष्ट विषय में देश एवं काल सन्निहित होता है।

पॉमर तथा वेल्स ने अपनी पुस्तक **'फण्डामेण्टल्स ऑफ लायब्रेरी क्लासिफिकेशन'** में पाँच मूलभूत श्रेणियों के विषय में कहा है : जब हम प्रत्येक पुस्तक की अलग-अलग विवेचना करते हैं तब हमें प्रत्येक पुस्तक को संगठित करने वाली असंख्य विशेषताएँ दिखाई देती हैं। यद्यपि पुस्तकों का विभाजन रंग, आकार अथवा लेखक के अनुसार किया जा सकता है तथापि विभाजन की ये विधियाँ विषय के पक्ष में अस्वीकृत कर दी जाती हैं। विभिन्न विषय भी विशेषताएँ प्रस्तुत करते हैं जिन्हें विभाजन के लिए विशेषताओं के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है? किन्तु वर्गकार इनमें से बहुत कम पर विचार कर सकता है क्योंकि इनके द्वारा विषय से सम्बन्धित

समूह नहीं बन पायेंगे। डॉ० रंगनाथन ने प्रमुख सर्वव्यापी वर्गीकरण पद्धतियों का निरीक्षण किया तथा उन सिद्धान्तों को ढूँढ़ निकालने का प्रयत्न किया जिन पर ये पद्धतियाँ आधारित हैं। उन्होंने यह अनुभव किया कि विभाजन के आधार के रूप में छाँटी गई समस्त विशेषताएँ पाँच मूल धारणाओं में अभिव्यक्त गुणों से सम्बन्धित हैं। ये हैं—काल, देश, ऊर्जा, पदार्थ एवं व्यक्तित्व।.........जिस प्रकार रंग की असंख्य श्रेणियाँ हैं किन्तु केवल चार प्राथमिक हैं उसी प्रकार विषयों की असंख्य श्रेणियाँ हैं, किन्तु केवल पाँच मूलभूत श्रेणियाँ हैं।

संक्षेप में, श्रेणियों की धारणा अत्यन्त उपयोगी एवं अद्वितीय है। इसका सर्वव्यापी प्रभाव है। इसी धारणा के कारण सेयर्स महोदय ने कहा था कि यदि मेलविल ड्यूई का एक युग था तो निःसंदेह वर्तमान युग रंगनाथन का युग है। वास्तव में द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति प्रथम मौलिक बहुघातीय ग्रन्थात्मक वर्गीकरण है। डॉ० रंगनाथन ने एक मार्गदर्शक का कार्य किया है; उनके ग्रन्थों के अभाव में विचार का विकास कदाचित् कुण्ठित हो जाता।

उन्नीसवीं शताब्दी में ग्रन्थों में एक ही विचारधारा का उल्लेख किया जाता था : किन्तु बीसवीं शताब्दी में प्रत्येक विचारधारा की अभिव्यक्ति के लिए मूलभूत श्रेणियों का प्रयोग अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है।

पाँच मूलभूत श्रेणियों **PMEST** की धारणा को एक दृष्टान्त की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है। यदि कुछ क्षणों के लिए स्वयं को एक विषय के सदृश मान लें तो हमारा शरीर व्यक्तित्व है; हमारी शक्ति, समस्या एवं भावना आदि ऊर्जा हैं; भारत, इंगलैण्ड अथवा अमेरिका में हमारी उपस्थिति देश है; तथा वर्ष 1965, 1968 एवं 1970 से हमारे सम्बन्ध काल हैं। इसी प्रकार एक विषय का प्रमुख भाग व्यक्तित्व पक्ष है; प्रमुख भाग को निर्मित करने वाले तत्व पदार्थ पक्ष हैं; उसकी समस्या एवं शक्ति ऊर्जा की अभिव्यक्ति है; एक भौगोलिक इकाई से उसका सम्बन्ध देश पक्ष है; तथा कालक्रम की इकाईयों से उसका सम्बन्ध काल पक्ष है।

6 एकल (Isolate)

यद्यपि विशेषताओं के आधार पर विषयों को पाँच मूलभूत श्रेणियों में विभाजित किया जाता है तथापि इन श्रेणियों का अतिरिक्त विभाजन भी समय-समय पर किया जाना अनिवार्य है। इस प्रकार के विभाजन के परिणामस्वरूप एकलों (Isolates) की उत्पत्ति होती है। एकलों के द्वारा विषय का विस्तार किया जा सकता है।

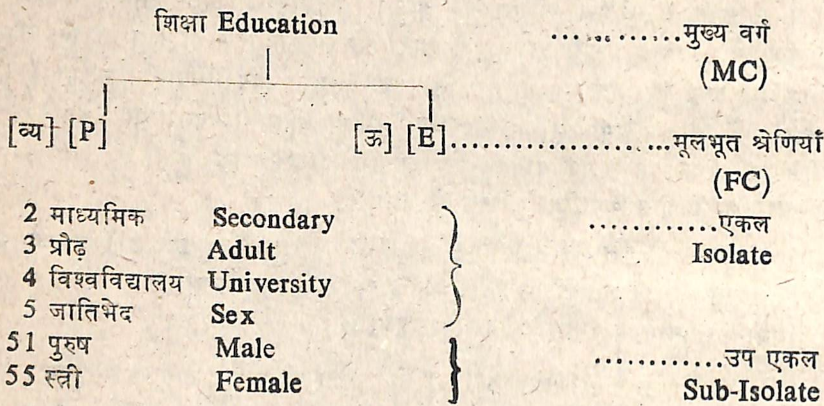
मुख्य वर्ग (Main Class)

मूलभूत श्रेणियाँ **Fundamental Categories**

2.............. } एकल Isolate
3..............
4..............
5..............
6..............
7..............

71........... उप एकल
72........... Sub-Isolate
73...........
74...........
75...........

उदाहरण—द्विबिन्दु पद्धति में मुख्य वर्ग 'शिक्षा'' में एकलों का निम्न प्रकार उल्लेख किया गया है :



7 ज्ञान-जगत का विकास
(Development of the Universe of Knowledge)

ग्रन्थालय में ज्ञान-जगत से सम्बन्धित कार्य को सुरुचिपूर्ण ढंग से करने के लिए ग्रन्थालय-अधिकारियों को ज्ञान-जगत की विशेषताओं का उचित ज्ञान होना अनिवार्य है।

1 ज्ञान-जगत असीमित है।

2 ज्ञान-जगत सर्वव्यापी है, इसके अन्तर्गत समस्त ज्ञान—भूत, वर्तमान एवं भविष्य—का समावेश किया जाता है। भूतकालीन ज्ञान को सुरक्षित रखा जाता है, वर्तमान ज्ञान का अनुसरण किया जाता है तथा भविष्य के ज्ञान का प्रावधान किया जाता है।

उपर्युक्त विशेषताओं के कारण ज्ञान-जगत का समस्त दिशाओं में निरन्तर विकास होना अनिवार्य हो गया है। इसका विकास मनमाने ढंग से अर्थात् किसी व्यक्ति विशेष की इच्छानुसार नहीं होकर कुछ सुनिश्चित सिद्धान्तों पर आधारित है तथा इसी के फलस्वरूप विभिन्न विधियाँ निश्चित की गई हैं। इसके अतिरिक्त ज्ञान-जगत का विकास एक समय न होकर शनैः-शनैः हुआ है। साथ ही ज्ञान-जगत का आकार बहुधातीय होने के कारण इसका विकास सक्रिय है।

डॉ० रंगनाथन ने अपनी पुस्तक **प्रोलेगोमेना** में कुछ क्रियाओं का वर्णन किया है जिनके अनुसार ज्ञान-जगत का विकास अर्थात् नवीन वर्गों का निर्माण होता है :

1 पृथक्करण (Dissection)
2 विच्छेदन (Denudation)
3 स्तरण (Lamination)
4 अबद्ध-विषय-संग्रह (Loose Assemblage)
5 अध्यारोपण (Superimposition)

उपर्युक्त क्रियाओं की व्याख्या कर स्पष्ट किया जा सकता है।

1 **पृथक्करण क्रिया** (Act of Dissection) : इस विधि के अन्तर्गत सत्वों के जगत को समान श्रेणी के वर्गों में पृथक् कर दिया जाता है। इन पृथक्कृत वर्गों को समवर्ग तथा उनकी पंक्ति को वर्गों की पंक्ति कहा जाता है। एक विशेषता के आधार पर किसी वर्ग अथवा विषय का उपवर्गों अथवा विशिष्ट विषयों में निर्माण किया जाता है। पृथक्करण करते समय यह ध्यान रखा जाता है कि निर्मित वर्गों की सीमा रेखा एक दूसरे से पृथक् है। उदाहरणार्थ—

ज्ञान जगत को विभिन्न विषयों में इस प्रकार रखा जा सकता है :

1	वनस्पति विज्ञान Botany
	कृषि Agriculture
	जीवशास्त्र Zoology

वनस्पति-विज्ञान मुख्य वर्ग में पौधों को इस प्रकार पृथक् किया जा सकता है :

2	फूल वाले पौधे Flowering Plants
	बिना फूल वाले पौधे Non-Flowering Plants

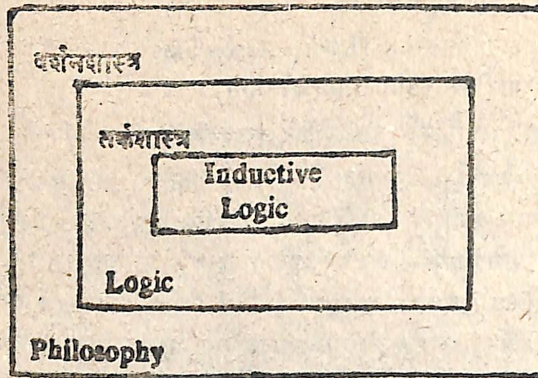
भौगोलिक-क्षेत्र जगत को निम्न प्रकार पृथक् किया जा सकता है :

3	एशिया Asia
	योरोप Europe
	अफ्रीका Africa

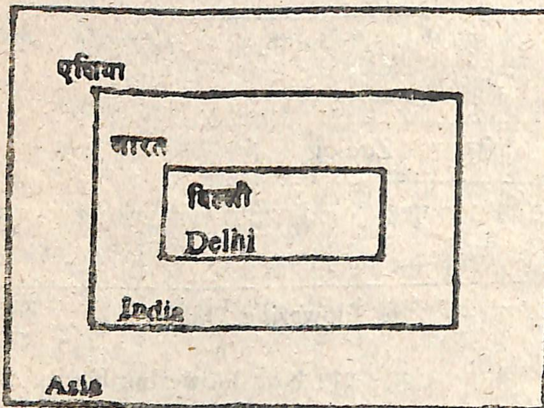
पृथक्करण क्रिया द्वारा मूल विषयों अथवा विशिष्ट विषयों को निर्मित किया जाता है : इस प्रकार निर्मित प्रत्येक मूल अथवा विशिष्ट विषय स्वयं एक जगत हो जाता है तथा उसका पुनः पृथक्करण किया जा सकता है।

2 **विच्छेदन क्रिया** (Act of Denudation) : इस क्रिया के अन्तर्गत किसी मूल विषय का विच्छेदन करने पर जो विषय प्राप्त होते हैं उनका विस्तार कम होता जाता है तथा गहनता बढ़ जाती है। दूसरे शब्दों में विच्छेदन द्वारा हम सामान्य से विशेष की ओर अग्रसर होते हैं। इस प्रकार श्रृंखला की कड़ियों का निर्माण होता है।

उदाहरणार्थ—मूल विषय दर्शन-शास्त्र को विच्छेदन द्वारा निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है :



भौगोलिक—क्षेत्र जगत में निम्न प्रकार विच्छेदन किया जा सकता है :



विच्छेदन क्रिया द्वारा निर्मित श्रृंखला में कड़ियों का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता है तथा प्रत्येक कड़ी दूसरे में सम्मिलित रहती है ।

3 **स्तरण क्रिया** (Act of Lamination) : इस क्रिया द्वारा एक पक्ष के ऊपर दूसरा पक्ष रखकर एक मिश्रित विषय का निर्माण किया जाता है । इसके अन्तर्गत जब मूल विषय के ऊपर एकल-विचार रख दिया जाता है तब मिश्रित विषय का निर्माण होता है । इस प्रकार निर्मित विषय सूक्ष्म विषय हो जाता है ।

उदाहरणार्थ—मूल विषय "कृषि" तथा एकल-विचार "अनाज" को स्तरण विधि द्वारा "अनाज की कृषि" मिश्रित विषय का निर्माण किया जा सकता है :

	Corn	
Agriculture	Agriculture of corn अनाज की कृषि	कृषि
	अनाज	

मूल-विषय "कृषि" तथा एकल-विचार "डेनमार्क" को स्तरण विधि द्वारा "डेनमार्क में कृषि" मिश्रित विषय का निर्माण किया जा सकता है।

	Denmark	
Agriculture	Agriculture in Denmark डेनमार्क में कृषि	कृषि
	डेनमार्क	

इस प्रकार मूल-विषय अथवा मुख्य वर्ग के साथ एक एकल अथवा पक्ष जोड़ कर विशिष्ट विषय का निर्माण किया जा सकता है।

स्तरण क्रिया का प्रयोग परिगणनात्मक वर्गीकरण (Enumerative classification) में सम्भव नहीं है। किन्तु पक्षात्मक वर्गीकरण (Faceted classification) में पक्ष-विश्लेषण की व्यवस्था होने के कारण स्तरण क्रिया का व्यापक प्रयोग किया जा सकता है।

4 **अबद्ध विषय संग्रह क्रिया** (Act of Losse Assemblage) : इस क्रिया द्वारा विभिन्न वर्गों को पारस्परिक जोड़ दिया जाता है। जब किसी नवीन विषय को किसी मुख्य वर्ग अथवा उप-वर्ग में उचित स्थान प्रदान नहीं क्रिया जा सकता तब दो या दो से अधिक विषयों के संग्रह से एक भिन्न विषय निर्मित किया जाता है। इस प्रकार विषयों (मूल अथवा मिश्रित) तथा एकल विचारों (तक ही पक्ष में अथवा एक ही पंक्ति में) के संग्रह से जटिल विषय निर्मित हो जाता है। इस विधि द्वारा निर्मित वर्गों के लिए कुछ विशिष्ट नियम बनाये जाते हैं।

उदाहरणार्थ—मूल विषय "मनोविज्ञान" का अध्ययन "चिकित्सा-शास्त्र" के विद्यार्थियों के लिए भी लाभदायक हो सकता है, अतः इसके लिए एक नवीन विषय का निर्माण किया जा सकता है :

1 डॉक्टरों के लिए मनोविज्ञान
Psychology for Doctors

इसी प्रकार मूल विषय "राजनीति विज्ञान" तथा "अर्थशास्त्र" का पारस्परिक सम्बन्ध अथवा तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है :

2 राजनीतिशास्त्र तथा अर्थशास्त्र का सम्बन्ध
General Relation between Political Science and Economics

3 राजनीतिशास्त्र तथा अर्थशास्त्र की तुलना
Comparison of Political Science and Economics

मूल विषय के अतिरिक्त एक ही पक्ष के एकल विचारों का संग्रह करके भी नवीन विचार को निर्मित किया जा सकता है :

बौद्धधर्म का ईसाई धर्म पर प्रभाव

Influence of Buddhism on Christianity

इस उदाहरण में बौद्ध धर्म तथा ईसाई धर्म दोनों एक ही पक्ष में लिए गए हैं।

5 **अध्यारोपण क्रिया (Act of Superimposition)** : इस क्रिया के अन्तर्गत एक ही एकल विचार जगत में से दो अथवा अधिक एकल विचारों को साथ जोड़कर एक नवीन विषय का निर्माण किया जाता है। दो एकल विचारों को योजक चिह्न से जोड़ा जाता है।

उदाहरणार्थ—मुख्य विषय चिकित्सा-शास्त्र के एक ही एकल विचार जगत (Universe of isolate ideas) में से लिए गए एकल विचार (Isolate idea) ''मस्तिष्क'' तथा एकल विचार ''नस'' को जोड़कर एक नवीन विषय निर्मित किया गया है।

मस्तिष्क की नस

Veins of Head

द्विबिन्दु पद्धति के अनुसार इस विषय का वर्गांक **L** 32-36 बनता है।

यह क्रिया स्तरण क्रिया से भिन्न है। स्तरण क्रिया में दो विभिन्न एकल-विचार जगत में से लिए गए एकल विचारों को एक साथ जोड़ा जाता है। परन्तु अध्यारोपण क्रिया में एक ही एकल विचार जगत में से लिए गए दो एकल विचारों को एक साथ जोड़ा जाता है। अध्यारोपण क्रिया को अर्धस्तरण (**Quasi Lamination**) क्रिया भी कहा गया है।

द्वितीय अध्याय

ज्ञान-वर्गीकरण के उपसूत्र

(Canons of Knowledge Classification)

ज्ञान-जगत व्यापक एवं अनन्त है। किसी भौगोलिक क्षेत्र की भाँति इसका चित्रण नहीं किया जा सकता तथापि इसका वर्गीकरण विभिन्न विभागों एवं उपविभागों में किया जाना आवश्यक है। ज्ञान-जगत का वर्गीकरण करने के पश्चात् प्रत्येक वर्ग (विषय) की अनुसूची में विभाग, उपविभाग आदि की व्याख्या की जाती है। यह अनुसूची विषय के अनुसार पुस्तकों का वर्गीकरण करने में उपयोगी होती है। वस्तुतः सामान्य वर्गीकरण तथा ज्ञान-वर्गीकरण एक योजना के अनुसार किया जाता है।

1 ज्ञान-वर्गीकरण के उपसूत्र
(Canons of Knowledge Classification)

सामान्य वर्गीकरण के अन्तर्गत केवल ज्ञात सत्वों के वर्गीकरण का ही वर्णन किया जाता है। ज्ञान-वर्गीकरण के अन्तर्गत ऐसे समस्त सत्वों का अध्ययन किया जाता है जिसमें से कुछ अज्ञात हैं अथवा केवल भविष्य में ही ज्ञात हो सकते हैं। वास्तव में ज्ञान-जगत के अनेक सत्वों के ज्ञात होने पर उनको भी समावेश किए जाने की योजना ज्ञान-वर्गीकरण में होनी चाहिए। अतः यह अनिवार्य है कि ज्ञान-वर्गीकरण के अंकन में इस प्रकार की प्रक्रियाओं की व्यवस्था की जाय जिससे पंक्ति एवं श्रृंखला में असीमित ग्राह्यता प्राप्त की जा सके। दूसरे शब्दों में भविष्य में ज्ञात होने वाले असंख्य नवीन सत्वों को पंक्ति एवं श्रृंखला के अन्तर्गत उचित स्थान प्रदान किया जा सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उचित है कि ज्ञान-जगत की वर्गीकरण पद्धति के निर्माण एवं प्रयोग के लिए अतिरिक्त उपसूत्रों का पालन किया जाय। डॉ० रंगनाथन के अनुसार ज्ञान-वर्गीकरण से सम्बन्धित विशिष्ट उपसूत्र निम्न हैं :

1 पंक्ति में ग्राह्यता (Hospitality in Array)

2 श्रृंखला में ग्राह्यता (Hospitality in Chain)

3 स्मृति सहायक (Mnemonics)

उपर्युक्त समस्त उपसूत्र, वर्गीकरण पद्धति के अंकन से सम्बन्धित हैं। इन उपसूत्रों की व्याख्या कर स्पष्ट किया जा सकता है।

1 **पंक्ति में ग्राह्यता उपसूत्र (Canon of Hospitality in Array)** : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है, "वर्गांकों का निर्माण इस विधि से होना चाहिए कि किसी भी पंक्ति में असीमित संख्या में नवीन वर्गांक का कोई अंक वर्तमान वर्गांकों को किसी प्रकार की बाधा पहुँचाए बिना जोड़ा जा सके।"

दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि वर्गों की एक पंक्ति में अपने तात्कालिक ज्ञान-जगत से लिए जाने वाले प्रत्येक वर्ग को एक स्वतन्त्र एवं भिन्न स्थान प्रदान करने की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए।

ज्ञान-जगत के क्षेत्र अनन्त होने के कारण नवीन वर्गों की उत्पत्ति आवश्यक हो गई है। अतः किसी भी वर्गीकरण पद्धति की निपुणता एवं स्थायी क्षमता पंक्ति में ग्राह्यता उपसूत्र के पालन हेतु प्रयुक्त विधियों पर निर्भर है। यदि किसी पद्धति के अन्तर्गत पंक्ति में अनन्त ग्राह्यता की व्यवस्था नहीं की गई है तो किसी न किसी समय उसका विघटन हो सकता है।

दशमलव पद्धति : इस पद्धति में इस उपसूत्र की व्याख्या एक सिद्धान्त का प्रयोग करके की गई है, "नौ विभागों से अधिक की आवश्यकता होने पर अत्यधिक घनिष्ठ विषयों को एक अंक में एकत्रित कर अथवा अत्यधिक महत्वपूर्ण विषयों को 1 से 8 अंक प्रदान कर एवं साधारण विषयों को अंक 9 के अन्तर्गत "अन्य" (Other) नामक वर्ग बनाकर समस्या को हल किया जा सकता है।" इस "अन्य" नामक वर्ग के अन्तर्गत अवर्गीकृत नवीन विषयों को रखा जा सकता है। इस पद्धति में अनेक स्थलों पर इस प्रकार के वर्ग बनाये गये हैं :

प्रथम क्रम पंक्ति (**First Order Array**)

290 अन्य धर्म
490 अन्य भाषाएं
890 अन्य भाषाओं का इतिहास

द्वितीय क्रम पंक्ति (**Second Order Array**)

149 अन्य दार्शनिक सम्प्रदाय
179 अन्य नैतिक विषय
199 अन्य आधुनिक दार्शनिक
289 अन्य ईसाई सम्प्रदाय
369 अन्य संस्थाएं

साधारण विषयों को अंक 9 "अन्य" नामक वर्ग के अन्तर्गत व्यवस्थित करने की विधि एक दूसरे से सम्बन्धित न होते हुए भी अनेक अतिथियों को एक ही स्थान प्रदान करने के समान है। इस प्रकार दशमलव पद्धति में पंक्ति में ग्राह्यता सम्बन्धी उपसूत्र की अवहेलना की गई है।

द्विबिन्दु पद्धति : इस पद्धति में पंक्ति में ग्राह्यता लाने के लिए निम्नांकित विधियों का प्रयोग किया गया है :

1 अष्टक विधि (Octave Device)

2 विषय विधि (Subject Device)

3 काल क्रमिक विधि (Chronological Device)

4 वर्णानुक्रम विधि (Alphabetical Device)

5 सामान्य एकल विधि (Common Isolate Device)

उपर्युक्त विधियों द्वारा इस पद्धति में पंक्ति में ग्राह्यता सम्बन्धी उपसूत्र का सन्तोषप्रद ढंग से पालन किया गया है। इन विधियों के उदाहरण अन्यत्र दिए जा रहे हैं।

2 **शृंखला में ग्राह्यता उपसूत्र (Canon of Hospitality in Chain)** — इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है, "शृंखला के वर्गांकों का निर्माण इस विधि से होना चाहिए कि किसी भी शृंखला में असीमित संख्या में नवीन वर्गांक का कोई अंक उस शृंखला के अन्त में वर्तमान वर्गांकों को बाधा पहुँचाए बिना जोड़ा जा सके।"

ज्ञान जगत की किसी भी शृंखला में स्वतन्त्र एवं अतिरिक्त विशेषताओं द्वारा व्युत्पन्न अनन्त वर्गों को कालान्तर में स्थान प्रदान करने की सम्भावना होती है। वर्गीकरण पद्धति की स्थाई क्षमता शृंखला में ग्राह्यता उपसूत्र के पालन हेतु प्रयुक्त विधियों पर निर्भर है।

दशमलव पद्धति : इस पद्धति में इस उपसूत्र का पूर्णतया पालन नहीं किया गया है। उदाहरणार्थ, निम्न विषयों को लिया जा सकता है।

580	वनस्पति विज्ञान
581.4	पौधों की शरीर रचना
582.13	फूल वाले पौधे
?	फूल वाले पौधों की शरीर रचना

उपर्युक्त उदाहरण में दशमलव पद्धति की भाषा ने इस शृंखला में प्रथम तीन कड़ियों के लिए अंक प्रदान करने में पर्याप्त ग्राह्यता दिखाई है। किन्तु चौथी कड़ी "फूल वाले पौधों की शरीर रचना" विषय के लिए कोई पृथक् अंक प्रदान नहीं किया जा सका तथा इसे अपने से ठीक पहले वाले तात्कालिक ज्ञान जगत अर्थात् "फूल वाले पौधे" के अंक में ही स्थान देना पड़ा। इस प्रकार शृंखला में ग्राह्यता उपसूत्र की अवहेलना की गई।

द्विबिन्दु पद्धति : इस पद्धति में इस उपसूत्र का पूर्णतया पालन किया गया है। उपर्युक्त विषयों को द्विबिन्दु पद्धति के अनुसार निम्न प्रकार रखा जा सकता है :

I	वनस्पति विज्ञान
I : 2	पौधों की शरीर रचना
I5	फूल वाले पौधे
I5 : 2	फूल वाले पौधों की शरीर रचना

इस प्रकार शृंखला की प्रत्येक कड़ी को पृथक् अंक प्रदान कर शृंखला में ग्राह्यता उपसूत्र को अपनाया गया है।

विभिन्न विधियाँ --शृंखला में ग्राह्यता प्राप्त करने के लिए विभिन्न विधियाँ उपलब्ध हैं। डॉ० रंगनाथन के अनुसार प्रामाणिक वर्गीकरण पद्धतियों द्वारा प्रयुक्त कुछ विधियाँ इस प्रकार हैं :

1 रिक्त-स्थान विधि (**Gap Device**)
2 दशमलव-भिन्न विधि(**Decimal Fraction Device**)
3 पक्ष विधि (**Facet Device**)
4 दशा विधि (**Phase Device**)
5 अध्यारोप विधि (**Superimposition Device**)

उपर्युक्त विधियों की व्याख्या कर स्पष्ट किया जा सकता है।

1 **रिक्त-स्थान विधि** : इस विधि को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है : "दो वर्गों के वर्गांकों के मध्य कुछ रिक्त स्थान छोड़ दिए जाते हैं, जिससे कालान्तर में विद्यमान वर्गों से सम्बन्धित नवीन वर्गों को स्थान दिया जा सके।"

इस विधि का प्रयोग लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस वर्गीकरण पद्धति द्वारा किया गया है। इस पद्धति में पूर्णांक अंकन (**Integer Notation**) को अपनाया गया है। इस विधि का सबसे बड़ा दोष यह है कि कालान्तर में रिक्त स्थानों के पूर्ण हो जाने के पश्चात् आगे अन्तर्वेश की गुन्जाइश नहीं रहती है। इसके साथ ही अन्तर्सम्बन्धी विषयों में सहायक अनुक्रम स्थिर रखने के लिए वर्गांकों में निरन्तर संशोधन भी आवश्यक हो जाता है। यद्यपि लायब्रेरी ऑफ कांग्रेस की वर्गीकरण पद्धति की अनुसूचियों में संशोधन के लिए पर्याप्त संख्या में कर्मचारी कार्यरत हैं तथापि पूर्णांक अंकन द्वारा पंक्ति एवं शृंखला में अनन्त ग्राह्यता प्राप्त नहीं हो सकी है।

2 **दशमलव-भिन्न विधि** : इस विधि के अन्तर्गत प्रत्येक वर्गांक को पूर्णतया दशमलव भिन्न माना गया है। किसी भी वर्गांक को पूर्णांक अथवा पूर्णांक एवं भिन्न का मिश्रण नहीं माना जाता। अतः दशमलव बिन्दु का प्रयोग आवश्यक नहीं है। इस विधि के अन्तर्गत शृंखला की अंतिम कड़ी के वर्ग को अतिरिक्त विशेषता के आधार पर प्रविभाजित कर नवीन वर्ग का निर्माण किया जाता है। सापेक्षता एवं अभिव्यंजकता उपसूत्रों द्वारा प्रविभाजित वर्ग के वर्गांकों में एक अतिरिक्त अंक जोड़ दिया जाता है। प्रविभाजन की यह प्रक्रिया अनन्त काल तक प्रयोग में लाई जा सकती है।

दशमलव-भिन्न विधि द्वारा प्रत्येक नवीन वर्ग को स्पष्ट सहायक वर्गांक दिया जा सकता है। इसका कारण यह है कि इसके अन्तर्गत विद्यमान वर्गांकों के क्रमिक मूल्य में विघ्न डाले बिना अनन्त अंकों को जोड़ने की व्यवस्था है। इस प्रकार दशमलव भिन्न विधि शृंखला में अनन्त ग्राह्यता प्रदान करती है।

दशमलव-भिन्न विधि का सार्वजनिक प्रयोग दशमलव वर्गीकरण द्वारा किया गया था। इस पद्धति के बाद की अधिकांश पद्धतियों ने इस विधि को अपनाया है। वास्तव में, अंकन की दशमलव-भिन्न विधि मेलविल ड्यूई का स्थाई एवं महत्वपूर्ण योगदान है।

इस विधि को दशमलव तथा द्विबिन्दु पद्धतियों से उदाहरण लेकर स्पष्ट किया जा सकता है :

ज्ञान-जगत

300	सामाजिक शास्त्र
330	अर्थशास्त्र
331	श्रम
331.8	श्रमिक वर्ग
331.81	कार्यावधि
331.819	देशों में कार्यावधि
331.819 5	एशिया में कर्यावधि
331.819 54	भारत में कार्यावधि

ज्ञान-जगत

SZ	सामाजिक शास्त्र
X	अर्थशास्त्र
X8 (J)	कृषि उद्योग
X8 (J) : 9	कृषि-उद्योग में श्रम
X8 (J) : 95	कृषि-उद्योग में सेवा
X8 (J) : 955	कृषि-उद्योग में समयावधि
X8 (J) : 9551	कृषि-उद्योग में अतिरिक्त समय
X8 (J) : 9551.4	एशिया में कृषि-उद्योग में अतिरिक्त समय
X8 (J) : 9551.44	भारत में कृषि-उद्योग में अतिरिक्त समय

3 **पक्ष विधि :** इस विधि के अन्तर्गत किसी भी कड़ी के वर्गांक के पश्चात् मूल अंकों से कम क्रमिक मूल्य के अंक को जोड़ दिया जाता है। इसके पश्चात् एक दूसरे से सम्बन्धित विशेषताओं की शृंखला के आधार पर निर्मित अंकों के समूह को इसमें जोड़ दिया जाता है। इस प्रकार जुड़ने वाले पहले अंक को योजक चिह्न तथा उसके बाद जोड़े गये अंकों के समूह को पक्ष कहा जाता है।

इस विधि द्वारा शृंखला में असंख्य स्थानों पर ग्राह्यता प्राप्त की जा सकती है, क्योंकि इसका प्रयोग बारम्बार किया जा सकता है। इस विधि का प्रयोग द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में व्यापक रूप से किया गया है।

4 **दशा विधि :** इस विधि के अन्तर्गत एक वर्गांक को एक योजक चिह्न की सहायता से दूसरे वर्गांक के साथ जोड़ दिया जाता है। इस प्रकार की व्यवस्था द्विबिन्दु वर्गीकरण में की गई है तथा इस विधि के प्रयोग को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है :

B0bX	अर्थशास्त्रियों के लिए गणित
X0bB	गणितज्ञों के लिए अर्थशास्त्र
B0cX	अर्थशास्त्र तथा गगित की तुलना

दशमलव पद्धति में इस विधि की कोई योजना नहीं है।

5 **अध्यारोप विधि :** 'अध्यारोप' पद का अर्थ एक वस्तु को किसी वस्तु के ऊपर रख देने अथवा एक वस्तु को किसी वस्तु पर आरोपित करने की क्रिया है।

इस विधि के अन्तर्गत एक ही पक्ष में से दो अंकों को एक योजक चिह्न द्वारा जोड़ दिया जाता है। इसका प्रयोग उस समय किया जाता है जब इसके द्वारा निर्मित विशिष्ट विषय उस पक्ष में अंकित नहीं है; किन्तु उस विशिष्ट विषय को एक ही पक्ष में से लिए गये दो अंकों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। दो अंकों को जोड़ने के लिए हाइफन (-) का प्रयोग किया जाता है। इस विधि का प्रयोग द्विविन्दु पद्धति में इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है :

Y	समाजशास्त्र
Y15	महिला
Y31	ग्रामीण जनता
Y15-31	ग्रामीण महिला

उपर्युक्त वर्गांक में अंक "ग्रामीण जनता" को उसी पक्ष में अंकित अंक "महिला" पर "ग्रामीण महिला" पद की प्राप्ति हेतु रोपित किया गया है।

1-53	फ्रांसिसी साम्राज्य
1-56	ब्रिटिश साम्राज्य

उपर्युक्त वर्गांकों का निर्माण इस हेतु किया गया है, जब एक साम्राज्य का क्षेत्रफल दो अथवा अधिक महाद्वीपों में फैला हो तब अंक 1 "विश्व" के साथ शासक देश का अंक जोड़ दिया जाता है। उदाहरणार्थ, अंक 1 "विश्व" में अंक 53 "फ्रांस" जोड़ दिया गया है तथा अंक 1 "विश्व" में अंक 56 "ग्रेट ब्रिटेन" जोड़ दिया गया है।

3 **स्मृति-सहायक उपसूत्र (Canon of Mnemonics)**—जहाँ एक एकल अंक को समान विचार का प्रतिनिधित्व करने के लिए किसी भी वर्ग के साथ जोड़ा जावे वहाँ स्मृति-सहायक अंकन **(Mnemonic Notation)** कहा जाता है।

स्मृति-सहायक के सामान्य उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया जा सकता है, "एक वर्गांक में विशिष्ट विचारधारा का प्रतिनिधित्व करने हेतु प्रयुक्त अंक अथवा अंकों द्वारा उसी विचारधारा का प्रतिनिधित्व समस्त वर्गांकों में किया जाना चाहिए।"

आधुनिक वर्गीकरण में स्मृति सहायक अंकन के प्रयोग पर महत्व डालते हुए भी बरविक सेयर्स ने कहा है कि आधुनिक वर्गीकरण में अंकन एक अत्यधिक सामान्य गुण है जो निपुण है तथा वर्गकार के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह उसका स्मृति सहायक गुण है, इसमें स्मृति को सहायता प्रदान करने तथा संदर्भ कार्य के लिए अनुक्रमणिका एवं सूचियों के प्रयोग को न्यूनतम करने की क्षमता है।

स्मृति सहायकों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए श्री हेनरी एवलिन-ब्लिस ने कहा है कि एक प्रकार की सांकेतिक भाषा के रूप में अंकन स्मरण-शक्ति पर अत्यधिक आधारित है। एक नवीन भाषा का पढ़ना एवं लिखना सीखने के लिए हम धीरे-

धीरे शब्दों एवं उनके अर्थों को सीखते हैं तथा उनमें से अधिकाधिक को याद रखते हैं। इसी प्रकार पुस्तकाध्यक्ष एवं पुस्तकालयों का प्रयोग करने वाले व्यक्ति भी धीरे-धीरे वर्गों के क्रम को सीख लेते हैं तथा वर्ग चिह्नों को याद रखते हैं, किन्तु इसके साथ वे प्रसूची, फलक सूची एवं अनुसूचियों की अनुक्रमणिका का प्रयोग भी करते रहते हैं। जितनी सुव्यवस्थित अंकन पद्धति होगी उतनी ही तत्परता से वे उसे सीख लेंगे तथा अधिक दक्षता से उसे याद रखेंगे। अंकन पद्धति के लिए यह यथार्थ एवं युक्तिसंगत आधार है।

पुस्तकालय पद्धति के क्षेत्र में प्रत्येक सत्व का प्रतिनिधित्व क्रमिक संख्या द्वारा किया जाता है। वास्तव में एक सत्व को उसकी अनिवार्य विशेषताओं के आधार पर स्थित कर दिया जाता है। उसके पश्चात् प्रत्येक विशेषता का एक अंक अथवा अंकों द्वारा प्रतिनिधित्व किया जाता है।

डॉ० रंगनाथन ने अपनी पुस्तक **प्रोलेगोमेना** में तीन प्रकार के स्मृति सहायकों का वर्णन किया है।

1 शाब्दिक स्मृति (Verbal Mnemonics)
2 अनुसूचित स्मृति सहायक (Scheduled Mnemonics)
3 मौलिक स्मृति सहायक (Seminal Mnemonics)

1. **शाब्दिक स्मृति सहायक** : अनुवर्णिक क्रम की अपेक्षा पाठक को अन्य अधिक सहायक अथवा संसर्ग क्रम उपलब्ध होने पर शाब्दिक स्मृति सहायक को अस्वीकार कर देना चाहिये। यदि अनुवर्णिक क्रम अन्य किसी क्रम के समान सहायक हो तो अनुवर्णिक विधि द्वारा निर्मित शाब्दिक स्मृति सहायकों को वरीयता दी जानी चाहिये। शाब्दिक स्मृति सहायकों का आधार बनाने वाले शब्द अन्तर्राष्ट्रीय पारिभाषिक नामावली के होने चाहिये।

किसी विशेषता के आधार पर व्यवस्था अधिक सहायक न होने की अवस्था में किसी भी विषय अथवा पंक्ति में शाब्दिक स्मृति सहायक का प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए सायकल विभिन्न निर्माताओं के नाम से जानी जाती है। अतएव उन्हें अनुवर्णिक विधि द्वारा पृथक् किया जा सकता है :

D5125R रेले सायकल (Raleigh Cycle)
D5125 RU रज़ सायकल (Rudge Cycle)

2 **अनुसूचित स्मृति सहायक** : प्रत्येक वर्गीकरण पद्धति के अन्तर्गत समस्त अथवा अनेक वर्गों के पंक्ति क्रम में प्रकट होने वाले एकलों की अनुसूची के प्राथमिक समूह को सम्मिलित किया जाना चाहिये। दूसरे शब्दों में प्रत्येक वर्गीकरण पद्धति द्वारा कुछ अनुसूचियां निर्मित कर लेनी चाहिए, जिनका प्रयोग किसी भी मुख्य वर्ग के साथ किया जा सके। इस प्रकार की अनुसूचियों को सहायक अनुसूचियाँ कहा जाता है। उदाहरण के लिए, द्विबिन्दु पद्धति में निम्न अनुसूचियाँ हैं :

1 भौगोलिक विभाजन (Geographical Division)
2. कालक्रमिक विभाजन (Chronological Division)

3 सामान्य एकल (**Common Isolate**)

4 भाषा विभाजन (**Language Division**)

इसके विपरीत दशमलव पद्धति में निम्न अनुसूचियाँ हैं :

1 भौगोलिक विभाजन (**Geographical (Division**)

2 रूप विभाजन (**Form Division**)

1 भौगोलिक परिभाग को द्विबिन्दु एवं दशमलव पद्धतियों में निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है :

द्विबिन्दु	पद	दशमलव
I:12.44	भारत का वानस्पतिक विवरण **Flora of India**	581.954
K: 12.44	भारत का पशु संबंधी विवरण **Fauna of India**	591.954

द्विबिन्दु पद्धति द्वारा निर्मित उपर्युक्त वर्गांकों में 44 अंक भारत को प्रदान किया गया है। भारत से सम्बन्धित विषयों का वर्गांक निर्माण करने के लिए इस अंक का समस्त वर्गांकों में प्रयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार दशमलव पद्धति में 954 अंक भारत को प्रदान किया गया है।

2 **सामान्य एकल** अथवा **रूप विभाजन** को द्विबिन्दु एवं दशमलव पद्धतियों में निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है :

द्विबिन्दु	पद	दशमलव
QK	धर्म विश्वकोश **Encyclopaedia of Religion**	203
KR	दर्शनशास्त्र विश्वकोश **Encyclopaedia of Philosophy**	103

उपर्युक्त वर्गांकों में अंक **K** तथा 03, विश्वकोश के लिए अनुसूचित स्मृति-सहायक के रूप में प्रयुक्त किये गए हैं।

3 **मौलिक स्मृति सहायक** : वर्गीकरण पद्धति में एक ही एकल धारणा का प्रतिनिधित्व करने हेतु एक ही तथा समान अंक का प्रयोग करना चाहिए, चाहे वह किसी भी पंक्ति अथवा वर्ग-सन्दर्भ में विभिन्न पदों का प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रयुक्त होता हो।

उदाहरणार्थ, 'ऐक्य' अथवा 'इकाई' धारणा के लिए द्विबिन्दु पद्धति द्वारा अंक का प्रयोग विभिन्न वर्गों में किया गया है।

1—भौगोलिक विभाजन के अन्तर्गत अंक '**1**' विश्व के लिए प्रयुक्त किया गया है :

U.1	विश्व का भूगोल
V1	विश्व का इतिहास

2—मुख्य वर्ग 'धर्म' (**Religion**) में ईश्वर ज्ञान के अन्तर्गत अंक '1' ईश्वर के लिए प्रयुक्त किया गया है :

Q 3 ईश्वर ज्ञान Q:31 ईश्वर

दशमलव पद्धति में भी यथार्थ ईश्वर-ज्ञान (**Natural Theology**) तथा ईसाई धर्म के सैद्धांतिक ईश्वर-ज्ञान (**Doctrinal theology of Christianity**) के अन्तर्गत अंक '1' का प्रयोग ईश्वर के लिए किया गया :

210	यथार्थ ईश्वर ज्ञान
211	ईश्वर
230	ईसाई धर्म का सैद्धान्तिक ईश्वर ज्ञान
231	ईश्वर से सम्बन्धित ईसाई सिद्धान्त

3—मुख्य वर्ग इतिहास (**History**) में संवैधानिक अंक के अन्तर्गत अंक '1' का प्रयोग राज्याध्यक्ष के लिए किया गया है।

V2	भारतवर्ष का इतिहास
V2,1	भारतीय गणतंत्र का अध्यक्ष अर्थात् भारतीय गणतंत्र का राष्ट्रपति

इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि "ऐक्य" अथवा "इकाई" विचारधारा विश्व, ईश्वर एवं राज्याध्यक्ष में उपेक्षित है तथा किस प्रकार विभिन्न विषय-प्रसंगों में एक ही मौलिक धारणा को व्यक्त करने के लिए प्राकृतिक भाषा में विभिन्न पदों का प्रयोग किया गया है। इसके विपरीत, वर्गीकरण की भाषा में, मौलिक सहायक स्मृति के अनुसार विभिन्न विषय-प्रसंगों में एक ही धारणा का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक ही अंक का प्रयोग किया गया है।

⊙

तृतीय अध्याय

ग्रन्थालय वर्गीकरण

(Library Classification)

मनुष्य का सदा से ही समस्त विचारों एवं निर्णयों में, प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से, वर्गों से सम्बन्ध रहा है, अर्थात् समानता के आधार पर वस्तुओं को विभिन्न वर्गों में व्यवस्थित किया गया है।

1 वर्गीकरण की उत्पत्ति
(Origin of Classification)

वर्ग (Class)—वर्ग शब्द का साधारण अर्थ ''किसी समानता से सम्बन्धित वस्तुएँ'' हैं। इसको दो शब्दों ''समान वस्तुएँ'' में भी रखा जा सकता है। इस संदर्भ में यह ध्यान में रखना चाहिए कि वर्ग स्थायी अथवा अपरिवर्तनीय नहीं है, किन्तु उपयोगी एवं विकासनीय है। नवीन पदार्थों, गुणों अथवा सम्बन्धों को सम्मिलित करने के लिए इसका विस्तार किया जा सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि वर्ग की विपुलता, ग्राह्यता एवं परिभाषा में परिवर्तन एवं विकास हो सकता है।

वर्ग के अन्तर्गत केवल ज्ञात वस्तुओं का ही समावेश नहीं होता है, बल्कि इसमें सम्भावित वस्तुओं को ग्राह्य करने की भी क्षमता है। वर्ग के विस्तार में वास्तविक अथवा काल्पनिक, ज्ञात अथवा अज्ञात, एवं वर्तमान, भूत अथवा भविष्य, समस्त वस्तुओं का समावेश होता है।

वर्ग एवं समूह (Class and Group)—यहाँ यह जान लेना आवश्यक है कि समूह को वर्ग से भिन्न माना गया है। समूह (Group) स्पष्ट, प्रत्यक्ष, सामान्यतः वास्तविक एवं पूर्ण होता है; किन्तु वर्ग (Class) के समान निश्चित नहीं है। समूह को अनेक बार वर्ग तथा वर्ग को समूह कहा जाता है। वास्तव में समूह समान अथवा असमान वस्तुओं अथवा एक निश्चित संख्या में कुछ वस्तुओं का संग्रह माना जाता है। समूह न तो वास्तविक वस्तुओं का ही संग्रह है और न किसी एक वर्ग से सीमित है। इसके तत्वों में परिवर्तन हो सकता है तथा वे असंख्य वर्गों में से हो सकते हैं। सच तो यह है कि समूह निश्चित न होते हुए भी स्वयं में पूर्ण है। इसके विपरीत वर्ग निश्चित होते हुए भी पूर्ण नहीं है, क्योंकि उसमें अज्ञात वस्तुओं का समावेश आंशिक रूप से ही हो पाता है। उदाहरणार्थ, किसी विद्यालय-कक्ष के विद्यार्थियों के समूह को वर्ग (Class) कहा जाता है, यद्यपि उसमें कुछ विद्यार्थी अनुपस्थित हो सकते हैं।

इसी प्रकार एक पुस्तकाध्यक्ष द्वारा फलकों पर व्यवस्थित पुस्तकों के समूह को वर्ग कहा जाता है, यद्यपि उनमें से कुछ का उपयोग अन्यत्र किया जा रहा है तथा भविष्य में कुछ पुस्तकों को उसके साथ वर्गीकृत करने की सम्भावना है।

वर्गीकरण (Classification)—कुछ सिद्धान्तों, उद्देश्यों, धारणाओं अथवा सुविधाओं के अनुसार वर्गों की क्रमबद्ध व्यवस्था को "वर्गीकरण" कहा जाता है। अन्य शब्दों की भाँति इस शब्द का प्रयोग अस्पष्ट रूप से कभी प्रक्रिया के लिए तो कभी क्रिया के लिए किया गया है। अतः "वर्गीकरण" शब्द का प्रयोग मौलिक अर्थों में करना तथा इसे वर्गों में विभाजित करने की प्रक्रिया से अलग रखना वांछनीय होगा।

वर्गीकरण शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द 'क्लासिस' (Classis) से हुई है। इस शब्द का प्रयोग प्राचीन रोम में सम्पत्ति तथा महत्व के अनुसार की गई मनुष्यों की श्रेणियों में भेद करने के लिए किया जाता था।

1 सम्पत्ति के अनुसार—धनी अथवा निर्धन
2 महत्व के अनुसार—स्वामी अथवा सेवक

इस प्रकार का प्रारम्भिक समूहीकरण द्विभुज-विभाजन (Dichotomic) कहलाता है। इसके अन्तर्गत केवल दो-दो के समूह को रखा जाता है। इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि वस्तुओं को विभागों एवं समूहों में किसी समानता के अनुसार व्यवस्थित किया जाता था। इस प्रकार निर्मित समूह किसी विशेषता पर आधारित नहीं होता था; किन्तु यह वास्तविक, पूर्ण स्थानीय एवं अस्थायी होता था।

अमेरिका के प्रमुख ग्रन्थपाल हेनरी ई० ब्लिस (Henry E. Bliss) के अनुसार 'वर्गीकरण' शब्द के विकास को तीन अवस्थाओं में रखा जा सकता है—

प्रथम, वर्ग (to class)
द्वितीय, वर्ग-निर्माण (to classify)
तृतीय, वर्गीकरण (classification)

उपरोक्त तीनों अवस्थाओं का वर्णन इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है।

प्रथम, वर्ग—इसके अन्तर्गत किसी एक वस्तु को एक समूह अथवा वर्ग में तथा विभिन्न वस्तुओं को सम्बन्धित वर्गों में रखा जाता है। यह समूह चुने हुए, विस्तृत एवं स्थायी होते हैं। इनका निर्माण किसी विशेषता के आधार पर किया जाता है।

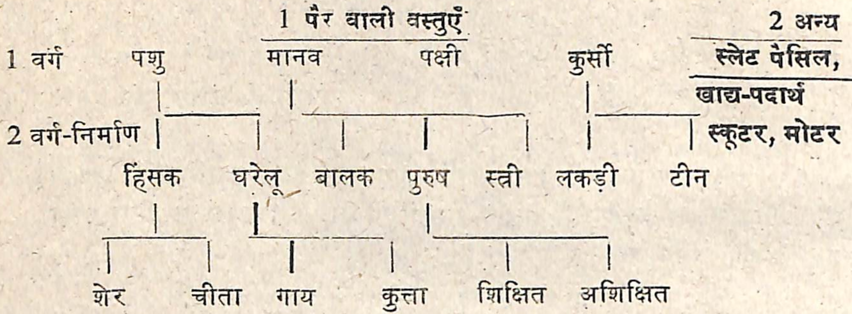
द्वितीय, वर्ग-निर्माण—इसके अन्तर्गत बहुत सी वस्तुओं में से विशेषताओं के आधार पर वर्ग अथवा उपवर्गों का निर्माण किया जाता है।

तृतीय, वर्गीकरण—इसके अन्तर्गत समस्त वर्गों एवं उपवर्गों को उद्देश्य एवं अभिरुचि अथवा कुछ सिद्धान्तों एवं नियमों के अनुसार क्रमबद्ध किया जाता है।

वास्तव में उपर्युक्त तीनों प्रक्रियाएँ—वर्ग, वर्ग-निर्माण एवं वर्गीकरण—एक दूसरे से इस प्रकार गूँथी हुई हैं कि उनको विचारों एवं पारिभाषिक शब्दावली में पृथक् करना सुगम नहीं है। तथापि, किसी वस्तु अथवा वस्तुओं के वर्ग-निर्माण में एवं वर्गों को किसी योजना अथवा प्रणाली के अनुसार क्रमबद्ध करने में अन्तर अवश्य है।

संक्षेप में, **समान वस्तुओं** को **एक स्थान पर एकत्रित** करना तथा असमान वस्तुओं को पृथक् कर देना ही वर्गीकरण है । दूसरे शब्दों में **समानता** अथवा **असमानता** के अनुसार वस्तुओं को **क्रमबद्ध करना** वर्गीकरण है ।

वर्गीकरण की प्रक्रिया को निम्नांकित रेखा चित्र से स्पष्ट किया जा सकता है--
समानता के आधार पर—



3 वर्गीकरण—पुरुष, स्त्री, बालक;
हिंसक-पशु, घरेलू, पशु;
लकड़ी-कुर्सी, टीन-कुर्सी ।

इस प्रकार वर्गीकरण केवल वस्तुओं को समान्य समूहों में रखना ही नहीं है । बल्कि समस्त समूहों को किसी न किसी प्रकार के क्रम में व्यवस्थित करना है जिससे वस्तुओं का पारस्परिक सम्बन्ध निश्चित किया जा सके ।

एक अन्य उदाहरण द्वारा भी वर्गीकरण की प्रक्रिया को स्पष्ट किया जा सकता है—

मुद्रा

1 वर्ग—	कागज	चाँदी	निकल	पीतल
2 वर्ग-निर्माण—	सौ रुपया, दस रुपया, एक रुपया			दस पैसे पांच पैसे दो पैसे
3 वर्गीकरण—	सौ रुपया, दस रुपया, एक रुपया, दस पैसे			पाँच पैसे, दो पैसे

उपर्युक्त उदाहरण का अध्ययन करने से यह स्पष्ट है कि वर्गीकरण कुछ सिद्धान्तों पर आधारित होता है । दूसरे शब्दों में सम्पूर्ण मुद्रा को दो सिद्धान्तों के अनुसार व्यवस्थित किया गया है । मुख्य वर्गों में **पदार्थ (Material)** के आधार पर मुद्रा को विभाजित किया गया है । उपवर्गों का निर्माण **मूल्य (Value)** के आधार पर किया गया है । अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि वर्गीकरण केवल वर्ग में रखना अथवा वर्गों एवं उपवर्गों में व्यवस्थित करना ही नहीं है; बल्कि किसी सिद्धान्त के अनुसार व्यवस्थित करना है ।

2 ग्रन्थालय वर्गीकरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
(Historical Background of Library Classification)

व्यावसायिक विधियों एवं पद्धतियों के विकास के विषय में जानने की मनुष्य की सदैव से ही तीव्र अभिलाषा रही है । ग्रन्थालय वर्गीकरण की प्रणालियों का प्रयोग

अत्यन्त प्राचीन समय से हो रहा है। वर्गीकरण का विकास वास्तव में मानव की विचारशक्ति के विकास के समानान्तर होता रहा है। जिस समय मनुष्य ने सृष्टि के विभिन्न भागों में भेद करने एवं समझने का प्रयत्न किया, उसी समय से उसने चेतन अथवा अचेतन अवस्था में विभिन्न भागों को एक दूसरे से सम्बन्धित करने की किसी पद्धति का निर्माण कर लिया था। विकास की दृष्टि से इन पद्धतियों को दो श्रेणियों में रखा जा सकता है—

प्रथम, ज्ञान की सैद्धान्तिक व्यवस्था अथवा आदर्श को ध्यान में न रखते हुए केवल सुविधा एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण से पाठ्य-सामग्री को व्यवस्थित करना।

द्वितीय, ज्ञान की तर्कपूर्ण वर्गीकरण पद्धति के अनुसार पाठ्य-सामग्री को व्यवस्थित करना।

प्रथम : प्रारम्भिक एवं उपयोगितावादी पद्धतियाँ
(Early and Utilitarian Schemes)

तर्कहीन वर्गीकरण-ग्रन्थालयों की प्रारम्भिक परम्पराओं में इस प्रकार के वर्गीकरण का वर्णन मिलता है। असुरबनीपाल (**Asurbanipal**) के असीरियन ग्रन्थालय में मिट्टी की पट्टिकाओं का वर्गीकरण सबसे प्राचीन माना जाता है। इस पट्टिकाओं को दो मुख्य वर्गों में विभाजित किया गया था। प्रथम, सांसारिक ज्ञान से सम्बन्धित पट्टिकाएँ; द्वितीय, ईश्वरीय ज्ञान से सम्बन्धित पट्टिकाएँ।

ऐसी धारणा है कि ग्रीस तथा रोम के ग्रन्थालयों में भी वर्गीकरण किया गया था, किन्तु इस वर्गीकरण से सम्बन्धित विशेष जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है। रोम के ग्रन्थालयों में प्राप्त वर्णन से यह संकेत मिलता है कि मूर्तिपूजक तथा ईसाई लेखकों में विभाजन किया गया था। यह भी स्वीकार किया जाता है कि अरस्तू जैसे दार्शनिक को जन्म देने वाले देश ग्रीस ने भी पुस्तकों को किसी उपयुक्त क्रम में रखा होगा। मिस्र देश के सुप्रसिद्ध पुस्तकाध्यक्ष केलीमेचस (**Callimachus**) द्वारा एलेकजेण्डरिया पुस्तकालय (260-240 ई० पू०) के लिए प्राचीनतम प्रमाणित पद्धति निर्मित की गई थी। यद्यपि यह पद्धति नष्ट हो गई है, तथापि सम्पूर्ण विषयों को निम्नांकित पाँच विभागों में रखा गया था : (1) काव्य (2) इतिहास (3) दर्शन (4) वक्तृता एवं (5) विविध। इसके अतिरिक्त कुछ उपविभागों के निर्माण का भी आभास मिलता है। मध्यकालीन मठों से सम्बन्धित ग्रन्थालयों में पुस्तकों को कुछ विशेष वर्गों में विभाजित कर आकार के अनुसार स्थान निश्चित कर फलकों पर रख दिया जाता था। कभी-कभी एक ही वर्ग में पुस्तकों को लेखक के नाम से वर्णक्रमानुगत भी रख दिया जाता था। लेखक की जन्म-शताब्दी एवं राष्ट्रीयता को भी विभाजन का आधार माना जाता था। ईसाई सम्प्रदाय (**Jesuits**) द्वारा प्रयुक्त पद्धति के अनुसार पुस्तकों को दो श्रेणियों में रखा जाता था। ग्रन्थालय में प्रवेश करने पर एक ओर श्रद्धालु लेखकों द्वारा उत्तम पुस्तकों को तथा दूसरी ओर नास्तिक लेखकों द्वारा काली खाल अथवा काले चर्म-पत्र में बँधी हुई पुस्तकों को संग्रहीत किया जाता था।

मध्यकालीन ग्रन्थालयों की वृद्धि के साथ ही पुस्तकों की व्यवस्था में प्रामाणिकता आती गई तथा सम्पूर्ण पाठ्य-सामग्री को सामान्यतः सात वर्गों में रखा गया—

(1) अभिलेख (**Archives**), (2) धार्मिक पुस्तकों से सम्बन्धित मूल ग्रन्थ एवं टीकाएँ (**Scriptural Texts and Commentaries**), (3) संविधान (**Constitution**), (4) परिषद् एवं धार्मिक-सभा सम्बन्धी कार्यवाही (**Council and Synodal Proceedings**), (5) पादरियों के धर्मोपदेश एवं पत्र (**Hornilies and Epistles of the Fathers**), (6) धार्मिक पुस्तकें (**Lectionaries**) तथा (7) शहीदों की पौराणिक कथाएँ (**Legends of Martyrdom**)

सदा से ही फ्रांस ग्रन्थ वर्णनाकारों का निवास स्थान रहा है। यह कहा जा सकता है कि कुछ समय पूर्व तक ग्रन्थ वर्णनों से सम्बन्धित सर्वोच्च ग्रन्थ फ्रांसिसी भाषा में ही उपलब्ध थे। सोलहवीं तथा सत्रहवीं शताब्दियों में ग्रन्थ वर्णनात्मक प्रसूचियाँ फ्रांस में निर्मित की गई थीं। इनमें सबसे प्रमुख 'मेजरिन' (**Mazarin**) संग्रह के पुस्तकाध्यक्ष गेब्रिल नाद (**Gabriel Naude—b. 1600**) द्वारा निर्मित प्रसूची है। उसके द्वारा निर्मित **Advis pour Dresser une Bibliotheque** का अनुवाद जॉन एलविन द्वारा किया गया था। इसमें बारह मुख्य वर्गों को स्थान दिया गया था—

(1) आध्यात्म विद्या (**Theology**), (2) चिकित्सा (**Medicine**), (3) ग्रन्थ वर्णन (**Bibliography**), (4) काल-निर्णय की विद्या (**Chronology**), (5) भूगोल (**Geography**), (6) इतिहास (**History**), (7) सैन्य कला (**Military Arts**), (8) न्याय विद्या (**Jurisprudence**), (9) परिषद् एवं धर्म प्रधान विधियाँ (**Couneil and Canon Law**), (10) दर्शनशास्त्र (**Philosophy**), (11) राजनीति (**Politics**), (12) साहित्य (**Literature**)।

गेब्रिल नाद के समकालीन 'फ्रांसिसी प्रणाली' (**French System**) अथवा 'पेरिस के पुस्तक विक्रेताओं की प्रणाली' (**Paris Bookseller's System**) है। इसको निर्मित करने का श्रेय इस्मेल बोलोद (**Ismael Bouillaud**) को है। कुछ ग्रन्थकारों का कथन है कि इसका प्रारम्भ गेब्रिल मार्टिन (**Gabriel Martin**) द्वारा किया गया था, जिसने 1705-1761 की अवधि में लगभग 147 पुस्तकालय प्रसूचियों का संग्रह किया था। इस प्रणाली का संशोधित एवं विस्तृत रूप जेक्यूस-चार्ल्स-ब्रूनेट (**Jacques-Charles-Braunet**) ने सर्वप्रथम 1809 में '**Manuel du Libraireet dz L' Amateur des Livres**' प्रकाशित किया। इस पद्धति में केवल पाँच मुख्य वर्ग रखे गये हैं—

(1) आध्यात्म विद्या (**Theology**), (2) न्याय विद्या (**Jurisprudence**), (3) इतिहास (**History**), (4) दर्शन शास्त्र (**philosophy**), (5) साहित्य (**Literature**)

यह प्रणाली अनेक बार संशोधित एवं विस्तृत की जा चुकी है। फ्रांस में इसका व्यापक प्रचलन हुआ है। इसके अनुसार पुस्तकों को प्रमुख विशेषताओं द्वारा वर्गीकृत

किया गया है। फ्रांस के राष्ट्रीय पुस्तकालय (**Bibliotheque Nationale**) में वर्गीकृत पाठ्य-सामग्री का क्रम इसी पर आधारित है। सन् 1825 में इंग्लैंड के राष्ट्रीय पुस्तकालय (**British Museum**) में प्रयुक्त पद्धति ब्रूनेट-पद्धति से समरूपता रखती है।

ब्रूनेट की वर्गीकरण पद्धति को तर्कपूर्ण एवं दार्शनिक सिद्ध करते हुए ग्रन्थकारों ने कहा है कि "यह पद्धति सांश्लेषिक एवं विश्लिष्ट है। मानव विचारों की गति-विधियों के कार्यक्षेत्रों को प्रमुख विभागों में प्रस्तुत करने के कारण यह सांश्लेषिक (**Synthetic**) है, उन गतिविधियों के परिणामों का सूक्ष्म विवरण सम्मुख रखने के फलस्वरूप यह विश्लिष्ट (**Analytic**) है।" ब्रूनेट वर्गीकरण की सारणी 18 पृष्ठों में दी गई है। इस पद्धति का अंकन मिश्रित, कष्टदायक एवं अप्रचलित है। इसमें मुख्य वर्गों के लिए कोई चिह्न नहीं है, विभागों को रोमन अक्षरों द्वारा, उपविभागों को अरबी अंकों द्वारा, खण्डों को रोमन अक्षरों द्वारा, उपखण्डों को छोटे अक्षरों द्वारा तथा व्यक्तिगत कार्य को अरबी अंकों द्वारा दर्शाया गया है। इस प्रकार **बाइबल के तुर्की भाषी अनुवाद** का वर्गांक निम्न होगा :

Theology I 1Am 82

इसका विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है। **Theology** मुख्य वर्ग (**Main class**) के लिए किसी चिह्न का प्रयोग नहीं किया गया है। **I** विभाग (**Division**) 1 उपविभाग (**Sub Division**) **A** खण्ड (**Section**) **m** उपखण्ड (**Sub-Section**) 82 व्यक्तिगत कार्य (**Individual Work**)।

फ्रांस के राष्ट्रीय पुस्तकालय में मुख्य वर्गों के लिए रोमन अक्षरों को प्रयुक्त किया गया था तथा इस संशोधन के अनुसार उपरोक्त पुस्तक का वर्गांक **AIlAm82** होता।

इस प्रकार का अंकन आधुनिक पुस्तकाध्यक्षों को उचित प्रतीत नहीं होता।

द्वितीय : तर्कपूर्ण एवं दार्शनिक पद्धतियाँ
(Logical and philosophical Schemes)

वर्गीकरण पद्धतियों के विकास में फ्रांसिस बेकन (**Francis Bacon**) द्वारा निर्मित **Chart of Human Learning** को विशेष स्थान प्राप्त है। बेकन द्वारा 1605 ई० में प्रकाशित लेख **The Advancement of Human Learning** इस चार्ट का प्रमुख आधार रहा है। इसके निर्माण के समय से अब तक प्रत्येक वर्गीकरण पद्धति किसी न किसी सीमा तक इससे अवश्य ही प्रभावित हुई है।

बेकन ने अपनी पद्धति को दार्शनिक आधार प्रदान करने के लिए विद्या के क्षेत्र में हुई प्रगति की तथा इस प्रगति को लिपिबद्ध करने वाली पुस्तकों की समीक्षा की। उसके द्वारा प्रस्तुत लेख 1605 तक लिपिबद्ध विचारों का इतिहास है। साथ ही इसमें ज्ञान की तत्कालीन वस्तुस्थिति का वाद-विवाद है एवं पुस्तकों के नाम नहीं दिए गए हैं। तथापि यह एक ऐसा लेख है जिसकी उपेक्षा करने का साहस हम नहीं कर सकते। इसमें बेकन के तार्किक मस्तिष्क एवं तर्कशास्त्र की स्पष्टता का आभास मिलता है तथा गद्यात्मक सौंदर्य का बाहुल्य है। उदाहरणार्थ, बेकन ने ग्रन्थालय के संदर्भ में

लिखा है कि यह "ऐसा पवित्र स्थान है जहाँ यथार्थ गुणों से युक्त एवं पाखण्ड अथवा भ्रान्ति रहित, प्राचीन ऋषियों के अवशेषों को सुरक्षित किया जाता है।"

बेकन द्वारा अपनाई गई पद्धति विषयगत है तथा विषय विभाजन को निश्चित सिद्धान्तों पर आधारित किया गया है। वास्तव में, पुस्तक वर्गीकरण के क्षेत्र में वह प्रथम वर्गकार है जिसने विशेषताओं के प्रयोग में एकरूपता रखी है तथा अपनी पद्धति की रूपरेखा को इस पर आधारित किया है। मानव विचारधाराओं द्वारा बुद्धि प्रभावित होने के कारण इसके तीन प्रमुख स्रोत हैं : स्मरण शक्ति (**Memory**), कल्पना शक्ति (**Imagination**) एवं तर्क (**Reason**)। इन तीन स्रोतों से तीन मुख्य वर्गों की उत्पत्ति हुई है—इतिहास (**History**); काव्य (**Poesy**) एवं दर्शनशास्त्र (**Philosophy**)।

बेकन की पद्धति का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है :

मानव ज्ञान की सारिणी

फ्रांसिसी बेकन, 1628

स्मरण शक्ति (Memory)

- इतिहास (**History**)
- प्राकृतिक इतिहास (**Natural History**)
- व्यवहार इतिहास (**Civil History**)

कल्पना शक्ति (Imagination)

- काव्य (**Poesy**)
- वर्णनीय (**Narrative**)
- नाटकीय (**Dramatic**)
- एकेन्द्रीय (**Parabolical**)

तर्क (Reason)

- दर्शनशास्त्र (**Philosophy**)
- दैवी (**Divine**)
- प्राकृतिक (**Natural**)
- मानवीय (**Human**)

फ्रांसिसी बेकन की पद्धति अठारहवीं शताब्दी में निर्मित डिडरोट (**Diderot**) के फ्रांसिसी शब्दकोष का आधार रही है; इसने बोडलियन पुस्तकालय (**Bodleian Library**) के प्रारम्भिक वर्गीकरण को भी प्रभावित किया था। अमेरिका के राष्ट्रीय पुस्तकालय (**Library of Congress**) में सर्वप्रथम प्रयुक्त वर्गीकरण की रूपरेखा बेकन पद्धति पर आश्रित थी।

वास्तव में ग्रन्थालय वर्गीकरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि ग्रन्थालयों में पुस्तकों के वर्गीकरण को एक अत्यन्त पुनीत कार्य की संज्ञा नहीं दी जा सकती। यह कार्य पूर्णतया व्यावहारिक अथवा उपयोगिता की दृष्टि से एक व्यक्ति अथवा समूह द्वारा अन्य व्यक्तियों को विषयगत पुस्तकों से अवगत कराने

के लिए ही किया गया था। एक सुव्यवस्थित वर्गीकरण पद्धति पुस्तकों में अभिरुचि रखने वाले समस्त पाठकों के लिए विश्वसनीय एवं स्थायी व्यवस्था का निर्माण करती है। इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि पुस्तकों की संख्या में वृद्धि के साथ विषय में उपविभागों को भी अधिक विस्तृत बनाया जाना अनिवार्य हो जाता है। पुस्तकों की समुचित व्यवस्था तथा विभिन्न विषयों की सुगम उपयोगिता के लिए ही वर्गीकरण को अधिक उपयुक्त माना गया। इस प्रकार, फलकों पर पुस्तकों की "निश्चित" से "गतिशील" व्यवस्था को अपनाने तथा मोटे तौर से एकत्रित सामग्री को प्रत्येक विशिष्ट विषय के अनुसार व्यवस्थित करने की दिशा में वर्गीकरण द्वारा एक क्रान्तिकारी परिवर्तन सम्भव हो सका है।

3 ग्रन्थालय वर्गीकरण का विकास
(Evolution of Library Classification)

'वर्गीकरण' की धारणा सर्वव्यापक है तथा जीवन की प्रत्येक अवस्था को प्रभावित करती है। विचार एवं स्मरण करने के एक यन्त्र के एक भाग के रूप में इसकी आवश्यकता पड़ती है। काल, देश, क्रिया, विशेषता, पदार्थ एवं व्यक्तित्व सभी, किसी न किसी रूप में, वर्गीकरण के आश्रित हैं। किसी प्रकार की समानता के अनुसार वस्तुओं के विभाजन एवं समूहीकरण की प्रवृत्ति सभी युगों में प्रचलित रही है। यह वस्तुएँ वास्तविक पदार्थों अथवा अव्यावहारिक विचारों के रूप में हो सकती है।

मनुष्य ने वर्गीकरण की प्रक्रिया को अपने प्रारम्भिक काल में ही आरम्भ कर दिया था। मानवता के आध्यात्मिक उत्पादन के अत्यन्त प्राचीन साहित्यिक अवशेष के रूप में उपलब्ध वैदिक साहित्य में वर्गीकरण करने की मानव-प्रवृत्ति का प्रभाव सर्वत्र दिखाई देता है। वैदिक-साहित्य में विचार करने तथा विषय की वर्गीकृत व्यवस्था का प्रमाण मिलता है। इसके अतिरिक्त वर्गीकरण प्रकिया से सम्बन्धित परिच्छेदों का भी समावेश है। इसमें विषयों का विश्लेषण एवं समूहीकरण कर उन्हें व्यवस्थित किया गया है।

बेबीलोनिया एवं मिस्र के धार्मिक ग्रन्थों द्वारा भी वर्गीकरण की प्रवृत्ति की पुष्टि की गई है। लगभग दो हजार वर्षों की ग्रीक सभ्यता के साहित्यिक अवशेषों में वर्गीकरण को एक महत्वपूर्ण विषय माना गया है। इसी कारण वर्गीकरण की आधुनिक पुस्तकें पारफिरी (**Porphyry**) तथा अरस्तू (**Aristotle**) से आरम्भ होती हैं। तथापि अरस्तू का तर्क मुख्यतः पदार्थों को प्राकृतिक समूहों अथवा समान वस्तुओं में क्रमबद्ध करने के लिए ही उपयुक्त था। इसके द्वारा विषय-वस्तु के वर्गों अथवा जाति सम्बन्ध का ही प्रदर्शन होता है। अतः इसको केवल **परम्परागत वर्गीकरण** ही कहा जा सकता है।

इस प्रकार, व्यापक अर्थों में, वर्गीकरण प्रागैतिहासिक काल से प्रचलित है तथा इसका स्वयं का दीर्घकालीन विविधतापूर्ण इतिहास रहा है। डॉ० एस० आर० रंगनाथन ने अपनी पुस्तक **वर्गीकरण एवं संचरण** (**Classification and Communication**) में वर्गीकरण शब्द के विकास को तीन सुनिश्चित अवस्थाओं में स्पष्ट किया है।

प्रथम अवस्था (प्रारम्भिक प्रयोग) : वर्गीकरण की प्राथमिक धारणा के अनुसार समस्त वास्तविक अथवा काल्पनिक वस्तु अथवा विचार को दो समूहों में विभाजित किया गया है :

समान
असमान

इसके अनुसार समस्त समान वस्तुओं को एक समूह में तथा असमान वस्तुओं को दूसरे समूह में रखा जाता है। 'समानता' एवं 'असमानता' का सिद्धान्त केवल गुण अथवा विशेषता—सरल अथवा जटिल—के सम्बन्ध में ही प्रयोग में लाया जा सकता है।

वर्गीकरण की इस धारणा के फलस्वरूप यदि समूहों की संख्या केवल दो ही होती है, तो इसे द्वैतात्मक वर्गीकरण (**Dichotomic Classification**) कहा जाता है। नागरिक एवं दास, धनी एवं निर्धन, वर्ग विशेष एवं जन समूह, पश्चिमी सभ्यता एवं पूर्वी सभ्यता आदि शायद इसी प्रारम्भिक द्वैतात्मक वर्गीकरण की देन हैं।

तथापि, मनुष्य ने शीघ्र ही यह अनुभव किया कि विचारों की सृष्टि बहुधा द्वैतात्मक को लाँघ जाती है। मनुष्य ने यह स्वीकार किया कि निश्चित गुण अथवा विशेषता, विभिन्न अंशों तक, वस्तुओं में विभक्त की जा सकती है। अन्ततः इससे असंख्य समूहों की उत्पत्ति हो सकती है।

इस प्रकार वर्गीकरण का प्रारम्भिक प्रयोग भी परम्परागत द्वैतात्मकता से दूर था। यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि वर्गीकरण शब्द का अर्थ असंख्य समूहों में विभाजन करना था, यद्यपि इसका प्रयोग आदि-मानव द्वारा सीमित अर्थों में ही किया जाता था।

द्वितीय अवस्था (सर्वमान्य प्रयोग) : इस काल में, समय के विकास के साथ, मनुष्य की पृथक्करण की क्षमता में वृद्धि हुई। इसी प्रकार के मानसिक विकास के साथ वर्गीकरण शब्द के प्रारम्भिक प्रयोग में कुछ महत्वपूर्ण सुधार हुए।

इस अवस्था में, वर्गीकरण के अन्तर्गत दो दृष्टिकोणों को सम्मिलित किया गया। दूसरे शब्दों में, प्रारम्भिक प्रयोग में विकसित प्रथम दृष्टिकोण को अधिक स्पष्ट किया गया तथा दोनों दृष्टिकोणों को एक दूसरे से मिला दिया गया। ये दोनों दृष्टिकोण निम्न थे :

प्रथम, समान एवं असमान समूहों में वर्ग-निर्माण।

द्वितीय, समूहों को एक अधिमान्य क्रम-अनुकुल क्रम-में व्यवस्थित करना।

इस प्रकार की अनुकूल व्यवस्था कुछ सिद्धान्तों पर आधारित थी।

कुछ वस्तुओं को लगभग अनुकूल क्रम में रखना अथवा विचारों का अनुकूल क्रम में वर्णन करना मनुष्य के लिए सामान्य प्रतीत होता है। दूसरे शब्दों में, किसी प्रकार की व्यवस्था करने की प्रवृत्ति मनुष्य में स्वाभाविक प्रतीत होती है। बालक अपने प्रारम्भिक जीवन में वर्ग-निर्माण प्रारम्भ कर देता है।

वास्तव में, विचारों में तीव्रता, अभिव्यक्ति में शुद्धता, उत्तर में शीघ्रता एवं सेवा में यथार्थता अन्ततः "अनुकूल क्रम" पर ही आश्रित है। डॉ० रंगनाथन के अनुसार

"वर्ग-निर्माण अथवा अनुकूल क्रम में व्यवस्थित करने की प्रवृत्ति मानव-शरीर में नाड़ी-गति की मर्यादा की सहयोगी है।" उनका कहना है कि "जिस समय गति परिमित हो जाती है उस समय निर्माण होता है। जहाँ निर्माण होता है वहाँ क्रम दृष्टिगोचर होता है। जब क्रम अनुकूल होता है, तब यह वर्गीकरण होता है।" ("When speed is finite, structure emerges; wherever there is structure, order emerges. When order is helpful, it is...classification.")

तृतीय अवस्था (ग्रन्थालय प्रयोग) : इस अवस्था में वर्गीकरण का अधिक विकास हुआ है तथा ग्रन्थालय के लिए उपयुक्त सिद्धान्त ही सम्मिलित किया गया है। दूसरे शब्दों में, इस अवस्था में ग्रन्थालय में संग्रहित पाठ्य-सामग्री के वर्गीकरण को उचित स्थान दिया गया है। इस प्रकार वर्गीकरण में निम्न तथ्यों का प्रावधान किया गया है :

प्रथम, समान एवं असमान समूहों में वर्ग-निर्माण।

द्वितीय. समूहों को एक अधिमान्य अनुकूल क्रम में व्यवस्थित करना।

तृतीय, समूहों—मुख्य वर्गों अथवा उपवर्गों—को क्रमिक-संख्या अथवा वर्गांक द्वारा निर्दिष्ट करना।

वर्गीकरण की यह अवस्था पूर्ववर्ती दोनों अवस्थाओं से पूर्णतया विपरीत है। इसी कारण इसका प्रयोग सर्वव्यापक नहीं है। समूहों को क्रमिक संख्या द्वारा अनुकूल क्रम में निर्दिष्ट करने की प्रवृत्ति मनुष्य में स्वाभाविक नहीं है।

इस अवस्था में, वर्गीकरण को पूर्णरूपेण पृथक्करण की आवश्यकता है। विषयों को प्राकृतिक भाषा के शब्दों की अपेक्षा क्रमिक संख्या द्वारा निर्दिष्ट करने के लिए मनुष्य के मस्तिष्क के बाहरी भाग में नये स्रोतों को ढूँढना होगा। वर्गों को व्यवस्थित करने के लिए प्राकृतिक भाषा के शब्दों का प्रयोग करने पर अनुकूल क्रम प्राप्त नहीं किया जा सकता है। वास्तव में, इस प्रयोग द्वारा वर्ग अत्यधिक प्रतिकूल एवं अव्यवस्थित क्रम में छिन्न-भिन्न हो जावेंगे। उदाहरणार्थ, प्राकृतिक भाषा में वर्णानुसार व्यवस्थित करने पर हमें निम्न क्रम प्राप्त होता है :

Algebra, Anatomy, Anger, Apple, Astronomy

वर्णानुसार व्यवस्थित करने पर उपरोक्त पदों का एक ही विशिष्ट विषय से सम्बन्ध स्थापित नहीं किया जा सकता।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि क्रमिक संख्या को एक अथवा अधिक प्रकार के प्रतीकों की कृत्रिम भाषा द्वारा ही निर्दिष्ट किया जाना चाहिए। कृत्रिम भाषा के निर्माण में निम्न प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग किया जा सकता है :

1 गिनती के अंक Arabic Numerals

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

2 रोमन अक्षर—(दीर्घ) Roman Capitals

A B से X Y Z

3 रोमन अक्षर—(ह्स्व) Roman Smalls

a b से x y z

4 ग्रीक अक्षर Greek letter



5 विराम-चिह्न Punctuation Marks

, ; : . '

डॉ० रंगनाथन के कथनानुसार इस भाषा के निर्माण में एक तथ्य सदा ध्यान में रखना चाहिए कि "क्रमिक संख्या की रचना इस प्रकार की जावे कि किन्हीं दो वर्गों को एक क्रमिक संख्या न दी जाय तथा अधिमान्य व्यवस्था सदा के लिए निश्चित की जाय।" इस प्रकार वर्गों को निर्दिष्ट करने के लिए संख्या का प्रयोग केवल सुविधाजनक ही नहीं है, बल्कि वर्गों की संख्या अत्यधिक होने के कारण आवश्यक भी है।

4 ग्रन्थालय वर्गीकरण की भाषा
(Definition of Library Classification)

अनादि काल से मनुष्य ने वस्तुओं को व्यवस्थित करने की विधियों में अभिरुचि दिखाई है। इस प्रकार की व्यवस्था अथवा वर्गीकरण प्रत्येक सुनियन्त्रित जीवन एवं व्यवसाय की आधार शिला है। यदि जीवन में वस्तुओं के वर्ग-निर्माण की क्षमता का अभाव है तो निस्संदेह हम जीवित नहीं रह सकते। स्मरण एवं विचार शक्ति के साथ ही वर्गीकरण की प्रवृत्ति का सृजन हुआ है। जैसे ही एक विशेष क्षेत्र में वास्तविक वस्तुओं की संख्या में वृद्धि होती है, वैसे ही उनको सजातीय समूहों में विभाजित करने तथा इन समूहों को अनुकूल क्रम में व्यवस्थित करने की इच्छा होती है। वस्तुओं को किसी प्रकार की समानता के अनुसार विभाजित कर समूहों में रखने की प्रवृत्ति जीवनपर्यन्त रहती है। मानसिक विकास होने पर वर्गीकरण का क्षेत्र वास्तविक वस्तुओं से बढ़कर व्यावहारिक विचारों की ओर विस्तृत हो जाता है। तब विचारों का विश्लेषण किया जाता है तथा उन्हें समूहों में रखकर अनुकूल क्रम में व्यवस्थित किया जाता है अर्थात् वर्ग-निर्माण होता है। इससे न केवल स्मरण-शक्ति सरल होती है, बल्कि विचार-शक्ति को सहायता मिलती है। इस प्रकार वर्गीकरण, जटिल बाहुल्य में से क्रम अथवा व्यवस्था ढूँढने की सरल विधि है।

ग्रन्थालयों में वर्गीकरण की कला ग्रन्थालय जितनी ही पुरानी है, किन्तु गत कुछ वर्षों में इस विषय को अधिक महत्व दिया जाने लगा है। ज्ञान की विभिन्न शाखाओं से सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री के अधिक संख्या में प्रकाशित होने के कारण ग्रन्थालय एवं वर्गीकरण में अधिक रुचि ली जाने लगी है। ग्रन्थालयों के दृष्टिकोण में परिवर्तन होने के फलस्वरूप वर्गीकरण की कला में परिवर्तन हुए। कुछ विशिष्ट विषयों की बहुमुखी प्रवृत्ति, विभिन्न विषयों की पारम्परिक निर्भरता एवं सम्बन्ध तथा अत्यधिक संख्या के कारण वर्गीकरण शब्द का अध्ययन अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

प्रारम्भ में, ग्रन्थालय वर्गीकरण शब्द का अर्थ ग्रन्थालय की पुस्तकों को विषयों के आधार पर किसी अनुकूल अनुक्रम में फलकों पर व्यवस्थित करने में सहायता करना था। ग्रन्थालय वर्गीकरण इस प्रकार ज्ञान की एक शाखा है, जो ज्ञान के क्षेत्र में स्वीकृत स्पष्ट अथवा सूक्ष्म एवं क्लिष्ट विशिष्ट विषयों के संगठन से सम्बन्धित है।

विशिष्ट विषयों को अनुकूल क्रम में व्यवस्थित करने की विभिन्न विधियों से भी इसका सम्बन्ध है ।

वर्तमान समय में, ग्रन्थालय वर्गीकरण का अर्थ केवल समान वस्तुओं को एक साथ रखना ही न होकर विभिन्न समूहों में तत्वों (Entities) को एकरूपता के अनुसार यांत्रिक अनुकूल क्रम में व्यवस्थित करना भी है । इस प्रकार की यांत्रिक व्यवस्था ग्रन्थालय वर्गीकरण के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है । वास्तव में ग्रन्थालय-विज्ञान का ढाँचा वर्गीकरण की नींव पर ही आधारित है । यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी की वर्गीकरण के कारण ही ग्रन्थालय-विज्ञान को 'विज्ञान' एवं 'कला' की मान्यता प्राप्त हुई है । इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए ग्रन्थालय-विज्ञान के विभिन्न विद्वानों के विचारों पर दृष्टिपात करना अत्यन्त लाभकारी होगा :

''पुस्तक वर्गीकरण अपरिवर्तित अथवा समान विषयों पर रचित पुस्तकों को एकत्रित करने का कार्य है ।'' **(कटर, सी ए)**

''पुस्तकों का वर्गीकरण ज्ञान का संगठन है ···यह विभिन्न उपयोगों एवं सम्भावी आवश्यकताओं के लिए पुस्तकों को एकत्रित एवं पुनः एकत्रित करने का कार्य है ।'' **(ब्लिस, एच ई)**

पुस्तक वर्गीकरण ''पुस्तकों को फलकों पर व्यवस्थित करना है, अथवा पुस्तकों को पाठकों के लिए अत्यधिक उपयोगी बनाने का विवरण है ।'' **(सेयर्स, डब्ल्यू सी बी)**

पुस्तक वर्गीकरण ''साहित्य में ज्ञान की खोज के लिए समय बचाने की यांत्रिक क्रिया है ।'' **(मिल, जे एस)**

वर्गीकरण ''ग्रन्थालय के संग्रह में सुरक्षित ज्ञान की कुञ्जी है । इसकी सहायता से ग्रन्थपाल फलकों पर पुस्तकों को एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित करता है तथा उनको न्यूनतम समय में पाठकों को उपलब्ध कराता है । ज्ञान को सूक्ष्मतम विषयों में वर्गीकृत करने में वर्गीकरण से सहायता प्राप्त होती है तथा वर्गीकरण अनुसंधान कार्य को गति प्रदान करता है ।'' **(जेवन्स, डब्ल्यू एस)**

पुस्तक वर्गीकरण ''पुस्तकों को उचित स्थान पर व्यवस्थित करने की कला है···अथवा मानव जीवन के विभिन्न दृष्टिकोणों को समानता या पारस्परिक सम्बन्ध के अनुसार समूहों में रखना है ।'' **(मेरिल, डब्ल्यू एस)**

''पुस्तक के विशिष्ट विषय के नाम को अधिमान्य कृत्रिम भाषा में अनुवाद करना ही ग्रन्थालय वर्गीकरण है । इसके साथ ही वर्गीकरण एक ही विशिष्ट विषय पर असंख्य पुस्तकों का पृथक्करण भी है, जो कुछ क्रमिक संख्याओं की सहायता से होता है ।'' **(रंगनाथन, एस आर)**

''समान वस्तुओं को एक साथ रखना, अथवा अधिक विस्तार में समानता एवं असमानताओं के अनुसार वस्तुओं को व्यवस्थित करना ही वर्गीकरण है ।···पुस्तक वर्गीकरण, कुछ सुधारों सहित, ज्ञान का वर्गीकरण है जो पुस्तकों के बाह्य स्वरूप के कारण आवश्यक हो गया है ।'' **(मन्न, मार्गरेट)**

उपरोक्त परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर कहा जा सकता है कि समस्त सम्बन्धित विषयों को एक वर्ग में एकत्रित करना ही वर्गीकरण है। इसके द्वारा पुस्तकों को विभिन्न समूहों में रखा जाता है। प्रत्येक समूह में, यथासम्भव, एक ही विषय से सम्बन्धित पुस्तकों को रखा जाता है। एक विषय की समस्त पुस्तकें एक स्थान पर एकत्रित कर पाठक को प्रयोग के लिए सम्बन्धित विषय सुविधापूर्वक उपलब्ध कराया जा सकता है। अधिकांश पाठक पूर्णतया प्रसूचि-कार्डों पर निर्भर न होकर पुस्तकों से सीधा सम्पर्क स्थापित करने के इच्छुक होते हैं। अतः एक वर्गीकरण प्रणाली द्वारा किसी प्रकार की सामूहिक व्यवस्था करना वांछनीय है।

यहाँ यह जान लेना भी आवश्यक है कि पुस्तकों के वर्गीकरण में तर्कशास्त्र के नियमों को आधार माना गया है। इस विचारधारा के अनुसार "वर्गीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें पदार्थ को समानता एवं असमानता के आधार पर मानसिक दृष्टि से एकत्रित किया जाता है जिससे हमारे कुछ उद्देश्य की पूर्ति हो।" इस परिभाषा में चार तथ्य स्पष्ट किये गये हैं :

1 वर्गीकरण **पदार्थ** का किया जाता है।

इस सृष्टि में जितनी भी वस्तुएँ एवं विचार हैं उन सबका सामूहिक नाम 'पदार्थ' (Substance) है तथा प्रत्येक का वर्गीकरण किया जाता है।

2 वर्गीकरण किसी **समानता** एवं **असमानता** के आधार पर किया जाता है। प्रत्येक पदार्थ में कुछ गुण अथवा विशेषता विद्यमान रहती है। इन्हीं विशेषताओं से समानता (Likeness) एवं असमानता (Unlikeness) आँकी जाती है तथा इसी के आधार पर पदार्थ को समूहों में वर्गीकृत किया जाता है।

3 वर्गीकरण एक **मानसिक** प्रक्रिया है।

पदार्थों का गुण के आधार पर वर्गीकरण किया जाना मन का एक 'भाव' है। अतः वर्गीकरण मानसिक प्रक्रिया (Mental process) द्वारा ही सम्भव है।

4 वर्गीकरण किसी न किसी **उद्देश्य** स किया जाता है।

तर्कशास्त्री पदार्थ का वर्गीकरण उसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए करते हैं। इसके विपरीत विश्व के अन्य समस्त व्यक्ति पदार्थ का वर्गीकरण अपने-अपने उद्देश्य के अनुकूल करते हैं।

5 ग्रन्थालय वर्गीकरण की आवश्यकता
(Need for Library Classification)

विषयों में विषमता, असीमित विभेद एवं जटिल सम्बन्धों के कारण पुस्तकों में भिन्नता पाई जाती है। पुस्तकें प्राचीन विषयों को पुनः प्रतिष्ठित करती हैं; वे अज्ञात एवं अपरिचित विषयों को प्रस्तुत करती हैं। प्राचीन एवं नवीन विषयों से सम्बन्धित समस्त पुस्तकों को एक सूत्र में बाँधना ग्रन्थपाल के लिए सम्भव नहीं है। तथापि इनको व्यवस्थित करना अनिवार्य है। शिक्षक एवं वैज्ञानिक इस तथ्य से सहमत हैं कि विषयवस्तु को वर्गीकृत किया जाय तथा विचारों एवं ज्ञान का संगठन किया जाय। यह संगठन क्रियात्मक एवं संरचनात्मक होना चाहिए। साथ ही इस

संगठन में एकरूपता एवं स्थिरता होनी चाहिए वरना सम्पूर्ण वैज्ञानिक एवं शैक्षणिक उपक्रम छिन्न-भिन्न हो जावेंगे।

मनुष्य की अभिरुचियों एवं कार्यकलापों के प्रत्येक क्षेत्र में विचारों एवं ज्ञान का संगठन इस समय तीव्र गति से हो रहा है। वास्तव में यह सुव्यवस्था का युग है। ज्ञान को पुस्तकों में समावेश करने एवं पुस्तकों को ग्रन्थालय में व्यवस्थित करने की दृष्टि से वर्गीकरण आवश्यक है। इसका तात्पर्य है कि पुस्तकों को सहायक क्रम में व्यवस्थित किया जाना चाहिए। अथवा यह कहा जा सकता है कि ग्रन्थालय वर्गीकरण का उद्देश्य पुस्तकों के सहायक क्रम की व्यवस्था में यांत्रिकता लाना है। उपयोग के पश्चात् पुस्तकालय में लौटाई गई पुस्तकों को ठीक स्थान पर रखना तथा नई पुस्तकें प्राप्त होने पर उनको उचित स्थान प्रदान करना भी वर्गीकरण का उद्देश्य है।

पुस्तकालय में पुस्तकें प्राप्त करते समय यदि उन्हें परिग्रहण संख्या प्रदान की जाय तथा उनका सावधानी से प्रसूचिकरण कर दिया जाय तब इनमें से किसी भी पुस्तक को किसी भी समय ढूँढ़ा जा सकता है। प्रसूचिकरण द्वारा लेखक अथवा विषय के आधार पर समस्त पाठ्य-सामग्री एक स्थान पर संग्रहित की जा सकती है। इस प्रकार का संग्रह मूल्यवान एवं दुर्लभ पुस्तकों एवं हस्तलिखित ग्रन्थों के लिए उचित है, क्योंकि ऐसा संग्रह सुरक्षित करने के लिए है तथा पाठकों एवं पुस्तकालय कर्मचारियों को इसका प्रयोग वर्जित है। इसके विपरीत जिस पुस्तकालय में अत्यधिक संख्या में पुस्तकें पाठकों के प्रयोग के लिए हों वहाँ समस्त पाठ्य-सामग्री को विषयानुसार व्यवस्थित करना अधिक हितकर एवं उपयुक्त है। एक ही विषय से सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री को एक स्थान पर व्यवस्थित करने से इसका समुचित प्रयोग किया जा सकता है।

यह निर्विवाद है कि इतिहासकार इतिहास की, गणितज्ञ गणित की तथा प्रत्येक विषय का विशेषज्ञ अपने विषय से सम्बन्धित पुस्तकों में ही रुचि रखता है। पुस्तकालय में फलकों पर व्यवस्थित पाठ्य-सामग्री में से किसी विशेष शीर्षक की खोज में जाने पर पाठक उस स्थान पर इच्छित विषय से सम्बन्धित अन्य शीर्षकों में भी अभिरुचि ले सकता है। इस प्रकार की विषयानुसार यांत्रिक अनुकूल क्रम व्यवस्था वर्गीकरण द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है।

निस्संदेह, आज इस बात को स्वीकार किया जा रहा है कि हमारे विचारों में विकास होने के कारण पाठकों को पाठ्य-सामग्री उपलब्ध कराने में वर्गीकरण का विशेष महत्व है। अब यह अनुभव किया जाने लगा है कि भूतकाल में स्थित अव्यवस्था को समाप्त कर समुचित वर्गीकरण द्वारा ग्रन्थालय की उपयोगिता में वृद्धि की जा सकती है तथा उसमें उपलब्ध पाठ्य-सामग्री का विशेषज्ञों एवं विद्वानों द्वारा सुगमतापूर्वक प्रयोग किया जा सकता है।

जिस समय से मनुष्य ने किसी प्रकार अथवा आकार में पुस्तकों को सर्वप्रथम एकत्रित करना प्रारम्भ किया उसी समय से, सम्पूर्ण विश्व में, मनुष्य पुस्तकों को सुव्यवस्थित करने की विधियों में रुचि लेने लगा था। समय-समय पर ग्रन्थालयों में पुस्तकों को वर्गों में व्यवस्थित करने के लिए विभिन्न प्रयास किए गए हैं :

(क) परिग्रहण-संख्या के अनुसार फलकों पर व्यवस्था।

(ख) पुस्तक की निर्दिष्ट विशेषता के अनुसार फलकों पर व्यवस्था, उदाहरणार्थ, पुस्तक के रंग, मूल्य, आकार आदि के अनुसार।

(ग) निर्धारित स्थिति के अनुसार व्यवस्था, उदाहरणार्थ, संख्या 14571 का अर्थ है कि पुस्तक 1 मंजिल, 4था कमरा, 5वाँ निलय (रैक), 7वाँ फलक एवं फलक पर 1 स्थान पर उपलब्ध है।

(घ) भाषा, प्रकाशन तिथि, मुद्रणालय एवं प्रकाशक के अनुसार व्यवस्था।

(ङ) लेखक अथवा शीर्षक के नाम के वर्णक्रम के अनुसार व्यवस्था।

कालान्तर में विभिन्न विषयों पर पुस्तकों के उत्पादन के कारण ग्रन्थालय में पुस्तकों की संख्या में व्यापक वृद्धि हुई। इस कारण पुस्तकों को व्यवस्थित करने की उपरोक्त प्रचलित अवैज्ञानिक एवं रूढ़िवादी विधियाँ पूर्णतया सफल नहीं हो सकीं। धीरे-धीरे, यह आवश्यक प्रतीत हुआ कि बिना किसी असुविधा के फलकों पर पुस्तकों को व्यवस्थित करने के लिए वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध प्रणाली का विकास किया जाय।

ग्रन्थालय में अधिकांश पाठकों द्वारा पाठ्य-सामग्री की माँग विषयानुसार की जाती है। अतः एक ही विषय से सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री को एक स्थान पर क्रमबद्ध करने से पाठ्य-सामग्री का समुचित प्रयोग किया जा सकता है। इस प्रकार की विषयानुसार व्यवस्था केवल वर्गीकरण द्वारा ही सम्भव हो सकती है। अतः स्पष्ट है कि वर्गीकरण का प्रमुख उद्देश्य पाठ्य-सामग्री को अत्यधिक सुविधाजनक क्रम में व्यवस्थित कर पाठकों को उपलब्ध कराना है।

ग्रन्थालय-विज्ञान के अनेक विद्वानों एवं लेखकों ने वर्तमान युग के विभिन्न ग्रन्थालयों में ग्रन्थालय वर्गीकरण की आवश्यकता एवं पुस्तक वर्गीकरण के उद्देश्यों की प्रामाणिकता पर अपने विचार व्यक्त किए हैं।

सेवेज (ई)—

"पाठकों एवं ग्रन्थालय-कर्मचारियों के लिए पुस्तकों की सुविधाजनक क्रमबद्ध व्यवस्था ही ग्रन्थालय-वर्गीकरण का प्रमुख उद्देश्य है।"

उपरोक्त दृष्टिकोण से वर्गीकरण के निम्न उद्देश्य हैं :

(अ) विस्तृत एवं सूक्ष्म विचारों की पुस्तकों को समुचित एवं यांत्रिक क्रम में व्यवस्थित करना,

(आ) पुस्तकों को पुनः व्यवस्थित करना,

(इ) भविष्य में प्राप्त पुस्तकों को अन्तर्वेश करना,

(ई) पाठकों तथा पुस्तकों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करना अथवा पाठकों को उसकी रुचि के अनुसार पाठ्य-सामग्री प्राप्त करने में सहायता देना।

(एक पाठक बिना पुस्तक के जीवित रह सकता है किन्तु बिना पाठक के पुस्तक का अन्त हो जावेगा।)

सेयर्स (डब्ल्यू सी बर्विक)—

"ग्रन्थालय की आधारशिला पुस्तकें हैं; ग्रन्थालय-प्रशिक्षण की आधारशिला

वर्गीकरण है। वर्गीकरण के अभाव में कोई भी ग्रन्थालय व्यवस्थित ग्रन्थालय की रचना नहीं कर सकता। किसी भी ग्रन्थालय में समुचित वर्गीकरण के बिना मुक्त-प्रवेश व्यवस्था असम्भव है। समुचित पुस्तकों की अवर्गीकृत व्यवस्था में पाठक पथ-भ्रष्ट हो सकता है तथा वर्गीकरण के अभाव में निष्फल परिणाम निकलते हैं।''

ग्रन्थालय में वर्गीकरण का प्रयोग करने पर—

(अ) समान पुस्तकें एक स्थान पर एकत्रित की जा सकती हैं,

(आ) पुस्तकों को खोजने में समय की बचत होती है,

(इ) पुस्तक संग्रह की सबलता एवं निर्बलता का रहस्योद्घाटन होता है,

(ई) सुव्यवस्थित, व्यापक एवं एकरूप पुस्तक-चयन में सहायता मिलती है।

रिचार्डसन (ई सी)—

''पुस्तकों को प्रयोगार्थ संग्रहित किया जाता है; उनकी व्यवस्था प्रयोगार्थ है तथा प्रयोग ही (ग्रन्थालय) वर्गीकरण का उद्देश्य है।''

फिलिप्स (डब्ल्यू एच)—

''ग्रन्थालय का अस्तित्व पुस्तकों के लिए है तथा उसके संग्रह की व्यवस्था शीघ्र एवं प्रभावकारी सेवा प्रदान करने के लिए की जानी चाहिए।''

कीले (ग्रेस ओ)—

ग्रन्थालय में वैज्ञानिक वर्गीकरण द्वारा निम्न उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है—

(अ) पुस्तकों को एक ऐसे क्रम में व्यवस्थित कर देता है, जिससे पाठकों एवं कर्मचारियों को पाठ्य-सामग्री के आदान-प्रदान में सुविधा होती है तथा साथ ही समय की बचत होती है।

(आ) इससे सुसंगठित समूहों में पुस्तकों का समावेश करने में सुविधा होती है। इसके द्वारा पुस्तकों को अपने सम्बन्धित स्थान पर वापस रखने में भी सुविधा होती है।

(इ) यह पुस्तकों के चयन तथा संग्रह से पुस्तकों के प्रत्याहरण करने में सहायक होता है।

(ई) इसके द्वारा पुस्तकों के संग्रह को उत्तम ढंग से प्रदर्शित किया जा सकता है।

रंगनाथन (एस आर)—

ग्रन्थालय वर्गीकरण का तात्पर्य विषयों एवं पुस्तकों को कुछ विशिष्ट उद्देश्यों के लिए क्रमिक संख्या में परिवर्तित किया जाता है। ये उद्देश्य निम्नांकित हैं :

(अ) ग्रन्थालय में उपलब्ध किसी पुस्तक की पाठक द्वारा माँग की जाने पर उसका अतिशीघ्र स्थान निर्धारित किया जा सके।

(अ) पाठक द्वारा पुस्तक को लौटाने पर उसे निर्धारित स्थान पर रखा जा सके ।

(इ) ग्रन्थालय में नवीन पुस्तक की प्राप्ति पर उसे विषय से सम्बन्धित अन्य पुस्तकों में स्थान प्रदान किया जा सके ।

(ई) ग्रन्थालय में किसी नवीन विषय पर प्रथम पुस्तक की प्राप्ति पर उसे अन्य विषयों से सम्बन्धित विषय के साथ रखा जा सके ।

⊙

चतुर्थ अध्याय

वर्गीकरण के उपसूत्र

(Canons for Classlfication)

वर्गीकरण की विभिन्न पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन निश्चित उपसूत्रों की पृष्ठभूमि में ही किया जा सकता है। डॉ० रंगनाथन द्वारा अपनी पुस्तक **'प्रोलेगोमेना'** में वर्णित उपसूत्र वर्गीकरण पद्धति के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। इनसे किसी वर्गीकरण पद्धति की कार्यकुशलता अथवा निष्फलता का मूल्यांकन किया जाता है। इन उपसूत्रों का कसौटी के रूप में प्रयोग होता है। एक स्वर्णकार धातु की विशेषता का मूल्यांकन उसे कसौटी पर रगड़कर कर सकता है। धातु में अशुद्धि की जानकारी प्राप्त करने के लिए वह स्वयं द्वारा अथवा दूसरों से ज्ञात दक्षता एवं विधियों का सूक्ष्मता से प्रयोग करता है। इसके पश्चात् वह धातु की अशुद्धि को अलग कर उसे अधिक पवित्र बना सकता है। इसी प्रकार एक वर्गाचार्य अर्थात् वर्गीकरण पद्धति का रचयिता भी वर्गीकरण के उपसूत्रों का अनुसरण कर वर्गीकरण की पद्धति को सन्तोषप्रद बना सकता है।

वर्गीकरण के उपसूत्रों को डब्ल्यू सी बरविक सेयर्स, ई सी रिचार्डसन एवं हेनरी ई० ब्लिस ने प्रतिपादित किया था। डॉ० रंगनाथन ने इन उपसूत्रों का आलोचनात्मक अध्ययन किया तथा 1937 में अपनी पुस्तक **प्रोलेगोमेना** की रचना की। "वर्गीकरण के उपसूत्रों" वाक्यांश का आविष्कार डब्ल्यू सी बरविक सेयर्स ने किया था।

1 उपसूत्रों के वर्ग
(Groups of Canons)

वर्गीकरण पद्धति में सन्निहित छः धारणाओं के वर्गीकरण के उपसूत्रों को छः प्रमुख वर्गों में रखा जा सकता है। छः धारणाएँ निम्न हैं :

1 विशेषता (Characteristic)
2 वर्ग-विन्यास (Array of Classes)
3 शृंखला (Chain of Classes)
4 संसर्ग-अनुक्रम (Filiatory Sequence)
5 पारिभाषिक शब्दावली (Terminology)
6 अंकन (Notation)

उपरोक्त धारणाओं में से प्रथम चार भावना-क्रम (Idea plane) में निहित अथवा मूलभूत हैं। शब्दावली की धारणा शाब्दिक-क्रम (Verbal plane) तथा अंकन की धारणा अंकन-क्रम (Notational plane) से सम्बन्धित हैं। वर्गीकरण पद्धति में वर्गों को निश्चित शब्दों से निर्दिष्ट किया जाता है, अतः शब्दावली की आवश्यकता होती है। वर्गों को क्रम में व्यवस्थित करने के लिए नियत क्रम-संख्या की आवश्यकता है। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक वर्ग को क्रम संख्या प्रदान कर वर्गों की व्यवस्था को यन्त्रयुक्त कर दिया जाता है। यन्त्रयुक्त करने का अर्थ अपने पारंपरिक सम्बन्ध में वर्गों के गहनता अथवा विस्तार को याद रखने अथवा समझने की आवश्यकता को समाप्त करना है।

उपरोक्त धारणाओं से सम्बन्धित उपसूत्रों को निम्न तालिका में स्पष्ट किया जा सकता है :

1 **विशेषता** (Characteristics)

- 1 पृथक्करण **Differentiation**
- 2 संलग्नता **Concomitance**
- 3 सम्बद्धता **Relevance**
- 4 निर्धार्यता **Ascertainability**
- 5 स्थायित्व **Permanance**
- 6 सम्बद्ध अनुक्रम **Relevant Sequence**
- 7 अनुरूपता **Consistency**

2 **वर्ग-विन्यास** (Array of Classes)

- 1 निःशेषता **Exhaustiveness**
- 2 पृथकत्व **Exclusiveness**
- 3 सहायक अनुक्रम **Helpful Sequence**
- 4 अनुरूप अनुक्रम **Consistent Sequence**

3 **वर्ग-शृंखला** (Chain of Classes)

- 1 विस्तार-ह्रास **Decreasing Extension**
- 2 समावेशकता **Modulation**

4 **संसर्ग-अनुक्रम** (Filiatory Sequence)

- 1 अधीनस्थ वर्ग **Subordinate Class**
- 2 समकक्ष वर्ग **Co-ordinate Class**

5 **पारिभाषिक शब्दावली** (Terminology)

- 1 प्रचलन **Currency**
- 2 संयतता **Reticence**
- 3 परिगणन **Enumerative**
- 4 प्रसंग **Context**

6 **अंकन** (Notation)

- 1 सापेक्षता **Relativity**

2 अभिव्यंजकता Expressiveness
3 मिश्रित अंकन Mixed Notation

2 विशेषता सम्बन्धी उपसूत्र
(Canons for Charecteristics)

यह स्पष्ट किया जा चुका है कि इस सृष्टि में उपलब्ध समस्त वस्तुओं (Things) एवं विचारों (Concepts) का वर्गीकरण किया जा सकता है। समस्त वस्तुओं एवं विचारों का सामूहिक नाम पदार्थ (Substance) है। इन पदार्थों को स्वयं जानने एवं दूसरों को समझाने के लिए उनके विभिन्न रूपों के अनुसार उनके नाम रखे जाते हैं। पदार्थों में निहित गुणों के आधार पर उन्हें पृथक् किया जा सकता है। इन्हीं गुणों अथवा विशेषताओं से ही समानता एवं असमानता आँकी जाती है। इसी को इस पदार्थ की विशेषता (Characteristic) कहा जाता है।

डॉ० रंगनाथन के अनुसार विशेषता सम्बन्धी निम्न सात उपसूत्र हैं :

1 पृथक्करण (Differentiation)
2 संलग्नता (Concomitance)
3 सम्बद्धता (Relevance)
4 निर्धार्यता (Ascertainability)
5 स्थायित्व (Permanance)
6 सम्बद्ध अनुक्रम (Relevant Sequence)
7 अनुरूपता (Consistency)

उपर्युक्त उपसूत्रों की व्याख्या कर उन्हें स्पष्ट किया जा सकता है।

1 **पृथक्करण** (Differentiation) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है—"प्रत्येक प्रयुक्त विशेषता को पृथक् करना चाहिए।" दूसरे शब्दों में, वर्गीकरण करने के लिए प्रयुक्त विशेषता में पदार्थ को कम से कम दो भागों में बाँट सकने की क्षमता होनी चाहिए। सेयर्स महोदय का कथन है कि "वर्गीकरण विज्ञान के समूहों अथवा ज्ञान के प्रमुख क्षेत्रों को मुख्य वर्गों (अथवा विभागों) में एकत्रित करने में अग्रसर होता है।...इस प्रकार के वर्ग व्यापक विस्तार एवं सीमित गहनता वाले होते हैं। प्रत्येक मुख्य वर्ग में प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है तथा इस प्रकार उपवर्ग अथवा विभागों का निर्माण होता है......इसके लिए पृथक् करने की विशेषता समानता है जिसके आधार पर प्रत्येक विभाग में वस्तुओं को रखा जाता है। प्रत्येक वर्ग पुन: पृथक् करने की विशेषता के आधार पर उप-विभागों की रचना करता है जब तक कि अतिरिक्त उप-विभागों की रचना असम्भव हो जाती है।

उदाहरण : यदि किसी कक्षा में स्थित विद्यार्थियों को विभाजित करने के लिए 'शैक्षणिक योग्यता' को विभाजक विशेषता के रूप में चुना जाय तो शैक्षणिक योग्यता के आधार पर एक से अधिक वर्ग बन सकेंगे :

1 स्नातकोत्तर　　　　2 स्नातक

1 कला, 2 विज्ञान, 3 वाणिज्य

परन्तु यदि समस्त विद्यार्थी समान शैक्षणिक योग्यता के हैं तो इसके आधार पर विद्यार्थियों को पृथक् नहीं किया जा सकता है। ऐसी दशा में यहाँ किसी अन्य विशेषता को चुनना पड़ेगा।

डॉ० रंगनाथन ने अपनी द्विविन्दु वर्गीकरण पद्धति में प्रत्येक वर्ग के विभाजन के लिए पृथक् करने की विशेषता का उचित ढंग से प्रयोग किया है। वास्तव में द्विविन्दु वर्गीकरण के प्रत्येक मुख्य वर्ग (**Main Class**) की अनुसूची के प्रारम्भ में विषय के उप-विभागों के लिए प्रयुक्त विशेषताओं की क्रमबद्ध शृंखला का उल्लेख किया है। प्रत्येक विशेषता के प्रयोग के लिए प्रथम भाग में आवश्यक निर्देश भी दिये गए हैं।

उदाहरण : **मुख्य वर्ग** इतिहास में विषयों के उप-विभागों के लिए पाँच **विशेषताओं का प्रयोग** किया जा सकता है :

V [P], [P2] : [E] [2P] '[T]

उपर्युक्त पक्ष-परिसूत्र (**Facet. Formula**) के अन्तर्गत (**P**) पक्ष में 'स्थान' अथवा भूखण्ड विशेषता (**Community characteristic**) के आधार पर विभागों का निर्माण किया गया है :

V1 विश्व का इतिहास
V44 भारत का इतिहास
V56 इंगलैण्ड का इतिहास

उपर्युक्त विभाग विभिन्न भूखण्ड के कारण एक दूसरे से भिन्न हैं। इस प्रकार "स्थान" भूखण्ड पृथक् करने की विशेषता है।

पक्ष [P2] में "संवैधानिक अंग" विशेषता (**Constitutional Organ Characteristic**) का प्रयोग कर उपविभागों का निर्माण किया है।

V, 11 राज्य का अध्यक्ष
V, 21 देश का प्रधानमन्त्री

उपर्युक्त विभागों में "अंग" पृथक् करने की विशेषता है।

2 **संलग्नता** (Concomitance) : इस शब्द से तात्पर्य है कि सम्मिलिन अथवा सहमति अर्थात् एक ही साथ तथा समय में होने की अवस्था। इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है "दो विशेषताएँ संलग्न नहीं होनी चाहिए।" दूसरे शब्दों में, दो विशेषताओं द्वारा विषय को समान विभागों में विभाजित नहीं किया जाना चाहिए। यदि दो विशेषताओं के आधार पर निर्मित वर्ग एक ही हों तो इस प्रकार की सहयोगी विशेषताओं का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

उदाहरण : यदि किसी कक्षा में विद्यार्थियों को "आयु" एवं जन्मतिथि के आधार पर विभाजित किया जाय तो दोनों विभाग एक ही होंगे। इसी प्रकार किसी पुस्तक की प्रथम प्रकाशन तिथि एवं प्रथम संस्करण विशेषता को पुस्तकों के वर्गीकरण के लिए प्रयोग में नहीं लेना चाहिए। दोनों विशेषताओं से एक ही विभागों का निर्माण होगा।

3 **सम्बद्धता** (Relevance) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है—"प्रत्येक विशेषता वर्गीकरण के उद्देश्य से सम्बद्ध होनी चाहिए।" इस

उपसूत्र को भी सेयर्स ने अनिवार्य विशेषता का सिद्धान्त कहा है तथा इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया है—"वर्गीकरण पद्धति के उद्देश्य के लिए अत्यन्त उपयोगी विशेषता को अनिवार्य विशेषता कहा जाता है।"

उदाहरण : यदि कक्षा में स्थित विद्यार्थियों का विभाजन शिक्षा के उद्देश्य से करना हो तो मातृभाषा, बुद्धिमत्ता एवं शैक्षणिक योग्यता आदि विशेषताओं से सम्बद्ध होंगे। ऊँचाई, वेषभूषा एवं रहन-सहन आदि विशेषताओं के रूप में सम्बद्ध नहीं होंगे।

इसी प्रकार शारीरिक खेल-कूद के उद्देश्य से यदि कक्षा में स्थित विद्यार्थियों का विभाजन करना हो तो ऊँचाई, शारीरिक शक्ति एवं आयु विशेषताओं से सम्बद्ध होंगे। शैक्षणिक योग्यता एवं बुद्धिमत्ता आदि विशेषताओं के रूप में सम्बद्ध नहीं होंगे।

द्विबिन्दु अथवा दशमलव पद्धतियों में इस उपसूत्र के उल्लंघन का कोई उदाहरण नहीं है। पद्धतियों द्वारा समस्त विशेषताओं का प्रयोग वर्गीकरण के उद्देश्य से सम्बद्ध है।

उदाहरण : भाषा विज्ञान मुख्य वर्ग में दोनों पद्धतियों द्वारा इस उपसूत्र का पालन किया है। भाषा विशेषता के आधार पर ही मूलभूत विभागों को प्राप्त किया गया है। भाषा के आधार पर किए गए कुछ विभाग इस प्रकार हैं :

	द्विबिन्दु	दशमलव
P 111	आंग्ल भाषा	420
P 122	फ्रेंच भाषा	440
P 15	संस्कृत भाषा	491.2

4 निर्धार्यता (Ascertainability) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है—"प्रत्येक विशेषता पूर्णरूपेण निर्धार्य होनी चाहिए।" यदि यह कसौटी पर असफल रही तो इस विशेषता का प्रयोग दुष्कर हो जाएगा।

उदाहरण : यदि व्यक्तियों को विभागों में विभाजित करने के लिए "मृत्यु तिथि" विशेषता का प्रयोग किया जाए तो हमारे लिए यह दुष्कर है, क्योंकि उन सभी व्यक्तियों की मृत्यु तिथि को निर्धारित करना सम्भव नहीं है। अतः यह पूर्णरूपेण निर्धार्य विशेषता नहीं है।

दशमलव पद्धति में साहित्यिक पुस्तकों का विभाजन करने के लिए 'उच्च लेखक' एवं 'निम्न कोटि के लेखक' को विशेषता के रूप में लिया गया है। किन्तु किसी लेखक को 'उच्च कोटि' का अथवा 'निम्न कोटि' की श्रेणी में रखना आसान नहीं है। जो लेखक आज निम्न कोटि का माना जाता है वह कल उच्च कोटि की श्रेणी में रखा जा सकता है। इस प्रकार किसी लेखक का महत्व किसी समय निर्धार्य नहीं है। इसके विपरीत द्विबिन्दु पद्धति में उक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए लेखक की 'जन्म-तिथि' को विशेषता के रूप में प्रयुक्त किया है। यह विशेषता निर्धार्य है।

5 स्थायित्व (Permanance) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है—"प्रत्येक विशेषता को उस समय तक स्थायी एवं निश्चित रहना चाहिए जिस समय तक वर्गीकरण के उद्देश्य में परिवर्तन नहीं हुआ है।" इस उपसूत्र का

पालन नहीं करने पर एवं विशेषता में परिवर्तन करने पर विभागों में परिवर्तन हो जाएगा तथा अव्यवस्था हो जाएगी।

उदाहरण : पत्रिकाओं के क्षेत्र में उनके निम्न दो वर्गों में विभाजित करने की परम्परा रही है :

1 विद्वत् परिषद् द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ,

2 अन्य (विद्वत् परिषद् द्वारा प्रकाशित नहीं होने वाली पत्रिकाएँ)

ग्रन्थालयों में इस आधार पर पत्रिकाओं को विभाजित करने पर कुछ कठिनाई हो गई है क्योंकि पत्रिकाओं के प्रकाशन में बहुधा परिवर्तन होने की सम्भावना रहती है। उदाहरणार्थ "दि जर्नल आफ इण्डियन बोटैनी" नामक अंग्रेजी भाषा की पत्रिका का प्रकाशन एक वैयक्तिक संस्था द्वारा मद्रास में 1919 ई० में प्रारम्भ हुआ था। किन्तु 1921 ई० में 'बोटैनिकल सोसायटी' की स्थापना होने पर उक्त पत्रिका का प्रकाशन (तृतीय वर्ष के द्वितीय अंक से) सोसायटी के मुख्यपत्र के रूप में होने लगा। इस प्रकार ग्रन्थालयों में पत्रिकाओं के विभाजन में एक ही स्थायी विशेषता का प्रयोग करना चाहिए। द्विबिन्दु पद्धति में पत्रिकाओं के विभाजन के लिए उपरोक्त विशेषता स्वीकार न कर एक ही वर्ग में व्यवस्थित करने का निर्देश दिया गया है जिससे स्थायित्व बना रहे। इस पद्धति में विद्वत् परिषद् को महत्व न देकर पत्रिका की पोषण-संस्था के स्थान एवं संस्था की स्थापना अथवा पत्रिका के प्रथम प्रकाशन के वर्ष के आधार पर विभिन्न पत्रिकाओं को विभाजित किया गया है।

6 **सम्बद्ध अनुक्रम** (Relevent Sequence) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है—"वर्गीकरण पद्धति की विशेषताओं का प्रयोग वर्गीकरण के उद्देश्य से सम्बन्ध अनुक्रम में होना चाहिए।"

उदाहरण : दशमलव एवं द्विबिन्दु पद्धतियों में साहित्य का वर्गीकरण करने के लिए प्रयुक्त विशेषताओं को इसी उपसूत्र के आधार पर निश्चित किया गया है। दशमलव में भाषा, रूप, काल एवं ग्रन्थकार विशेषता का अनुक्रम निश्चित किया गया है जो वर्गीकरण के उद्देश्य से सम्बद्ध है। इसी प्रकार द्विबिन्दु पद्धति में भाषा, रूप, ग्रन्थकार एवं कृति विशेषताओं का अनुक्रम वर्गीकरण के उद्देश्य से सम्बद्ध करने के कारण ही निश्चित किया गया है। वर्गाचार्यों के दृष्टिकोण से दोनों में अनुक्रमता है।

इसी प्रकार द्विबिन्दु पद्धति में जीवशास्त्र एवं चिकित्साशास्त्र दोनों विषयों में 'अंग' एवं 'समस्या' दोनों विशेषताओं के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है, किन्तु दोनों विशेषताओं का अनुक्रम दोनों विषय में निर्धारित है। जीवशास्त्र में पहले 'समस्या' एवं उसके बाद 'अंग' तथा चिकित्साशास्त्र में पहले 'अंग' एवं उसके बाद 'समस्या' विशेषताओं का अनुक्रम निश्चित किया गया है। इन विशेषताओं के अनुक्रम में भिन्नता दोनों विषयों के वर्गीकरण के उद्देश्य के अनुकूल है।

7 **अनुरूपता** (Consistency) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है—"पद्धति में निश्चित विशेषताओं के अनुक्रम में अनुरूपता का दृढ़तापूर्वक पालन किया जाना चाहिए।" इस उपसूत्र के अनुसार प्रयुक्त विशेषताओं एवं उनके

प्रयोगार्थ निश्चित अनुक्रम दोनों में ही अनुरूपता होना अनिवार्य है। यह स्पष्ट है कि अनुरूपता के अभाव में अव्यवस्था उत्पन्न हो जायेगी तथा वर्गीकरण का उद्देश्य व्यर्थ हो जायेगा। एक बार विशेषता के विषय में निर्णय लेने के पश्चात् उससे विचलित होना उचित नहीं है।

उदाहरण : दशमलव पद्धति में इतिहास के वर्गीकरण में भौगोलिक एवं कालक्रम को विशेषताओं के रूप में चुना गया है। इन दोनों विशेषताओं का उसी क्रम से आद्योपान्त दृढ़तापूर्वक पालन किया गया है। दूसरी ओर द्विबिन्दु पद्धति में इतिहास के ही लिए दो की अपेक्षा चार विशेषताओं को चुना गया है : 1—भौगोलिक, 2—सांविधानि अंग, 3—समस्या एवं 4—कालक्रम। इन चारों का अनुक्रम निर्दिष्ट कर उनका पालन किया गया है।

इस प्रकार किसी भी पद्धति के निर्दिष्ट अनुक्रम को बदलना उचित नहीं है। ऐसा करने पर अनुरूपता नष्ट हो जायेगी।

3 वर्ग-विन्यास सम्बन्धी उपसूत्र
(Canons for Arrays of Classes)

"एक विशेषता के आधार पर वर्गों से प्राप्त तथा अपनी महत्ता के अनुसार आपस में क्रम से व्यवस्थित अनुक्रम को वर्ग-विन्यास कहते हैं।"

दशमलव एवं द्विबिन्दु पद्धति में मुख्य वर्गों (Main class) को प्रथम क्रम का वर्ग-विन्यास कहा जाता है। प्रत्येक मुख्य वर्ग की महत्ता इन पद्धतियों के लेखकों द्वारा स्वयं द्वारा संकलित कुछ सिद्धान्तों के आधार पर निश्चित की जाती है। दोनों पद्धतियों में विभिन्न क्रम के वर्ग-विन्यास को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है।

1 प्रथम क्रम के वर्ग-विन्यास (Arrays of the first order) निम्न हैं :

दशमलव	द्विबिन्दु
0 विविध (Generalia)	z विविध (Generalia)
1 दर्शनशास्त्र (Philosophy)	A प्राकृतिक शास्त्र (Natural-Sciences)
2 धर्मशास्त्र (Religion)	B गणित (Mathematics)
3 सामाजिक शास्त्र (Social-Sciences)	C भौतिकी (Physics)
4 भाषा विज्ञान (Linguistics)	R दर्शनशास्त्र (Philosophy)

2 उपर्युक्त प्रत्येक वर्गों के विभाग द्वितीय-क्रम के विभिन्न वर्ग-विन्यासों का निर्माण करते हैं। उदाहरणार्थ, दर्शनशास्त्र के अन्तर्गत निम्न विन्यास हैं :

दशमलव	द्विबिन्दु
11 आत्मज्ञान (Metaphysics)	R1 तर्कशास्त्र (Logic)
12 आत्मज्ञान सम्बन्धी सिद्धान्त (Metaphysics theories)	R2 ज्ञानशास्त्र (Epistemology)

13 मनोविज्ञान के क्षेत्र (Field of Psychology) R3 आत्मज्ञान (Metaphysics)

3 उपर्युक्त द्वितीय क्रम के वर्ग-विन्यासों को पुनः विभाजित किया जा सकता है। इस विभाजन से तृतीय क्रम के वर्ग-विन्यासों का निर्माण होता है। उदाहरणार्थ, आत्मज्ञान विभाग के अन्तर्गत निम्न वर्ग-विन्यास हैं :

दशमलव	द्विबिन्दु
111 सत्व विद्या (Ontology)	R 32 आदर्शवाद एवं यथार्थवाद (Idealism and Realism)
112 क्रमविद्या (Methodology)	R 33 भौतिकवाद (Materialism)
113 विश्व विज्ञान (Cosmology)	R 34 बुद्धिवाद (Rationalism)

डॉ० रंगनाथन के अनुसार वर्ग-विन्यास से सम्बन्धित निम्न चार उपसूत्र हैं।

1 निःशेषता (Exhaustiveness)
2 पृथकत्व (Exclusiveness)
3 सहायक अनुक्रम (Helpful Sequence) 1989
4 अनुरूप अनुक्रम (Consistent Sequence)

1 **निःशेषता** (Exhaustiveness) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है—"वर्गों के प्रत्येक वर्ग-विन्यास में विभाज्य वर्ग अपने सामान्य तात्कालिक ज्ञानजगत में पूर्णरूप से निःशेष हो जाना चाहिए।"

इस उपसूत्र के अनुसार तात्कालिक ज्ञान-जगत में सम्मिलित प्रत्येक सत्व को तात्कालिक ज्ञान-जगत में से उत्पन्न वर्ग-विन्यास में स्थान प्राप्त होना चाहिए। कोई सत्व शेष नहीं रहना चाहिए। यह सदैव सम्भव है।

उदाहरण : दशमलव पद्धति में अनेक मुख्य वर्गों, विभागों एवं उपविभागों में अवशिष्ट सत्वों को स्थान प्रदान करने के लिए "अन्य" वर्ग-विन्यास की आयोजना कर निःशेषता की व्यवस्था की गई है।

वर्गों में (द्वितीय क्रम के वर्ग-विन्यास)

290 गैर इसाई धर्म (Non-Christian Religions)
490 अन्य भाषाएँ (Other languages)
890 अन्य भाषाओं का साहित्य (Literature of other languages)

विभागों में (तृतीय क्रम के वर्ग-विन्यास)

039 अन्य सामान्य विश्वकोष (Other general encyclopaedia)
049 अन्य सामान्य संकलित निबन्ध (Other general collected essays)
059 अन्य सामान्य पत्रिकाएँ (Other general periodicals)

द्विबिन्दु पद्धति में निम्न प्रक्रियाओं द्वारा वर्ग-विन्यास को पूर्णतया अवाधित रखा गया है :

1 अष्टक प्रक्रिया (Octave device/Sector Principle)
2 विषय प्रक्रिया (Subject device)

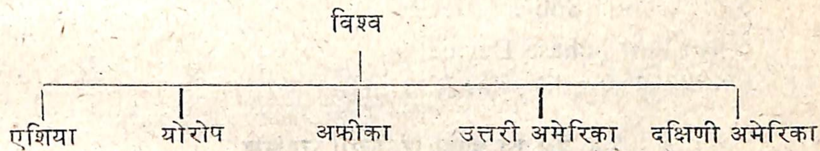
3 कालक्रमिक प्रक्रिया (Chronological device)
4 भौगोलिक प्रक्रिया (Geographical device)
5 वर्णानुक्रमिक प्रक्रिया (Alphabetical device)

उपर्युक्त प्रक्रियाओं का प्रयोग करने के फलस्वरूप किसी सत्व के लिये अवर्गीकृत अवस्था में रह जाना सम्भव नहीं है।

2 पृथकत्व (Exclusiveness) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है, "वर्गों के वर्ग-विन्यास में समस्त वर्ग आपस में एक दूसरे से पृथक् होने चाहिये।"

इस उपसूत्र के अनुसार तात्कालिक ज्ञान-जगत में सम्मिलित कोई भी सत्व एक वर्ग-विन्यास के अतिरिक्त अन्य किसी से सम्बन्धित नहीं होना चाहिये। दूसरे शब्दों में वर्ग-विन्यास के दो वर्गों में पुनरुक्ति नहीं होनी चाहिये। ऐसा तभी सम्भव हो सकता है जब एक समय में एक ही विशेषता के आधार पर तात्कालिक ज्ञान-जगत से वर्ग-विन्यास के वर्गों को निर्मित किया जाए।

उदाहरण : द्विबिन्दु पद्धति में भौगोलिक आधार पर "विश्व" मुख्य वर्ग के वर्ग-विन्यास निम्न प्रकार किए गए हैं। ये सभी एक दूसरे से पृथक् हैं :



3 **सहायक अनुक्रम** (Helpful Sequence) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है, "किसी भी वर्ग-विन्यास में वर्गों का अनुक्रम सहायक होना चाहिये। यह अनुक्रम नियम विरुद्ध न होकर किसी अनुकूल सिद्धान्त के अनुसार होना चाहिये, जब तक कि उस सिद्धान्त के अनुसरण करने से अपेक्षाकृत अधिक मुख्य विशेषताओं का उल्लंघन न होता हो।

यह उपसूत्र वर्गीकरण का मूलभूत एवं अत्यधिक आवश्यक उपसूत्र माना गया है। डॉ० रंगनाथन ने वर्गों के अनुक्रम को निश्चित करने के लिए विभिन्न प्रकार के सिद्धान्तों की ओर संकेत किया है। ये सिद्धान्त निम्न प्रकार हैं :

1 परिणाम वृद्धि (Increasing Quantity)
2 परिवर्ती काल (Later-in-time)
3 परिवर्ती विकास (Later-in-evolution)
4 स्थानीय समीपता (Spatial contiguity)
5 जटिलता वृद्धि (Increasing complexity)
6 स्थूलत्व वृद्धि (Increasing concreteness)
7 परम्परागत अनुक्रम (Canonical sequence)

4 **अनुरूप अनुक्रम** (Consistent Sequence) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है, "जब विभिन्न वर्ग-विन्यासों में समस्त वर्ग उद्भूत हों तो

इस प्रकार के सब वर्ग-विन्यासों में उनका अनुक्रम समानान्तर होना चाहिए, जब तक कि इस समानान्तर अनुसरण से अन्य किन्हीं मुख्य सिद्धान्तों का विरोध नहीं होता है।"

इस उपसूत्र का अनुसरण समय की बचत करने में तथा मानसिक शक्ति में सहायक होगा। इससे वर्गाचार्य एवं वर्गाकार दोनों की स्मृति पर भार कम होगा।

उदाहरण : दशमलव पद्धति में भौगोलिक विभागों (Geographical Divisions) एवं रूप विभागों (Form Divisions) का क्रम आद्योपान्त वैसा ही रखा गया है जैसा कि वहाँ आवश्यक समझा गया है।

376.9 अन्य देशों में स्त्री शिक्षा

376.94 "940-999 की भाँति विभाजित कीजिए"

द्विबिन्दु पद्धति में इस उपसूत्र का पालन करने के लिए विभिन्न विधियों का प्रयोग किया गया है :

1 सामान्य-एकल विधि (Common Isolate Device)
2 कालक्रमिक विधि (Chronological Device)
3 भौगोलिक विधि (Geographical Device)
4 पक्ष विधि (Facet Device)
5 विषय विधि (Subject Device)
6 दशा विधि (Phase Device)

इन विधियों का वर्णन अन्यत्र किया जा रहा है।

34 वर्ग शृंखला सम्बन्धी उपसूत्र
(Canons for chains of classes)

किसी भी वर्ग में अपने तात्कालिक ज्ञान-जगत से निर्मित वर्गों के अनुक्रम को शृंखला कहते हैं। सम्बन्धित वास्तविक ज्ञान-जगत के किसी भी स्तर पर शृंखला का निर्माण किया जा सकता है।

शृंखला के इस गुण को स्पष्ट करने के लिए निम्न विषय लिया जा सकता है :

शासकीय बांड से प्राप्त आय पर कर-मुक्ति

यह विषय एक शृंखला की अंतिम कड़ी का निर्माण करता है। इस शृंखला को द्विबिन्दु एवं दशमलव के वर्ग क्रमांक सहित निम्न रूप में स्पष्ट किया जा सकता है :

द्विबिन्दु	विषय	दशमलव
X	अर्थशास्त्र	330
X7	सार्वजनिक अर्थकोश	336
X72	कर लगाना	336.2
X724	आयकर	336.24
X7242	शासकीय बांड से प्राप्त आय पर कर	?
X7242:2	शासकीय बांड से प्राप्त आय पर कर-मुक्ति	?

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि द्विबिन्दु पद्धति इस श्रृंखला में प्रत्येक वर्ग को अपने वर्गांकों द्वारा प्रतिनिधित्व करने में सफल रही है। इसके विपरीत दशमलव पद्धति अंतिम दो वर्गों को वर्गांक देने में सक्षम नहीं है। इस उदाहरण में श्रृंखला X अर्थशास्त्र से प्रारम्भ होकर अंत में वर्णित वर्ग X7242:2 शासकीय बांड से प्राप्त आय पर कर-मुक्ति पर समाप्त होती है। इस प्रकार इस श्रृंखला में कोई भी दो वर्ग समान क्रम के नहीं हैं।

डॉ० रंगनाथन के अनुसार वर्ग-श्रृंखला से सम्बन्धित निम्न दो उपसूत्र हैं :

1 विस्तार-ह्रास (Decreasing extension)
2 समावेशकता (Modulation)

उपर्युक्त उपसूत्रों की व्याख्या कर उन्हें स्पष्ट किया जा सकता है।

1 **विस्तार-ह्रास** (Decreasing extension) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है, "किसी श्रृंखला में प्रथम कड़ी से अन्तिम कड़ी की ओर नीचे जाने में वर्गों की गहनता में वृद्धि होनी चाहिए तथा विस्तार में ह्रास होना चाहिए।"

इस उपसूत्र से वर्गीकरण के स्वरूप का बोध होता है। यह स्वरूप वर्गों की श्रृंखलाओं में देखने को मिलता है।

उदाहरण : इस उपसूत्र को निम्न उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।
विश्व, एशिया, भारत, मध्यप्रदेश

यहाँ पर 'विश्व' वर्ग से 'मध्यप्रदेश' की ओर बढ़ने में वर्गों की गहनता बढ़ती है तथा उनका विस्तार घटता जाता है।

वर्ग का विस्तार वर्ग में निहित क्षेत्र द्वारा ही नापा जा सकता है। वास्तविक ज्ञान-जगत से वर्गों को प्राप्त करने में प्रयुक्त विशेषताओं की संख्या द्वारा वर्ग की गहनता नापी जा सकती है। दूसरे शब्दों में, विस्तार वर्ग का मात्रात्मक तथा गहनता गुणात्मक माप है।

यहाँ यह याद रखना आवश्यक है कि विस्तार-ह्रास का उपसूत्र का प्रयोग ऐसे वर्गों पर नहीं किया जा सकता जिनका परम्परागत वंश सम्बन्ध नहीं है अर्थात् जो वर्ग पिता, पुत्र एवं पौत्र की भाँति घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित नहीं है। उदाहरणार्थ 'प्रजातंत्र' एवं 'वाष्प-इंजिन' में वंश सम्बन्ध नहीं है। अतः इस उपसूत्र का प्रयोग इन पर नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार एक मुख्य वर्ग (main class) की विभिन्न अधीनस्थ श्रृंखलाओं से सम्बन्धित वर्गों में भी इस उपसूत्र का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। उदाहरणार्थ, पक्षी एवं रेंगने वाले जीव दोनों एक ही वर्ग 'पशु जगत' से सम्बन्धित हैं, तथापि वे एक दूसरे के अधीन नहीं हैं।

2 **समावेशकता** (Modulation) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है, "वर्गों को श्रृंखला में प्रत्येक क्रम के किसी न किसी एक वर्ग को अवश्य सम्मिलित होना चाहिए, जो क्रम श्रृंखला की प्रथम कड़ी तथा अन्तिम कड़ी के बीच पड़ते हों।"

उदाहरण : इस उपसूत्र को निम्न उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :

प्रथम श्रृंखला	द्वितीय श्रृंखला
विश्व	विश्व
योरोप	
ग्रेट ब्रिटेन	ग्रेट ब्रिटेन
इंगलैण्ड	
लन्दन	लन्दन

उपर्युक्त दोनों श्रृंखलाओं की तुलना करने पर यह स्पष्ट है कि द्वितीय श्रृंखला में 'योरोप' तथा 'इंगलैण्ड' 'मध्यवर्ती' कड़ियाँ छूट गई हैं। प्रथम श्रृंखला में समावेशकता को अपनाया गया है, किन्तु द्वितीय श्रृंखला में वह असफल रहा है।

संसर्ग अनुक्रम सम्बन्धी उपसूत्र
(Canons for Filiatory Sequence)

विभिन्न विषयों के मध्य पारस्परिक साम्य-सम्बन्ध के अनुकूल व्यवस्थित अनुक्रम को संसर्ग-अनुक्रम कहा जाता है। इस प्रकार का सम्बन्ध दो प्रकार से सम्भव है : प्रथम, समकक्ष—वर्गों के रूप में वर्गों का सम्बन्ध, द्वितीय—अधीनस्थ वर्गों के रूप में वर्गों का सम्बन्ध।

वर्गीकरण पद्धति की कार्यक्षमता प्रत्येक विशिष्ट विषय को स्पष्ट एवं विभिन्न वर्गांक प्रदान करने के उद्देश्य को पूरा करने तथा असंख्य विशिष्ट विषयों को उनके वर्गांक के अनुसार व्यवस्थित कर संसर्ग अनुक्रम प्राप्त करने पर ही निर्भर है।

डॉ० रंगनाथन के अनुसार संसर्ग अनुक्रम के निम्न दो उपसूत्र हैं :

1 अधीनस्थ-वर्ग (Subordinate classes)

2 समकक्ष-वर्ग (Coordinate classes)

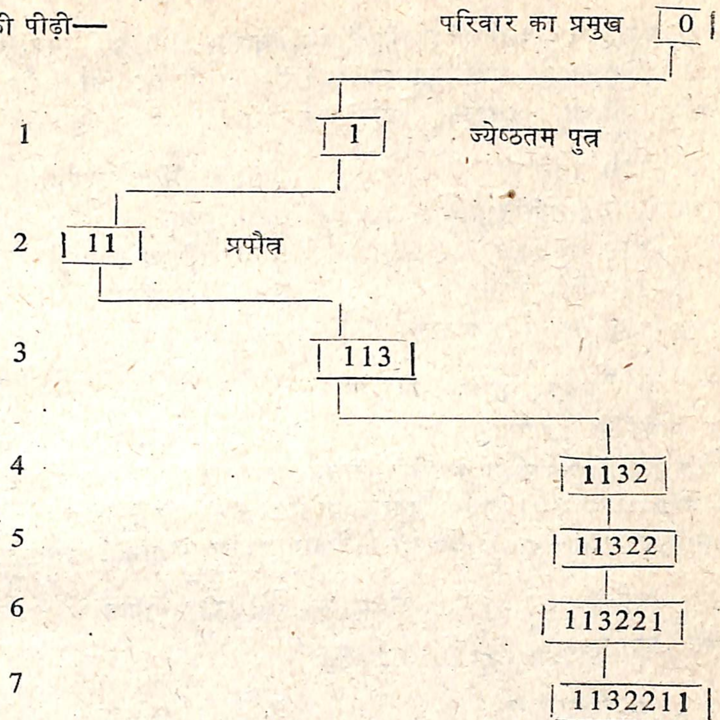
उपर्युक्त उपसूत्रों की व्याख्या कर उन्हें स्पष्ट किया जा सकता है।

1 **अधीनस्थ-वर्ग** (Subordinate classes) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है, "किसी भी श्रृंखला में उपलब्ध वर्ग के समस्त अधीनस्थ वर्गों को उस वर्ग का तुरन्त अनुसरण करना चाहिए तथा उन्हें उस वर्ग अथवा किसी अन्य वर्ग से पृथक् नहीं होना चाहिए।"

इस उपसूत्र का अर्थ है कि किसी वर्ग के अधीनस्थ वर्गों को उनके सम्बन्ध के अनुसार उस वर्ग के तुरन्त बाद व्यवस्थित कर देना चाहिए। दूसरे शब्दों में, अधीनस्थ वर्गों की व्यवस्था परिवार की वंशावली सम्बन्धी व्यवस्था के समान होनी चाहिए, जिसके अन्तर्गत परिवार का वृद्ध श्रृंखला के प्रमुख के रूप में रहता है तथा उसके नीचे उसके पुत्र, प्रपौत्र होते हैं।

उदाहरण : इस उपसूत्र को निम्न आकृति द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

परिवार की पीढ़ी—

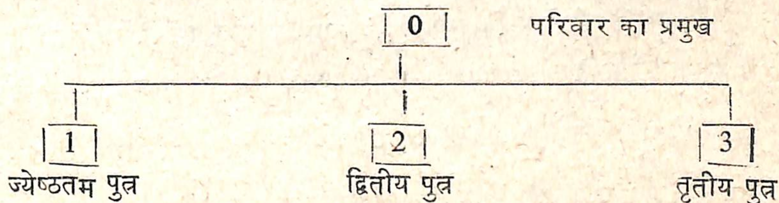


इस श्रृंखला से स्पष्ट है कि किस प्रकार परिवार का प्रमुख सबसे ऊपर है तथा किस प्रकार उसके एक पुत्र द्वारा श्रृंखला का निर्माण किया गया है।

हेनरी ब्लिस ने "संसर्ग-अनुक्रम" के सिद्धान्त के लिए "सम्बन्धित विषयों का सन्निधान" (Collocation of related Subjects) वाक्यांश का प्रयोग किया है। 'सन्निधान' शब्द का अर्थ है समानता एवं सम्बन्ध की मात्रा के अनुसार विषयों को संगठित करना; अथवा घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित वर्गों को स्थान, समय सम्बन्ध आदि की समीपता के अनुसार व्यवस्थित करना।

2 समकक्ष वर्ग (Coordinate classes) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है, "किसी वर्ग-विन्यास के वर्गों के अन्तर्गत अधिक समानता के वर्गों के मध्य कम समानता के वर्ग को नहीं रखना चाहिए।"

इस उपसूत्र को निम्न आकृति द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :



इस श्रृंखला से स्पष्ट है कि परिवार के प्रमुख के तीन पुत्रों को समकक्ष वर्ग के रूप में रखा गया है। सर्वप्रथम ज्येष्ठतम पुत्र, उसके पश्चात् द्वितीय पुत्र तथा उसके पश्चात् तृतीय पुत्र को व्यवस्थित किया गया है।

उदाहरण : दशमलव पद्धति में समाजशास्त्र '300' को व्यवस्थित करने में इस उपसूत्र का पालन नहीं किया गया है। ऐसा इस कारण हुआ है कि इस पद्धति में नवीन वर्गों को सुविधानुसार स्थान दिया गया है :

310 सांख्यिकी	360 सामाजिक कल्याण
320 राजनीतिशास्त्र	370 शिक्षा
330 अर्थशास्त्र	380 वाणिज्य
340 विधिशास्त्र	390 रीति-रिवाज
350 सार्वजनिक प्रशासन	

उपर्युक्त व्यवस्था में सार्वजनिक प्रशासन का सम्बन्ध राजनीतिशास्त्र से है, अतः सार्वजनिक प्रशासन को राजनीतिशास्त्र के तत्काल बाद रखना चाहिए। इसी प्रकार सामाजिक कल्याण एवं रीति-रिवाज समाजशास्त्र से अधिक सम्बन्धित हैं। परंतु समाजशास्त्र को 301 वर्गांक दिया गया है। समकक्ष-वर्ग सिद्धान्त के अनुसार सामाजिक कल्याण एवं रीति-रिवाज को समाजशास्त्र के समीप रखना चाहिए था।

द्विबिन्दु पद्धति में उपरोक्त समस्त वर्गों को समानता के आधार पर व्यवस्थित किया गया है।

B28	सांख्यिकी	X5	वाणिज्य
T	शिक्षा	Y:356	रीति-रिवाज
W	राजनीतिशास्त्र	YX	सामाजिक-कार्य
W,8	सार्वजनिक प्रशासन	Z	विधिशास्त्र
X	अर्थशास्त्र		

अपूपा व्यवस्था (APUPA Arrangement) :

डॉ० रंगनाथन ने संसर्ग अनुक्रम की व्यवस्था की जिसे अपूपा (अ प उ प अ) व्यवस्था की संज्ञा दी है। इस शब्द का प्रत्येक वर्ग एक निश्चित शब्द के लिए प्रयुक्त किया गया है :

अ **A** विरोधी लेख (**Alien Record**) अर्थात् पूर्णतया असम्बद्ध लेख

प **P** आच्छायी लेख (**Penumbral Record**) अर्थात् आंशिक सम्बद्ध लेख

उ **U** प्राच्छायायी लेख (**Umbral Record**) अर्थात् पूर्णरूपेण सम्बद्ध लेख

प **P** आच्छायी लेख (**Penumbral Record**) अर्थात् आंशिक सम्बद्ध लेख

अ **A** विरोधी लेख (**Alien Record**) अर्थात् पूर्णतया असम्बद्ध लेख :

इस व्यवस्था के अन्तर्गत सम्पूर्ण उपलब्ध पाठ्य-सामग्री को सहायक क्रम में रख दिया जाता है। इसका अर्थ है कि सर्वाधिक सम्बद्ध पाठ्य-सामग्री मध्य में रख दी जाती है तथा अन्य पाठ्य-सामग्री सम्बद्धता के अनुसार इसके दोनों ओर रख दी जाती है। इस प्रकार की व्यवस्था इस कारण आवश्यक है कि एक पाठक एक क्षण

अपनी आवश्यकता से अत्यधिक सम्बद्ध पाठ्य-सामग्री को प्राप्त करना चाहता है। इसके पश्चात् ही वह अपनी इच्छित पाठ्य-सामग्री से आंशिक रूप से अथवा पूर्णरूप से सम्बद्ध पाठ्य-सामग्री प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। इस उद्देश्य की पूर्ति "अपूपा व्यवस्था" से पूर्ण की जा सकती है।

5.6 पारिभाषिक पदावली-सम्बन्धी उपसूत्र
(Canons for Terminology)

किसी वर्गीकरण पद्धति में वर्गों एवं एकलों का नामांकन करने के लिए प्रयुक्त शब्दों की व्यवस्था को पारिभाषिक पदावली कहा जाता है। सेयर्स महोदय के शब्दों में; "एक वर्गीकरण को वर्ग के नामों अथवा पारिभाषिक पदों में अभिव्यक्त किया जाता है। इसमें प्रयुक्त पारिभाषिक पद अनिर्दिष्ट नहीं होना चाहिए। पारिभाषिक शब्दों में विचाराधीन विषय के वास्तविक अर्थ को अभिव्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिए।" दूसरे शब्दों में, "किसी भी वर्ग के अर्थ अथवा आशय को पर्याप्त रूप से अभिव्यक्त करने वाला शब्द अथवा वाक्यांश पारिभाषिक पद कहा जाता है।"

हेनरी ई० ब्लिस ने पारिभाषिक पदावली को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि एक विशिष्ट वर्ग की व्याख्या करने वाले पारिभाषिक पदों को **विशिष्ट** होना चाहिए तथा इनके प्रयोग में **एकरूपता** होनी चाहिए; यद्यपि एक वर्ग अपने उपवर्गों के लिए पूर्णतया **व्यापक** होता है। तथापि अन्य समकक्ष वर्गों के उपवर्गों से सर्वदा **पृथक्** नहीं होता। एक उप-वर्ग दो अथवा अधिक समकक्ष वर्गों का सामान्य अथवा विकल्प हो सकता है।

डॉ० रंगनाथन ने पारिभाषिक पदावली से सम्बन्धित चार उपसूत्रों को प्रतिज्ञापित किया है, जिनका पालन एक वर्गीकरण पद्धति के निर्माण तथा प्रयोग में किया जाना चाहिए। ये उपसूत्र निम्न हैं :

1 प्रचलन (Currency)

2 संयतता (Reticence)

3 परिगणन (Enumeration)

4 प्रसंग (Context)

उपरोक्त उपसूत्रों की व्याख्या कर उन्हें स्पष्ट किया जा सकता है।

1 **प्रचलन** (Currency) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है, "वर्गीकरण पद्धति में वर्गों को निर्दिष्ट करने वाला प्रत्येक पद पद्धति से सम्बद्ध विषय के विशेषज्ञों द्वारा मान्य एवं प्रचलित होना चाहिए।"

इस उपसूत्र द्वारा दो तथ्यों की ओर संकेत किया गया है। प्रथम, वर्गीकरण पद्धति का निर्माण करते समय वर्गाचार्य को वर्गों की संज्ञा के लिए उन्हीं पदों को चुनना चाहिए, जो उस समय सम्बन्धित विशेषज्ञों द्वारा प्रचलित एवं मान्य हों। परन्तु यह कहना कठिन है कि एक समय में प्रचलित एवं मान्य शब्द उसी रूप में चलते रहेंगे। अतः द्वितीय, वर्गीकरण पद्धति में इस प्रकार की व्यवस्था होनी चाहिए,

जिससे विशेषज्ञों द्वारा पदों के रूप में परिवर्तन किए जाने पर पद्धति में प्रयुक्त पदों को भी प्रचलित पदों में संशोधित किया जा सके ।

इस दृष्टि से लायब्रेरी ऑफ कांग्रेस वर्गीकरण पद्धति सबसे उत्तम है । अमेरिका की कांग्रेस (संसद्) के ग्रन्थालय द्वारा विशेषज्ञों को नियुक्त किया गया है, जिनका प्रमुख कार्य वर्गीकरण में संशोधन करना है । इसी प्रकार दशमलव पद्धति में संशोधन करने के लिए भी स्थायी सम्पादकीय मण्डल की स्थापना की गई है । प्रचलन के उपसूत्र की पूर्ति के लिए प्रत्येक प्रामाणिक वर्गीकरण पद्धति द्वारा इस प्रकार की व्यवस्था करना अनिवार्य है ।

द्विबिन्दु पद्धति के लेखक ने अपनी पद्धति में प्रचलित पदों के प्रयोग को विशेष महत्व दिया है । इस पद्धति की विशेषता यह है कि अनुसूचियों में प्रयुक्त पद अंगभूत मूल पद अथवा एकल पद हैं । व्युत्पन्न मिश्रित पदों का प्रयोग यदा-कदा ही किया गया है; क्योंकि द्विबिन्दु पद्धति में पूर्ण वर्गांक कहीं-कहीं ही दिए गए हैं । इस व्यवस्था से अनुसूची में परिवर्तन करने की समस्या दूर हो गई है ।

परिगणनात्मक पद्धतियों में प्रारम्भिक पदों को प्रचलित पदों में परिवर्तित करना अनिवार्य है । इसका कारण यह है कि इन पद्धतियों में जिन पदों को प्रयुक्त किया जाता है, वे व्युत्पन्न मिश्रित पद होते हैं । इसे निम्न उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :

1—दशमलव पद्धति के अनेक पूर्ववर्ती संस्करणों में समाजशास्त्र (Sociology) पद का प्रयोग सामाजिक शास्त्रों (Social Sciences) के लिए किया गया था । किन्तु सोलहवें तथा सत्रहवें संस्करणों में सामाजिक शास्त्रों (Social Sciences) का ही उपयुक्त प्रयोग किया है तथा समाजशास्त्र को उसका एक उप-विभाग दर्शाया गया है ।

2—इसी प्रकार भाषा-शास्त्र के लिए दशमलव पद्धति के पूर्ववर्ती संस्करणों में फिलॉलॉजी (Philology) पद का प्रयोग किया गया था । किन्तु सोलहवें तथा सत्रहवें संस्करणों में इसके लिए भाषा-विज्ञान (Linguistics) पद का प्रयोग किया गया है जो कि इस विषय के विशेषज्ञों द्वारा प्रयुक्त प्रचलित पद है ।

3—द्विबिन्दु पद्धति के प्रथम चार संस्करणों में अर्थशास्त्र में श्रम समस्याओं को व्यक्त करने के लिए श्रम (Labour) पद का प्रयोग किया गया था, किन्तु पाँचवें संस्करण के बाद से इस पद्धति ने श्रम समस्याओं के लिए विशेषज्ञों द्वारा प्रयुक्त अधिक व्यापक एवं प्रचलित पद, कार्यकर्ता व्यवस्था (Personnel Managment) पद का प्रयोग किया है ।

इस प्रकार दशमलव एवं द्विबिन्दु दोनों ही पद्धतियों ने अपने नवीन संस्करणों की अनुसूचियों में प्रचलन के सिद्धान्त का पालन किया है ।

2 **संयतता (Reticence)** : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है, "वर्गीकरण पद्धति में वर्गों को निर्दिष्ट करने वाले पारिभाषिक पद आलोचनात्मक नहीं होने चाहिए ।" दूसरे शब्दों में, पारिभाषिक पद संयत होने चाहिए अथवा किसी पद के विषय में अपना मत नहीं देना चाहिए ।

उदाहरण : दशमलव पद्धति के प्रथम चौदह संस्करणों में साहित्य के वर्गीकरण में 'निम्न कोटि के लेखक' (Minor Authors) पद का प्रयोग अनेक स्थानों पर किया गया है। किसी वर्गकार के लिए किसी साहित्यकार को 'उच्च कोटि' तथा 'निम्न-कोटि' की श्रेणी में रखना आसान कार्य नहीं है। इस सम्बन्ध में डॉ० रंगनाथन ने अपने विचार स्पष्ट करते हुए लिखा है, यह माना कि एक लेखक ख्याति प्राप्त न करने के कारण उस समय 'निम्न कोटि' में रखा जा सकता है, लेकिन इस बात की क्या निश्चितता है कि, कालान्तर में, वह ख्याति प्राप्त कर 'उच्च कोटि' के लेखकों की श्रेणी में सम्मिलित नहीं किया जा सकता।

किसी भी वर्गीकरण पद्धति में आलोचनात्मक पदों का प्रयोग कदापि नहीं किया जाना चाहिए।

7 परिगणन (Enumeration) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है, "वर्गीकरण की पद्धति में प्रत्येक पद की व्याख्या (अर्थात् प्रत्येक पद के निश्चित क्षेत्र अथवा विस्तार का आभास) वर्गों के परिगणन द्वारा निम्न श्रेणियों को विभिन्न शृंखलाओं में निश्चित की जानी चाहिए, जिसे कि वर्ग प्रथम सामान्य शृंखला के रूप में प्रकट किया गया हो।"

विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों तथा विभिन्न व्यक्तियों द्वारा पदों की व्याख्या में एकरूपता अथवा समानता नहीं होने के कारण यह उपसूत्र आवश्यक हो जाता है। शासन अथवा अकादमी के आदेश द्वारा भी किसी प्रकार की एकरूपता के लिए बाध्य करना सम्भव नहीं है। अतः वर्गीकरण पद्धति का उपयोग करने वालों के लिए केवल एक ही उपाय है कि वे एक पद की व्याख्या, पद्धति में सम्मिलित वर्गों तथा उपवर्गों की शृंखलाओं के संदर्भ में करें।

उदाहरण : दशमलव पद्धति में 'अंकगणित' (Arithmetic) पद का परिगणन कर उसमें 'निम्न अंकगणित' (Lower Arithmetic) ही सम्मिलित किया है, जबकि द्विबिन्दु पद्धति में इसके अन्तर्गत 'उच्च-अंकगणित' अथवा 'अंक सिद्धान्त' (Higher Arithmetic or Theory of Numbers) को भी लिया है।

इसी प्रकार दशमलव पद्धति में 'दर्शन' (Philosophy) पद का परिगणन कर उसके अन्तर्गत 'मनोविज्ञान' (Psychology) को भी लिया है। द्विबिन्दु पद्धति में 'मनोविज्ञान' को 'दर्शन' का उपवर्ग न बनाकर पृथक् समकक्ष वर्ग का स्थान दिया है।

4 प्रसंग (Context) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है, "वर्गीकरण की पद्धति में प्रत्येक पद की व्याख्या उसी प्रारंभिक कड़ी से सम्बन्धित निम्नतर क्रम के विभिन्न वर्गों के प्रकाश में निश्चित की जानी चाहिए, जिसे वर्ग में 'पद' के द्वारा निर्दिष्ट किया गया है।"

सेयर्स महोदय ने इस उपसूत्र को इस रूप में प्रस्तुत किया है, "वर्गीकरण की प्रत्येक प्रक्रिया में पदों का प्रयोग एकरूप अर्थों (प्रसंग के संदर्भ में) में किया जाना चाहिए।"

प्रायः देखा गया है कि कुछ 'पद' ऐसे होते हैं, जिनका अर्थ अनेक वर्गों में विभिन्न अर्थों में लिया जाता है अथवा एक ही पद का सम्बन्ध विभिन्न वर्गों से रहता है। ऐसी अवस्था में प्रत्येक पद का प्रयोग सम्बन्धित प्रसंग में ही किया जाना उचित है।

उदाहरण : दशमलव-पद्धति में 'दुर्घटना' (Accident) पद का सम्बन्ध खनिज यन्त्रशास्त्र (Mining Engineering) बीमा (Insurance) वर्गों से तथा अर्थशास्त्र के श्रम (Labour) उपवर्ग से है। यदि किसी ग्रन्थ का शीर्षक दुर्घटना (Accident) हो तो उसे बिना किसी संदर्भ के किसी भी एक वर्ग में नहीं रखना चाहिए। पुस्तक का वर्गांक निश्चित करते समय यह निर्णय करना आवश्यक है कि पुस्तक का शीर्षक किस वर्ग के प्रसंग में रखा गया है?

इसी प्रकार 'पत्थर' (Stone) पद का प्रयोग भूशास्त्र (Geology) तथा चिकित्साशास्त्र (Medicine) वर्गों में किया जाता है। 'आधार' (Foundation) पद का प्रयोग गणित के विश्लेषण (Analysis) उपवर्ग में तथा यन्त्रशास्त्र के भवन (Building) उपवर्ग में किया जाता है।

अतः वर्गीकरण की प्रत्येक पद्धति में ऐसे पदों का प्रयोग प्रसंग सहित किया जाना चाहिए। इस प्रकार का प्रसंग निर्देश करने से, अपूर्ण एवं अनेकार्थी पदों का उचित एवं स्पष्ट अर्थ, उसी शृंखला के पूर्व वर्ग को देखकर समझने में सुविधा होती है।

अंकन सम्बन्धी उपसूत्र
(Canons for Notation)

अंकन से सम्बन्धित उपसूत्रों की व्याख्या करने से पूर्व अंकन पर विचार करना आवश्यक है। सेयर्स महोदय ने अंकन के विषय में लिखा है कि जिस समय वर्गीकरण में सामान्य वर्ग (Generalia class) एवं रूप वर्ग (Form class) तथा विभागों (Divisions) का प्रयोग किया तो इसे ग्रन्थों के लिए उपयोगी सिद्ध करने हेतु दो अन्य सहायकों की आवश्यकता प्रतीत हुई। ये दो सहायक अंकन (Notation) एवं अनुक्रमणिका (Index) हैं। इन दोनों में से अंकन अधिक महत्वपूर्ण है।

ग्रन्थों में निहित विषयों का वर्गांक बनाने के लिए प्राकृतिक भाषा की अपेक्षा वर्गीकरण की भाषा का प्रयोग किया जाता है। इस भाषा का निर्माण अंकन की सहायता से कुछ उपसूत्रों के आधार पर किया जाता है।

डॉ० रंगनाथन के अनुसार अंकन सम्बन्धी निम्न तीन उपसूत्र हैं :

1 सापेक्षता (Relativity)
2 अभिव्यक्ति (Expressiveness)
3 मिश्रित अंकन (Mixed notation)

उपर्युक्त उपसूत्रों की व्याख्या कर उन्हें स्पष्ट किया जा सकता है।

1 **सापेक्षता** (Relativity) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है, "वर्गीकरण पद्धति में वर्गांक की लम्बाई उस वर्ग के क्रम अथवा आशय के अनुपात से होनी चाहिए, जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है।"

वर्गांक में एक विषय का उचित प्रतिनिधित्व स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण लिया जा सकता है।

उदाहरण :-ग्रन्थालय में उपलब्ध एक ग्रन्थ का वर्गांक द्विबिन्दु पद्धति के अनुसार L 25 : 4 : 7 है। इस वर्गांक में—

L	चिकित्साशास्त्र
L 25	आँतें
L 25 : 4	आँतों का रोग
L 25 : 4 : 7	आँतों के रोग की शास्त्र-चिकित्सा

इस उदाहरण से स्पष्ट है कि वर्गांक की लम्बाई वर्ग के आशय के अनुपात में है।

एक अन्य उदाहरण द्वारा दशमलव एवं द्विबिन्दु दोनों पद्धतियों में इस उपसूत्र को स्पष्ट किया जा सकता है :

	दशमलव	द्विबिन्दु
भूगोल	551	U
प्राकृतिक भूगोल	551.4	U2
समुद्रीय विज्ञान	551.46	U25
धाराएँ	551.47	U2562

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि भूगोल शास्त्र वर्ग के आशय के विकास के अनुपात से उसकी वर्गांक संख्या में भी वृद्धि होती गई है।

2 **अभिव्यंजकता** (Expressiveness) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है, "वर्गांक को उस वर्ग की संबंधित विशेषताओं का अभिव्यंजक होना चाहिए, जिसका वह वर्गांक प्रतिनिधित्व वर्गांक में एक अंक द्वारा होगा।"

उदाहरण : द्विबिन्दु पद्धति द्वारा निर्मित वर्गांक L 25 : 4 : 7 में प्रयुक्त विशेषताओं का निम्न प्रकार उल्लेख किया जा सकता है :

अंक 25 आँतों के लिए प्रयुक्त है तथा शरीर के अंग (Organ) विशेषता का प्रतिनिधित्व करता है,

अंक 4 रोग के लिए प्रयुक्त है तथा समस्या (Problem) विशेषता का प्रतिनिधित्व करता है,

अंक 7 शास्त्र-चिकित्सा के लिए प्रयुक्त है तथा चिकित्सा (Handling) विशेषता का प्रतिनिधित्व करता है।

दशमलव पद्धति में विन्यास व्यवस्थित रूप से सम्बन्धित विशेषताओं पर आधारित नहीं है। अतः वर्गांक के निर्माण में इस पद्धति द्वारा इस उपसूत्र का पालन नहीं किया जाता है।

610 **चिकित्साशास्त्र (मुख्य-वर्ग)**

प्रयुक्त विशेषता	**पद**	**अंक**
शरीर का अंग (Organ)	आँत	554

समस्या (Problem)	रोग	?
चिकित्सा (Handling)	शास्त्र-चिकित्सा	617

इस प्रकार दशमलव पद्धति में मुख्य वर्ग चिकित्सा की अनुसूची में विभिन्न विशेषताओं को स्पष्ट रूप से नहीं दर्शाया गया है। उन्हें एक दूसरे में सम्मिलित कर दिया गया है। अतः वर्गांक 617.554 का अर्थ आँत के रोगों की शास्त्र-चिकित्सा होने पर तीन पक्षों को स्पष्ट नहीं करता है।

3 मिश्रित अंकन (Mixed Notation) : इस उपसूत्र को इस प्रकार प्रतिज्ञापित किया गया है, "वर्गीकरण पद्धति के अंकन मिश्रित होने चाहिए।"

ग्रन्थों तथा अन्य साहित्यिक सामग्री को निरन्तर सम्बन्धी अनुक्रम में रखने की आवश्यकता ने तथा ज्ञान के विभिन्न विभागों में बढ़ती हुई जटिलताओं ने वर्गीकरण की प्रामाणिक पद्धतियों के लेखकों को मिश्रित अंकन अपनाने के लिए बाध्य कर दिया है। वास्तव में अधिकांश वर्गीकरण पद्धतियों ने वर्गांक के निर्माण हेतु एक से अधिक प्रकार के अंकों को प्रयुक्त करने का प्रयत्न किया है। दशमलव पद्धति में केवल एक ही प्रकार के अंक अथवा शुद्ध अंकन (Pure Notation) का प्रयोग किया है :

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

द्विबिन्दु पद्धति में एक से अधिक प्रकार के अंकों अथवा मिश्रित अंकन (Mixed Notaion) का प्रयोग किया गया है :

1	2	3	4	5	6	7	8	9	0
A	B	C					X	Y	Z
a	b	c					x	y	z
,	;	:	.	'	(	)	—→	←—	

यह स्पष्ट है कि मिश्रित अंकन प्रयुक्त करने के कारण द्विबिन्दु पद्धति अधिक विस्तृत, स्पष्ट एवं लचीली हो गयी है; इसके विपरीत दशमलव पद्धति शुद्ध अंकन का प्रयोग करने के फलस्वरूप अधिक कठोर एवं जड़ है।

पंचम अध्याय

सहायक-क्रम के सिद्धान्त

(Principle of Helpful Order)

ग्रन्थालय वर्गीकरण का मुख्य उद्देश्य ग्रन्थालय में उपलब्ध पाठ्य-सामग्री को सहायक-क्रम में व्यवस्थित करना है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि पाठ्य-सामग्री के सहायक-क्रम की व्यवस्था में तथा उपयोग के बाद लौटाई गई पाठ्य-सामग्री को निश्चित स्थान पर पुनः व्यवस्थित करने में यांत्रिकता लाना पुस्तकालय वर्गीकरण का प्रमुख उद्देश्य है।

1 सहायक क्रम की परिभाषा
(Definition of Helpful Order)

पाठ्य-सामग्री का सहायक-क्रम पुस्तक के रंग, आकार-प्रकार, छपाई एवं प्रकाशक के आधार पर निश्चित नहीं किया जा सकता। ग्रन्थालय में उपलब्ध पाठ्य-सामग्री का किसी न किसी विषय से सम्बन्ध रहता है। पुस्तकें मनुष्य के विचारों की लिखित अभिव्यक्ति हैं। कभी-कभी ये विचार अधिक जटिल होते हैं। अनेक विषयों की व्याख्या एक ही पुस्तक में की जा सकती है अथवा एक ही विषय का वर्णन विभिन्न दृष्टिकोणों से किया जा सकता है। एक विषय का वर्णन कुछ पुस्तकों में सामान्य रूप से किया जा सकता है; कुछ पुस्तकों में एक विशिष्ट विषय का वर्णन सामान्य रूप से किया जा सकता है तथा कुछ पुस्तकों में विशिष्ट विषय का वर्णन विशेष रूप से किया जा सकता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सम्पूर्ण पाठ्य-सामग्री का विषय से सम्बन्ध रहता है। इसके अतिरिक्त ग्रन्थालय में प्रत्येक पाठक किसी इच्छित विषय से सम्बन्धित पुस्तक की ही माँग करता है। अतः ग्रन्थालय में पुस्तकों की व्यवस्था में विषयानुसार सहायक-क्रम ही अधिक उपयुक्त है।

सहायक-क्रम द्वारा विषयों को इस प्रकार प्रदर्शित किया जाता है कि किसी भी स्थान पर विषयों के समूह के निकट पहुँचने पर पुस्तकों का क्रम, पाठक को वांछित विशिष्ट विषय की ओर संकेत प्रदान कर सके। दूसरे शब्दों में, जब कोई पाठक किसी एक विषय पर जानकारी अथवा उस विषय की पुस्तकें लेना चाहे; तब ग्रन्थालय में

विषयानुसार सहायक-क्रम ही उसकी आवश्यकता की पूर्ति कर सकता है । यदि प्रत्येक विषय की पुस्तकें भाषा के अनुसार अलग-अलग क्रम से संजोई गई ह ं त पाठक को संतोष मिलता है । यहाँ यह स्पष्ट करना भी उचित है कि बहुत ही कम पाठक अपनी रुचि के विशिष्ट विषयों की ठीक-ठीक जानकारी दे पाते हैं । उन्हें विस्तृत विषय का या फिर उससे संकुचित विषय का ध्यान रहता है । अतः विषयों की व्यवस्था उनके आपसी सम्बन्धों के अंशों के अनुसार ही करना चाहिए । दूसरे शब्दों में, विषयानुसार सहायक क्रम के अन्तर्गत पाठक की विस्तृत रुचि की पुस्तकों को प्रदर्शित किया जाना चाहिए ।

यह स्पष्ट है कि विषयों के नामों के वर्णक्रम के आधार पर व्यवस्था करने पर विषयों में सम्बन्धी क्रम स्थापित नहीं हो पाता । उदाहरण के लिए, वर्णक्रम के आधार पर निम्न व्यवस्था होती है : अतिथि, अर्थशास्त्र, अध्यापन, अभिमान, अंग्रेजी नाटक, आयकर आदि । इन पदों की व्याख्या करने पर यह देखा जा सकता है कि यह क्रम सहायक नहीं है । वास्तव में वर्णक्रम से तो वर्णों का क्रम ही प्राप्त हो सकता है । इससे विषयों में सहायक-क्रम की व्यवस्था प्राप्त नहीं की जा सकती है । परन्तु इससे यह सिद्ध हो जाता है कि विषयों का कोई न कोई ऐसा क्रम अवश्य हो सकता है जो पाठकों के लिए सहायक हो । इसके लिए यह आवश्यक है कि विषयों के नामों का अनुवाद ऐसी क्रमिक संख्याओं में अवश्य होना चाहिए, जिसके अनुसार विषयों को प्रामाणिक सहायक-क्रम में रखा जा सके ।

2 सहायक-क्रम की अवस्थाएँ
(Stages of Helpful Order)

डॉ० रंगनाथन ने पाठ्य-सामग्री का विषयानुसार सहायक क्रम प्राप्त करने के लिए तीन अवस्थाओं का उल्लेख किया है :

1 असहायक वर्णक्रम (Unhelpful Alphabetical Order)
2 विषय-समूहों में वर्णक्रम (Alphabetical Order within the Groups of Subjects)
3 विषय-समूहों में सहायक-क्रम (Helpful Order within the Groups of Subjects)

1 असहायक वर्णक्रम : नीचे 51 विषयों की सूची में वर्णक्रम के अनुसार विभिन्न विषयों की व्यवस्था की गई है । इस व्यवस्था को असहायक वर्णक्रम कहा जा सकता है ।

1 अर्थशास्त्र
2 अप्रत्यक्ष कर
3 अंग्रेजी नाटक
4 अंग्रेजी साहित्य
5 आयकर
6 आलू का शीत संग्रहण
7 आलू की उपज
8 आलू की फसल की कटाई
9 आँतें (मनुष्य)
10 आँतों की शरीर रचना (मनुष्य)
11 ईसाई कानून
12 कर निर्धारण

13	कृषि	33	माध्यमिक शिक्षा
14	कानून	34	मुस्लिम कानून
15	खाद	35	यहूदी कानून
16	गणित	36	राजनीतिशास्त्र
17	घोड़ा (अश्व) पालन	37	रासायनिक शिल्प
18	चिकित्सा	38	लवण का रासायनिक शिल्प
19	ज्यामिति	39	लोकवित्त
20	तर्कशास्त्र	40	वनस्पतिशास्त्र
21	दर्शन	41	विद्युत्धारा
22	पशुपालन	42	विद्युत् विज्ञान
23	पाचन-विधि (मनुष्य)	43	व्यवहारवाद
24	पौधों की शरीर रचना	44	शरीर रचना (मनुष्य)
25	प्राथमिक शिक्षा	45	शिक्षा
26	फूल वाले पौधे	46	शेक्सपियर
27	फूल वाले पौधों की शरीर रचना	47	साहित्य
28	ब्रिटिश कानून	48	हिन्दू कानून
29	भारतीय कानून	49	हैमलेट
30	भूगोल	50	हैमलेट की आलोचना
31	भौतिकशास्त्र	51	ज्ञानशास्त्र
32	मनोविज्ञान		

2 **विषय-समूहों में वर्णक्रम** : असहायक वर्णक्रम विषयों को यदि विषय के अनुसार समूहों में रखा जाय तो 15 विषय-समूह बन जायेंगे । वर्णक्रम के अनुसार विषयों को निम्न समूहों में रखा जा सकता है :

समूह 1 अर्थशास्त्र

1	अर्थशास्त्र	12	कर निर्धारण
2	अप्रत्यक्ष कर	39	लोकवित्त
5	आयकर		

समूह 2 साहित्य

3	अंग्रेजी नाटक	47	साहित्य
4	अंग्रेजी साहित्य	49	हैमलेट
46	शेक्सपियर	50	हैमलेट की आलोचना

समूह 3 कृषि

6	आलू का शीत संग्रहण	13	कृषि
7	आलू की उपज	15	खाद
8	आलू की फसल की कटाई		

समूह-4 चिकित्सा

9 आँतें (मनुष्य)
10 आँतों की शरीर रचना (मनुष्य)
18 चिकित्सा
23 पाचन-विधि (मनुष्य)
44 शरीर रचना (मनुष्य)

समूह 5 कानून

11 ईसाई कानून
14 कानून
28 ब्रिटिश कानून
29 भारतीय कानून
34 मुस्लिम कानून
35 यहूदी कानून
48 हिन्दू कानून

समूह 6 गणित

16 गणित
19 ज्यामिति

समूह 7 पशु पालन

17 घोड़ा (अश्व) पालन
22 पशु पालन

समूह 8 दर्शन

20 तर्कशास्त्र
21 दर्शन
51 ज्ञानशास्त्र

समूह 9 वनस्पतिशास्त्र

24 पौधों की शरीर रचना
27 फूल वाले पौधों की शरीर रचना

समूह 10 शिक्षा

25 प्राथमिक शिक्षा
33 माध्यमिक शिक्षा
45 शिक्षा

समूह 11 भूगोल

30 भूगोल

समूह 12 भौतिकशास्त्र

31 भौतिकशास्त्र
41 विद्युत्धारा
42 विद्युत् विज्ञान

समूह 13 मनोविज्ञान

32 मनोविज्ञान
43 व्यवहारवाद

समूह 14 राजनीतिशास्त्र

36 राजनीतिशास्त्र

समूह 15 रासायनिक शिल्प

37 रासायनिक शिल्प
38 लवण का रासायनिक शिल्प

3 **विषय-समूहों में सहायक क्रम** : यह स्पष्ट किया जा चुका है कि वर्गीकरण का आधार सूत्र सहायक-क्रम सूत्र है। किन्हीं भी दो विशिष्ट विषयों को

सहायक-क्रम में व्यवस्थित करने के लिए कुछ निश्चित सिद्धान्तों का प्रयोग किया जाता है। इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर 15 विषय-समूहों में सहायक-क्रम की व्यवस्था की जा सकती है :

समूह 1 अर्थशास्त्र

1 अर्थशास्त्र — 2 अप्रत्यक्ष कर
39 लोकवित्त — 5 आयकर
12 कर निर्धारण

समूह 2 साहित्य

47 साहित्य — 46 शेक्सपियर
4 अंग्रेजी साहित्य — 49 हैमलेट
3 अंग्रेजी नाटक — 50 हैमलेट की आलोचना

समूह 3 कृषि

13 कृषि — 7 आलू की उपज
15 खाद — 6 आलू का शीत संग्रहण
8 आलू की फसल की कटाई

समूह 4 चिकित्सा

18 चिकित्सा — 9 आँतें (मनुष्य)
44 शरीर रचना (मनुष्य) — 10 आँतों की शरीर रचना
23 पाचन-विधि (मनुष्य)

समूह 5 कानून

14 कानून — 35 यहूदी कानून
29 भारतीय कानून — 11 ईसाई कानून
28 ब्रिटिश कानून — 34 मुस्लिम कानून
48 हिन्दू कानून

समूह 6 गणित

16 गणित — 19 ज्यामिति

समूह 7 पशुपालन

22 पशुपालन — 17 घोड़ा (अश्व) पालन

समूह 8 दर्शन

21 दर्शन — 51 ज्ञानशास्त्र
20 तर्कशास्त्र

समूह 9 वनस्पतिशास्त्र

40 वनस्पतिशास्त्र — 26 फूल वाले पौधे
24 पौधों की शरीर-रचना — 27 फूल वाले पौधों की रचना

समूह 10 शिक्षा

45 शिक्षा — 33 माध्यमिक शिक्षा
25 प्राथमिक शिक्षा

समूह 11 भूगोल

30 भूगोल

समूह 12 भौतिकशास्त्र

31 भौतिकशास्त्र
41 विद्युत धारा
42 विद्युत विज्ञान

समूह 13 मनोविज्ञान

32 मनोविज्ञान
43 व्यवहारवाद

समूह 14 राजनीतिशास्त्र

36 राजनीतिशास्त्र
37 रासायनिक शिल्प
38 लवण का रासायनिक शिल्प

3 सहायक-क्रम के सिद्धांत
(Principles of Helpful Order)

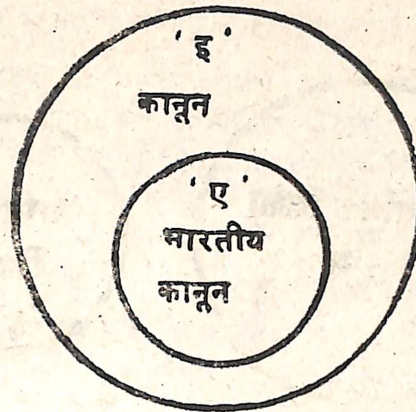
प्रत्येक ग्रन्थालय में उपलब्ध पाठ्य-सामग्री विभिन्न विषयों से सम्बन्धित होती है। ग्रन्थालय में पाठक की अभिरुचि भी किसी विषय की पुस्तकों में ही होती है। अतएव विषय के अनुसार पाठ्य-सामग्री को सहायक-क्रम में व्यवस्थित करना अनिवार्य एवं अधिक सुविधाजनक है। पाठ्य-सामग्री का सहायक-क्रम किसी ग्रन्थालय अथवा ग्रन्थालयी की इच्छानुसार प्राप्त नहीं किया जा सकता है। यह भी सम्भव नहीं है कि एक निश्चित समय पर ज्ञात विषय-समूह को एक क्रम में रख दिया जावे तथा भविष्य में ज्ञात विषय-समूह को व्यवस्थित करने के लिए पूर्व क्रम में आमूल परिवर्तन किया जावे। ऐसा करने पर क्रम में अनुरूपता नहीं रह पाती। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सहायक-क्रम को निश्चितता एवं सुव्यवस्था प्रदान करने के लिए कुछ सिद्धान्तों का पालन करना आवश्यक है।

डॉ० रंगनाथन ने सहायक-क्रम से संबंधित निम्न सात सिद्धान्तों की व्यवस्था की है :

1 विस्तार ह्रास (Decreasing Extension)
2 मूर्तता वृद्धि (Increasing Concreteness)
3 परवर्ती विकास (Later-in-Evolution)
4 परवर्ती कला (Later-in-Time)
5 स्थानीय समीपता (Spatial Contiguity)
6 जटिलता वृद्धि (Increasing Complexity)
7 प्रामाणिक अनुक्रम (Canonical Sequence)

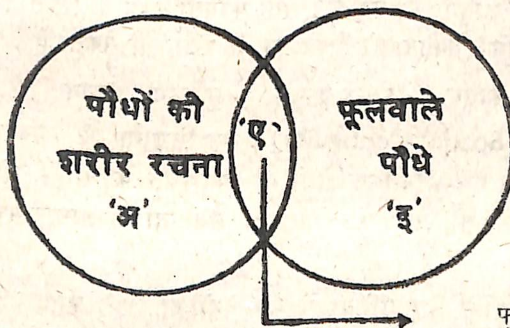
उपर्युक्त सिद्धान्तों की व्याख्या कर उदाहरण सहित स्पष्ट किया जा सकता है।

1 **विस्तार ह्रास** (Decreasing Extension) : इस सिद्धान्त की व्याख्या इस प्रकार की गई है, "यदि वर्गों में से कोई एक वर्ग अधिक विस्तार वाला हो तथा वह अपने में दूसरे को पूर्णतया समा लेता हो तो उसे दूसरे वर्ग से प्रथम स्थान दिया जाना चाहिये।"



उपर्युक्त रेखाचित्र में यदि वर्ग 'इ' (कानून) को एक बड़ा वृत्त मानें तथा वर्ग 'ए' (भारतीय कानून) को छोटा वृत्त मानें तो यह ज्ञात होता है कि यह छोटा वृत्त बड़े वृत्त में पूर्णतया समा जाता है। अतः स्पष्ट है कि वर्ग 'इ' को 'ए' से प्रथम स्थान दिया जाना चाहिए।

2 मूर्तता वृद्धि (Increasing Concreteness) : इस सिद्धान्त की व्याख्या इस प्रकार की गई है, "यदि दो वर्ग विभिन्न अंशों में मूर्त हों तो कम मूर्त अर्थात् अधिक अमूर्त (**Less Concrete or more abstract**) वर्ग को दूसरे से प्राथमिकता देनी चाहिए।"

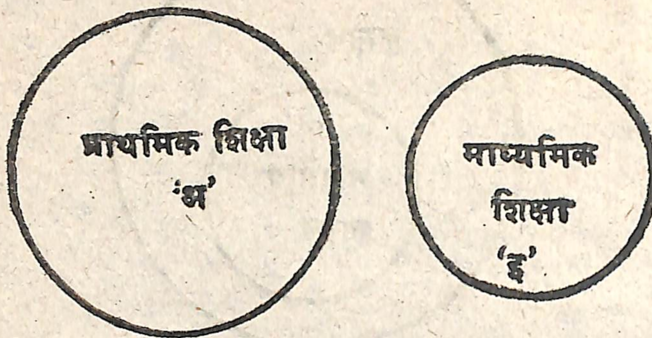


फूलवाले पौधों की शरीर रचना

उपर्युक्त रेखा चित्र में दो अतिव्यापी वृत्तों को दर्शाया गया है। वृत्त 'अ' पौधों की शरीर रचना का है। इसके अन्तर्गत केवल विभिन्न प्रकार के पौधों की शरीर रचना की व्याख्या न होकर इससे सम्बन्धित सूक्ष्म सिद्धान्तों तथा क्रियाविधि का भी वर्णन है और इस कारण यह विषय कम मूर्त है। वृत्त 'इ' का सम्बन्ध केवल फूल वाले पौधों से होने के कारण, यह वृत्त 'अ' के विषय से अधिक मूर्त है। अतः यह स्पष्ट है कि वर्ग 'अ' पौधों की शरीर रचना को वर्ग 'इ' फूलवाले पौधे से प्राथमिकता दिया जाना अधिक सहायक होगा।

3 परवर्ती विकास (Later-in-Evolution) : इस सिद्धान्त की व्याख्या इस

प्रकार की गई, "यदि दो वर्ग एक ही विकासक्रम की दो अवस्थाओं में आते हों तो पहली अवस्था वाले वर्ग को दूसरे वर्ग से प्राथमिकता देनी चाहिए।"



वर्ग समूह 10 शिक्षा के अन्तर्गत आये हुए विषयों में एक समस्या है कि "प्राथमिक शिक्षा" तथा "माध्यमिक शिक्षा" में से किसे प्रथम स्थान दिया जाय ? उपरोक्त रेखाचित्र में दर्शाए गए वृत्तों से स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा को शैक्षणिक विकास की प्रथम अवस्था तथा माध्यमिक शिक्षा को द्वितीय अवस्था माना गया है। अतः यह स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा से प्राथमिकता दी जाय।

4 परवर्ती काल (Later-in-Time) : इस सिद्धान्त की व्याख्या इस प्रकार की गई है, "यदि दो वर्गों में से एक काल (समय) में दूसरे के पहले आता हो तो प्रथम को द्वितीय पर प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

वर्ग समूह 5 कानून में निम्न विषयों की समस्या सुलझानी है। ये विषय विभिन्न धर्म वाले सम्प्रदायों के कानूनी विधान हैं। अतः परवर्ती काल सिद्धान्त के आधार पर संसार के प्रमुख धार्मिक कानून को निम्न क्रम से रखा जा सकता है :

हिन्दू कानून यहूदी कानून ईसाई कानून मुस्लिम कानून

5 स्थानीय समीपता (Spatial Contiguity) : इस सिद्धान्त की व्याख्या इस प्रकार की गई है, "जब कुछ ऐसे भौगोलिक क्षेत्रों को व्यवस्थित करना हो, जो एक दूसरे के अन्तर्गत न आते हों, तो उन क्षेत्रों को उनकी समीपता के आधार पर व्यवस्थित करना चाहिए।"

इस सिद्धान्त के उदाहरण के लिए एशिया के चार देशों को लिया जा सकता है—भारत, चीन, जापान, दक्षिण पूर्व एशिया। इन देशों को इस तरह व्यवस्थित किया जा सकता है : चीन, भारत, जापान, दक्षिण पूर्व एशिया; या जापान, चीन, दक्षिण पूर्व एशिया, भारत, या अन्य वर्णक्रम के अनुसार। परन्तु इस प्रकार के क्रमों को ठोस तथा निश्चित नहीं किया जा सकता। अतः स्थानीय समीपता सिद्धान्त के आधार पर यदि चीन से प्रारम्भ किया जाय तो चार देशों को निम्न सहायक-क्रम में रखा जा सकता है :

चीन जापान दक्षिण पूर्व एशिया भारत

6 जटिलता वृद्धि (Increasing Complexity) : इस सिद्धान्त की व्याख्या इस प्रकार की गई है, "यदि दो सम्बन्धित वर्गों में से एक में दूसरे से कम अंशों

में जटिलता हो तो कम जटिलता वाले वर्ग को दूसरे से प्राथमिकता दी जानी चाहिए ।"

मुख्य वर्ग गणित के अन्तर्गत 'ज्यामिति' के उपविषय 'ठोस ज्यामिति' (Solid Geometry) तथा 'समतल ज्यामिति' (Plane Geometry) का क्रम निश्चित करने में कठिनाई होती है । इन विषयों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि समतल ज्यामिति (या दो घातों वाले स्थान) एवं दूसरे उप-विषयों का क्रम जटिलता वृद्धि के सिद्धान्त के अनुसार इस प्रकार व्यवस्थित किया जा सकता है :

समतल ज्यामिति ठोस ज्यामिति

7 प्रामाणिक अनुक्रम (Canonical Sequence) : इस सिद्धान्त की व्याख्या इस प्रकार की गई है, "जब किन्हीं विचाराधीन वर्गों को सहायक-क्रम में व्यवस्थित करने के लिए किसी सिद्धान्त का प्रयोग न किया जा सके तब किसी भी परम्परागत या प्रचलित या प्रामाणिक क्रम को प्रयोग में लाना चाहिए ।"

वर्ग समूह 8 दर्शन में सम्मिलित विषयों 'तर्कशास्त्र' एवं 'ज्ञानशास्त्र' को अब तक के प्रतिपादित सिद्धान्तों के आधार पर किसी भी क्रम में रखना सम्भव नहीं है । अतः इन विषयों को परम्परा के आधार पर व्यवस्थित किया जाना उचित होगा :

तर्कशास्त्र ज्ञानशास्त्र

इस प्रकार ग्रन्थालय में उपलब्ध पाठ्य-सामग्री को व्यवस्थित करने में विषयों के किसी समूह में सहायक-क्रम प्राप्त करने में कठिनाई होने पर उपर्युक्त सिद्धान्तों की शरण में जाना चाहिए । सहायक-क्रम निश्चित करने के लिए इन सिद्धान्तों की सहायता लेनी चाहिए । इन सिद्धान्तों की सहायता से विषयों में सहायक-क्रम सम्बन्धी विभिन्न समस्याएँ सुलझाई जा सकती हैं ।

⊙

षष्ट अध्याय

वर्गीकरण पद्धतियों का विकास

(Evolution of Classification Schemes)

आदिकाल से ही मनुष्य चिन्तनशील रहा है। अपने इसी गुण के कारण मनुष्य ने सर्वप्रथम प्राकृतिक वस्तुओं का अध्ययन किया। रूप, रंग एवं आकार में इन वस्तुओं में भिन्नता होने के कारण मनुष्य ने इनको पृथक्-पृथक् समूहों में रखकर विभिन्न नामों से सम्बोधित किया। इस नामकरण से ही वर्गीकरण का सूत्रपात हुआ। धीरे-धीरे मनुष्य में चेतना का विकास हुआ तथा इसके फलस्वरूप पारस्परिक सम्बन्धों में अधिक दृढ़ता आई। अपने अनुभवों एवं भावों को व्यक्त करने के लिए मनुष्य ने अनेक उपाय अपनाये। लिपि के अभाव में उसने संकेतों का प्रयोग किया। भावों को चित्र द्वारा व्यक्त करने का प्रयत्न किया। इन्हीं संकेतों एवं चित्रों के आधार पर कालान्तर में मनुष्य ने लिपि का आविष्कार किया। इस लिपि का प्रयोग मिट्टी की ईंटों, भोजपत्रों, ताड़पत्रों, चमड़ों एवं कागजों पर किया। इस प्रकार विभिन्न प्रकार की सामग्री का सूत्रपात हुआ तथा उसे किसी सुविधानुकूल क्रम से क्रमबद्ध करने की आवश्यकता हुई। आधुनिक पुस्तक-वर्गीकरण का मूलरूप यहीं से होता है।

भारतीय अध्ययन की प्रवृत्ति सदा से ही विषय की गम्भीरता की ओर होने के कारण यहाँ की वर्गीकरण पद्धतियों में लिखित सामग्री को विषयों के अनुसार क्रमबद्ध रखने की परम्परा रही है। भारत के प्राचीन ग्रन्थालयों में ग्रन्थों की क्रमबद्धता विषयानुसार ही थी। मध्यकालीन भारत में भी मुगल शासकों के ग्रन्थालय में पाठ्य-सामग्री निश्चित विषय शीर्षकों के अन्तर्गत क्रमबद्ध की जाती थी।

1 वर्गीकरण पद्धतियाँ
(Schemes of Classification)

विषय के अनुसार ग्रन्थों का वर्गीकरण ही ग्रन्थालय वर्गीकरण का मुख्य उद्देश्य है। डॉ० रंगनाथन के अनुसार विषयों के वर्गीकरण के लिए मुख्यतया निम्न पद्धतियाँ स्वीकार की हैं :

1 परिगणनात्मक वर्गीकरण (Enumerative Classification)

2 लगभग-परिगणनात्मक वर्गीकरण (Almost Enumerative Classification)

3 लगभग-पक्षात्मक वर्गीकरण (**Almost Faceted Classification**)

4 अपरिवर्तनीय-पक्षात्मक वर्गीकरण (**Rigidly Faceted Classification**) अर्थात् पूर्वनिर्धारित पक्षों सहित वर्गीकरण

5 मुक्त-पक्षात्मक वर्गीकरण (**Freely Faceted Classification**) अर्थात् अभिधारणाओं एवं सिद्धान्तों द्वारा संचालित वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक वर्गीकरण (**Analytico Synthetic Classification Guided by Postulates and Principles**)

इस प्रकार स्पष्ट है कि विषयों के वर्गीकरण की पद्धतियों का विकास परिगणनात्मक से वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक की ओर हुआ है। परिगणनात्मक पद्धति ग्रन्थों के वर्गीकरण की धारणा के समान ही प्राचीन है। वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति का विकास परिगणनात्मक पद्धति में से ही हुआ है, जबकि यह पद्धति शनैः-शनैः असामयिक एवं गतिहीन हो गई। वास्तव में ज्ञान-जगत के दो गुणों अर्थात् उसकी अनन्त प्रकृति एवं संचरणशील निरन्तरता के फलस्वरूप परिगणनात्मक पद्धति का ह्रास हो गया। यह दुर्भाग्यपूर्ण था, क्योंकि परिगणनात्मक पद्धति का आकार अधिक सरल था। इन दोनों पद्धतियों की सरलता की तुलना मध्ययुग के व्यक्ति एवं उसके ज्ञान तथा अंतरिक्ष युग के व्यक्ति एवं उसके ज्ञान में विद्यमान सरलता के अन्तर से ही की जा सकती है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि आधुनिक युग का व्यक्ति एवं उसका ज्ञान प्राचीन युग के व्यक्ति एवं उसके ज्ञान से कम सरल अथवा अधिक जटिल है।

उपर्युक्त पद्धतियों का विश्लेषण कर स्पष्ट किया जा सकता है :

परिगणनात्मक वर्गीकरण (Enumerative Classification) : इस पद्धति में ज्ञान-जगत के समस्त विशिष्ट विषयों—भूतकालीन एवं वर्तमान का अनुसूचियों में मानित सहायक क्रम में उल्लेख कर दिया जाता है। प्रत्येक विषय को एक वर्गांक प्रदान किया जाता है। जे० मिल्स का कथन है कि इस पद्धति में अंकित वर्गों के अन्तर्गत सरल विषयों (एक ही पक्ष सहित) तथा कुछ संयुक्त विषयों (एक से अधिक पक्ष सहित) को सम्मिलित किया जाता है। अंकित वर्गों को पूर्वनिर्मित वर्गांक दिये जाते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि जिन संयुक्त विशिष्ट विषयों को अंकित नहीं किया गया है एवं पूर्व-निर्मित वर्गांक नहीं दिए गए हैं, उनको व्यक्तित्व प्रदान नहीं किया जा सकता।

विकरी महोदय का कथन है कि परिगणनात्मक पद्धति में समस्त सम्भव विषयों को अंकित किया जाता है। डॉ० रंगनाथन के विचार में इस वर्गीकरण पद्धति में वर्गों को किसी मूल वर्ग से सीमित करने की अपेक्षा अधिकांश वर्गों को विशेष उद्देश्य हेतु अंकित कर दिया जाता है।

परिगणनात्मक पद्धति की विशेषताएँ : इस पद्धति की कुछ विशेषताएँ हैं; जिनके कारण यह अधिक प्रचलित है :

1 इसकी अनुसूचियों का आकार शुद्ध है। एक विशिष्ट विषय ''माध्यमिक शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम'' को माध्यमिक शिक्षा अथवा पाठ्यक्रम के

अन्तर्गत रखा जा सकता है। दोनों को मिश्रित कर एक स्थान पर रखना सम्भव नहीं है।

2 इसमें योजक चिह्नों तथा पक्षों का अभाव है।

3 समस्त सम्भव वर्गों को अंकित किया गया है।

4 इस पद्धति की अनुसूचियाँ वाक्यों का संग्रह है। प्रथम स्तम्भ में वर्गांकों का क्रम से उल्लेख किया गया है तथा द्वितीय स्तम्भ में प्राकृतिक भाषा में उनके अर्थ दिए गए हैं।

5 यह पद्धति लगभग अनुकूल है।

6 इस पद्धति में सापेक्षिक अनुक्रमणिका पर विशेष महत्व दिया गया है। इस अनुक्रमणिका के प्रथम स्तम्भ में विशिष्ट विषयों के नाम आनुवर्णिक क्रम में प्राकृतिक भाषा में दिए गए हैं तथा द्वितीय स्तम्भ में उनके सम्वन्धित वर्गांकों का उल्लेख किया गया है।

7 इसमें अनुसूचियों का आकार विस्तृत है, किन्तु व्यक्तित्व प्रदान किए जाने वाले विशिष्ट विषयों की संख्या सीमित है।

8 इसमें शुद्ध एवं अस्थिर मिश्रित अंकन का प्रयोग किया जा सकता है।

लायब्रेरी ऑफ कांग्रेस वर्गीकरण : यह परिगणनात्मक पद्धति का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। इस पद्धति की अनुसूचियाँ लगभग **72,000** पृष्ठों के **21** खण्डों में हैं। किसी पुस्तक का वर्गांक निर्मित करने के लिए इतने अधिक खण्डों का प्रयोग करना अत्यधिक दुष्कर कार्य है।

2 लगभग-परिगणनात्मक वर्गीकरण (Almost Enumerative Classification) : इस पद्धति में भूतकाल एवं वर्तमान के अधिकांश विषयों का अनुसूची में उल्लेख कर दिया जाता है। इसके अतिरिक्त सामान्य एकलों की कुछ अनुसूचियाँ भी इस पद्धति में सम्मिलित की जाती हैं। विषयों की अनुसूची में मूल विषयों के साथ संयुक्त विषयों का भी उल्लेख होता है, इसी कारण विषयों की अनुसूची अधिक विस्तृत होती है। कुछ संयुक्त विषयों के वर्गांक सामान्य एकलों की अनुसूचियों की सहायता से निर्मित कर लिए जाते हैं।

विषय-वर्गीकरण : जेम्स डफ ब्राउन की विषय वर्गीकरण पद्धति इस वर्गीकरण पद्धति का उदाहरण है। इसमें एक मुख्य अनुसूची तथा एक मूलवर्गीय तालिका (Categorical Table) है। मुख्य सूची में विषयों का उल्लेख है। मूलवर्गीय तालिका में एकलों का उल्लेख है अर्थात् यह ऐसे मूल पदों की तालिका है, जिनका प्रयोग विषयों के भिन्न-भिन्न रूप, पक्ष तथा गुण को व्यक्त करने के लिए किया जाता है।

इस पद्धति में मूलवर्गीय अंक अर्थात् एकल अंक का योजक-चिह्न दशमलव विन्दु है। इसी कारण विषय वर्गीकरण के समस्त वर्गांक एकांगी नहीं हैं, कुछ वर्गांकों में दो भाग भी हैं।

दशमलव वर्गीकरण : मेलविल ड्यूई की दशमलव वर्गीकरण वस्तुतः इसी

पद्धति के अन्तर्गत रखी जाती है। दशमलव के सत्रहवें संस्करण में तीन अनुसूचियाँ हैं :

1 अत्यन्त विस्तृत साधारण अनुसूची (1250 पृष्ठ)
2 प्रामाणिक उपविभागों की अनुसूची (8 पृष्ठ)
3 क्षेत्र अनुसूची (250)

साधारण अनुसूची में विषयों का उल्लेख है। इसमें अधिकांश संयुक्त विषय (Compound subjects) हैं। अन्य अनुसूचियों में एकलों का उल्लेख है।

इसके अतिरिक्त दशमलव में अनेक स्थानों पर 'अनुसार विभाजन' (Divide like) विधि को निर्धारित किया गया है। दशमलव के सत्रहवें संस्करण का अध्ययन करने से स्पष्ट है कि नवीन विषयों की उत्पत्ति के फलस्वरूप इसमें नवीन संयुक्त विषयों के निर्माण की भी व्यवस्था की गई है। उदाहरणार्थ :

633.159726 अनाज में टिड्डियों द्वारा की गई क्षति
उपरोक्त वर्गांक का निर्माण निम्नांकित आदेशों के अनुसार हुआ है :
633.15 अनाज (633.635 के अन्तर्गत दिए आदेशों के अनुसार विभाजित कीजिए)
633-635 विशिष्ट फसल का उत्पादन (प्रत्येक उपविभाग में 9 जोड़िये तथा 632 की भाँति विभाजित कीजिए)।

3 **लगभग-पक्षात्मक वर्गीकरण (Almost Faceted classification)** : इस पद्धति में भूतकाल एवं वर्तमान के अधिकांश विषयों का एक विस्तृत अनुसूची में उल्लेख कर दिया जाता है। इसके अतिरिक्त सामान्य एकलों तथा विशेष एकलों की कुछ अनुसूचियाँ भी इस पद्धति में सम्मिलित की जाती हैं।

विषयों की अनुसूचियों में मूल विषयों के अलावा अधिकांश संयुक्त विषयों का उल्लेख भी रहता है। अतिरिक्त संयुक्त विषयों के वर्गांक भी, सामान्य एकलों एवं प्रत्येक विषय के लिए दिये गए विशेष एकलों की सहायता से निर्मित किए जा सकते हैं। इस प्रकार निर्मित वर्गांकों के लिए कुछ योजक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

सार्वभौमिक दशमलव वर्गीकरण UDC : यह प्रथम पद्धति थी, जिसे लगभग-पक्षात्मक वर्गीकरण के अनुकूल निर्मित किया गया था। इसमें अनेक अनुसूचियों का उल्लेख किया गया है :

1 दशमलव पद्धति की साधारण अनुसूची (इसमें अधिकांश संयुक्त विषयों को संशोधित रूप में रखा गया है)।
2 सामान्य एकलों की निम्न अनुसूचियाँ :

21 रचना Form
22 काल Time
23 स्थान Place
24 भाषा Language
25 दृष्टिकोण Point of view

3 साधारण अनुसूची में अंकित कुछ विषयों के लिए विशेष एकलों (विशिष्ट उपविभाग) की अनुसूची।

इस पद्धति में नवीन विषयों के वर्गांक निर्मित करने की व्यवस्था है। दो वर्गांकों को : योजक चिह्न द्वारा जोड़कर एक संयुक्त वर्गांक का निर्माण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य योजक चिह्नों का भी प्रावधान है। उदाहरणार्थ :

633.15-272.6 (540) "1967" भारत में 1967 में टिड्डियों द्वारा की गई अनाज की क्षति

उपरोक्त वर्गांक का संश्लेषण निम्न प्रकार है :

अंक	पद	योजक चिह्न
63	कृषि (मूल पक्ष)	
315	अनाज (उपज पक्ष)	
272.6	टिड्डी (गुण पक्ष अर्थात् विशिलष्ट उपविभाग)	—
540	भारत (देश पक्ष)	( )
1967	काल पक्ष	" "

ग्रन्थ वर्गीकरण : हैनरी एवेलिन ब्लिस द्वारा निर्मित बिब्लिऔग्रैफिक वर्गीकरण लगभग-पक्षात्मक पद्धति है। इसमें अनेक अनुसूचियों का उल्लेख किया गया है :

1 एक विस्तृत साधारण अनुसूची (इसमें मूल तथा संयुक्त विषयों को अंकित किया गया है)

2 सामान्य एकलों के लिए निम्न अनुसूचियाँ (क्रमवद्ध अनुसूचियाँ)

21 पूर्ववर्ती **Anteriorising (Numeral Sub-divisions)**

22 काल **Time**

23 भौगोलिक **Geographical**

24 भाषा **Language**

3 सात सहायक अनुसूचियाँ (इसमें ऐतिहासिक एवं भाषा-विज्ञान उपविभाग अंकित हैं)

4 इकत्तीस विशेष एकलों की अनुसूचियाँ (सीमित उपयोग के लिए विशेष सहायक अनुसूचियाँ)

इस पद्धति में योजक चिह्न का प्रयोग किया जा सकता है तथा वर्गांक के लिए प्रयुक्त अंकों की संख्या में वृद्धि की जा सकती है। उदाहरणार्थ :

UAQT, JQDL, Hq, U

भारत में 1967 में टिड्डियों द्वारा की गई अनाज की क्षति

उपर्युक्त वर्गांक का संश्लेषण निम्न प्रकार है :

अंक	पद	योजक चिह्न
UA	कृषि (मूल पक्ष)	
QT	अनाज (उपज पक्ष)	
JQDL	टिड्डी (गुण पक्ष)	,
H	सुरक्षा (व्यवहार पक्ष)	,
q	भारत (भौगोलिक पक्ष)	,
U	आधुनिक काल (काल पक्ष)	

4 अपरिवर्तनीय-पक्षात्मक वर्गीकरण (Rigidly Faceted Classification) : इस पद्धति में मूल वर्गों, सामान्य एकलों तथा विशेष एकलों की अनुसूचियों का उल्लेख किया गया है। पक्षात्मक वर्गीकरण में संयुक्त विषयों की अनुसूचियों का कोई उल्लेख नहीं होता है। संयुक्त विषय का वर्गांक मूल विषयों, सामान्य एकलों तथा प्रत्येक विषय के लिए अंकित विशेष एकलों की सहायता से निर्मित होता है। नवीन विषयों की उत्पत्ति के फलस्वरूप इस पद्धति का विघटन नहीं होता। इसके लिए अधिक से अधिक एकलों की नवीन अनुसूचियों के निर्माण तथा वर्तमान मूल विषयों एवं एकलों की अनुसूचियों में विस्तार की आवश्यकता पड़ सकती है। संयुक्त विषयों के वर्गांकों में योजक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

इस पद्धति में मूल वर्ग से सम्बन्धित समस्त विषयों के लिए पक्षों के क्रम को पूर्व में ही निर्धारित कर दिया जाता है। इस प्रकार संयुक्त विषयों के वर्गांक निर्मित करने के लिए मूल वर्ग से सम्बन्धित पक्ष परिसूत्र (Facet Formula) से ही अंक लिए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त पूर्व निर्धारित पक्ष परिसूत्र के कारण नवीन संयुक्त विषयों के लिए आवश्यक अतिरिक्त पक्षों का समावेश नहीं किया जा सकता है। इसी कारण यह पद्धति अपरिवर्तनीय बन गई है।

द्विबिन्दु वर्गीकरण : डॉ० रंगनाथन द्वारा 1933 में निर्मित पद्धति सर्वप्रथम पूर्णरूपेण पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति कही जानी चाहिए। यद्यपि 'पक्षात्मक' पद उस समय प्रचलित नहीं था, तथापि इसके पीछे विद्यमान भावना को 1924 में कार्यान्वित किया गया था। यह अनुभव किया गया कि वास्तव में विभिन्न अनुसूचियों में से लिए गए 'पक्ष' अंकों को संग्रहीत कर विषय का वर्गांक बनाना चाहिए। एकल पक्ष का योजक चिह्न 'कोलन' (:) निश्चित किया गया। यह भी अनुभव किया गया कि वर्गांक निर्मित करने से पूर्व प्रत्येक विषय का पक्षों में विश्लेषण कर दिया जाना चाहिए। इन्हीं आधारों पर द्विबिन्दु पद्धति का निर्माण हुआ था।

5 मुक्त-पक्षात्मक वर्गीकरण (Freely Faceted Classification) : इस पद्धति में मूल विषय के साथ संयुक्त विषयों के लिए अपरिवर्तनीय पूर्व निर्धारित पक्ष परिसूत्र की व्यवस्था नहीं है। इसके अन्तर्गत संयुक्त विषय में प्रयुक्त समस्त पक्षों को उस विषय के पक्ष विश्लेषण (Facet analysis) द्वारा ज्ञात किया जा सकता है। विषय से सम्बन्धित पक्ष पदों को सिद्धान्तों के आधार पर क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। तब प्रत्येक पक्ष पद को उसके पक्ष अंक में परिवर्तित कर दिया जाता है। अंत में, पक्ष अंकों को उचित योजक चिह्नों की सहायता से वर्गांक में संश्लेषित कर दिया जाता है। इस प्रकार प्रत्येक संयुक्त विषय अपने स्वयं के पक्षों को निर्धारित करता है।

पक्ष भावना (Facet Ideas)
पक्ष पद (Facet Terms)
पक्ष अंक (Facet Numbers)
वर्गांक (Class Number)

विषय अपना स्वयं का पक्ष क्रम भी निर्धारित करता है। अंकों में अथवा पक्षों के क्रम में कुछ भी अपरिवर्तनीय नहीं है। प्रत्येक वस्तु मुक्त है। इसी कारण इस पद्धति को मुक्त रूप से पक्षात्मक वर्गीकरण कहा गया है। इसके अतिरिक्त, विश्लेषण एवं संश्लेषण प्रक्रिया के कारण इस पद्धति को वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक वर्गीकरण का नाम भी दिया गया है। संयुक्त विषय के पक्षों का क्रम कुछ मूल सिद्धान्तों एवं अभिधारणाओं पर आधारित होने के कारण इसको अभिधारणाओं एवं सिद्धान्तों द्वारा संचालित वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक वर्गीकरण कहा जाता है।

यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित है कि कोई भी पक्षात्मक वर्गीकरण वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक नहीं हो सकता, जब तक कि वह मुक्त रूप से पक्षात्मक नहीं है।

द्विबिन्दु वर्गीकरण : पूर्ण निर्धारित पक्ष परिसूत्र की अपरिवर्तनीयता को समाप्त करने का प्रथम प्रयत्न द्विबिन्दु पद्धति द्वारा 1950 में किया गया। उसके पश्चात् द्विबिन्दु पद्धति मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण के रूप में 1952 में प्रकाशित हुई।

मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण की नमनीयता लगभग-पक्षात्मक वर्गीकरण अथवा अपरिवर्तनीय-पक्षात्मक वर्गीकरण से अधिक है। इसको निम्न उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है :

उत्तर प्रदेश में 1967 में टिड्डियों द्वारा की गई अनाज की क्षति का जीव-शास्त्रीय नियंत्रण

UDC Number 633.154-272.63 : 632.937 (545.8) "1967"
COLON Number J3854 : 438283 : 551.4452 'N67

उपर्युक्त दोनों पद्धतियों के अनुसार वर्गांक को लगभग समान आकार दिया गया है। किन्तु मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण द्वारा निर्मित वर्गांक में अंकों की संख्या लगभग-पक्षात्मक वर्गीकरण द्वारा निर्मित उसी वर्गांक में अंकों की संख्या से सामान्यत: कम है।

वास्तव में, बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही सूक्ष्म विषयों से सम्बन्धित ग्रन्थ अत्यधिक संख्या में प्रकाशित होने लगे। प्रत्येक विशिष्ट विषय को उचित वर्गांक द्वारा स्पष्टीकरण करना आवश्यक हो गया। इसके साथ ही विषयों को देश तथा काल के संदर्भ में स्पष्ट करने के लिए विभिन्न पक्षों का प्रयोग करना अनिवार्य हो गया। इन्हीं समस्त कारणों से वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति का आविष्कार किया गया।

वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति के अन्तर्गत समस्त विषयों के विश्लेषण का प्रावधान है तथा समस्त संयुक्त एवं मिश्रित विशिष्ट विषयों के संश्लेषण की क्षमता है। इसमें मौलिक विचारों की असंख्य अनुसूचियाँ दी गई हैं तथा उनके संश्लेषण के लिए योजक चिह्न निर्धारित किए गए हैं। इन विशेषताओं के कारण ज्ञान-जगत से उत्पन्न किसी भी विशिष्ट विषय को स्पष्ट वर्गांक प्रदान करना सरल हो गया है।

विकरी महोदय का कथन है कि इस पद्धति में प्रत्येक मूल पद को एक वर्गीकरण चिह्न में परिवर्तित कर दिया जाता है तथा इस प्रकार एकत्रित चिह्न द्वारा विषय को पुनः उपस्थित किया जाता है। जे० मिल्स ने बतलाया है कि वैश्लेषी-

संश्लेषणात्मक वर्गीकरण में "विषय का पहले पक्षों में विश्लेषण कर लिया जाता है, तथा इसके पश्चात् संश्लेषण द्वारा वर्गांकों का निर्माण किया जाता है।"

वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति की विशेषताएँ : इस पद्धति की निम्न विशेषताएँ हैं, जिनके कारण वर्तमान समय में इनके प्रयोग को अधिक महत्व दिया जा रहा है।

1 इसका आकार अनेक संख्यक है।

2 इसमें विशिष्ट विषयों का दशाओं, पक्षों, एकलों आदि में विश्लेषण करने की व्यवस्था है।

3 इसकी अनुसूचियों में केवलमूल धारणाओंएवं एकलों को ही अंकित किया गया है, समस्त सम्भव विशिष्ट विषयों को अंकित नहीं किया गया है।

4 इस पद्धति की अनुसूचियाँ वाक्यों का संग्रह् न होकर शब्दों का संग्रह है।

5 यह पद्धति अधिक अनुकूल है।

6 इसमें योजक चिह्नों के द्वारा वर्गांकों को संश्लेषित करना सम्भव है।

7 यह पद्धति अनुक्रमणिका पर पूर्णतया निर्भर नहीं है। इसकी अनुसूचियाँ संक्षिप्त हैं।

8 कुछ अनुसूचियाँ समस्त विषयों के लिए सर्वमान्य हैं, कुछ अनुसूचियाँ कुछ विषयों के लिए मान्य हैं तथा कुछ विशेष अनुसूचियाँ व्यक्तिगत विषयों के लिए मान्य हैं।

9 इस पद्धति में मिश्रित अंकन का प्रयोग किया गया है।

10 इस पद्धति में पंक्तियों एवं शृंखलाओं में ग्राह्यता की व्यवस्था है।

11 इसमें विभिन्न विधियों का प्रयोग किया गया है।

12 इस पद्धति की प्रक्रिया को विचार स्तर, शाब्दिक स्तर तथा अंकन स्तर में विभाजित किया गया है।

2 परिगणनात्मक तथा वैश्लेषी-संशलेषणात्मक पद्धतियाँ (Enumerative and Analytico-Synthetic Schemes)

उपर्युक्त वर्गीकरण पद्धतियों के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि ग्रन्थों के वर्गीकरण का कार्य अब एकसंख्यक परिगणनात्मक पद्धतियों द्वारा संभव नहीं है। अनुक्रमणिका की सहायता से सूक्ष्म विषयों का वर्गीकरण नहीं किया जा सकता। असंख्य विशिष्ट एवं सूक्ष्म विषयों का वर्गीकरण करने के लिए वर्तमान युग में अनेक-संख्यक वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति की ही आवश्यकता है। विश्व के अधिकांश देशों में इसका प्रचलन हो रहा है। इस पद्धति पर एवं उसकी व्यावहारिकता पर अनुसंधान किए जा रहे हैं। फ्रांस, इंगलैण्ड, अमेरिका एवं भारत में वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति पर महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं।

सार्वभौम दशमलव वर्गीकरण के समय से प्रारम्भ कर डॉ० रंगनाथन के योगदान तक का अध्ययन करने तथा विभिन्न देशों में विभिन्न रूपों में हुए वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति के विकास को देखने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि परिगणनात्मक पद्धति भूतकालीन विचारधारा है।

विशिष्ट विषयों के वर्गीकरण में एक वर्गकार के लिए परिगणनात्मक पद्धति की अपेक्षा वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति अधिक सहायक है। एक दृष्टांत द्वारा इसे स्पष्ट किया जा सकता है। वर्गकार की एक ऐसे यात्री से तुलना की जाय जो रात्रि के समय गहन जंगल में निवास करने वाले अपने मित्र (विशिष्ट विषय) के पास पहुँचना चाहता है। मार्ग में अनेक बाधाएँ हैं, विभिन्न पगडंडियाँ हैं तथा कोई मार्गदर्शक नहीं है। ऐसी दशा में यदि मित्र अपने निवास स्थान पर दूर से दिखाई देने वाले शक्तिशाली प्रकाश की व्यवस्था कर दे तो यात्री की कठिनाइयाँ कम हो सकती हैं। एक उत्तम परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धति विशिष्ट विषय से सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री की जानकारी प्राप्त करने में वर्गकार को प्रकाश रूपी सहायता प्रदान करती है।

यदि मित्र के द्वारा अत्यन्त तीक्ष्ण प्रकाश की व्यवस्था की जाय तो यात्री को अधिक सुविधा होगी और वह विभिन्न बाधाओं को पार कर एवं एक निश्चित मार्ग का अनुसरण कर अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँच सकता है। एक सुव्यवस्थित एवं सुयोजित वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति के पक्षों एवं दशाओं के परिसूत्र वर्गकार को तीक्ष्ण प्रकाश रूपी सुविधाएँ प्रदान कर विशिष्ट विषय का वर्गांक निर्मित करने में सहायक होते हैं। इनकी सहायता से वर्गकार विभिन्न पक्षों में से इच्छित अंकों को छाँट कर संयुक्त विषय का वर्गीकरण सुगमता से कर सकता है।

3 वर्गीकरण पद्धति का चयन
(Choice of Classification Scheme)

सेयर्स महोदय के कथनानुसार किसी ग्रन्थालय के लिए एक पद्धति को चयन करने का कार्य अत्यधिक दुष्कर है। वास्तव में चयन करते समय हम यह आशा करते हैं कि वर्गीकरण उचित ढंग से कार्यान्वित हो सके। वास्तव में समस्त स्थानों के लिए समस्त आकार एवं श्रेणियों के पुस्तकालयों तथा प्रत्येक श्रेणी के पाठकों के लिए एक पद्धति पर्याप्त नहीं है। विद्यमान पद्धतियों के पक्ष एवं विपक्ष में विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत कर एक पद्धति को उपयुक्त तथा दूसरी को अनुपयुक्त घोषित किया जाता है। प्रत्येक ग्रन्थपाल को ग्रन्थालय के लिए किसी एक पद्धति का चयन करना आवश्यक है। अपनी कोई निजी पद्धति का आविष्कार करने की अपेक्षा ग्रन्थपाल को विद्यमान पद्धतियों में से ही एक पद्धति का चयन करना चाहिए।

किसी एक वर्गीकरण पद्धति का चयन करने से पूर्व निम्न तत्वों पर विचार करना उचित है :

1 ग्रन्थालय का आकार Size of the Library
2 ग्रन्थालय की श्रेणी Type of the Library
3 पाठ्य-सामग्री का संग्रह Collection of Reading Material
4 पाठकों की श्रेणी Type of Readers
5 ग्राह्य पद्धति के व्यावहारिक गुण Practical virtues of the Scheme adopted.

1 ग्रन्थालय का आकार : वर्गीकरण पद्धति के चयन में ग्रन्थालय का आकार अधिक महत्वपूर्ण है। सुविधा के लिए समस्त ग्रन्थालयों को तीन श्रेणियों में रखा गया है :

1 छोटे आकार का ग्रन्थालय	Small-sized Library
2 सामान्य आकार का ग्रन्थालय	Medium-sized Library
3 वृहत् आकार का ग्रन्थालय	Large-sized Library

छोटे ग्रन्थालयों में पुस्तकों को केवल मुख्य भागों में ही विभाजित करना अधिक उचित होगा। विषयों का स्थूल रूप से ही विभाजन कर पुस्तकों को फलकों पर व्यवस्थित कर पाठकों की माँग पूरी की जा सकती है।

जब ग्रन्थालय के आकार में वृद्धि होती है तब विषयों को केवल मुख्य भागों में विभाजित करना पर्याप्त नहीं है। उस समय विशेष वर्गीकरण की व्यवस्था करना अनिवार्य है। सामान्य अथवा वृहत् आकार के ग्रन्थालयों में पाठकों की माँग विशिष्ट विषयों की पाठ्य-सामग्री के सम्बन्ध में होती है। उनकी माँगों की पूर्ति के लिए तथा उनको फलकों पर सहायक क्रम में व्यवस्थित करने के लिए ग्रन्थालय की पाठ्य-सामग्री का सूक्ष्मता से वर्गीकरण करना आवश्यक है। अतः ऐसी वर्गीकरण पद्धति का चयन करना उचित होगा, जिसमें विशिष्ट विषयों के वर्गीकरण की व्यवस्था हो।

2 ग्रन्थालय की श्रेणी : ग्रन्थालय की श्रेणी का भी वर्गीकरण पद्धति के चयन में बहुत महत्व होता है। ग्रन्थालय सामान्य अथवा विशेष हो सकता है। सामान्य ग्रन्थालयों में वर्गीकरण की सामान्य पद्धति से उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है; किन्तु विशेष ग्रन्थालय में पाठ्य-सामग्री की व्यवस्था के लिए ऐसी पद्धति का प्रयोग उपयुक्त होगा, जिसमें विशिष्ट विषयों को श्रेष्ठता प्रदान की गई हो।

3 पाठ्य-सामग्री का संग्रह : ग्रन्थालयों में उपलब्ध पाठ्य-सामग्री पर भी वर्गीकरण पद्धति का चयन निर्भर होता है। जिन ग्रन्थालयों में पाठ्य-सामग्री का विशेष संग्रह होता हैं, वहाँ उसी प्रकार की पद्धति चयन करना चाहिए। जिन ग्रन्थालयों की पाठ्य-सामग्री का क्षेत्र विशिष्ट विषय तक ही सीमित रहता है, वहाँ पक्षात्मक पद्धति का प्रयोग करना अधिक उपयुक्त होगा।

4 पाठकों की श्रेणी : पाठकों द्वारा पाठ्य-सामग्री का प्रयोग भी वर्गीकरण पद्धति के चयन में एक निर्णायक तत्व है। सार्वजनिक ग्रन्थालयों में अधिकांश पाठकों की माँग सामान्य पाठ्य-सामग्री की ही होती है। यदा-कदा ही विशिष्ट विषय की सामग्री की माँग की जा सकती है। इसके विपरीत विशेषित ग्रन्थालयों में अधिकांश पाठकों द्वारा विशिष्ट विषयों से सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री की ही माँग अधिक होगी। अतः पाठकों की माँग की पूर्ति के लिए सूक्ष्म वर्गीकरण पद्धति का चयन करना आवश्यक होगा।

5 ग्राह्य पद्धति के व्यावहारिक गुण : उपर्युक्त दृष्टिकोणों के अतिरिक्त वर्गीकरण पद्धति के चयन के लिए पद्धति के व्यावहारिक गुणों—विषयों का व्यवस्थित क्रम, सुगम प्राप्ति, अनन्त ग्राह्यता, सरल नमनीय अंकन, आदि—पर भी विचार करना

आवश्यक है। जिस पद्धति में उपर्युक्त गुणों का समावेश हो, वही, किसी भी श्रेणी के ग्रन्थालय के लिए आदर्श पद्धति है। यदि विद्यमान पद्धतियों में उपर्युक्त समस्त गुण उपलब्ध न हों तो जिस पद्धति में सर्वाधिक गुण हों, उसी का चयन ग्रन्थालय के लिए करना चाहिए।

परिगणनात्मक पद्धतियों में समस्त उपर्युक्त गुणों का समावेश नहीं होता है। वर्तमान समय में वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति की आवश्यकता है, जिसमें वर्गकार को नवीन विशिष्ट विषयों के वर्गांक निर्मित करने की सर्वोच्च स्वतन्त्रता प्रदान की गई है। आज केवल डॉ० रंगनाथन द्वारा निर्मित द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति को ही आदर्श पद्धति के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

कुछ ग्रन्थपालों का विचार है कि वृहत् संदर्भ ग्रन्थालयों अथवा विश्व-विद्यालयीन ग्रन्थालयों में फलकों पर व्यवस्थित पाठ्य-सामग्री के लिए पाठकों की पहुँच न होने के कारण वर्गीकरण आवश्यक नहीं है। उनका यह विचार भी है कि मुख्य वर्गों को कुछ विस्तृत समूहों में किसी क्रम में व्यवस्थित करना ही पर्याप्त है। वर्तमान युग में इस प्रकार की व्यवस्था किसी न किसी समय निरर्थक हो जायेगी। अतः यह अभीष्ट एवं वांछनीय है कि ग्रन्थालय में किसी प्रामाणिक वर्गीकरण पद्धति का चयन किया जाये। पद्धति का चयन स्थायी होना चाहिए। अतः किसी भी वर्गीकरण पद्धति का चयन करने से पूर्व उस पर उचित विचार कर लेना चाहिए।

वास्तव में, एक प्रामाणिक पद्धति के उचित चयन के विषय में परामर्श देना सुगम नहीं है। इसका कारण यह है कि प्रत्येक पद्धति की व्यक्तिगत विशेषताएँ होती हैं तथा किसी भी पद्धति का चयन विभिन्न कारणों से उचित माना जा सकता है। ग्रन्थालयों में पाठ्य-सामग्री की व्यवस्था में एकरूपता प्राप्त करने के लिए प्रत्येक श्रेणी के ग्रन्थालय में प्रामाणिक वर्गीकरण पद्धति का प्रयोग करना सदैव वांछनीय है। ब्लिस महोदय के कथनानुसार जहाँ तक सम्भव हो, सामान्य रूप से प्रयुक्त पद्धति को ही ग्रन्थालयों में अपनाना चाहिए।

सेयर्स महोदय का कथन है कि "यह स्वतः सिद्ध है कि विशेष ग्रन्थालयों में वर्गीकरण की विशेष पद्धति का ही प्रयोग करना चाहिए।" इसका कारण यह है कि ज्ञान का क्षेत्र जितना व्यापक होता है, प्रामाणिक पद्धति के प्रयोग की सम्भावना उतनी ही अधिक होती है। वर्गीकरण की साधारण पद्धतियों में विषयों के सूक्ष्म वर्गीकरण की व्यवस्था नहीं है। अतः इस पद्धति में समयानुसार किसी प्रकार का संशोधन सम्भव नहीं है।

उपर्युक्त विवेचना से यह निष्कर्ष निकलता है कि सामान्य ग्रन्थालय के लिए वर्गीकरण पद्धति का चयन करते समय ग्रन्थालय के आकार पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इसके विपरीत विशेष ग्रन्थालयों में आकार पर ध्यान नहीं देकर उसकी विशेषज्ञता की मात्रा को महत्व दिया जाना चाहिए।

4 सूक्ष्म तथा स्थूल वर्गीकरण
(Close and Broad Classification)

मेलविल ड्यूई की दशमलव वर्गीकरण पद्धति से पूर्व समस्त पद्धतियाँ स्थूल ही थीं। ड्यूई महोदय ने भी प्रारम्भ में अनुक्रमणिका सहित स्थूल वर्गीकरण निर्मित करने का प्रयास किया था। उन्नीसवीं शताब्दी के चतुर्थांश में तथा बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में सूक्ष्म वर्गीकरण की धारणा को सामान्य रूप से स्वीकार किया गया था। ड्यूई ने भी स्थूल वर्गीकरण की अपनी धारणा को सूक्ष्म वर्गीकरण में परिवर्तित कर दिया।

सूक्ष्म वर्गीकरण : इस पद्धति में ग्रन्थों के विषयों एवं उपविषयों का सूक्ष्म विभाजन किया जाता है। अनुसूचियों का प्रयोग विस्तृत उपविभागों तक किया जाता है। इसी कारण इस पद्धति के अंकन चिह्नों का विस्तार अधिक होता है; तथापि समस्त विशेष (तकनीकी एवं वैज्ञानिक) ग्रन्थालयों में विशिष्ट विषयों से सम्बन्धित ग्रन्थों को व्यवस्थित करने के लिए सूक्ष्म वर्गीकरण का ही प्रयोग किया जाता है। डॉ० रंगनाथन का मत है कि ग्रन्थ के विषय के अनुसार ही अंकन होना चाहिए, चाहे इसके लिए विस्तृत अंकन का ही प्रयोग क्यों न करना पड़े। दूसरे शब्दों में, वे सूक्ष्म वर्गीकरण को वरीयता प्रदान करते हैं।

स्थूल वर्गीकरण : इस पद्धति में ग्रन्थों के विषयों का स्थूल रूप से विभाजन किया जाता है। अनुसूचियों का प्रयोग केवल मुख्य विभागों तक किया जाता है। इसी कारण इस पद्धति के अंकन चिह्नों का विस्तार कम होता है। इस पद्धति के द्वारा ग्रन्थों का वर्गीकरण सुगमता से कर फलकों पर व्यवस्थित कर दिया जाता है।

सूक्ष्म तथा स्थूल वर्गीकरण का तुलनात्मक अध्ययन निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :

स्थूल वर्गीकरण **Broad Classification**	सूक्ष्म वर्गीकरण **Close Classification**
1 सामान्य विषय	1 विशिष्ट विषय
2 मुख्य वर्ग	2 विस्तृत उपविभाग
3 संक्षिप्त अंकन	3 विस्तृत अंकन
4 छोटे आकार के ग्रन्थालयों के लिए उपयुक्त	4 सामान्य तथा बृहत् आकार के ग्रन्थालय के लिए अनिवार्य
5 परिगणनात्मक पद्धति	5 वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति

5 उपयुक्त वर्गीकरण का मापदण्ड
(Criteria of a Good Classification)

किसी वर्गीकरण पद्धति को उपयुक्त, उपयोगी एवं विश्वसनीय स्वीकार करने के लिए विभिन्न विशेषताओं का अध्ययन आवश्यक है। वास्तव में पद्धति की व्याव-

हारिक उपयोगिता ही ग्रन्थपाल के लिए महत्त्वपूर्ण विशेषता है। सेयर्स महोदय के कथनानुसार एक वर्गीकरण पद्धति से यह आशा की जाती है कि वह पूर्णतया व्यावहारिक होगी। एक वर्गीकरण की उपयुक्तता के लिए निम्न विशेषताओं का पालन अनिवार्य है :

1 एक पद्धति व्यापक एवं यथार्थ रूप से सूक्ष्म होनी चाहिए।
2 विषयों को एक साथ क्रमबद्ध सम्बन्धित करने की व्यवस्था होनी चाहिए।
3 पद्धति नम्य एवं विस्तारशील होनी चाहिये।
4 पारिभाषिक पदावली प्रचलित होनी चाहिये।
5 सरल नम्य अंकन का प्रयोग किया जाना चाहिये।
6 उचित अनुक्रमणिका का प्रावधान होना चाहिये।

1 यह स्पष्ट किया जा चुका है कि किसी भी पद्धति की उपयुक्तता उसकी व्यापकता द्वारा निर्धारित की जाती है। दूसरे शब्दों में, वर्गीकरण यथासम्भव सम्पूर्ण होना चाहिए तथा उसमें ज्ञान-जगत के विषयों का समुचित समावेश होना चाहिये। परन्तु यह सम्भव नहीं है; तथापि वर्गीकरण पद्धति में समस्त ज्ञात विषयों को अंकित किया जाना चाहिये। साथ ही, प्रत्येक पद्धति विषयों के विभाजन में यथार्थ रूप से सूक्ष्म होनी चाहिये। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक विषय को क्रम से विभाजित करने के अलावा यथासम्भव सूक्ष्मता से भी विभाजित किया जाना चाहिये।

2 किसी भी पद्धति में वर्गों को क्रमबद्ध व्यवस्थित करना चाहिये, ताकि सम्बन्धित विषयों को एक ही स्थान पर एकत्रित किया जा सके। फलकों पर विषयों की व्यवस्था अधिकांश पाठकों की सुविधानुसार की जानी चाहिये। ग्रन्थालय में क्रमबद्ध व्यवस्था केवल वर्गों को आनुवर्णिक क्रम में व्यवस्थित करने से प्राप्त नहीं की जा सकती। वास्तव में वर्गीकरण-क्रम में अधिक व्यापक विषय वाले वर्गों को पहले तथा उनसे संकुचित विस्तार वाले एवं उन्हीं में निहित वर्गों को उनके बाद व्यवस्थित करना चाहिये। डॉ० रंगनाथन के मतानुसार, "विशिष्ट विषयों को उनके पारस्परिक सम्बन्धों के अनुसार व्यवस्थित किया जाना चाहिये, जिससे घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित समस्त विषय एक दूसरे के समीप आ सकें।" दूसरे शब्दों में, विशिष्ट विषयों को संसर्ग क्रम में अर्थात् पारस्परिक साम्य-सम्बन्ध में अनुकूल व्यवस्थित किया जाना चाहिये।

3 किसी भी पद्धति को नम्य, विस्तारशील एवं ग्राह्य होना चाहिये। दूसरे शब्दों में पद्धति का निर्माण इस प्रकार किया जाना चाहिये कि वर्तमान क्रम को अव्यवस्थित किये बिना किसी भी नवीन विषय को उसमें निवेशित किया जा सके। विकसित ज्ञान की माँगों को पूरा करने के लिए वर्गीकरण पद्धति को समयानुसार विस्तृत होना चाहिये। जो पद्धति नवीन विषयों को निवेशित करने में समर्थ नहीं है, वह अल्पकाल में ही अप्रचलित हो जाती है।

4 वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली प्रचलित होनी चाहिये। मुख्य वर्गों, विभागों एवं उपविभागों आदि के शीर्षक का निर्धारण ज्ञान के काल्पनिक

क्षेत्रों के अनुसार न करके प्रस्तुत साहित्य के सर्वेक्षण तथा सुनिश्चित माप के आधार पर किया जाना चाहिये। अप्रचलित एवं असंगत शब्दावली का प्रयोग वर्गीकरण पद्धति से नहीं किया जाना चाहिये।

5 एक वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त अंकन सरल एवं नम्य होना चाहिये। पद्धति को विस्तृत एवं ग्राह्य रखने के लिए अंकन की नम्यता सर्वोपरि आवश्यकता है। वर्गीकरण पद्धति की अनुसूचियों में ज्ञान-जगत के समस्त विषयों को अंकित करना सम्भव नहीं है। अतः पद्धति का अंकन ऐसा होना चाहिए कि नवीन विषयों को किसी भी स्तर पर निवेशित किया जा सके।

6 वर्गीकरण पद्धति में उचित अनुक्रमणिका का प्रावधान होना चाहिये। वर्गीकरण की अनुसूचियों में अंकित समस्त विषयों को अनुक्रमणिका में सम्मिलित करना अनिवार्य है। ग्रन्थों का वर्गीकरण करने के लिए अनुसूचियों में पदों का उचित स्थान ढूँढ़ने के अलावा विषयों एवं उनके पारस्परिक सम्बन्धों को व्यक्त करने के लिए भी अनुक्रमणिका आवश्यक है। यथासम्भव वर्गीकरण पद्धति में सापेक्षिक अनुक्रमणिका की व्यवस्था की जानी चाहिये।

⊙

सप्तम अध्याय (1)

प्रमुख वर्गीकरण पद्धतियाँ

(Principal Classification Schemes)

विभिन्न विषयों में ज्ञान प्राप्त करने की मनुष्य की निरन्तर प्रगति के साथ ही विषयों के वर्गीकरण में भी विकास हुआ है। वास्तव में किसी विशेष विषय के विकास का प्रमाणांक उस विषय का वर्गीकरण ही है। रसायन, भौतिकी, प्राणिकी, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र अथवा समाजशास्त्र आदि विषयों का विकास इन विषयों के क्षेत्रों को समूहों अथवा उपसमूहों में एकत्रित करने से सम्बन्धित है। विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों के विचार के लिए अथवा एक विषय को शीर्षकों, पदों अथवा अन्य नामकरणों में विभाजित करने के लिए एक समुचित व्यवस्था अथवा क्रम प्राप्त करने का निरन्तर प्रयत्न किया गया है। दूसरे शब्दों में, ग्रन्थों तथा अन्य पाठ्य-सामग्री के वर्गीकरण का प्रयास अति प्राचीन काल से होता आया है।

1 वर्गीकरण पद्धतियों का विकास
(Development of Classification Schemes)

वर्गीकरण से सम्बन्धित कुछ आधुनिक सिद्धान्तवादियों का यह दृष्टिकोण है कि इस प्रतिनिधित्व के लिए क्रम-परम्परागत व्यवस्था (अर्थात् वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त पद अनुसूचियों में अपनी प्राथमिकता, आपेक्षिक महत्त्व एवं पारस्परिक सम्बन्ध के आधार पर व्यवस्थित क्रम) अनिवार्य नहीं है। इसके परिणामस्वरूप वर्गीकरण के प्रक्षात्मक आकार पर महत्त्व दिया जाने लगा तथा विभिन्न विषयों के सम्बन्धों को प्रदर्शित करने वाले साधनों को खोज निकालने का प्रयत्न किया जाने लगा। असीरिया के एक प्राचीन शासक असुर-बानी-पाल के ग्रन्थालय में संग्रहीत मिट्टी की पट्टिकाओं की व्यवस्था से लेकर वर्तमान युग की पूर्णतया स्थायी एवं परिवर्तनशील वर्गीकरण पद्धतियों के निर्माण का क्रम इस प्रकार है :

		असुर-बानी-पाल	Asur-bani-pal
ईसा पूर्व	428-347	प्लेटो	Plato
	384-322	अरस्तू	Aristotle
	260-240	कालिमेचस	Callimachus

ईसवी	305	पारफिरी	Porphyry
	1498	ऐल्डस मैनुटियस	Aldus Manutius
	1548	कोनार्ड जैस्नर	Konard Gesner
	1605	फ्रांसिस बेकन	Francis Bacon
	1627	गेब्रियल नॉड	Gabriel Naude
	1678	जीन गार्नियर	Jean Garnier
	1679	इस्माइल बोलिया	Ismail Bouillad
	1705	गेब्रियल मार्टिन	Gabriel Martin
	1810	जैक्वस चार्ल्स ब्रूनैट	Jacquis Charles Brunet
	1836	ब्रिटिश म्यूजियम	British Museum
	1859	एडवर्ड एडवर्ड्स	Edward Edwards
	1876	मैलविल ड्यूई	Melvil Dewey
	1891	चार्ल्स एमी कटर	Charles Ammi Cutter
	1904	लायब्रेरी ऑफ काँग्रेस	Library of Congress
	1905	इंस्टिट्यूट इण्टरनेशनल डि बिब्लियोग्रेफी	Institute International de Bibliographie
	1906	जैम्स डफ ब्राउन	James-Duff Brown
	1933	एस आर रंगनाथन	S. R. Ranganathan
	1935	हेनरी एल्विन ब्लिस	Henry Elvyn Bliss

उपर्युक्त वर्गीकरण पद्धतियों में से क्रमानुसार निम्नांकित सात वर्गीकरण पद्धतियाँ प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण हैं :

1 दशमलव वर्गीकरण	Decimal classification
2 विस्तारशील वर्गीकरण	Expansive classification
3 लायब्रेरी ऑफ काँग्रेस वर्गीकरण	Library of Congress Classification
4 सार्वभौम दशमलव वर्गीकरण	Universal Decimal classification
5 विषय वर्गीकरण	Subject classification
6 द्विबिन्दु वर्गीकरण	Colon classification
7 वाङ्मयात्मक वर्गीकरण	Bibliographic classification

उपर्युक्त समस्त वर्गीकरण पद्धतियों ने क्रम-परम्परागत व्यवस्था को नहीं अपनाया है। प्रथम समूह में ड्यूई की दशमलव वर्गीकरण (DC), कटर की विस्तारशील वर्गीकरण (EC), ब्राउन की विषय वर्गीकरण (SC), लायब्रेरी ऑफ काँग्रेस वर्गीकरण (LC) तथा ब्लिस की वाङ्मयात्मक वर्गीकरण (BC) परम्परागत पद्धतियाँ हैं। इनमें वर्गों की व्यवस्था में आधारभूत आन्तेरिक परम्परा-क्रम को ही अधिक महत्व दिया गया है। दूसरे समूह में सार्वभौम दशमलव वर्गीकरण (UDC) तथा रंगनाथन की द्विबिन्दु वर्गीकरण (CC) पद्धतियाँ हैं। इनमें पक्षात्मक आकार पर

अधिक महत्व दिया गया है, विभिन्न विषयों को मूल विशेषताओं पर आधारित किया गया है तथा ज्ञान की क्रम-परम्परागत व्यवस्था—सामान्य से विशिष्ट—पर विचार नहीं किया गया है।

प्रत्येक वर्गीकरण पद्धति का अध्ययन निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है :

प्रारम्भिक जीवन	Early life
मुख्य वर्ग	Main classes
अनुसूचियाँ	Schedules
अंकन	Notation
अनुक्रमणी	Index

2 दशमलव वर्गीकरण पद्धति
(Decimal Classification Scheme)

प्रारम्भिक जीवन (Early Life) :

मेलविल लुईस कोसुक ड्यूई (Melville Louis Kossuth Dewey)—जिसका संक्षिप्त रूप मेलविल ड्यूई (Melvil Dewey) कर दिया गया था—का जन्म न्यूयार्क स्टेट के नगर अदम्स सेन्टर (Adams Centre) में 10 दिसम्बर 1851 ई० को हुआ था। एक छोटे से दुकानदार के पुत्र होते हुए भी ड्यूई स्वयं शिक्षा प्राप्त कर ग्रन्थालय के क्षेत्र में प्रविष्ट हुए। ड्यूई को प्रारम्भ से ही ग्रन्थों में विशेष रुचि थी तथा 18 वर्ष की आयु तक उनके पास लगभग 85 पुस्तकों का निजी संग्रह हो गया था। ड्यूई ने 23 वर्ष की आयु में अमहर्स्ट महाविद्यालय से 1874 में स्नातक उपाधि प्राप्त की तथा इसी महाविद्यालय में सहायक ग्रन्थपाल के रूप में कार्य प्रारम्भ किया। इसके पश्चात् ड्यूई न्यूयार्क स्टेट लायब्रेरी के ग्रन्थपाल बन गये, जहाँ उन्होंने प्रथम "लायब्रेरी स्कूल" की स्थापना कर उसका संचालन किया।

ड्यूई ने 1873 से ही अत्यधिक सरल एवं सुगम वर्गीकरण पद्धति का निर्माण करने का प्रयास किया। उन्होंने एक ऐसी पद्धति प्राप्त करने का प्रयत्न किया, जिसके द्वारा ग्रन्थों एवं पत्रिकाओं का वर्गीकरण एवं फलकों पर उनकी व्यवस्था सुगमता से की जा सके। उन्होंने भ्रमण कर अनेक ग्रन्थालयों में प्रचलित व्यवस्था का अध्ययन किया तथा यह निश्चित किया कि ग्रन्थों को विषय के अनुसार क्रमबद्ध करना अधिक सुविधाजनक एवं वैज्ञानिक है। इसके परिणामस्वरूप ड्यूई ने अंकों का प्रतीक प्रयुक्त कर विषय के विस्तार के लिए दशमलव बिन्दु का सहारा लिया। यही पद्धति दशमलव वर्गीकरण के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस पद्धति का प्रयोग 1873 से 1876 तक अमहर्स्ट महाविद्यालय के ग्रन्थालय में किया गया, जहाँ इसे व्यावहारिक सफलता प्राप्त हुई।

दशमलव वर्गीकरण का प्रथम संस्करण 1876 में प्रकाशित हुआ। इस संस्करण में केवल 42 पृष्ठ थे :

भूमिकास्वरूप विषय	Introductory matter	12 पृष्ठ
अनुसूचियाँ	Schedules	12 पृष्ठ
अनुक्रमणी	Index	18 पृष्ठ

इससे यह स्पष्ट है कि ड्यूई प्रारम्भ से ही अनुक्रमणी पर विशेष महत्त्व देते थे।

दशमलव वर्गीकरण का 17वाँ संस्करण (1965 में) दो भागों में प्रकाशित हुआ था। इसमें 2153 पृष्ठ थे :

प्रथम खण्ड	अनुसूचियाँ	1254 पृष्ठ
Volume one	**Schedules**	
द्वितीय खण्ड	सहायक अनुसूचियाँ तथा सापेक्षिक अनुक्रमणी	899 पृष्ठ
Volume two	**Auxiliary Tables and Relative Index**	

दशमलव वर्गीकरण का 18वाँ संस्करण (1971 में) तीन भागों में प्रकाशित हुआ था। इसमें 2684 पृष्ठ थे :

प्रथम खण्ड	सारणी	460 पृष्ठ
Volume one	**Tables**	
द्वितीय खण्ड	अनुसूचियाँ	1168 पृष्ठ
Volume two	**Schedules**	
तृतीय खण्ड	अनुक्रमणी	1056 पृष्ठ
Volume three	**Index**	

दशमलव वर्गीकरण की रचना के अतिरिक्त ड्यूई महोदय ने ग्रन्थालय-जगत में अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किए। 1876 ई० में उन्होंने "अमेरिकन लायब्रेरी एसोसिएशन" की स्थापना की। इसी के साथ 1876 से 1880 तक "लायब्रेरी जर्नल" नामक पत्रिका का सम्पादन भी किया।

ग्रन्थालय-कर्मचारियों की सेवा को अधिक सुदृढ़ एवं लाभकारी बनाने के लिए ड्यूई ने "ग्रन्थालय-विज्ञान" के प्रशिक्षण के लिए 1882 में स्कूल की स्थापना की।

ग्रन्थालय-व्यवसाय के प्रेरणा-स्रोत, ग्रन्थालय-विज्ञान प्रशिक्षण केन्द्र एवं अमेरिकन लायब्रेरी एसोसिएशन के संस्थापक तथा दशमलव वर्गीकरण के जन्मदाता मेलविल ड्यूई की मृत्यु 80 वर्ष की आयु में 1932 ई० में हुई। निःसन्देह, ग्रन्थालय-व्यवसाय को प्रोत्साहित करने में एवं इसे महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करने में ड्यूई अपने युग के अत्यधिक उद्योगी, प्रभावशाली एवं कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति थे।

वर्गों की रूपरेखा (Outline of Classes) :

दशमलव वर्गीकरण में मुख्य वर्गों का क्रम डब्ल्यू टी हैरिस (**W. T. Harris**) द्वारा निश्चित क्रम के समरूप है। हैरिस ने बेकन (**Bacon**) द्वारा प्रयुक्त मुख्य विषयों को लेकर उल्टे क्रम में रख दिया। हैरिस के इसी क्रम को ड्यूई ने अपनी पद्धति में प्रयुक्त किया। बेकन, हैरिस तथा ड्यूई द्वारा प्रयुक्त विषयों की व्यवस्था की तुलना करने पर ड्यूई की पद्धति स्पष्ट हो जाती है :

बेकन		हैरिस	ड्यूई
वास्तविक	उल्टा क्रम	विज्ञान	सामान्य कृतियाँ
इतिहास	दर्शन	दर्शन	दर्शन
		धर्मशास्त्र	धर्मशास्त्र
		सामाजिक एवं)	भाषा-शास्त्र
		राजनीतिक)	समाजशास्त्र
		विज्ञान)	विज्ञान
		प्राकृतिक विज्ञान एवं)	उपयोगी कथाएँ
		उपयोगी कलाएँ)	
काव्य	काव्य	कला	
		ललित कलाएँ	ललित कलाएँ
		काव्य)	साहित्य
		शुद्ध उपन्यास)	
		साहित्यिक ग्रन्थ)	
दर्शन	इतिहास	भूगोल एवं यात्रा-साहित्य	इतिहास
		नागरिक इतिहास	जीवन-चरित्र
		जीवन-चरित्र	भूगोल एवं यात्रा साहित्य

ड्यूई महोदय ने अपनी पद्धति में सम्पूर्ण ज्ञान-जगत को दस प्रमुख भागों में विभाजित किया है।

मुख्य वर्ग (Main classes) :

ड्यूई द्वारा प्रयुक्त मुख्य वर्गों का क्रम निम्न है :

000	सामान्य कृतियाँ	General Works
100	दर्शनशास्त्र	Philosophy
200	धर्मशास्त्र	Religion
300	सामाजिकशास्त्र	Social Sciences
400	भाषाशास्त्र	Philology
500	शुद्ध विज्ञान	Pure Sciences
600	व्यावहारिक विज्ञान	Applied Science
700	ललित कलाएँ	Fine Arts
800	साहित्य	Literature
900	इतिहास	History

विभाग (Divisions): प्रत्येक प्रमुख वर्ग को एक नियमित रीति से विभाजित करके उपवर्ग अथवा विभाग बनाये जाते हैं। उदाहरणार्थ, 500 शुद्ध विज्ञान को निम्न 9 भागों में विभाजित किया गया है :

500	शुद्ध विज्ञान	Natural Science
510	गणित	Mathematics

520	ज्योतिष	Astronomy
530	भौतिकी	Physics
540	रसायन	Chemistry
550	भौमिकी	Geology
560	लुप्त प्राणिशास्त्र	Paleontology
570	जीवशास्त्र	Biology
580	वनस्पतिशास्त्र	Botany
590	प्राणिकी	Zoology

उपर्युक्त विभाजन से स्पष्ट है कि 59 प्राणिकी वर्ग 5 शुद्ध विज्ञान का नवाँ विभाग है ।

खण्ड (Sections) : प्रत्येक विभाग को पुनः विभाजित कर उसके 9 खण्ड किये जा सकते हैं । उदाहरणार्थ, 370 शिक्षा को निम्न 9 उपविभागों में विभाजित किया जा सकता है :

370	शिक्षा	Education
371	अध्यापन	Teaching
372	प्राथमिक शिक्षा	Primary Education
373	माध्यमिक शिक्षा	Secondary Education
374	प्रौढ़ शिक्षा	Adult Education
375	पाठ्यक्रम	Syllabus
376	स्त्री शिक्षा	Women Education
377	धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा	Religious and Moral Education
378	महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय शिक्षा	College and University Education
379	शिक्षा एवं राष्ट्र	Education and Nation

उपखण्ड (Sub-Sections) : प्रत्येक उपविभाग को आवश्यकतानुसार पुनः 9 उपखण्डों में विभाजित किया जा सकता है :

371	अध्यापन	Teaching
.1	अध्यापन एवं प्रशासकीय अधिकारी	Teaching and Administrative Officer
.2	स्कूल संगठन एवं संचालन	School Organisation and Administration
.3	अध्यापन विधि	Teaching Methods
.4	शिक्षा का विशेष पहलू	Special Education
.5	स्कूल-शासन एवं प्रबन्ध	School Government and Management

.6	स्कूल-योजना	School Planning
.7	स्कूल स्वास्थ्य	School Hygiene
.8	विद्यार्थी जीवन	Student Life
.9	असाधारण विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षा	Special Education for Abnormal Students

उप-उपखण्ड (Sub Sub-Sections) : प्रत्येक उपखण्ड को आगे भी पुनः 9 उपखण्डों में विभाजित किया जा सकता है :

371.2	स्कूल संगठन एवं संचालन	School Organisation and Administration
.21	प्रवेश	Admissions
.22	शिक्षण	Tuition
.23	स्कूल वर्ष का संगठन	School Year-Vacations School terms
.24	छात्र समुदाय का संगठन	School Schedules
.25	कक्षाएँ	Classes and grades
.26	शैक्षणिक जाँच एवं मापदण्ड	Educational Tests and measurements
.27	परीक्षाएँ	Examinations
.28	पदोन्नति, आदि	Promotions etc.

उपर्युक्त समस्त विभाजनों को निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है :

371.27	=	परीक्षाएँ	
300	=	सामाजिक शास्त्र	मुख्य वर्ग
370	=	शिक्षा	विभाग
371	=	अध्यापन	खण्ड
371.	=		दशमलव बिन्दु
371.2	=	स्कूल संगठन एवं संचालन	उपखण्ड
371.27	=	परीक्षाएँ	उप-उपखण्ड

371.27 वर्गांक Class Number

3	7	1	2	7
मुख्य वर्ग Main Class	विभाग Division	खण्ड Section	उपखण्ड Sub-section	उप-उपखण्ड Sub sub-section

सूक्ष्म-उपविभाग : दशमलव वर्गीकरण के चौदहवें संस्करण से मुख्य वर्ग को सूक्ष्म उपविभागों में विभाजित किया गया है :

611	शरीर रचना	Anatomy
611.1	परिचालित क्रिया	Circulatory System
611.12	हृदय	Heart
611.122	बाँया हृदय	Left Heart
611.123	दाँया हृदय	Right Heart
611.124	हृदय का कोष	Ventricles
611.1242	हृदय का दाँया कोष	Right Ventricle

इससे स्पष्ट है कि वर्गों का सामान्य से अत्यधिक विशिष्ट विषय की ओर क्रम से विकास होता है।

अनुसूचियाँ (Schedules) : दशमलव पद्धति में दस प्रमुख वर्गों के लिए दस विस्तृत अनुसूचियों का निर्माण किया गया है। प्रत्येक अनुसूची में विस्तारपूर्वक वर्ग से सम्बन्धित समस्त विषयों को (प्राकृतिक भाषा में) तथा समवर्ती वर्गांकों को (अप्राकृतिक भाषा में) अंकित किया गया है। इसके साथ ही वर्गांक में विस्तारशीलता लाने के लिए निम्नांकित विधियों अथवा सहायक सूचियों का प्रयोग भी किया गया है।

1	रूप-विभाजन	**Forms Division**
2	भाषानुसार विभाजन	**Language Division**
3	भौगोलिक विभाजन	**Geographical Division**

1 रूप-विभाजन : इस पद्धति में विषय के द्वारा वर्गीकरण करने के अतिरिक्त विषय प्रस्तुत करने की आकृतियों की भी व्यवस्था की गई है। हमें यह ज्ञात है कि ग्रन्थों का प्रकाशन विभिन्न दृष्टिकोणों से तथा विभिन्न आकृतियों में होता है। कुछ ग्रन्थों में विषय के सिद्धान्तों का ही वर्णन रहता है, कुछ में केवल सामान्य रूपरेखा होती है। कुछ ग्रन्थ विश्वकोष के रूप में प्रकाशित होते हैं। अतः इस पद्धति में विशिष्ट विषयों के वर्गांकों को कुछ निश्चित अंकों द्वारा स्पष्ट करने की व्यवस्था की गई है। कुछ प्रमुख रूप-विभाजन निम्न हैं :

01	दर्शन, सिद्धान्त
02	हैण्डबुक, रूपरेखा
03	कोश, विश्वकोश
04	निबंध, भाषण
05	पत्रिकाएँ
058	डायरेक्टरी, वार्षिकी
06	सभा, समिति
07	अध्ययन एवं अध्यापन
08	संग्रह

09	इतिहास तथा सामान्य स्थानीय व्यवहार (इसका विभाजन 930-999 की भाँति किया जा सकता है)

उपर्युक्त रूप-विभाजन आवश्यकतानुसार समस्त वर्गांकों के अन्त में लगाए जा सकते हैं :

503	विज्ञान का कोश अथवा विश्वकोश
510.7	गणित का अध्ययन एवं अध्यापन
330.1	अर्थशास्त्र के सिद्धान्त
821.09	आंग्ल काव्य का इतिहास
181.04	प्राच्य दर्शन पर भाषण

रूप-विभाजन के अंकों को जोड़ते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि यदि दशमलव बिन्दु के दोनों ओर शून्य (0) हो तो दायीं ओर का शून्य हटा दिया जाता है :

330 अर्थशास्त्र + 01 सिद्धान्त = 330.1 अर्थशास्त्र के सिद्धान्त

यदि दशमलव बिन्दु के बायीं ओर दो शून्य (00) हों तथा दायीं ओर भी एक शून्य (0) हो तो बायीं ओर का एक शून्य तथा दायीं ओर का शून्य हट जाता है :

500 विज्ञान + .03 कोश अथवा विश्वकोश = 503 विज्ञान का कोश अथवा विश्वकोश

मुख्य वर्ग इतिहास 900 में इतिहास को कालक्रम से सूचित करने के लिए भी 01 से 09 अंकों का प्रयोग किया गया है।

उदाहरणार्थ,

942	इंगलैण्ड
.01	एंग्लो-सेक्शन इंगलैण्ड, 1066
945	भारत
955.03	ब्रिटिश-कालीन भारत 1765-1947
.04	गणतन्त्र भारत 1947-

उपर्युक्त वर्गांकों में रूप विभाजन का प्रयोग एक अतिरिक्त शून्य (0) बढ़ाकर किया जाता है।

उदाहरणार्थ,

942.005	इंगलैण्ड सम्बन्धी इतिहास की पत्रिकाएँ

2 भाषानुसार विभाजन : दशमलव पद्धति में मुख्य वर्ग साहित्य 800 को पहले भाषा के आधार पर विभाजित किया है, उसके पश्चात् उसमें काव्य, नाटक आदि रूपों के द्वारा आगे विभाजन किया गया है :

800	साहित्य
820	अंग्रेजी साहित्य

821	अंग्रेजी काव्य
822	अंग्रेजी नाटक
823	अंग्रेजी कथा-साहित्य

उपर्युक्त रूपों का काल-क्रम से पुनः विभाजन किया गया है। इसके अनुसार सुप्रसिद्ध लेखकों को निश्चित स्थान दिए गए हैं तथा अन्य लेखकों को निम्न कोटि के लेखकों (**Minor Authors**) के अन्तर्गत रखा गया है।

821	अंग्रेजी काव्य	
.1	पूर्वकालीन अंग्रेजी काव्य	(1066-1400)
.2	पूर्व-एलिजाबेथ	(1401-1558)
.3	एलिजाबेथ-काल	(1559-1625)

इत्यादि

इस प्रकार भाषा में निम्न रूप-विभाजन की व्यवस्था की गई है :

1	काव्य	5	वक्तृता
2	नाटक	6	पत्र-साहित्य
3	कथा-साहित्य	7	हास्य, व्यंग्य
4	निबंध	8	विविध

3 **भौगोलिक विभाजन** : इस पद्धति में मुख्य वर्ग इतिहास को 900 वर्गांक दिया गया है। इस मुख्य वर्ग का विभागों में विभाजन निम्न प्रकार है :

900 से 909	सामान्य इतिहास
910 से 919	भूगोल एवं यात्रा-साहित्य
920 से 928	जीवन-चरित्र
929	वंश-परम्परा
930 से 939	प्राचीन इतिहास
940 से 999	आधुनिक इतिहास

उपर्युक्त विभागों से स्पष्ट है कि इस पद्धति में **940** से **999** तक भौगोलिक क्रम से आधुनिक इतिहास को तथा **930** से **939** तक प्राचीन इतिहास की पाठ्य-सामग्री के लिए रखा गया है। इसी क्रम पर उपविभाजन का निर्देश इस पद्धति में अनेक स्थानों पर दिया गया है। जिस स्थान पर ऐसा उपविभाजन का अभीष्ट है, वहाँ "**930-999** की भाँति भौगोलिक विभाजन कीजिए" तथा "**940-999** की भाँति भौगोलिक विभाजन कीजिए" के संकेत कर दिए गए हैं।

उदाहरणार्थ,

329.9 अन्य देशों में राजनीतिक-दल
'इसका विभाजन **940.999** की भाँति कीजिए'

इस संकेत के अनुसार विभाजन करने पर निम्न वर्गांकों का निर्माण हो सकता है।

329.944	फ्रांस में राजनीतिक-दल
329.954	भारत में राजनीतिक-दल

फ्रांस का भौगोलिक प्रतीक 944 तथा भारत का भौगोलिक प्रतीक 954 है। अंक 9 के बाद भौगोलिक विभाजन का निर्देश देने के कारण वर्ग सूचक 9 का अंक छोड़ दिया गया तथा केवल **44** एवं **54** जोड़ दिया गया। वर्गांक में दशमलव बिन्दु पहले से ही विद्यमान होने के कारण भौगोलिक विभाजन के प्रतीक को दशमलव लगाकर जोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

जिन देशों का प्रतीक अंक दशमलव के बाद पड़ता है; वहाँ दशमलव हटा कर केवल अंक जोड़ दिए जाते हैं।

उदाहरणार्थ,

329.943 6	ऑस्ट्रिया में राजनीतिक-दल
329.943 8	पोलैण्ड में राजनीतिक-दल

यहाँ पर ऑस्ट्रिया तथा पोलैण्ड के प्रतीक क्रमशः 934.6 तथा 943.8 जोड़ दिए गए हैं।

कुछ देशों के इतिहास को काल-क्रम के अनुसार विभाजित कर स्पष्ट किया गया है।

उदाहरणार्थ, (इंगलैण्ड के अन्तर्गत)

942.01	एंग्लो—सेक्शन	55 ई० पू०	1066
942.02	नॉर्मन	1066–1154	
942.03	प्लोटेगेनेट,	1154–1399	
942.04	लंकास्टर एवं योर्क,	1400–1485	
942.05	ट्यूडर,	1485–1603	
942.06	स्टुअर्ट,	1603–1714	
942.07	हनोवर,	1714–1837	
942.08	विक्टोरियन,	1837–1901	

उपर्युक्त काल-क्रम के विभाजन को पुनः विभाजित किया गया है :

942.021	विलियम I	1066–1087
942.022	विलियम II	1087–1100
942.023	हेनरी I	1100–1135

भारतीय इतिहास के निम्नांकित काल-क्रम विभाजन किए गए हैं :

954	भारत	
954.01	प्रारम्भिक इतिहास से मुस्लिम विजय तक	
954.02	मुस्लिम काल	1560–1747
954.03	ब्रिटिश काल	1774–1947
954.04	गणतंत्र भारत	1947

जीवन-चरित्र : मुख्य वर्ग जीवन-चरित्र को दो प्रमुख समूहों में रखा गया है :

1 सामान्य तथा स्थान विशेष से सम्बन्धित,

2 व्यक्तिगत तथा विषय विशेष से सम्बन्धित

उदाहरण	प्रथम समूह
920.01	सार्वभौमिक जीवन-चरित्र
920.02	आंशिक संग्रह
920.03–09	स्थान विशेष से सम्बन्धित संग्रहीत जीवन-चरित्र '930-999 की भाँति विभाजित कीजिए'
920.042	अंग्रेजों का संग्रहीत जीवन-चरित्र
920.054	भारतीयों का संग्रहीत जीवन-चरित्र

उदाहरण द्वितीय समूह

इस समूह के अन्तर्गत मुख्य विभाग निम्न हैं :

920.0 से 920.6	वाङ्मय सूचीकार, ग्रन्थपाल आदि
920.7	महिलाएँ
920.8	विषम, असाधारण मनुष्य आदि
920.9	अन्य विशेष वर्ग '000-999 की भाँति विभाजित कीजिए'
920.913 35	ज्योतिषी का जीवन-चरित्र (133.5 ज्योतिषशास्त्र)
921	दार्शनिक
922	धार्मिक नेता
923	सामाजिक शास्त्रों से सम्बन्धित व्यक्ति
924	भाषा-विज्ञानशास्त्री आदि
925	वैज्ञानिक
926	शिल्पकला से सम्बन्धित व्यक्ति
927	कला एवं आमोद-प्रमोद से सम्बन्धित व्यक्ति
928	साहित्य से सम्बन्धित व्यक्ति

वंश-परम्परा : इस वर्ग 929 की विशेष व्यवस्था की गई है :

921.1	वंश-परम्परा (व्यक्तियों अथवा परिवारों के वंश का इतिहास)
921.2	परिवारों का इतिहास (विशेष परिवारों की वंश-परम्परा)
929.8	परिवार चिह्न आदि
929.9	राष्ट्र-ध्वज, राष्ट्र-चिह्न

वास्तव में, दशमलव पद्धति में मुख्य वर्ग 900 के अन्तर्गत तीन वर्गों का समावेश किया गया है :

भूगोल	**Geography**
जीवन-चरित्र	**Biography**
इतिहास	**History**

एक अत्यन्त महत्वपूर्ण वर्ग होते हुए भी इसकी व्यवस्था असंतोषजनक है। इसमें सामान्य इतिहास की पाठ्य-सामग्री प्राचीन एवं आधुनिक इतिहास से पृथक् हो जाती है। साथ ही इसमें केवल समाजी-राजनीतिक इतिहास (**Socio-political history**) को ही स्थान दिया गया है; आर्थिक इतिहास, शिक्षा का इतिहास आदि विशेष इतिहास (**Special history**) को कोई स्थान नहीं दिया गया है। ड्यूई महोदय ने इस प्रकार सम्बन्धित विषयों को विभिन्न वर्गों एवं विभागों के अन्तर्गत पृथक् कर दिया है :

भारत का राजनीतिक इतिहास	924
भारत का सांविधानिक इतिहास	342.54
भारत का आर्थिक इतिहास	330.954
भारत का सांस्कृतिक इतिहास	901.54

अंकन (Notation) :

दशमलव पद्धति में अंकन की व्यवस्था के अन्तर्गत अरबी अंकों का दशमलव के सिद्धान्त के आधार पर प्रयोग किया गया है। इस प्रकार इसमें अंकन की निम्न व्यवस्था है :

दस अरबी अंक (**Ten Indo-Arabic Numerals**)

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

दशमलव अंकन (**Decimal Notation**) : ड्यूई ने रोमन अंकन के प्रयोग का खण्डन करते हुए 1870 में लिखा था, "यह व्यवस्था निर्माण तथा तीव्र गणना के लिए प्रयोग करने में पूर्णतया अशक्त है। इसके विपरीत अरबी अथवा भारतीय अंकन में अंकों को अत्यधिक सुविधापूर्वक एवं सरलता से लिखने की क्षमता है; कदाचित् इन अंकों का प्रयोग इतनी परिपूर्णता से किया जा सकता है, जैसा कि मनुष्य आविष्कार कर सकता है। रोमन अंकन अस्पष्ट एवं कष्टदायक है तथा इसको प्रयोग में लाने के लिए इसकी जानकारी प्राप्त करना अनिवार्य है। अरबी अंकन सरल एवं स्पष्ट है तथा इसकी लगभग सर्वव्यापी मान्यता है। तब हम इसी का अपवर्जित प्रयोग क्यों न करें ?"

दशमलव पद्धति में शुद्ध अंकन (**Pure notation**) का प्रयोग किया गया है। दशमलव बिन्दु का प्रयोग केवल प्रथम तीन अंकों के बाद किया जाता है तथा "न्यूनतम तीन अंक" (**Three-figure minimum**) का प्रयोग दृढ़तापूर्वक किया गया है :

600	व्यावहारिक विज्ञान
620	अभियान्त्रिकी
570	जीवशास्त्र

इस सिद्धान्त से अंकन अत्यन्त सरल हो गया है तथा वर्गांकों का क्रम अत्यधिक स्पष्टता से ज्ञात हो जाता है।

दशमलव पद्धति में प्रयुक्त अंकन अत्यन्त विस्तारशील है। विषयों का विभाजन सुगमता से किया जा सकता है तथा प्रथम तीन अंकों के पश्चात् दशमलव बिन्दु रखकर किसी भी विभाग को रखा जा सकता है :

600	व्यावहारिक विज्ञान
610	चिकित्सा शास्त्र
611	शरीर-रचना
611.1	परिचालित क्रिया

तथापि, अंकन का विस्तार वर्ग-विन्यास में सम्भव नहीं है। उदाहरणार्थ, टेलीविजन को रेडियो के वर्ग के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता, इसको उपविभाग में रखा गया है। इस प्रकार अधिकांश वर्गांकों में अंकों की संख्या अधिक हो गई है तथा अंकन सरल होते हुए भी आधारांकन (base) सीमित होने के कारण संक्षिप्त नहीं है। साथ ही इस पद्धति में अंकन का बँटवारा अर्थात् एक विषय को दूसरे विषय के प्रसंग में रखना अथवा एक विषय को निर्दिष्ट अंकन प्रदान करना असंतोषजनक है।

उदाहरण : भाषा-शास्त्र को समस्त विज्ञान के समकक्ष अंकन दिया गया है। अपेक्षाकृत स्थिर (static) विषयों—साहित्य एवं इतिहास—को सामाजिक शास्त्र, प्राकृतिक शास्त्र आदि अत्यधिक सक्रिय (dynamic) विषयों को एक ही समान अंकन प्रदान किया गया है। साथ ही इस व्यवस्था से विषयों की अधीनता का बोध होता है। प्रत्येक वर्ग में विभागों को एक अतिरिक्त अंक प्रदान कर दिखाया गया है :

600	व्यावहारिक विज्ञान	Applied Science
620	अभियांत्रिकी	Engineering
621	यंत्र-अभियांत्रिकी	Mechanical Engineering
621.3	विद्युत्-अभियांत्रिकी	Electrical Engineering
621.33	संचार-अभियांत्रिकी	Comunication Engineering

उपर्युक्त वर्गांकों से स्पष्ट है कि विद्युत-अभियांत्रिकी विषय को यंत्रअभियांत्रिकी का तथा संचार-अभियांत्रिकी को विद्युत्-अभियांत्रिकी का अधीन वर्ग दर्शाया गया है, जो कि अनुचित है।

इस पद्धति के अंकन में 'लचीलेपन' की विशेषता का पूर्णतया अभाव है। उदाहरणार्थ, जीवन-चरित्र से सम्बन्धित ग्रन्थों का वर्गांक 920 में एकत्रित किया जा सकता है अथवा सम्पूर्ण पद्धति में यत्र-तत्र मुख्य वर्गों के साथ रखा जा सकता है। इसी प्रकार विशेष भवनों को वास्तुकला मुख्य वर्ग में वर्गांक 725 अथवा 728 के अन्तर्गत नहीं रखकर विषय के अधीन कर दिया गया है :

022 ग्रन्थालय-भवन

अनुक्रमणी (Index) :

दशमलव पद्धति में प्रयुक्त सापेक्षिक अनुक्रमणी किसी ग्रन्थालय वर्गीकरण की अनुसूचियों के साथ संलग्न प्रथम अनुक्रमणी है। ड्यूई महोदय का दावा है कि यह उनकी पद्धति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। उनका कथन है कि, "मेरी

अमहर्स्ट योजना उसको पूर्ण करने की विधि पर आधारित नहीं थी, किन्तु वर्गीकरण पद्धति की अत्यन्त सम्भव सरल रीति से सम्पूर्ण अनुक्रमणी में प्रस्तुत करने की कल्पना पर आधारित थी, अनुक्रमणी का अत्यधिक अनिवार्य परिपूरक, वर्गीकरण की अनुसूचियाँ हैं।''

आनुवर्णिक क्रम में व्यवस्थित अनुक्रमणी का उद्देश्य मुख्य अनुसूचियों में अभिव्यक्त अथवा ध्वनित समस्त विषयों तथा प्रसंगों सहित समस्त सम्भावित पर्यायवाची शब्दों को सम्मिलित करना है। इसमें अनुसूचियों में उल्लिखित पदों के पर्यायवाची तथा अन्य बहुसंख्यक संलेख दिए गए हैं, जिनसे वर्गकार को अपना विषय खोज निकालने में सुविधा एवं सरलता होती है।

दशमलव वर्गीकरण एवं सापेक्षिक अनुक्रमणी (**Decimal Classification and Relative Index**) शीर्षक से **1876** में प्रकाशित प्रथम संस्करण में **42** पृष्ठों में से **18** पृष्ठ अनुक्रमणी के लिए रखे गए थे। सत्रहवें संस्करण में इस अनुक्रमणी की पृष्ठ संख्या 938 हो गई है तथा इसमें लगभग **90** हजार पदों को व्यवस्थित किया गया है। इसमें अधिक आवश्यक एवं महत्वपूर्ण पदों को अन्य पदों से मोटे अक्षरों द्वारा पृथक् किया गया है। साथ ही विषय से सम्बन्धित प्रसंगों का निर्देश भी इसमें दिया गया है।

समीक्षा (Criticism) :

दशमलव पद्धति का विश्व के अधिकांश देशों के ग्रन्थालयों में निरन्तर प्रयोग होता रहा है। इसका प्रयोग पांचों महाद्वीपों के देश में हो रहा है तथा लगभग आठ योरोप की भाषाओं एवं चीनी भाषा में अनुवाद हो चुका है। समय के साथ-साथ ज्ञानजगत में व्यापक विकास हुआ तथा इसके फलस्वरूप इस पद्धति का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया। गत पाँच-छह दशकों में इसकी आलोचनाएँ एवं प्रत्यालोचनाएँ हुई हैं, जिनके आधार पर ड्यूई की दशमलव पद्धति के गुण एवं दोषों का उल्लेख किया जा सकता है :

गुण : इस पद्धति के समर्थकों के अनुसार इसमें निम्नांकित गुण हैं :

1 यह सरल, स्पष्ट, उपयोगी एवं सुसंगठित रूप में प्रकाशित प्रथम पद्धति थी।

2 इसमें सरल एवं व्यावहारिक अंकन का प्रयोग किया गया था। गिनती के दस अंकों का प्रयोग अत्यधिक सर्वप्रिय एवं ग्राह्य हुआ है।

3 इस पद्धति में सर्वप्रथम दशमलव अंकन को प्रयुक्त कर अधिक विस्तारशील बनाया गया है।

4 ज्ञान-विज्ञान की नवीनतम शाखाओं एवं उपशाखाओं से सम्बन्धित पाठ्य सामग्री को उचित स्थान निर्धारित करने के लिए समय-समय पर विशेष सम्पादक-मण्डल के संशोधनों द्वारा विस्तृत किया जाता रहा है। लगभग सौ वर्षों में इस पद्धति के सत्रह संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

5 इस पद्धति में सापेक्षिक-अनुक्रमणी को विशेष महत्व दिया गया है तथा इसे ग्रन्थ-वर्गीकरण का एक आवश्यक अंग माना गया है। इसके द्वारा वर्गकार को विषय का वर्गांक खोज निकालने में सुविधा होती है।

दोष : दशमलव पद्धति के आलोचकों के अनुसार इसमें निम्नांकित दोष हैं :

1 शुद्ध एवं सीमित अंकन का प्रयोग करने के कारण इसमें ज्ञान के नवीन अनुसंधानों पर लिखित पाठ्य-सामग्री को समाविष्ट करने की सामर्थ्य नहीं है ।

2 इसमें अमेरिकन पक्षपात अधिक है । सापेक्षिक अनुक्रमणी में भी सामान्य आंग्ल पदों का उल्लंघन किया गया है ।

3 यह पद्धति सैद्धान्तिक दृष्टि से अपूर्ण है । इसमें वर्गीकरण के मूलभूत सिद्धान्तों को समान रूप से प्रयुक्त नहीं किया गया है ।

इस पद्धति के गुण एवं दोषों के विषय में ग्रन्थालय विज्ञान के प्रमुख विद्वानों के मत निम्न प्रकार हैं :

सेयर्स (डब्ल्यू सी बरविक)

"सर्वव्यापकता एवं ग्राह्यता, एक अन्तर्राष्ट्रीय वर्गीकरण शब्दकोष के रूप में मान्य सरल, प्रसार योग्य अंकन, उत्कृष्ट स्मरण-शीलता तथा प्रशंसनीय सापेक्षिक अनुक्रमणी इस पद्धति के मूल गुण हैं । इसमें अनेक दोष हैं, तथापि इसमें उचित गुण विद्यमान हैं; जिसके फलस्वरूप इस पद्धति ने अत्यन्त अकाट्य एवं कृत्रिम रूप से अखण्डनीय आलोचनाओं पर विजय प्राप्त कर उन्नति की है ।"

"क्रम की आधुनिकता अथवा अंकन की संक्षिप्तता के आधार पर अब दशमलव पद्धति का प्रतिरक्षण नहीं किया जाता । एक विचित्र तथ्य यह है कि सम्पूर्ण विश्व में अधिक से अधिक ग्रन्थालयों में, अधिकांश ग्रन्थालयों में, परिवर्तित रूप में इसका प्रयोग किया जा रहा है । किसी भी आकार के ग्रन्थ-संग्रहों में पूर्णतया अथवा आंशिक रूप से इसका सुगमता से प्रयोग किया जा सकता है तथा संग्रह में वृद्धि के साथ इसमें विस्तार भी किया जा सकता है । दशमलव पद्धति का जीवन पर्यन्त प्रयोग करने तथा सैकड़ों आलोचनाएँ पढ़ने एवं सुनने के उपरान्त मुझे यह विश्वास हो गया है कि इस प्राचीनतम् एवं अत्यन्त स्थिर पद्धति का निर्माण एक अनुभवी विद्वान द्वारा किया गया है, जो पाठ्य-सामग्री को विषयानुसार एकत्रित करने का इच्छुक है ।...इसका अंकन समस्त राष्ट्रों द्वारा ग्राह्य अन्तर्राष्ट्रीय 'भाषा' बन गया है । किसी समय दशमलव पद्धति का लोप हो सकता है, जैसे कि समस्त मानव प्रयत्नों का लोप होता है, किन्तु अब हम उसके आगामी संस्करण की प्रतीक्षा में हैं ।"

ब्राउन (जे डी)

दशमलव पद्धति "सुव्यवस्थित ग्रन्थालय वर्गीकरण की समस्त पद्धतियों में अत्यधिक सर्वव्यापी एवं प्रतिष्ठित पद्धति है ।......वर्गीकरण की किसी पद्धति का इतना व्यापक प्रयोग अथवा सर्वव्यापी मूल्यांकन नहीं हुआ । सुव्यवस्थित वर्गीकरण के क्षेत्र में इतना बहुमूल्य परोपकारी कार्य किसी अन्य पद्धति ने नहीं किया । "......इस पद्धति का प्रमुख विरोध यह है कि इसमें दशमलव से क्रमिक प्रगति की एकरूपता को रखा है तथा प्रत्येक वर्ग, विभाग, खण्ड अथवा उपखण्ड को इस रीति के अनुरूप बनाया है ।"

ब्लिस (एच ई)

"निर्माण एवं कार्य सम्पादन दोनों दृष्टियों से ज्ञान को संगठित करने में दशमलव पद्धति अयोग्य सिद्ध हो चुकी है। इसमें स्वाभाविक, वैज्ञानिक, तर्क-संगत एवं शैक्षणिक क्रम की कोई व्यवस्था नहीं है। इसमें वर्गीकरण के मूल सिद्धान्तों को समान रूप से प्रयुक्त नहीं किया गया है। यह अपने विस्तार में असंगत है तथा अन्यत्र आवश्यक विशिष्ट विवरण प्रदान करने में असफल है।......इसकी अनुक्रमणी पूर्ण नहीं है। विशिष्ट विषयों के आधुनिक साहित्य का एवं सामान्य विषयों के विशेष दृष्टिकोणों का वर्गीकरण करने में यह सर्वथा असमर्थ है,......अत्यन्त सरल विषयों के सन्दर्भ में अथवा अत्यधिक जटिल पद्धतियों की तुलना में ही यह पद्धति सरल है।......यह एक अप्रचलित अत्यन्त प्राचीन एवं यथाकाल व्यवस्था करने के अयोग्य वस्तु है तथा आज इसका किसी भी प्रकार पुनर्निर्माण नहीं किया जा सकता। ......ज्ञान के ग्रन्थात्मक संगठन में यह पद्धति पूर्णतया असम्बद्ध, अव्यवस्थित एवं क्रमरहित है।"

शेरा (जे एच)

यद्यपि शेरा ने अपने वक्तव्य में ड्यूई का उल्लेख नहीं किया है, तथापि इसका प्रसंग अवश्य है। शेरा का कथन है कि, "आज, सुलिखित पाठ्य-सामग्री की संख्या में हुई अत्यधिक वृद्धि के परिणामस्वरूप तथा नवीन आकारों में पाठ्य-सामग्री के प्रकाशन के कारण, पारम्परिक ग्रन्थालय-वर्गीकरण पद्धतियाँ अपर्याप्त एवं अव्यावहारिक होती जा रही है।"

रंगनाथन (एस आर)

दशमलव पद्धति में "अमेरिकन पक्षपात अत्यधिक है। इसकी आलोचना करने का तात्पर्य इसे तुच्छ सिद्ध करना अथवा व्यक्तियों की दृष्टि में गिराना नहीं है। यह पद्धति सबकी अधिनेत्री है, किन्तु इसी कारण यह स्वभावतः अव्यवहार्य हो गई है। इसका ढाँचा सीमित आधार पर अवलम्बित है। इसका अंकन पर्याप्त रूप से स्मृति-सहायक नहीं है तथा ज्ञान-जगत में वृद्धि के कारण इसकी समावेशकता नष्ट हो चुकी है।......भारतीय शास्त्रों के विषय में इसके द्वारा किए जाने वाले तुच्छ व्यवहार के कारण यह पद्धति सर्वथा अयोग्य सिद्ध हो चुकी है। भारतीय विषयों को इसमें बलात् प्रविष्ट करने का यह परिणाम होता है कि यह पद्धति एक प्रकार की खिचड़ी सी बन जाती है, जिसमें नवीन एवं प्राचीन की पहिचान ही असम्भव हो जाती है।"

3 विस्तारशील वर्गीकरण
(Expansive Classification)

अमेरिका के जिन ग्रन्थपालों का योगदान प्राथमिक महत्व का है, उनमें चार्ल्स एमी कटर (Charles Ammi Cutter) का नाम अधिक उल्लेखनीय है। सेयर्स महोदय के कथनानुसार अन्य व्यक्तियों पर अपने असन्दिग्ध प्रभाव के कारण कटर का कार्य सदैव जीवित रहेगा। उन्होंने ग्रन्थालय-विज्ञान को नवीन दिशा प्रदान की तथा अमेरिकन ग्रन्थालय संघ को मार्ग-दर्शन दिया। कटर का जीवन-चरित्र अन्य ग्रन्थपालों

की भाँति अनाटकीय था; किन्तु उनका सांस्कृतिक, उपकारी एवं पूर्ण व्यक्तित्व का प्रभाव आज भी जीवित है।

प्रारम्भिक जीवन (Early History) :

चार्ल्स ए कटर का जन्म 1837 में हुआ था। हारवर्ड कॉलिज से स्नातक की उपाधि प्राप्त कर उसी महाविद्यालय में आध्यात्मवाद के ग्रन्थों के संग्रह का प्रसूचीकरण आरम्भ किया। इस कार्य में सफलता प्राप्त करने के पश्चात् 1868 में वह बोस्टन एथेनियम (Bostan Athenaeum) के ग्रन्थपाल नियुक्त किए गए। इसी ग्रन्थालय में उपलब्ध 1,70,000 ग्रन्थों की वृहत् अनुवर्ग-प्रसूची (Dictionary Catalogue) का निर्माण किया, जो आज भी प्रसूची के आकार का जनयिता माना जाता है। इसी के बाद से ग्रन्थालय-विज्ञान के क्षेत्र में कटर की प्रसिद्धि हुई। विभिन्न आकार के ग्रन्थालयों की व्यवस्था के लिए एक सरल वर्गीकरण हेतु अनेक ग्रन्थालयों के अनुरोध पर कटर ने एक नवीन वर्गीकरण पद्धति निर्मित करने का निश्चय किया। कटर ने आज अनुभव किया कि दशमलव पद्धति समस्त ग्रन्थालयों के लिए उपयुक्त नहीं है, अतः उसने दशमलव वर्गीकरण में आवश्यक सुधार एवं विस्तार कर नवीन पद्धति का निर्माण किया।

कटर का मत था कि ग्रन्थालयों में पाठ्य-सामग्री के संग्रह के अनुसार कम या अधिक विस्तृत वर्गीकरण पद्धति की आवश्यकता होती है। उसकी वर्गीकरण की सम्पूर्ण योजना इसी तर्क पर आधारित थी। कटर ने अनुशंसा की थी कि जब ग्रन्थालय का आकार छोटा एवं उसके विकास की गति धीमी होती है, तब प्रारम्भिक वर्गीकरण को अपनाना चाहिए। ग्रन्थालय का क्रमशः विकास होने पर विस्तृत वर्गीकरण का प्रयोग किया जा सकता है। ग्रन्थालयों में पाठ्य-सामग्री की वृद्धि के अनुरूप वर्गीकरण पद्धति में विस्तार होने के कारण ही इसे "विस्तारशील" (Expansive) पद्धति कहा जाता है।

कटर का ध्येय आकांक्षापूर्ण था, "मैं प्रत्येक आकार के संग्रह के लिए उपयुक्त पद्धति का निर्माण करना चाहता हूँ,..............जो अपनी प्रारम्भिक अवस्थाओं के ग्रामीण ग्रन्थालय से लेकर दस लाख ग्रन्थों के राष्ट्रीय ग्रन्थालय के लिए उपयुक्त हो।" अपने इसी ध्येय की पूर्ति हेतु कटर ने विस्तारशील वर्गीकरण पद्धति का निर्माण किया। यह पद्धति "विस्तारशील वर्गीकरण, भाग एक : प्रथम छह वर्गीकरण" (Expansive Classification, Part I : The First Six Classifications) Boston, 1891-93 शीर्षक के अन्तर्गत 1891 में प्रकाशित हुई। इस प्रकार कटर ने इस पद्धति में सात क्रमबद्ध वर्गीकरण पद्धतियों को संग्रहीत किया। प्रत्येक पद्धति अपने से पूर्व पद्धति से विस्तृत थी। सबसे पहली पद्धति अत्यन्त सरल एवं छोटे आकार के तथा अन्तिम पद्धति जटिल एवं वृहत् आकार के ग्रन्थालयों के लिए उपयुक्त थी। प्रथम पद्धति में केवल कुछ विस्तृत वर्ग रखे गए थे एवं उपवर्गों की व्यवस्था नहीं थी; धीरे-धीरे इसमें विकास कर वर्गों एवं उपवर्गों की संख्या में वृद्धि की गई तथा अंकन में अतिरिक्त वर्गों को सम्मिलित किया गया।

मुख्य वर्गों को रूपरेखा (Outline of Main Classes) :

कटर ने विस्तारशील पद्धति में मुख्य वर्गों की व्यवस्था के लिए जिस प्रक्रिया का प्रयोग किया, वह नवीन नहीं थी। उसमें केवल दशमलव पद्धति को चार क्रमिक प्रगति करने वाली चार अवस्थाओं में विकसित किया गया है :

1 मुख्य वर्ग	**Main Classes**
2 प्रथम सौ विभाग	**The First 100 Divisions**
3 प्रथम एक हजार विभाग	**The First 1000 Divisions**
4 पूर्णतया विस्तृत सारणी	**The Full Expanded Tables**

कटर ने इस प्रक्रिया का प्रयोग प्रथम छह पद्धतियों तथा बाद में अपूर्ण सातवीं पद्धति में किया था।

प्रथम वर्गीकरण में ग्रन्थों को निम्न आठ वर्गों में विभाजित किया :

A	संदर्भ कृतियाँ एवं सामान्य कृतियाँ	**Works of Reference and General works**
B	दर्शन एवं धर्म	**Philosophy and Religion**
E	जीवन-चरित्र	**Biography**
F	इतिहास, भूगोल एवं पर्यटन	**History, Geography and Travels**
H	सामाजिक शास्त्र	**Social Sciences**
L	प्राकृतिक शास्त्र एवं कथाएँ	**Natural Sciences and Arts**
Y	भाषा एवं साहित्य	**Language and Literature**
Y6	कथा-साहित्य	**Fiction**

कटर का कथन है कि ग्रन्थों को आठ वर्गों में विभक्त करने के पश्चात् प्रत्येक वर्ग में ग्रन्थों को लेखकों के नाम के वर्णानुक्रम से व्यवस्थित कर देना चाहिए। जीवन-चरित्रों को विषयानुसार रखना चाहिए।

कटर ने यह स्वीकार किया कि ग्रन्थालय के विस्तार तथा प्रत्येक वर्ग में ग्रन्थों की संख्या में वृद्धि के साथ ही कुछ वर्गों को विभाजित करना वांछनीय है। इसका सुझाव देते समय उसने वर्ग F इतिहास, भूगोल एवं पर्यटन को

F	इतिहास
G	भूगोल एवं पर्यटन

में विभाजित करना आवश्यक समझा।

द्वितीय वर्गीकरण में **पन्द्रह** वर्गों की व्यवस्था है।

तृतीय वर्गीकरण में **तीस** वर्गों तथा **उनतीस** उपवर्गों की व्यवस्था है।

चतुर्थ वर्गीकरण लगभग छह **पृष्ठों** में व्यवस्थित किया गया है।

पञ्चम वर्गीकरण में प्रथम बार अंग्रेजी वर्णमाला के समस्त अक्षरों को प्रतीक संख्या के रूप में प्रयुक्त किया गया है :

A	सामान्य कृतियाँ	General works
B	दर्शन एवं धर्म	Philosophy and Religion
C	ईसाई एवं यहूदी धर्म	Christianity and Judaism
D	धार्मिक इतिहास	Ecclesiastical History
E	जीवन-चरित्र	Biography
F	इतिहास	History
G	भूगोल एवं पर्यटन	Geography and Travels
H	सामाजिक विज्ञान	Social Sciences
I	समाजशास्त्र	Sociology
J	नागरिकशास्त्र, शासन, राजनीतिशास्त्र	Civics, Government, Political Science
K	विधान	Legislation
L	विज्ञान एवं कलाएँ	Science and Arts
M	प्राकृतिक इतिहास	Natural History
N	वनस्पति-विज्ञान	Botany
O	प्राणिकी	Zoology
P	मेरुदण्ड वाले जानवर	Vertebrates
Q	चिकित्सा शास्त्र	Medicine
R	उपयोगी कलाएँ, शिल्प-शास्त्र	Useful Arts, Technology
S	रचनात्मक कलाएँ, अभियांत्रिकी	Constructive Arts, Engineering
T	तन्तु-कलाएँ हस्तशिल्प	Fabricative Arts, Handicrafts
U	युद्धकला	Art of War
V	व्यायाम, मनोरंजक कलाएँ	Atheletic, Recreative Arts
W	कला, ललित कला	Art, Fine Art
X	भाषा द्वारा आदान-प्रदान की कला	Art of Communication by Language
Y	साहित्य	Literature
Z	पुस्तक-कलाएँ	Book Arts

उपर्युक्त वर्गों को निम्न छह समूहों में रखा जा सकता है :

A	सामान्य सिद्धान्त	Generalia
B-D	आध्यात्मिक शास्त्र (दर्शन एवं धर्म)	Spiritual Sciences (Philosophy and Religion)
E-G	ऐतिहासिक शास्त्र (इतिहास, जीवन-चरित्र, भूगोल)	Historical Sciences (History Biography, Geography)
H-K	सामाजिक शास्त्र (समाजशास्त्र, विधान)	Social Sciences (Sociology Legislation)

L-P	प्राकृतिक शास्त्र (वनस्पति-विज्ञान, प्राणिकी)	Natural Sciences (Botany, Zoology)
Q-Z	कलाएँ	Arts

कटर ने मुख्य वर्गों को विकासात्मक अथवा ऐतिहासिक क्रम देने का दावा किया है। उसका कथन है कि यद्यपि विस्तारशील वर्गीकरण की योजना ज्ञान-वर्गीकरण की अपेक्षा ग्रन्थ वर्गीकरण थी, तथापि उसका विश्वास था कि ग्रन्थ व्यवस्था के लिए पद्धति का रचयिता अपने मस्तिष्क में ज्ञान के वर्गीकरण का ध्यान रखकर एक स्थायी महत्व के कार्य का निर्माण कर सकता है।

विस्तारशील पद्धति की सातवीं अनुसूची अत्यन्त विस्तृत है। इसमें अंग्रेजी के बड़े अक्षरों के साथ छोटे अक्षरों को जोड़कर विषयों के उपविभाग किए गए हैं तथा सूक्ष्मतम विभाजन करने का प्रयास किया गया है। ऐसा करते समय बहुधा वर्गों में प्रथम अक्षर अथवा अक्षरों का प्रयोग कर सरल अनुवर्णिक क्रम की व्यवस्था की गई है :

B	दर्शन	**Philosophy**
Bg	तत्व-विद्या	**Metaphysics**
Bh	तर्क	**Logic**
Bi	मनोविज्ञान	**Psychology**
Bm	नैतिक दर्शन	**Moral Philosophy**
Br	धर्म	**Religion**
Bs	प्राकृतिक धर्मशास्त्र	**Natural Theology**
Bt	अनेक धर्म	**Religions**
W	कला, ललित कला	**Art, Ftne Art**
Ww	घर सजाने के उपकरण	**Furniture**
Wwb	पलंग	**Bed**
Wwch	कुर्सी	**Chair**
Wwso	सोफा	**Sofa**

सामान्य सिद्धान्त वर्ग (Generalia Class) वस्तुतः परम्परागत सामान्य कृतियाँ वर्ग हैं तथा इसकी रूपरेखा दशमलव वर्गीकरण के समान है :

A	सामान्य कृतियाँ	**Generalia works**
AD	शब्दकोश	**Dictionaries**
AE	विश्वकोश	**Encyclopaedias**
AI	अनुक्रमणी	**Indexes**
AM	संग्रहालय, सामान्य	**Museums. General**
AP	पत्रिकाएँ, सामान्य	**Periodicals, General**
AQ	उद्धहरण	**Quotations**
AR	संदर्भ ग्रन्थ	**Reference Books**
AS	संस्थाएँ, सामान्य	**Societies, General**

अनुसूचियाँ (Schedules) :

कटर ने विस्तारशील पद्धति में कुछ सामान्य रूप-विभाजनों का प्रयोग किया है, जिनका प्रयोग समस्त अनुसूचियों के साथ किया जा सकता है :

D	शब्दकोश
E	विश्वकोश
I	अनुक्रमणी
M	संग्रहालय
P	पत्रिकाएँ
Q	उद्धरण
R	सन्दर्भ
S	सभा, संस्थाएँ

रूप-विभाजन : "सामान्य कृतियाँ" मुख्य वर्ग के उपविभागों तथा उपर्युक्त रूप-विभाजनों में समान अक्षरों के प्रयोग के कारण अव्यवस्था होने की सम्भावना को दूर करने के लिए सातवीं अनुसूची में रूप-विभागों के लिए संख्याओं का प्रयोग कर क्रम में कुछ परिवर्तन कर दिया गया :

.1 सिद्धान्त	Theory
.2 ग्रन्थ-सूची	Bibliography
.3 जीवन-चरित्र	Biography
.4 इतिहास	History
.5 शब्दकोश, विश्वकोश	Dictionaries, Encylopaedias
.6 शब्दकोश, डायरेक्टरी	Year Books, Directories
.7 पत्रिकाएँ	Periodicals
.8 सभा, संस्थाएँ	Societies
.9 संग्रह	Collections

उपर्युक्त रूप-विभाजनों को बिन्दु (.) की सहायता से किसी भी वर्गांक में जोड़ा जा सकता है।

उदाहरण—

ZP	ग्रन्थालय
ZP.7	ग्रन्थालय पत्रिका
ZP.8	ग्रन्थालय संघ
Y39	फ्रेंच साहित्य
Y39.9	फ्रेंच लेखकों की कृतियों का संग्रह

देशानुसार विभाजन : भौगोलिक स्थानों के लिए भी संख्याओं का प्रयोग किया गया है। निम्न देशों एवं स्थानों का प्रयोग मुख्यतया वर्ग F इतिहास तथा वर्ग G भूगोल एवं पर्यटन के लिए है।

11 विश्व

12 यात्राएँ एवं पर्यटन संग्रह

13 विश्व-यात्राएँ
133 ऊष्ण कटिबन्ध देश

---

21 ऑस्ट्रेलिया
211 पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया

---

24 एशिया तथा अफ्रीका
25 एशिया तथा योरोप
26 योरोप तथा अमेरिका
27 योरोप तथा अफ्रीका एवं एशिया
38 तुर्की साम्राज्य
30 योरोप

---

39 फ्रांस

---

45 इंग्लैण्ड

उदाहरण : इंग्लैण्ड का इतिहास	F45
इंग्लैण्ड का भूगोल	G45
विश्व का इतिहास	F11
योरोप में पर्यटन	G40

उपर्युक्त विभाजनों को स्थानीय सूची कहा जाता है।

कालानुसार विभाजन : सातवीं अनुसूची में इतिहास एवं भूगोल वर्गों का कालानुसार विभाजन किया गया है :

.1 प्रारम्भिक
.2 1437—1507
.3 1566 तक
.4 1813 से

उदाहरण : नीदरलैण्ड का इतिहास	F46
नीदरलैण्ड का प्रारम्भिक इतिहास	F46.1

भाषानुसार विभाजन : छठवीं अनुसूची में किसी विशेष देश की भाषा का एवं साहित्य का संग्रह X एवं Y वर्गों में स्थानीय सूची से अनुरूप अंक लेकर किया जा सकता है।

उदाहरण : भाषा	X
फ्रेंच भाषा	X39
साहित्य	Y
अंग्रेजी साहित्य	Y45

एक ही देश के साहित्य को रूपों के अनुसार एक बड़ा अक्षर लेकर विभाजित करने की भी व्यवस्था की गई है :

फ्रेंच नाटक	Y39D	French Drama
फ्रेंच काव्य	Y39P	French Poetry
अंग्रेजी कथा-साहित्य	Y45F	English Fiction

जीवन-चरित्र : सामान्य रूप, विभाजनों के अन्तर्गत जीवन-चरित्र को सम्मिलित कर जीवन-चरित्र सम्बन्धी ग्रन्थों को सम्बन्धित विषय के अनुसार व्यवस्थित किया जा सकता है :

अपराधियों के जीवन-चरित्र	Ib.3
वकीलों की जीवनियाँ	Kl.3

तथापि, कटर का कथन है कि उसने इसका प्रयोग नहीं किया है, वह समस्त जीवन-चरित्र सम्बन्धी ग्रन्थों को मुख्य वर्ग में रखना पसन्द करते हैं। इस वर्ग में व्यक्तिगत जीवन-चरित्र को अनुवर्णिक क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। विषय से सम्बन्धित संग्रहीत जीवन-चरित्रों को अनेक प्रकार से व्यवस्थित किया जा सकता है :

1 विषय के अनुसार : शिक्षा विशेषज्ञों के जीवन-चरित्र Ik.3

2 मुख्य वर्ग E में व्यवस्थित कर

(अ) वर्गों के अंग्रेजी अक्षरों के अनुसार

E.A	कलाकार	Artist
E.B	वनस्पति विज्ञान का ज्ञाता	Botanist
E.En	अभियांत्रिक	Engineers

(ब) वर्गीकरण के क्रम में वर्ग अक्षरों के अनुसार

E.B	दार्शनिक
E.G	पर्यटक
E.La	वैज्ञानिक

कटर जीवन-चरित्रों को एक स्थान पर संग्रहीत करना चाहते हैं; क्योंकि अधिकांश जीवन-चरित्र एक वर्ग विशेष को स्पष्ट नहीं करते हैं तथा कुछ अनेक विषयों से सम्बन्धित होते हैं। इसके अतिरिक्त यह जान लेना अधिक सुविधाजनक है कि समस्त जीवन-चरित्र एक निश्चित वर्ग में ही व्यवस्थित हैं तथा यह ज्ञात करने की आवश्यकता नहीं है कि वह व्यक्ति किस वर्ग से सम्बन्धित है।

अंकन (Notation) :

विस्तारशील पद्धति में मिश्रित अंकन प्रयुक्त किया गया है। इसमें तीन प्रकार के अंक हैं :

अंग्रेजी वर्णमाला के बड़े अक्षर	Roman Capitals
अंग्रेजी वर्णमाला के छोटे अक्षर	Roman Smalls
अरबी संख्याएँ	Arabic Numerals

अंग्रेजी वर्णमाला के 26 बड़े अक्षरों का प्रयोग मुख्य वर्गों के लिए तथा दूसरे अक्षरों का प्रयोग उप-वर्गों के लिए किया गया है। यह दूसरा अक्षर छब्बीस मुख्य वर्गों को छब्बीस भागों में विभाजित कर देता है, तीसरा अक्षर छब्बीस भागों को विभागों में विभाजित कर देता है। इस प्रकार एक अक्षर, दो अक्षर तथा तीन अक्षरों से वर्गों का निर्माण होता है। इस विधि को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है :

Z	पुस्तक कलाएँ (साहित्यिक, इतिहास एवं ग्रन्थ-सूची सहित)
Y	साहित्य
Zy	अंग्रेजी साहित्य का इतिहास
Ya	अंग्रेजी नाटक
Zya	अंग्रेजी नाटक का इतिहास

L	विज्ञान एवं कला
Lo	रसायनशास्त्र
Loc	रासायनिक विश्लेषण

भौगोलिक विभाजन एवं रूप-उप-विभाजन अरबी संख्याओं द्वारा दर्शाये गये हैं :

Y45	अंग्रेजी साहित्य
F45	इंग्लैण्ड का इतिहास

Q.2	चिकित्साशास्त्र की ग्रन्थ सूची
I.1	समाजशास्त्र के सिद्धान्त

इस पद्धति में प्रयुक्त अंकन सरल, संक्षिप्त एवं नम्य है। किन्तु ज्ञान को 26 मुख्य वर्गों में विभाजित करने पर भी इसके विभाग एवं उप-विभाग का प्रभाव कम है। विभागों एवं उपविभागों का सम्बन्ध अंकन प्रदर्शित नहीं करता है तथा अंकन का बँटवारा भी अनुचित है।

कटर द्वारा प्रयुक्त अंकनों की व्यवस्था को स्पष्ट किया जा सकता है :

एक अक्षर, उसके बाद एक अथवा अधिक अक्षर
A LETTER

जब वर्ग एक **विषय** है (इतिहास, दर्शन, विज्ञान, कला) अथवा साहित्य का **एक प्रकार** है (कथा, नाटक, काव्य)

F	इतिहास
B	दर्शन
L	विज्ञान

Yd	अंग्रेजी नाटक
Yp	अंग्रेजी काव्य
Zyp	अंग्रेजी काव्य का इतिहास

एक संख्या **A SINGLE FIGURE**	एक ही वर्ग के अन्य ग्रन्थों में एक विशिष्ट रूप में लिखित ग्रन्थों में विभेद करने के लिए (शब्द-कोश, विश्वकोश, पत्रिकाएँ आदि) **B.5** दर्शन शब्दकोश **Y.7** साहित्यिक पत्रिकाएँ
दो संख्याएँ **TWO FIGURES**	एक ही वर्ग के अन्य ग्रन्थों में से एक स्थान से सम्बन्धित ग्रन्थों में विभेद करने के लिए (अमेरिका, एशिया, मिस्र, पहाड़, नदी, झील) **F30** योरोप का इतिहास **G83** संयुक्त राज्य अमेरिका का भूगोल **Fu45** इंग्लैण्ड का वंशावलि चिह्न

अनुक्रमणी (Index) :

कटर ने अनुक्रमणी की योजना के विषय में लिखा था "सातवीं अनुसूची के प्रत्येक खण्ड के साथ एक अनुक्रमणी तथा सबकी एक सम्पूर्ण अनुक्रमणी, सम्भवतया व्याख्या सहित, पद्धति के अन्त में दी जावेगी।

प्रथम छह अनुसूचियाँ अनुवर्णिक अनुक्रमणी से युक्त हैं, जिनमें विषयों से सम्बन्धित वर्गीकरण की सापेक्षिक अंकन संख्या दी हुई है। सातवीं अनुसूची के खण्डों के साथ पृथक् अनुक्रमणी दी गई है, जो केवल एक वर्ग से सम्बन्धित है।

उदाहरणार्थ : कर संग्रहकर्त्ता	**Kazl**
कर प्रत्यक्ष	**Htl**
कर आय	**Htg**
कर अप्रत्यक्ष	**Htl**
कर सम्पत्ति	**Hte**
कर विशेष,	देखिए कर

समीक्षा (Evaluation) :

इस पद्धति की प्रशंसा अधिकांश आलोचकों ने की है। इसमें विस्तारशीलता, संक्षिप्तता एवं सरलता के गुण पर्याप्त रूप में मिलते हैं, जो किसी भी वर्गीकरण पद्धति को सर्वव्यापी बनाने के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। यदि कटर महोदय को अपनी अंतिम अनुसूची को पूरा करने का तथा प्रथम छह अनुसूचियों को तुलनात्मक परिवर्द्धन एवं संशोधन करने का अवकाश मिला होता (जो उनके असामयिक निधन से न हो सका) तो **सम्भवतः** यह पद्धति सर्वोत्तम एवं सर्वमान्य हो सकती थी।

रिचार्डसन (ई सी)

यह पद्धति "वास्तव में उच्च महत्त्व की वैज्ञानिक कृति है। निर्माता का अथक परिश्रम तथा अश्रान्त लगन से किया गया कार्य अत्यन्त सराहनीय है।"

ब्राउन (जे डी)

यह पद्धति "अत्यन्त वैज्ञानिक एवं पूर्ण आधुनिक वर्गीकरण पद्धतियों में से एक है।" ब्राउन ने यह अनुभव किया कि, "इसकी तुलनात्मक उपेक्षा तथा ब्रिटिश

ग्रन्थपालों में इसकी मुख्य विशेषताओं की सामान्य अनभिज्ञता का कारण इसके निर्माण में लगाई गई लम्बी अवधि है।"

ब्लिस (हेनरी ई)

विस्तारशील पद्धति "वैज्ञानिक की अपेक्षा सार्वजनिक रूप से प्रयोगात्मक है तथा इसके निर्माता ने विषयों के क्रम की अपेक्षा अंकन में अधिक रुचि व्यक्त की है। यह वर्गीकरण विशेषतया वैज्ञानिक एवं तार्किक है तथा दशमलव वर्गीकरण के विरुद्ध लगाए गए गुण-दोषों एवं स्पष्ट विरोधों से तुलनात्मक रूप से मुक्त है। इस पद्धति का प्रयोग अधिकांश ग्रन्थालयों में किया गया है तथा सफलता प्राप्त की गई है।"

"यह एक ऐसी पद्धति है जिसमें अत्यन्त प्रमाणित सिद्धान्तों का प्रयोग किया गया है—इस पद्धति का अनुसरण करने वालों की ओर से निर्माता को सम्मान एवं आभार देय है।"

सारांश में विस्तारशील पद्धति इस समय भी अमेरिका के कुछ ग्रन्थालयों में विभिन्न रूपों में प्रयुक्त की जा रही है। लायब्रेरी ऑफ कांग्रेस की अनुसूचियों का पुनः वर्गीकरण कटर की पद्धति से ही किया गया था। द्विबिन्दु वर्गीकरण की भाँति यह पद्धति भी "एक व्यक्ति पद्धति" है।

Read

4 लायब्रेरी ऑफ कांग्रेस वर्गीकरण (Library of Congress Classification)

लायब्रेरी ऑफ कांग्रेस की स्थापना 1800 ई० में अमेरिका की संसद (कांग्रेस) द्वारा पारित एक एक्ट के अन्तर्गत वैधानिक ग्रन्थालय के रूप में कैपिटाल (Capitol) में की गई थी। इस ग्रन्थालय को 1897 में वाशिंगटन में निर्मित विश्व के सर्वाधिक विशाल, सुसज्जित एवं बहुमूल्य भवन में स्थानान्तरित किया गया। अनेक संघर्षों से गुजरने के बाद भी इस ग्रन्थालय के संग्रह में शीघ्रतापूर्वक तीव्र गति से वृद्धि हुई। इसका सेवा क्षेत्र इतना व्यापक एवं संगठित हो गया है कि ग्रन्थालय में उपलब्ध सम्पूर्ण संग्रह का पुनर्वर्गीकरण तत्कालीन अधिकारियों के लिए अनिवार्य-सा हो गया।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Background) :

लायब्रेरी ऑफ कांग्रेस की स्थापना के समय उपलब्ध 964 ग्रन्थों एवं 9 मानचित्रों को आकार के अनुसार व्यवस्थित किया गया था। इस प्रकार की व्यवस्था 1812 तक प्रचलित रही, जबकि ग्रन्थालय में 3,076 ग्रन्थ एवं 53 मानचित्र आदि थे। इसी वर्ष तत्कालीन ग्रन्थपाल पेट्रिक मग्रूडर (Patrick Macgruder) ने एक विस्तृत प्रसूची के निर्माण का प्रयत्न किया। इस प्रसूची को 18 शीर्षकों के अन्तर्गत वर्गीकृत किया गया तथा प्रत्येक शीर्षक में आकार के अनुसार ग्रन्थों को पुनः व्यवस्थित किया गया।

बीसवीं सदी के आगमन तक इस ग्रन्थालय में लगभग बीस लाख ग्रन्थ संग्रहीत हो चुके थे। इस ग्रन्थालय ने विश्व के राष्ट्रीय ग्रन्थालयों में उच्च स्थान प्राप्त कर लिया था। 1899 में डॉ० हरबर्ट पुटनम (Dr. Herbert Putnam) प्रथम प्रशिक्षित

ग्रन्थपाल नियुक्त किए गए। उन्होंने ग्रन्थालय में उपलब्ध पाठ्य-सामग्री का वर्गीकरण करने की योजना बनाई। इस समय तक किसी भी प्राचीन राष्ट्रीय ग्रन्थालय ने ग्रन्थों को वर्गीकृत करने के विशाल कार्य को पूरा नहीं किया था। डॉ० पुटनम ने विषय के आचार्यों एवं विशेषज्ञों की एक समिति बनाकर इस कार्य को प्रारम्भ किया। उस समय प्रचलित समस्त वर्गीकरण-पद्धतियों पर सावधानीपूर्वक विचार करने के पश्चात् यह निश्चित किया गया कि विद्यमान दोनों ग्रन्थात्मक वर्गीकरण पद्धतियाँ-दशमलव एवं विस्तारशील-अनुपयुक्त हैं। समिति ने प्रचलित पद्धतियों में से सर्वोत्तम तथ्य लेकर एक ऐसी पद्धति का निर्माण करने की योजना बनाई, जो व्यावहारिक अधिक एवं सैद्धान्तिक कम हो तथा जिसका ग्रन्थालय में अधिक से अधिक उपयोग किया जा सके। पद्धति का निर्माण करने के लिए ग्रन्थालय में उपलब्ध वास्तविक ग्रन्थों पर विशेष महत्त्व देना था। यह एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य था, क्योंकि इस समय तक किसी भी पद्धति ने इतने विशाल ग्रन्थों के संग्रह की वास्तविक समीक्षा एवं व्यक्तिगत परीक्षा नहीं की थी। एक लेखक द्वारा की गई आलोचना कि "वर्गीकरण ने अंकन से प्राथमिकता ली है" का विशेष अर्थ है। दूसरे शब्दों में, इस समय तक निर्मित पद्धतियों ने पहले ग्रन्थों को वर्गीकृत कर इसके बाद अनुसूचियों का निर्माण किया, किन्तु लायब्रेरी ऑफ काँग्रेस की अंकन का निर्माण करने से पूर्व ही समस्त ग्रन्थों को पद्धति में अपना स्थान प्राप्त था। इस प्रकार यह पद्धति किसी भी प्रकार के पुनर्निर्माण के लिए पर्याप्त रूप से तत्पर थी।

लायब्रेरी ऑफ काँग्रेस पद्धति की योजना में विस्तारशील पद्धति का अधिक अनुसरण किया गया है, किन्तु ब्रूनेट, दशमलव एवं सार्वभौम दशमलव पद्धतियों की अनेक विशेषताओं को भी इस पद्धति में शामिल किया गया है। पाँच वर्ष के अथक परिश्रम के पश्चात् 1904 में "लायब्रेरी ऑफ काँग्रेस वर्गीकरण की रूपरेखा" (Outline of the Library of Congress Classification) का प्रकाशन हुआ।

मुख्य वर्गों की रूपरेखा (Outline of Main Classes) :

लायब्रेरी ऑफ काँग्रेस पद्धति में मुख्य वर्गों की रूपरेखा कटर महोदय की विस्तारशील पद्धति पर ही आधारित है। किन्तु इसमें विषयों के वैज्ञानिक क्रम का पूर्णतया अनुसरण नहीं किया गया है। इस पद्धति में विभिन्न समूहों के सुगम क्रम को केवल विषयों के समूहों की अपेक्षा ग्रन्थों के समूह के रूप में स्वीकार कर अपनाया गया है।

इस पद्धति में अंग्रेजी वर्णमाला के बड़े अक्षरों का प्रयोग किया गया है तथा भावी विकास की योजना को कार्यान्वित करने के लिए **I, O, W, X** तथा **Y** अक्षरों को मुख्य वर्गों की रूपरेखा में छोड़ दिया गया है। इसके वर्गों की रूपरेखा इस प्रकार है :

A	सामान्य कृतियाँ, विविध	**General works, Polygraphy**
B	दर्शन, धर्म	**Philosophy, Religion**
C	इतिहास, सहायक विज्ञान	**History, Auxiliary Sciences**

D	इतिहास एवं भू-परिमापन	History and Topography
E-F	अमेरिका एवं संयुक्त राज्य	America and United States
G	भूगोल, मानवशास्त्र	Geography, Anthropology
H	सामाजिक विज्ञान	Social Seicnees
J	राजनीति विज्ञान	Political Science
K	विधि	Law
L	शिक्षा	Education
M	संगीत	Music
N	ललित कला	Line arts
P	भाषा तथा साहित्य	Language and Literature
Q	विज्ञान (समस्त शाखाएँ)	Science (All branches)
R	चिकित्सा-शास्त्र	Medicine
S	कृषि, पौधे एवं पशु उद्योग	Agricultute, Plant and Animal Industry
T	शिल्प-शास्त्र	Technology
U	सैनिक शास्त्र	Military Science
V	नौसेना शास्त्र	Naval Science
Z	ग्रन्थसूची तथा ग्रन्थालय विज्ञान	Bibliography and Library Science

इस प्रकार इस पद्धति में बीस मुख्य वर्ग तथा सामान्य कृतियों के लिए एक अतिरिक्त वर्ग की व्यवस्था की गई है ।

मुख्य वर्गों के अन्तर्गत विषय के अनुसार व्यवस्था के सामान्य सिद्धान्त निम्न हैं :

1	सामान्य रूप-विभाजन	General form divisions
	पत्रिकाएँ, कोश, संग्रह	Periodicals, Dictionaries Collections
2	सिद्धान्त, दर्शन	Theory, Philosophy
3	इतिहास	History
4	प्रामाणिक ग्रन्थ	Treatises
	सामान्य कृतियाँ	General works
5	विधि, नियम, राज्य-सम्बन्ध	Law, Regulation, State relations
6	अध्ययन एवं शिक्षण	Study and Teaching
7	विशेष विषय तथा उनके उप-विभाग (सामान्य से विशेष की ओर)	Special subjects and their sub-divisions (from general to specific)

इस सामान्य सिद्धान्त का प्रयोग, कुछ सीमा तक, मुख्य वर्गों के क्रम को निश्चित करने के लिए भी किया गया है तथा समस्त वर्गों को निम्न समूहों में व्यवस्थित किया गया है :

A	विविध	**General works**
B	दर्शन, धर्म	**Philosophy, Religion**
C-G	ऐतिहासिक शास्त्र	**Historical Science**
H-K	समाज-राजनीतिक शास्त्र; विधि	**Socio-Political Science, Law**
L	शिक्षा	**Education**
M	संगीत	**Music**
N	कलाएँ	**Fine Arts**
P	भाषा एवं साहित्य	**Language and Literature**
Q	विज्ञान	**Science**
R-V	व्यावहारिक विज्ञान	**Applied Science**
Z	ग्रन्थ-सूची, अनुक्रमणी	**Bibliography, Index**

अनुसूचियाँ (Schedules) :

लायब्रेरी ऑफ काँग्रेस पद्धति अत्यधिक विस्तृत वर्गीकरण पद्धति है। प्रत्येक वर्ग की विशेष व्यवस्था की गई है। इसी कारण प्रत्येक विषय की अनुसूचियों में सूक्ष्म वर्गीकरण उपलब्ध है। वास्तव में अधिकांश वर्ग अत्यधिक विस्तृत हो गये हैं। इस पद्धति में उपविभाजन के लिए पुनः अंग्रेजी अक्षरों का प्रयोग किया गया है :

J	राजनीतिशास्त्र
J	अधिकृत लेख
JA	सामान्य कृतियाँ
JC	राजनीतिक सिद्धान्त
JF	सांविधानिक इतिहास एवं प्रशासन
JK	संयुक्त राज्य अमेरिका
JL	ब्रिटिश अमेरिका, लेटिन अमेरिका
JN	योरोप
JQ	अफ्रीका, एशिया, आस्ट्रेलिया आदि
JS	स्थानीय प्रशासन
JV	उपनिवेश
JX	अन्तर्राष्ट्रीय विधि

उपर्युक्त उपविभाजनों को संख्या द्वारा खण्डों में विभाजित किया गया है :

JC	राजनीतिक सिद्धान्त, राज्य सिद्धान्त
20-45	आदिकालीन राज्य
47-50	पूर्वीय राज्य

51-95	प्राचीन राज्य
101-126	मध्यकालीन राज्य
131-299	आधुनिक राज्य
301	राज्य की उत्पत्ति
	.........आदि

उपर्युक्त खण्डों को पुनः उपखण्डों में विभाजित किया गया है :

	प्राचीन राज्य
JC 51	सामान्य कृतियाँ
53	विशेष विषय
66	मिस्र
71	ग्रीस, समकालीन प्रामाणिक ग्रन्थ
	अरस्तू
	.A 4-6 मूल ग्रन्थ
	.A 7-Z आलोचना, आदि
72	प्रारम्भिक कृतियाँ
73	आधुनिक सामान्य कृतियाँ
75	विषयानुसार विशेष कृतियाँ
	नागरिकता, संघीय शासन
	मताधिकार आदि

रूप-विभाजन : यही केवल ऐसी पद्धति है जिसमें सामान्य रूप विभाजनों की व्यवस्था नहीं है। यद्यपि इस प्रकार के विभाजनों को प्रस्तुत किया गया है, तथापि अन्य पद्धतियों की भाँति इनका प्रयोग प्रत्येक वर्ग में समान रूप से नहीं किया गया है। निम्न रूप विभाजनों को प्रस्तुत किया गया है :

पत्रिकाएँ, सभा-समिति, संस्थाएँ
सिद्धान्त, दर्शन
इतिहास
विधि
अध्ययन एवं शिक्षण, आदि

उपर्युक्त विभाजनों की प्रत्येक वर्ग में पुनरावृत्ति की गई है, किन्तु उनको स्मृति सहायक की महत्ता प्रदान करने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया है।

देशानुसार विभाजन : इस पद्धति में सर्वमान्य देशानुसार विभाजन की व्यवस्था नहीं है। भौगोलिक उपविभाजनों के लिए निम्न चार विधियों का प्रयोग किया गया है :
(1) अंकन के नियमित क्रम में संख्याओं की श्रेणी प्रदान कर :

SH	मत्स्य पालन
SH461-601	अमेरिका में मत्स्य-पालन
SH603-643	योरोप में ,, ,,
SH651-667	एशिया में ,, ,,

संख्याओं के समूह को रिक्त छोड़कर देश के लिए दी गई विशेष सारणी से संख्या लेकर :

BS821-923 आर्थिक कीटशास्त्र सम्बन्धी अधिकृत लेख

(देश सारणी द्वारा)

देश-सारणी में विश्व के देशों का वर्गांक 21-123 के अन्तर्गत दिया गया है, इसमें पीरू देश का वर्गांक 53 है। अतः :

SB853 पीरू देश के आर्थिक कीटशास्त्र सम्बन्धी अधिकृत लेख

अतिरिक्त दशमलव संख्याओं द्वारा :

GB561-568 घाटियाँ

(उपविभाजन अन्य देशों द्वारा)

.69 एशिया

.7 चीन

.71 भारत एवं लंका

.74 इण्डोनेशिया

देशों का A-Z अनुवर्णिक उपविभाजन द्वारा :

SH101 मत्स्य-संस्कृति (योरोप के अन्य देशों में A-Z द्वारा)

SH101.**FS** फिनलैण्ड में मत्स्य-संस्कृति

इस प्रकार देशानुसार विभाजनों की प्रत्येक वर्ग में आवश्यकतानुसार पुनरावृत्ति की गई है। अनुवर्णिक क्रम में व्यवस्थित विशेष भौगोलिक सारणियाँ स्मृति सहायक नहीं हैं। उदाहरण के लिए, **A**8 का अर्थ ऑस्ट्रेलिया अथवा अरलोसास दोनों ही हो सकता है।

भाषानुसार विभाजन : मुख्य वर्ग **P** में भाषा एवं साहित्य को विस्तार में विभाजित किया गया है :

P भाषा एवं साहित्य

P भाषाशास्त्र, भाषाओं का अध्ययन

PA साहित्यिक भाषाशास्त्र एवं साहित्य

PB आधुनिक भाषाएँ

PC रोमन भाषा

आदि

जीवन-चरित्र : इस पद्धति की सहायक परन्तु महत्त्वपूर्ण विशेषता जीवन-चरित्र की व्यवस्था है। समस्त जीवन-चरित्र (संग्रहीत अथवा व्यक्तिगत), जिसका सम्बन्ध किसी विशेष विषय से नहीं है, उन्हें वर्ग **CT** के अन्तर्गत सामान्य स्थान प्रदान किया गया है। एक विषय से सम्बधिन्त जीवन-चरित्र को उस विषय के साथ व्यवस्थित करने की व्यवस्था अनुसूची में की गई है। अन्य पद्धतियों में विषय द्वारा विभाजन सामान्यतः अनुमति सूचक है, यहाँ एक नियम है।

अंकन (Notation) :

लायब्रेरी ऑफ काँग्रेस पद्धति में मिश्रित अंकन का प्रयोग किया गया है। सामान्यतः अंग्रेजी वर्णमाला के बड़े अक्षरों तथा गिनती की संख्याओं का प्रयोग हुआ है।

1 प्रत्येक मुख्यवर्ग के लिए एक बड़े अक्षर का प्रयोग :
L शिक्षा, Q विज्ञान

2 प्रत्येक विभाग के लिए दो बड़े अक्षरों का प्रयोग :
LD विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय
QC भौतिकी

3 प्रत्येक खण्ड के लिए दो बड़े अक्षरों के साथ संख्याओं का प्रयोग :
QC 601 विद्युत शक्ति

इस प्रकार दो अक्षर एवं चार संख्याएँ अंकन की लम्बाई की सामान्य सीमा है; तथापि इस सीमा का अनुवर्णिक अथवा अन्य उप-विभाजन द्वारा विस्तार किया जाता है। अनुसूचियों में अधिकांश वर्गांक एक से तीन अंकों में ही है।

जिस स्थान पर अंकों का प्रयोग बुद्धिहीनता से अत्यधिक समीप हो गया है तथा अनुवर्णिक व्यवस्था अनुपयुक्त है, वहाँ बिन्दु का प्रयोग कर अतिरिक्त उप-विभाजन प्राप्त किया जा सकता है :

HJ	सीमाशुल्क एवं आगम-निर्गम कर सूची
GJ 6015	जर्मन आगम-निर्गम कर सूची अधिनियम

इसे उपविभाजित किया जा सकता है :

	क्रमानुसार संग्रह
.A 1-2	राजकीय
.A 21-4	राज्य, दिनांक द्वारा
.A 41-59	अशासकीय, सम्पादक द्वारा

इस पद्धति के अंकन को छोटा करना कठिन है, अतः छोटे आकार के ग्रन्थालयों में इसका प्रयोग सुगमतापूर्वक नहीं किया जा सकता। अंकन का बँटवारा भी उपयुक्त नहीं है।

अनुक्रमणी (Index)

इस पद्धति में व्यापक अनुक्रमणी की व्यवस्था नहीं है। प्रत्येक वर्ग की निजी अनुवर्णिक सापेक्ष अनुक्रमणी है। इसमें दूसरे वर्गों के विषय सम्बन्ध नहीं दर्शाये गए हैं। सेयर्स का कथन है कि जब समस्त अनुक्रमणियों को एकत्रित किया जायेगा, तब यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन बन जायेगा। इस पद्धति की अनुक्रमणी का नमूना निम्न है :

Automobiles	मोटर गाड़ियाँ	TL 1-290
Alcohol	सुरा	TL 217
Auto-trucks	ऑटो-ट्रक	TL 230
Biography	जीवन-चरित्र	TL 139-140

Collections	संग्रह	TL 8
Design, Construction	नक्शा, निर्माण	TL 9
Electric	विद्युत	TL 220
History	इतिहास	TL 15-125
Periodicals	पत्रिकाएँ	TL 1-4
Tyres	टायर	TL 270
Treatises	प्रामाणिक ग्रन्थ	TL 144-5

समीक्षा (Evaluation) :

यह पद्धति लायब्रेरी ऑफ काँग्रेस के लिए अत्यन्त उपयुक्त है। इसमें सूक्ष्म उप-विभाजन किए गए हैं तथा उनका विस्तृत क्रम सहायक है। प्रत्येक वर्ग की पृथक् अनुसूची एवं अनुक्रमणी होने के कारण विशेष संग्रहों के वर्गीकरण के लिए यह सूची एक उत्तम साधन है। इसका अंकन सरल, संक्षिप्त एवं नम्य है। इतना होते हुए भी यह पद्धति केवल बड़े आकार के ग्रन्थालयों में प्रयुक्त की जा सकती है। इस पद्धति के प्रयोग के लिए निर्देश नहीं दिये गए हैं।

ब्लिस (हेनरी ई)

लायब्रेरी ऑफ काँग्रेस वर्गीकरण पद्धति "विशेष रूप से वर्तमान की कृति है, किन्तु यह ऐतिहासिक परिस्थितियों में वर्तमान है। इस पद्धति की योजना लायब्रेरी ऑफ काँग्रेस के लिए बनाई गई थी तथा इसकी उत्पत्ति उस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थालय की ऐतिहासिक परिस्थिति से हुई है। वर्तमान समय में यह एक श्रेष्ठ वर्गीकरण पद्धति है, यह श्रेष्ठता केवल प्रतिष्ठा एवं सेवा के कारण ही नहीं है, बल्कि पूर्णतः यह अन्य पद्धतियों से कम असन्तोषजनक है।"...........ज्ञान के संगठन के रूप में यह अवैज्ञानिक एवं अयोग्य है, ग्रन्थालय वर्गीकरण के रूप में यह अनार्थिक है, स्थायी वस्तु के रूप में यह अयोग्य सिद्ध की गई है।"

फिलिप्स (डब्ल्यू एच)

यह पद्धति कदाचित् "अत्यधिक आधुनिक तथा विश्व में अत्यधिक दक्षता-पूर्वक प्रशासित राष्ट्रीय ग्रन्थालय में प्रयुक्त है।" इस पद्धति के प्रयोग के कारण ही इस ग्रन्थालय की सेवा श्रेष्ठ है। समस्त ग्रन्थात्मक पद्धतियों में यह वर्गीकरण पद्धति कदाचित् अत्यधिक प्रभावकारी है, क्योंकि इसकी रचना ग्रन्थों के लिए की गई है तथा इसकी आवश्यकता ग्रन्थों के वास्तविक संग्रह के कारण हुई है। इस पद्धति के निर्माण के समय एक ही उद्देश्य था : लायब्रेरी ऑफ काँग्रेस के संग्रह की समुचित व्यवस्था।"...........तथापि "अपने वर्तमान आकार में यह व्यापक प्रयोग के लिए अधिक विस्तृत एवं जटिल है।"

केली (ग्रेस ओ)

इस पद्धति का "निर्माण सामान्यतः, ग्रन्थालय में धारावाहिक रूप में प्राप्त ग्रन्थों के अनुसार, क्रम से होने के कारण, यह इस समय विद्यमान अत्यन्त आधुनिक तथा प्रायोगिक पद्धति का प्रतिनिधित्व करती है।"

5 सार्वभौम दशमलव वर्गीकरण
(Universal Decimal Classification)

ब्रूसेल्स में अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों के एक संघ द्वारा ड्यूई की दशमलव पद्धति का परिवर्द्धित तथा संशोधित रूप होने के कारण इसे ब्रूसेल्स वर्गीकरण (Brussels Classification) भी कहा जाता है। इस पद्धति का विस्तृत वर्णन करने से पूर्व इसके निर्माण से सम्बन्धित उद्देश्यों एवं परिस्थितियों की तथा कुछ प्रमुख विशेषज्ञों एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Background) :

बेल्जियम के दो उत्साही एवं लोक-सेवी व्यक्तियों—हेनरी ला फॉन्टेन (Henri La Fontaine) एवं पॉल ओटलट (Paul Otlet)—ने 1895 में ब्रूसेल्स नगर में इंस्टीट्यूट इंटरनेशनल द बिब्लियोग्राफी (Institute International de Bibliographie)—I I B—नामक संस्था की स्थापना की। अंग्रेजी भाषा में इसका नाम इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बिब्लियोग्राफी (International Institute of Bibliography) रखा गया। ब्रूसेल्स में 1895 में हुई कांफ्रेंस में विशेषज्ञों द्वारा समस्त प्रकाशित पाठ्य-सामग्री की वर्गीकृत अनुक्रमणी संगठित करने के उपायों पर विचार किया गया। दूसरे शब्दों में, यह निश्चित किया गया कि समस्त विद्यमान ग्रन्थों एवं पत्रिकाओं के प्रमुख लेखों को सम्मिलित कर एक विस्तृत प्रसूची का निर्माण किया जाय। इस समय केवल दशमलव पद्धति ही अत्यधिक सफल एवं प्रचलित वर्गीकरण पद्धति थी तथा इसका पाँचवाँ संस्करण प्रकाशित हो चुका था। इसके साथ ही कटर की विस्तारशील पद्धति (1891 में) प्रकाशित हो चुकी थी तथा लायब्रेरी ऑफ कॉंग्रेस का पुनर्वर्गीकरण का कार्य (1897 में) प्रारम्भ हो चुका था।

समस्त विद्यमान वर्गीकरण पद्धतियों का परीक्षण करने के पश्चात् I I B ने दशमलव वर्गीकरण को प्रयुक्त करना निश्चित किया तथा प्रक्षिप्त अनुक्रमणी के निर्माण के लिए दशमलव पद्धति को संशोधित एवं परिवर्द्धित करने की अनुमति मेलविल ड्यूई से प्राप्त की। तदनुसार 1905 में प्रथम सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण (फ्रेंच भाषा में) "मेन्युल द रेपरटायर बिब्लियोग्रेफिक यूनीवर्सेल" (Manual de Repertoire Bibliographique Universelle) नाम से प्रकाशित हुआ। दूसरा सम्पूर्ण संस्करण (फ्रेंच भाषा में ही) 1927/33 में "क्लासिफिकेशन डेसीमेल यूनीवर्सेल" (Classification Decimale Universelle) नाम से प्रकाशित हुआ। इसके अन्तर्गत लगभग 70,000 वर्गों का अनुसूचियों में उल्लेख किया गया था। इस समय तक इसका प्रयोग विशेष ग्रन्थालयों द्वारा एक विस्तृत एवं विकासशील पद्धति के रूप में किया जाने लगा था।

तृतीय पूर्ण संस्करण (जर्मन भाषा में) "डेजीमल क्लासिफिकेशन" Dezimal Classification) 1933 में प्रारम्भ होकर 1952 में पूरा किया गया। चतुर्थ संस्करण (अंग्रेजी भाषा में) "यूनिवर्सल डेसीमल क्लासिफिकेशन" (Universal Decimal

Classification) 1936 में आरम्भ होकर 1969 में पूरा हुआ है। इसके अतिरिक्त अन्य संस्करणों का कार्य भी प्रगति पर है :

पांचवाँ संस्करण (फ्रेंच भाषा में) — 1939
छठा संस्करण (जापानी भाषा में) — 1950
सातवाँ संस्करण (स्पेनिश भाषा में) — 1955

सम्पूर्ण संस्करणों के अतिरिक्त तेरह विभिन्न भाषाओं में संक्षिप्त संस्करण भी प्रकाशित हो चुके हैं। एक संक्षिप्त संस्करण तीन भाषाओं (जर्मन, फ्रेंच एवं अंग्रेजी) में 1958 में प्रकाशित हुआ था।

इंस्टीट्यूट--I I B का नाम बाद में "इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डाक्युमेण्टेशन" (International Institute of Documentation)—I I D तथा 1937 में इंटरनेशनल फेडरेशन फॉर डाक्युमेण्टेशन (International Federation for Documentation) F I D रख दिया गया। वर्तमान में यह इसी नाम से प्रचलित है। इसका मुख्य कार्यालय 'दी हेग' (The Hague) में स्थित है।

मुख्य वर्गों की रूपरेखा (Outline of Main Classes) :

सार्वभौम दशमलव पद्धति ड्यूई की दशमलव पद्धति का विस्तृत रूप है। इसके साथ ही इसमें कुछ नवीन पदावली सम्मिलित की गई। यद्यपि मुख्य वर्गों का आधार दशमलव पद्धति के समान है, तथापि प्रयोग एवं संश्लेषण में सार्वभौम दशमलव पद्धति अधिक उत्कृष्ट है। इस पद्धति के मुख्य वर्ग निम्न हैं :

0	सामान्य कृतियाँ	Generalities
1	दर्शन, आत्मविद्या, मनोविज्ञान, तर्क, नीतिशास्त्र	Philosophy, Metaphysics, Psychology, Logic, Ethics;
2	धर्म, धर्मज्ञान	Religion, Theology
3	सामाजिकशास्त्र, समाजशास्त्र, विधि, शासकीय-शिक्षा	Social Sciences Sociology, Law, Government-Education
4	भाषा शास्त्र	Philology
5	शुद्ध विज्ञान	Pure Science
6	व्यावहारिक विज्ञान, चिकित्सा	Applied Science, Medicine
7	कलाएँ एवं मनोरंजन	Fine Arts and Recreation
8	साहित्य	Literature
9	भूगोल, जीवन-चरित्र, इतिहास	Geography, Biography, History

इससे यह स्पष्ट है कि मुख्य वर्गों का क्रम वस्तुतः दशमलव पद्धति के समान ही है। मुख्य वर्गों के लिए किए गए अंकों में कोई परिवर्तन नहीं है। मुख्य वर्गों को पुनः विभागों एवं उपविभागों में विभाजित किया गया है। ऐसा करते समय ड्यूई

द्वारा प्रयुक्त न्यूनतम तीन अंकीय (three-figure) आधार का सार्वभौम दशमलव पद्धति में त्याग कर दिया गया है तथा शून्य को विशेष अनुसूची में रखा गया है।

उदाहरण :	5	शुद्ध विज्ञान
	51	गणित
	52	ज्योतिष
	53	भौतिक (यन्त्रविद्या सहित)
	531	यन्त्र-विद्या
	531 7	ज्यामिति एवं यांत्रिकी आकार का माप

इस प्रकार इस पद्धति में मुख्य वर्ग 5 (विज्ञान) तथा वर्ग 54 (रसायन) निश्चित किया गया है, न कि 500 तथा 540, जैसा कि दशमलव में प्रयुक्त हुआ है। सामान्यतया तीन अंकों के समूह के पश्चात् बिन्दु रख दिया जाता है। इस बिन्दु का मुख्य उद्देश्य अंकों के क्रम को सुगम समूहों में विभाजित करना है। अंकों के परम्परागत क्रम में इसका कोई महत्त्व नहीं है। अतः 622.43 यथार्थ में 62243 के समान ही है।

दशमलव पद्धति के मुख्य वर्ग 900 में कुछ विशेष परिवर्तन कर सार्वभौम दशमलव पद्धति में प्रयुक्त किया गया है। दशमलव में प्रयुक्त 930-999 को मुख्य अनुसूचियों में से हटा दिया गया है। दूसरे शब्दों में, प्रारम्भिक अंक 9 के बाद के अंकों को पृथक् भौगोलिक अनुसूची में हस्तांतरित कर दिया गया है, जिसमें अंकों को 9 के बाद गोल कोष्ठक (3-9) में रखा गया है। मुख्य वर्ग 900 को दोनों पद्धतियों में निम्न प्रकार रखा गया है :

	दशमलव		सार्वभौम दशमलव
900	इतिहास, सामान्य	9	इतिहास
910	भूगोल एवं पर्यटन	91	भूगोल एवं पर्यटन
913	पुरातत्व विज्ञान	913	पुरातत्व विज्ञान
914.919	स्थानीय भूगोल एवं पर्यटन		—
920	जीवन-चरित्र	92	जीवन-चरित्र
929	वंश-परम्परा एवं इतिहास	929	वंश-परम्परा
940-999	आधुनिक इतिहास		

उपर्युक्त क्रम से स्पष्ट है कि सार्वभौम दशमलव पद्धति में इतिहास की सम्पूर्ण पाठ्य-सामग्री एक क्रम में 9 के अन्तर्गत तथा भूगोल की सम्पूर्ण पाठ्य-सामग्री 91 के अन्तर्गत व्यवस्थित की जाती है, स्थानीय अंक कोष्ठक में दिए जाते हैं :

9(42)	इंगलैण्ड का इतिहास
9(73)	अमेरिका का इतिहास
91(42)	इंगलैण्ड का भौगोलिक वर्णन
91(73)	अमेरिका का भौगोलिक वर्णन

अनुसूचियाँ (Schedules) :

प्रत्येक मुख्य वर्ग की मुख्य अनुसूचियों के अतिरिक्त इस पद्धति में विस्तारशीलता लाने के लिए अनेक सहायक सूचियों एवं विभाजन विधियों की भी व्यवस्था की गई है। सामान्य सहायक अनुसूचियों का प्रयोग किसी भी मुख्य वर्ग के साथ किया जा सकता है इसके अतिरिक्त कुछ विशेष सहायक अनुसूचियों की भी व्यवस्था है, जिनको विश्लिष्ट उपविभाग कहा गया है तथा इनको किसी भी वर्गांक के साथ जोड़ा जा सकता है।

सामान्य उप-विभाग (Common Sub-divisions) :

दशमलव पद्धति में प्रयुक्त रूप-विभाजन (01-09) की भाँति सार्वभौम दशमलव पद्धति में भी निम्न उप-विभागों की व्यवस्था की गई है तथा साथ ही उनके संयुक्त चिह्न भी निश्चित कर दिए गए हैं :

चिह्न	महत्व	
+	दो वर्गों का समावेश	Coordination
/	अनेक क्रमिक खण्डों पर विस्तार	Extension
0/9	मुख्य अनुसूचियों में अंक	Numbers in Main Tables
:	सम्बन्ध में	Relationship
=	भाषा उप-विभाग	Language
" "	काल उप-विभाग	Time Sub-division
(0)	रूप उप-विभाग	Form Sub-division
( )	स्थान उप-विभाग	Place Sub-division
—	विशेष विश्लिष्ट उप-विभाग	Special Analytical Sub-division
.00	सामान्य सहायक विभाग	Special Auxiliary division
.0	विशेष विश्लिष्ट उप-विभाग	Special Analytical Sub-division
.	अंकों को तीन के समूहों में विभाजित करने के लिए प्रयुक्त	Used to separate the numbers into sets of three
..	छूटे हुए अंकों की पूर्ति	Replaces figures omitted

सामान्य उप-विभागों के विषय में सेयर्स का कथन है कि, "इस पद्धति में मुख्य अनुसूचियाँ अत्यधिक विस्तृत होने के कारण अधिकांश साधारण ग्रन्थ आदि को अनुसूचियों में दिए गए अंकों के असमर्यादित प्रयोग द्वारा ही पर्याप्त रूप से पृथक् किया जा सकता है। सामान्य उप-विभागों का प्रयोग साधारणतः आवश्यक है......किन्तु संयोग के चिह्नों का प्रयोग केवल अत्यधिक सूक्ष्म वर्गीकरण के लिए ही करना चाहिए। बहुधा ऐसा होता है कि अनावश्यक सविस्तार वर्णन अंकों को स्पष्ट करने की अपेक्षा क्लिष्ट कर देता है।"

सहायक अनुसूचियाँ केवल मुद्रित मुख्य अनुसूचियों के समस्त भागों में पुनरावृत्ति दूर करने का साधन है। इनके द्वारा केवल कुछ पुनः आने वाले एवं साधारण

तथा अधीनस्थ धारणाओं के समूह बनाये जा सकते हैं ।......इनका व्यक्तिगत कोई महत्त्व नहीं है, किन्तु सार्वभौम पद्धति में मौलिक विषय को अभिव्यक्त करने वाले मुख्य वर्गांकों के साथ जोड़ दिया जाता है । उपर्युक्त संसर्ग चिह्नों का स्पष्टीकरण वांछनीय है :

(अ) **सम्मिश्रण अंक** (Compound Numbers) : इस पद्धति में सम्बन्ध के लिए कुछ चिह्न प्रयुक्त किए गए हैं ।

\+ इसका प्रयोग दो अथवा अधिक विषयों को एक साथ मिलाने के लिए किया जाता है । इस चिह्न के द्वारा दो वर्गों से समान हितों के विषयों के वर्गांक लेकर एक वर्गांक बना दिया जाता है :

इंगलैण्ड तथा फ्रांस का इतिहास	9(42)+9(44)
भौतिकी तथा गणित	53+51
मुद्रण तथा ग्रन्थ-जिल्दसाजी	655.1+686.1

/ सम्बन्धित वर्गांकों की श्रेणी में केवल प्रथम एवं अन्तिम अंकों को इस चिह्न द्वारा पृथक् कर पूरी श्रेणी के अंकों को मनोनीत किया जा सकता है ।

नागरिक अभियान्त्रिकी की समस्त शाखाएँ 624/628

इसमें पाँच वर्गों 624+625+626+627+628 आदि को पृथक्-पृथक् जोड़ने की अपेक्षा इस चिह्न द्वारा व्यक्त किया जा सकता है ।

(आ) सम्बन्ध के चिह्न (Symbols of Relation) : इस पद्धति में विभिन्न विषयों के मध्य सम्बन्ध असंख्य है ।

: इस चिह्न का प्रयोग विषयों में सम्बन्ध व्यक्त करने के लिए किया जाता है।

कृषि की सांख्यिकी **Statistics of Agriculture**	31:63
इटली एवं फ्रांस के मध्य सीमा-संधि **Treaty on boundaries between Italy and France**	341.63 (44:45)
भौतिकशास्त्रियों के जीवन-चरित्र **Lives of physicists**	53:92

उपर्युक्त संयुक्त वर्गांकों को आवश्यकता होने पर उल्टा भी जा सकता है । ग्रन्थालय में विषय विशेष की प्रधानता होने पर ऐसा किया जाता है । ग्रन्थालय में सांख्यिकी प्रधान विषय होने पर 31:63 वर्गांक तथा कृषि प्रधान विषय होने पर 63:31 वर्गांक रखा जा सकता है । इसी प्रकार भौतिकशास्त्रियों के जीवन-चरित्र के लिए 53:92 अथवा 92:53 वर्गांक रखा जा सकता है ।

= इस चिह्न द्वारा ग्रन्थ की भाषा को स्पष्ट किया जाता है । इसके लिए वर्ग 4 भाषाशास्त्र में से अंक लेकर 4 को छोड़ दिया जाता है तथा उसके स्थान पर = का प्रयोग किया जाता है ।

भौतिकी जर्मन भाषा में **Physics written in German**	53=30
रसायन शब्दकोष जर्मन भाषा में **Dictionary of Chemistry in German**	54(03)=30
बहुभाषी बाइबिल **Polyglot Bible**	22=00

(इ) स्थान, जाति एवं राष्ट्रीयता (Place, Race and Nationality) : (1/9) दशमलव पद्धति के प्राथमिक भौगोलिक अंकों 930 से 999 को ही परिवर्तित कर स्थान चिह्न (1/9) का प्रयोग किया गया है। ऐसा करते समय अंक 9 का त्याग कर दिया जाता है :

योरोप की रेल-व्यवस्था **European Railways**	385(4)
इंग्लैण्ड की रेल-व्यवस्था **English Railways**	385(42)
भारतीय कृषि **Indian Agriculture**	63(54)

इसके अतिरिक्त अन्य स्थान-धारणाओं को भी व्यक्त किया गया है :

उत्तरी कटिबन्ध **North Zone**	(—17)
भारतीय नगरों की वास्तुकला **Architecture of Indian Towns**	72(54—2)

(=) चिह्न का प्रयोग जाति एवं राष्ट्रीयता के लिए किया गया है। इसका प्रयोग भाषा अंकों के आधार पर हुआ है :

यहूदियों में विवाह के रीति-रिवाज **Marriage customs of the Jews**	392.5(=924)

(ई) काल (Time) : सार्वभौम दशमलव पद्धति में काल की भी व्यवस्था की गई है। दशमलव में काल-विभाजन इतिहास के अन्तर्गत किया गया है तथा इसके वर्गांक को 09 के साथ अन्य वर्गांकों में जोड़ा जा सकता है। सार्वभौम दशमलव पद्धति में काल को विस्तारपूर्वक दर्शाया गया है तथा इसमें वर्ष, माह एवं दिन की भी व्यवस्था है। काल को निम्न दो स्थितियों में प्रयुक्त किया गया है :

(अ) काल, जिसका वर्णन ग्रन्थ में किया गया है :

इंग्लैण्ड का इतिहास—नॉर्मन विजय के समय **History of England at the date of Norman Conquest**	942 "1066"

इस वर्गांक में "1066" नॉर्मन विजय का वर्ष दिया गया है।

उन्नीसवीं शताब्दी की अभियांत्रिकी पत्रिका 62 "18"(05)
Periodical on the Nineteenth Century Engineering

(ब) काल, जिसमें ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है :

खनिजशास्त्र की पत्रिका उन्नीसवीं शताब्दी में प्रकाशित 62(05) "18"
Periodical of Mining Published in the Nineteenth Century

भारत की चित्रकला उन्नीसवीं शताब्दी में 75(54) "18"
Painting of the Nineteenth Century

किसी वर्ष विशेष को पूरा हीं, जैसे "1969" लिखा जाता है :
अतः विशेष वर्ष के लिए चार अंक "1961", "1970"
दशक के लिए तीन अंक "195", "197"
शतक के लिए दो अंक "17", "18"

उपरोक्त वर्गांकों में "195" से तात्पर्य है 1950 से 1959 तक के वर्ष तथा "197" से तात्पर्य है 1970 से 1979 तक के वर्ष। दशक के अतिरिक्त का समय / चिह्न द्वारा दिखाया जा सकता है। "1945/65" का तात्पर्य है 1945 से 1965 तक का समय। इसी प्रकार अंक "17" का अर्थ है अठारहवीं शताब्दी अथवा 1700 से 1799 तक तथा "18" का अर्थ है उन्नीसवीं शताब्दी अथवा 1800 से 1899 तक का समय।

इसके अतिरिक्त विशेष माह एवं विशेष दिन की भी व्यवस्था है :

"1905.04.03"	3	अप्रेल	1905
"1869.12.26"	26	दिसम्बर	1969

इस पद्धति में अन्य कालक्रम को निम्न अंकों द्वारा दर्शाया गया है :

प्राचीन काल ई० पू० चिह्न-द्वारा "—2" का तात्पर्य है 200 ई० पू०
ईसाई काल चिह्न + द्वारा
मध्यकाल चिह्न "04/14" द्वारा
आधुनिक काल चिह्न "15/19" द्वारा

(उ) **विशेष सहायक अंक (Special Auxiliary Numbers)** : इस पद्धति में ये अंक अत्यधिक भ्रमकारी हैं, परन्तु व्यवहार में अत्यन्त सरल हैं।

.0 इस चिह्न का उद्देश्य एक विषय का क्षेत्र किसी विशेष दशा के लिए संकुचित करना है :

भौतिकी का निरीक्षण 53.05
Observation of Physics

.00 किसी विशेष दृष्टिकोण से एक विषय की अभिव्यक्ति के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए; .001 सैद्धान्तिक, .002 कार्य-सम्पादन, .003 आर्थिक, .007 कर्मचारी, .009 नैतिक आदि का प्रयोग संगठनों एवं संस्थाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जाता है।

A-Z रोमन वर्णमाला के अक्षरों का प्रयोग वर्गांक के पीछे किसी व्यक्ति, स्थान एवं वस्तु के नाम के लिए किया जाता है। ऐसा करते समय एक अक्षर, दो या अधिक अक्षर अथवा पूरे नाम का प्रयोग होता है।

मिश्रित वर्गांक में सहायकों का क्रम (Internal order of Auxiliaries in a Compound Number): किसी साधारण मुख्य वर्गांक में दो या अधिक सहायकों का प्रयोग करने पर उनका आन्तरिक अथवा समानान्तर क्रम निश्चित करनाअनिवार्य हो जाता है। सामान्यतः स्वीकृत क्रम निम्न है :

मुख्य अंक Main No.	विशेष विश्लिष्ट	Special Analyticals
0/9	.0/.09	–0/–9

सामान्य सहायक Common Auxiliaries

दृष्टिकोण View point	स्थान place	काल Time	रूप Form
.00	(1/9)	" "	(0)

भाषा Language

=

कुछ वर्गांक लेकर सहायकों के क्रम को स्पष्ट किया जा सकता है :

+	651+657	कार्यालय संगठन तथा लेखापालन
/	651/653	कार्यालय संगठन, शीघ्रलिपि तथा टंकण
	651	कार्यालय संगठन
	651 : 338.011	कार्यालय संगठन तथा उत्पादकता
=	651=30	कार्यालय संगठन (जर्मन भाषा में लिखित)
(0)	651 (05)	कार्यालय संगठन की पत्रिका
(1/9)	651 (41 4)	यूनाइटेड किंगडम में कार्यालय प्रबन्ध
" "	651 "194/195	महायुद्ध के समय से कार्यालय प्रबन्ध
A/Z	621 (ICI)	ICI में कार्यालय प्रबन्ध
.00	651.001.5	कार्यालय प्रबन्ध-अनुसंधान
1/9	651.1	कार्यालय हाता

अंकन (Notation) :

सार्वभौम दशमलव पद्धति में मूल अंकन अरबी संख्याओं का है तथा इसका प्रयोग दशमलव पद्धति की भाँति किया गया है, किन्तु इसमें दशमलव पद्धति की भाँति न्यूनतम तीन अंकीय सिद्धान्त नहीं अपनाया गया है। इसके अतिरिक्त सामान्य पक्षों को प्रचलित करने के लिए अनेक प्रकार के चिह्न का भी प्रयोग किया गया है। इस प्रकार इस पद्धति का अंकन मिश्रित है।

इस पद्धति के अधिकांश वर्गांकों में केवल संख्याओं का ही प्रयोग किया गया है। अधिक लम्बे वर्गांकों को सुगम समूहों में विभाजित करने के लिए बिन्दु का प्रयोग किया गया है। अंकन का प्रयोग करते समय सूक्ष्मता के सिद्धांत पर महत्व देते हुए अभिव्यंजकता के सिद्धान्त को, जहाँ तक सम्भव हो सकता है, ध्यान में रखा गया

है। संश्लेषण का विस्तारपूर्वक प्रयोग किया गया है तथा विभिन्न चिह्नों की सहायता से अंकन को पक्षात्मक बनाने का प्रयत्न किया गया है। इस पद्धति में विभिन्न पक्षों का एक साथ संश्लेषण कर मिश्रित वर्गांकों का निर्माण किया जा सकता है।

अनुक्रमणी (Index) :

इस पद्धति की मुख्य अनुसूचियों में विषयों का विस्तारपूर्वक उल्लेख करने के कारण एक विस्तृत अनुक्रमणी की व्यवस्था की गई है। अनुक्रमणी का मुख्य उद्देश्य सामान्य जनता द्वारा इस पद्धति के प्रयोग को सुगम करना है। वैज्ञानिक ग्रन्थालय में इस वर्गीकरण पद्धति को अपनाते समय अनुवर्णिक अनुक्रमणी की आवश्यकता को अनुभव किया गया, जिसकी सहायता से पाठक अपने इच्छित विषयों से सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री के वर्गांकों को सुगमतापूर्वक खोज सकें। प्रारम्भ में केवल आनुवर्णिक क्रम में पाठ्य-सामग्री को व्यवस्थित कर अनुवर्णिक अनुक्रमणी (Alphabetical Index) का निर्माण किया गया। इससे पाठकों को उपयुक्त सूचना प्राप्त होने में कठिनाई प्रतीत हुई। अतः बाद में सापेक्षिक अनुक्रमणी (Relative Index) की व्यवस्था की गई।

समीक्षा (Criticism) :

अपने निर्माण के समय से ही सार्वभौम दशमलव पद्धति चर्चा का विषय रही है। यद्यपि इसका मूल आधार दशमलव पद्धति रहा है, तथापि इसको विषय वर्गीकरण पद्धति कहना अधिक उचित होगा। निःसंदेह विषयों के संगठन के लिए यह पद्धति अधिक उपयुक्त है, किन्तु पाठ्य-सामग्री की फलकों पर व्यवस्था करने में यह इतनी प्रभावकारी एवं उपयोगी नहीं है। यह पद्धति 'सामान्य से अधिक विशेष' की प्रक्रिया के सिद्धान्त पर आधारित है, ताकि सम्बन्धित विषयों को अनुवर्णिक अथवा अन्य व्यवस्था की अपेक्षा अधिक सहायक क्रम में रखा जा सके।

सार्वभौम दशमलव वर्गीकरण पद्धति के आलोचकों का कथन है कि यह पद्धति इतनी प्रभावकारी सिद्ध नहीं हो सकी, जितनी कि इंटरनेशनल फेडरेशन फार डाक्युमेण्टेशन (FID) द्वारा अपेक्षित थी।

फिलिप्स (डब्ल्यू एच)

"पद्धति का प्रयोग योरोप के अधिकांश ग्रन्थालयों द्वारा वैज्ञानिक ग्रन्थ-सूचियों के संकलन तथा पत्रिकाओं एवं अन्य अनियमित सामग्री से प्राप्त सारांशों के वर्गीकरण के लिए किया जाता है।"

पोलार्ड

"इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह विकसित 'दशमलव पद्धति ग्रन्थात्मक सामग्री को सूचीबद्ध करने के लिए अत्यधिक परिपूर्ण तथा सरलतम एवं सुलभ विधि है। यहाँ यह ध्यान में रखना उचित है कि वास्तविक ब्रूसेल्स पद्धति की रचना ग्रन्थात्मक प्रसूची में संलेखों की व्यवस्था के लिए ही की गई थी; इसका सम्पूर्ण अंकन ग्रन्थालयों के फलकों पर पुस्तकों की व्यवस्था के लिए अत्यधिक जटिल एवं अनुपयुक्त है...इस कार्य के लिए इस पद्धति का कोई अभिप्राय नहीं था।"

श्नेडर (जॉर्ज)

ऐसा कहा जाता है कि यह "एक ही साथ दार्शनिक, विषय-विशेष, ग्रन्थात्मक तथा ग्रन्थालय वर्गीकरण पद्धति है, जो सर्वत्र उपयुक्त है तथा जो अप्रचलित एवं लुप्त होने की अवस्था में नहीं है।...यह पद्धति व्यापक एवं सूक्ष्म है, उपयोगी एवं स्थिर है, मोटे तौर से मानसिक एवं साधारण है, सम्मिलित किन्तु अदूरदर्शी है। प्रत्येक दशा में, इसके उद्देश्य अस्पष्ट हैं तथा विधियाँ अवैज्ञानिक हैं।

"इस पद्धति का मूल दोष, निःसंदेह, इसके आकार में है। यह अस्थिरताओं, त्रुटियों एवं विरोधों से पूर्ण है तथा आकार में बाह्य समानता होते हुए भी, इसमें आन्तरिक समानता का अभाव है।"

वास्तव में इसके दोषों का कारण दशमलव व्यवस्था है, जो अत्यधिक प्रतिवादों के विपरीत...बलपूर्वक समता स्थापित करने वाला अंग है।

6 विषय वर्गीकरण
(Subject Classification)

विषय वर्गीकरण पद्धति जेम्स डफ ब्राउन द्वारा इंगलैण्ड के ग्रन्थालयों के लिए निर्मित एक ब्रिटिश वर्गीकरण पद्धति है। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में यह धारणा अधिक प्रचलित हो गई थी कि दशमलव पद्धति में अमेरिकन विषयों को अत्यधिक महत्व दिया गया है। यद्यपि यह अभियोग विचारसंगत नहीं था, तथापि ब्रिटिश ग्रन्थालय-जगत के तत्कालीन अग्रणी ग्रन्थपाल ब्राउन ने ऐसी पद्धति का निर्माण करना निश्चित किया, जिसे ग्रन्थालयों में सरलता से अपनाया जा सके। मुख्यतः ब्रिटिश ग्रन्थालयों के लिए निर्मित यह पद्धति विस्तारशीलता के अभाव में अधिक लोकप्रिय नहीं हो सकी है।

प्रारम्भिक जीवन (Early Life) :

श्री जेम्स डफ ब्राउन (1862-1914) का जन्म 6 नवम्बर 1862 को एडिनबर्ग में हुआ था। लगभग तीन वर्षों तक पुस्तकों की दुकानों में कार्य करने के पश्चात् ब्राउन 25 दिसम्बर 1878 को ग्लेसगो स्थित मिचेल ग्रन्थालय (Metchell Library) में नियुक्त हुए। जहाँ उन्होंने ग्रन्थालय का प्रारम्भिक अनुभव प्राप्त किया। दस वर्ष यहाँ कार्य करने के पश्चात् 1888 में, लन्दन में स्थापित क्लर्कनवेल सार्वजनिक ग्रन्थालय (Clerkenwell Public Library) में ग्रन्थपाल का कार्य सँभाला। इसी ग्रन्थालय में व्यतीत किए सोलह वर्ष उनके जीवन के अत्यन्त सृजनशील वर्ष थे। यहीं उन्होंने अनेक नवीन व्यवस्थाओं को प्रचलित किया, जिनमें मुक्तप्रवेश व्यवस्था (Open Access System) अधिक महत्वपूर्ण है। अपने देश में ग्रन्थालय विज्ञान पर सुव्यवस्थित ढंग से पुस्तक लिखने वालों में ब्राउन महोदय को प्रथम स्थान प्राप्त है।

जिस समय तक पाठकों को फलकों पर व्यवस्थित पाठ्य-सामग्री का प्रयोग करने का अवसर न दिया जावे, उस समय तक वर्गीकरण के अभाव में ग्रन्थालय में अपरिपुष्ट एवं अपूर्ण विधि द्वारा कार्य किया जा सकता है। इसके विपरीत, मुक्तफलक ग्रन्थालयों में ग्रन्थों का वर्गीकरण आवश्यक है। इसी कारण, ब्राउन ने

वर्गीकरण के अध्ययन पर विशेष ध्यान दिया । ब्राउन के कथनानुसार अन्तिम दशक के प्रारम्भिक वर्षों में ब्रिटेन के दशमलव पद्धति अपनाने वाले कुछ संदर्भ ग्रन्थालयों को छोड़कर, अन्य ग्रन्थालयों में सूक्ष्म वर्गीकरण को नहीं अपनाया गया था ।

ब्राउन ने दशमलव पद्धति को अधिक जटिल पाया तथा इसी कारण उन्होंने एक साधारण पद्धति निर्मित करने का प्रयत्न किया, जिसका प्रयोग सुगमता से किया जा सके । अनेक प्रयोगों के पश्चात् 1894 में जॉन हेनरी कुइन (**John Henry Quinn**) के साथ मिलकर एक पद्धति का निर्माण किया, जिसे कुइन-ब्राउन पद्धति (**Quinn-Brown Scheme**) कहा जाता था । कुछ ही समय में यह पद्धति विकसित ग्रन्थालयों के लिए अनुपयुक्त सिद्ध हुई तथा 1897 में ब्राउन ने संशोधित एवं विकसित रूप में द्वितीय पद्धति प्रकाशित की, जिसका नाम व्यवस्थित वर्गीकरण (**Adjustable Classification**) रखा गया । इसमें समुचित अंकन का प्रयोग किया गया तथा अनुक्रमणी की व्यवस्था की गई । किन्तु यह पद्धति भी ज्ञान-जगत से व्युत्पन्न नवीन विषयों को उचित स्थान प्रदान करने में सफल नहीं हो सकी । साथ ही दशमलव पद्धति का प्रभाव इंग्लैण्ड में अधिक बढ़ता जा रहा था । अतः ब्राउन ने 1906 में तृतीय पद्धति का निर्माण किया, जिसे विषय वर्गीकरण (**Subject Classification**) कहा जाता है । इंग्लैण्ड के ग्रन्थपालों के दृष्टिकोण से इस पद्धति को दशमलव से अधिक समुन्नत माना गया है । इस पद्धति का द्वितीय संस्करण, जैसा-का-तैसा, 1914 में तथा संशोधित एवं विकसित तृतीय संस्करण (जे० डी० स्टीवर्ट द्वारा संपादित) 1939 में प्रकाशित हुआ । कुछ अधिकताओं एवं परिवर्तनों के होते हुए भी नवीन विषय पद्धति में प्राचीन पद्धति की आवश्यक विशेषताएँ विद्यमान हैं । कुछ संशोधनों के साथ इसको केवल 41 ब्रिटिश ग्रन्थालयों में अपनाया गया है, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि ये ग्रन्थालय भी धीरे-धीरे दशमलव पद्धति के प्रयोग पर विचार कर रहे हैं ।

विषय वर्गीकरण पद्धति की मूल धारणा यह थी कि एक विषय से सम्बन्धित समस्त पाठ्य-सामग्री को एक स्थिर एवं अशुद्ध स्थान पर एकत्रित किया जाय । किन्तु ऐसा करते समय ब्राउन महोदय ने अनेक कठिनाइयाँ प्रस्तुत कर दीं तथा यह प्रयोग सफल नहीं हो सका ।

मुख्य वर्गों की रूपरेखा (Outline of Main Classes) :

ब्राउन की धारणा थी कि ज्ञान-जगत का प्रत्येक विषय किसी न किसी मुख्य सिद्धान्त से सम्बन्धित है । अतः उन्होंने चार मौलिक सिद्धान्तों के आधार पर समस्त मुख्य वर्गों को निम्न चार समूहों में व्यवस्थित किया :

पदार्थ एवं शक्ति	**Matter and Force**
भौतिकशास्त्र	Physical Sciences
जीवन	**Life**
जीवशास्त्र	Biological Sciences
नृतत्व एवं औषधिशास्त्र	Ethnological and Medical Sciences
आर्थिक जीवशास्त्र	Economic Biology

मस्तिष्क	Mind
दर्शन एवं धर्म	Philosophy and Religion
सामाजिक एवं राजनीतिशास्त्र	Social and political Science
आलेख	Record
भाषा एवं साहित्य	Language and Literature
साहित्यिक रूप	Literary Forms
इतिहास, भूगोल एवं जीवनी	History, Geography and Biography

इस प्रकार उपर्युक्त रूप-रेखा विकासवादी सिद्धान्त पर आधारित है, दूसरे शब्दों में, विषयों का विकास साधारण से जटिल की ओर हुआ है। ब्राउन ने मुख्य वर्गों की व्यवस्था निम्न प्रकार की है :

A	सामान्य	Generalia
B-C-D	भौतिकशास्त्र	Physical Sciences
E-F	जीवशास्त्र	Biological Sciences
G-H	नृतत्व एवं औषधिशास्त्र	Ethnological and Medical Sciences
I	आर्थिक जीवशास्त्र एवं गृह कलाएँ	Economic Biology and Domestic Arts
J-K	दर्शन एवं धर्म	Philosophy and Religion
L	सामाजिक एवं राजनीतिशास्त्र	Social and Political Science
M	भाषा एवं साहित्य,	Language and Literature
N	साहित्यिक रूप	Literary Forms
O-W	इतिहास एवं भूगोल	History and Geography
X	जीवनी	Biography

उपवर्ग : मुख्य वर्गों की उपर्युक्त रूप-रेखा पूर्ण नहीं है, अतः विषयों को स्पष्ट करने के लिए प्रत्येक मुख्य वर्ग को अंकों का प्रयोग कर उपवर्गों में विभाजित किया गया है :

L000	सामाजिकशास्त्र
L100	अर्थशास्त्र
L200	राजनीतिशास्त्र
L400	विधि
L600	अपराधशास्त्र
L800	वाणिज्य एवं व्यापार
L900	वित्त

उपर्युक्त विभाजन में वाणिज्य एवं वित्त को अर्थशास्त्र से पृथक् कर दिया गया है, जो न्यायसंगत नहीं है।

विभाग : प्रत्येक उपवर्ग में विशिष्ट विषय करने के लिए उसे विभागों में विभाजित किया गया है।

L200	राजनीतिशास्त्र
201	शासन, सामान्य
202	राज्य (संविधान)
203	नगर राज्य
204	सामंत प्रथा
205	सामंत
206	राज्यतन्त्र

सामान्य वर्ग : विषय पद्धति में इस वर्ग का निर्माण कुछ विचित्र है तथा अन्य पद्धतियों से पूर्णतया भिन्न है। इस वर्ग को ब्राउन ने व्यापक विषय वर्ग कहा है। अतः सामान्य विषयों के अतिरिक्त इस वर्ग में शिक्षा, तर्कशास्त्र, गणित एवं सामान्य विज्ञान को भी सम्मिलित किया गया है। उनका कथन है कि ये विषय "विज्ञान, उद्योग अथवा मानव अध्ययन की समस्त शाखाओं में व्याप्त हैं अथवा उन्हें सामर्थ्यवान बनाते हैं।" इस वर्ग की व्यवस्था निम्न प्रकार है :

A	सामान्य
000	विश्वकोश, शब्दकोश
100	शिक्षा
300	तर्कशास्त्र
400	गणित
600	चित्रकला
900	सामान्य विज्ञान

इस प्रकार यहाँ तर्कशास्त्र को दर्शन से तथा गणित को सामान्य विज्ञान से पृथक् कर दिया गया है। विषयों की इस व्यवस्था को न्यायसंगत नहीं माना जा सकता।

भाषा एवं साहित्य वर्ग : इस वर्ग में भाषा एवं साहित्य को व्यवस्थित किया गया है। इसके अतिरिक्त इसमें पत्रकारिता, अनुक्रमणी, ग्रन्थ-सूची आदि विषयों को भी सम्मिलित किया गया है। मुख्य वर्ग M में भाषा के अनुसार विभाजन किया गया है, किन्तु ब्लिस महोदय की भाँति असाहित्यिक भाषा को साहित्य के बाद रखा गया है :

M 500
520 आंग्ल भाषा
521 आंग्ल साहित्य

मुख्य वर्ग N में साहित्यिक रूपों को रखा गया है :

N 000 कथा
100 काव्य

200 नाटक
300 निबन्ध

उपर्युक्त रूपों के अन्तर्गत ब्राउन द्वारा लेखकों को वर्णक्रमानुसार व्यवस्थित किया गया है तथा दशमलव पद्धति की भाँति भाषानुसार एवं कालक्रमानुसार व्यवस्था का प्रयोग नहीं किया गया है। इस प्रकार विभिन्न ग्रन्थों के लेखकों को व्यवस्थित करते समय उनसे सम्बन्धित काल अथवा ग्रन्थ रचना से सम्बन्धित भाषा पर ध्यान नहीं दिया गया है।

जीवनी वर्ग : इस पद्धति में जीवनी को पृथक् वर्ग X में रखा गया है तथा दशमलव की भाँति इसे इतिहास का एक सहायक नहीं माना गया है। इसके अन्तर्गत ब्राउन ने समस्त व्यक्तियों की जीवनी को वर्णक्रमानुगत एकत्रित किया है। ड्यूई की भाँति ब्राउन ने मूलवर्गीय सारिणी का प्रयोग कर विषय के साथ जीवनी को विभाजित करने का सुझाव दिया है :

F 000.41 प्रसिद्ध प्राणिशास्त्रियों की जीवनी को ब्राउन ने संग्रहीत व्यक्तिगत जीवनी से पृथक् रखा है। इस प्रकार का पृथक्करण सहायक नहीं है। ड्यूई की भांति ब्राउन ने भी वंश परम्परा एवं वंशावली चिह्नों आदि विषयों को इस वर्ग में रखा है :

X001/003	संग्रहीत जीवनी
X004/074	वर्ग जीवनी
X075/195	वंशावली एवं वंशावली चिह्न
X200/220	स्मरण लेख, राज्य-मुद्रा, आदि
X300/945	व्यक्तिगत जीवनी

अनुसूचियाँ (Schedules) :

मूलवर्गीय सारिणी (Categorical Tables) : विषय पद्धति की मुख्य सारिणी में रूप विभाग अथवा सामान्य उपविभागों की व्यवस्था नहीं की गई है। इसके स्थान पर मूलवर्गीय सारिणी का निर्माण किया गया है, जिसके अन्तर्गत उन मूल पदों को रखा गया है, जिसका प्रयोग विषयों के भिन्न-भिन्न रूप, पक्ष तथा गुण को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। प्रत्येक पद को एक अंक (0 से 975) दिया जाता है तथा इसके पहले एक बिन्दु (.) रखा जाता है। यह बिन्दु केवल पृथक्करण की क्रिया है तथा इसका दशमलव बिन्दु से कोई सम्बन्ध नहीं है। सारिणी की व्यवस्था इस प्रकार की गई है कि अत्यन्त प्रचलित पदों को प्रथम स्थान प्राप्त हो सके तथा अंकों की संख्या कम हो।

उदाहरण : B 000	भौतिकशास्त्र
.2	शब्दकोष
.3	सारांश
.5	दर्शन
.6	सभा-समितियाँ
.7	पत्रिकाएँ

.8	विस्तीर्ण लेख
.10	इतिहास
.65	शिक्षा
.964	निबन्ध

सारिणी के अंत में सुगम संदर्भ के लिए अनुवर्णिक अनुक्रमणी दी गई है।

मुख्य वर्ग O-W में भी भौगोलिक विभाजन कर, प्रत्येक देश के लिए अक्षरों एवं अंकों के मिश्रित अंकन द्वारा स्थान निश्चित कर दिया गया है :

उदाहरण	**P**	सागरीय प्रदेश तथा एशिया
	PO	ऑस्ट्रेलिया
	P2	मलेशिया
	P29	एशिया
	P3	जापान
	P4	चीन
	P6	भारत
	P88	अफगानिस्तान

इन देशों के साथ भी मूलवर्गीय सारिणी में दिए गए पदों का प्रयोग किया जा सकता है :

P3. 10	जापान का इतिहास
P6. 10	भारत का इतिहास

जीवनी अंक (**Biographical Numbers**) : ब्राउन द्वारा जीवनी अंकों के लिए एक विस्तृत पद्धति निर्मित की गई है। इन अंकों का प्रयोग व्यक्तिगत जीवन, कथा साहित्य, काव्य एवं लेखकों के नाम को अनुवर्णिक क्रम में व्यवस्थित करने के लिए अन्य वर्गों में किया जाता है। आवश्यकता पड़ने पर इनका प्रयोग ग्रन्थों को पृथक् करने के लिए ग्रन्थ अंक के रूप में तथा विषयों के उप विभाजन के लिए किया जा सकता है। इन अंकों का प्रारम्भ दशमलव के रूप में **300** से होता है :

Aa	300	**Ba**	326
Ab	301	**Da**	378
Aba	3010	**Ed**	407
Abb	3011	**Za**	939
Abc	3012	**Zan**	9393
Abd	3013	**Zw**	945

इस प्रकार अबट (Abbot) की जीवनी का वर्गांक **X3011** होगा।

विस्तृत तिथि सारिणी (**Extended Date Table**) : ग्रन्थों को कालानुसार व्यवस्थित करने के लिए (**1450 से 2145 ई० तक**) इस सारिणी का उल्लेख किया गया है :

1450	aa	1900	ri	1918	sa

1451	ab	1902	rk	1919	sb
1452	ac	1903	rl	1920	sc

अंकन (Notation) :

रोमन अक्षर A से X तक (Y एवं Z को छोड़ दिया गया है)
अरबी अंक 000—999
बिन्दु (.)

अंकों का प्रयोग गणित की रीति से किया गया है तथा बिन्दु को केवल मूल-वर्गीय अंक का निर्देशक रखा गया है। मुख्य वर्गों को 24 अक्षरों में व्यवस्थित कर प्रत्येक विषय को अंक प्रदान किए गए हैं। पद्धति में 24 अक्षरों का प्रयोग करते हुए भी समस्त मुख्य वर्गों को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित नहीं किया जा सका है। यद्यपि अंकन सरल है तथापि अधिकांश वर्गांकों में अंकों का तथा मिश्रित अक्षरों का प्रयोग किया गया है।

अनुक्रमणी (Index) :

इस पद्धति में विशिष्ट अनुक्रमणी अथवा एक-स्थान अनुक्रमणी की व्यवस्था की गई है। दशमलव पद्धति की भाँति, अनुक्रमणी सापेक्षिक नहीं है। ब्राउन पद्धति में एक विषय तथा उसके अंगों से सम्बन्धित विषय अनुवर्णिक क्रम से रखे गए हैं। ब्राउन के कथनानुसार "विशिष्ट अनुक्रमणी अधिक सरल एवं उपयोगी है। सापेक्षिक अनुक्रमणी अनुवर्ण प्रसूची के प्रयोग का साधन है, वर्गीकरण के प्रयोग का नहीं।"

समीक्षा (Criticism) :

एक ग्रंथ, एक विषय, एक स्थान तथा एक अंकन संख्या की पद्धति के अन्तर्गत विषयों का वर्गीकरण करने के अपने उद्देश्य में ब्राउन सफल नहीं हो सके। आज के युग में यह कहना कठिन है कि पूर्णतया एक-स्थान पद्धति को अपनाया जा सकता है। एक पुस्तक में एक विषय का निर्धारण यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

विषय पद्धति व्यक्तिगत है तथा इसमें एक व्यक्ति के व्यक्तिगत मतों को ही दृढ़तापूर्वक अभिव्यक्त किया गया है। इसमें विकासशील आधुनिक ज्ञान के संगठन की व्यवस्था नहीं की गई है। यद्यपि इस पद्धति में मुख्य वर्गों की व्यवस्था दशमलव पद्धति से उपयोगी है एवं वर्गीकरण अधिक सरल है तथापि एक-स्थान सिद्धान्त स्थापित मत के विरुद्ध है एवं प्रतिष्ठित परम्पराओं का उल्लंघन मात्र है। विषयों को निश्चित स्थान प्रदान कर इस पद्धति में विस्तारशीलता की अपेक्षा संकीर्णता उत्पन्न हो गई है। इन्हीं समस्त कारणों से विषय पद्धति का प्रसार, इसके जन्म-स्थान ब्रिटेन में नहीं हो सका। वर्गीकरण को आधुनिकतम रखने में असफल होने के कारण अधिकांश ग्रन्थालय विषय पद्धति के स्थान पर दशमलव पद्धति को अपनाने पर विचार कर रहे हैं।

सप्तम अध्याय (2)

प्रमुख वर्गीकरण पद्धतियाँ

(Principal Classification Schemes)

1 द्विबिन्दु वर्गीकरण
(Colon Classification)

ऐसा प्रतीत होता है कि प्रत्येक देश में एक विशिष्ट ग्रन्थालय जन्म लेता है, जो अपने व्यवसाय के लिए आदर्श होता है। एडवर्ड एडवर्ड्स तथा जेम्स डॅफ ब्राउन इंग्लैण्ड में, मेलविल ड्यूई अमेरिका में, ग्रेसल जर्मनी में कुछ ऐसे आदर्श ग्रन्थपाल हुए हैं, जिनका नाम निःसंकोच सम्माननीय ग्रन्थपालों की श्रेणी में रखा जा सकता है। भारत में इस प्रकार का सम्माननीय स्थान शियाली रामामृत रंगनाथन को प्राप्त है। रंगनाथन निःसंदेह पहले ग्रन्थपाल हैं, जिन्होंने वैज्ञानिक ढंग से वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति का निर्माण किया। अनुसूचियों के विभिन्न भागों से अंक निर्मित करने का सिद्धान्त, दशमलव तथा सार्वभौम दशमलव वर्गीकरण पद्धतियों में उपलब्ध था। इस प्रकार का निर्माण पूर्ण विषयों के लिए निश्चित वर्ग-चिह्नों द्वारा किया जाता है; किन्तु द्विबिन्दु पद्धति में विषयों के मूलतत्वों में विघटित कर बाद में उनको एकरूप ढंग से संश्लेषित किया जाता है। डॉ० रंगनाथन के कथनानुसार "दशमलव पद्धति एवं लायब्रेरी ऑफ कांग्रेस पद्धति से द्विबिन्दु पद्धति अनेक मूलभूत पहलुओं में भिन्न है। इन पद्धतियों का प्रत्यक्ष उद्देश्य अधिकांश विषयों के लिए पूर्व निर्मित वर्गांकों की व्यवस्था करना था। इसी कारण इन पद्धतियों की अनुसूचियाँ द्विबिन्दु पद्धति की अनुसूचियों से अधिक विस्तृत हैं।

द्विबिन्दु पद्धति में विषयों को पूर्व निर्मित वर्गांक प्रदान नहीं किए गए हैं। द्विबिन्दु वर्गीकरण में निश्चित प्रामाणिक एकिक अनुसूचियों को सम्मिलित किया गया है। ये प्रामाणिक एकिक अनुसूचियाँ मेकेनो यंत्र में प्रामाणिक टुकड़ों के समान हैं। एक बालक को भी यह ज्ञात है कि इन प्रामाणिक टुकड़ों को विभिन्न रीतियों से सम्मिलित कर अनेक विभिन्न लक्षित वस्तुओं का निर्माण किया जा सकता है। इसी प्रकार विभिन्न एकिक अनुसूचियों में निश्चित क्रमसंचय एवं संसर्ग द्वारा वर्गों को सम्मिलित कर, समस्त सम्भव विषयों के वर्गांकों का निर्माण किया जा सकता है। इस

पद्धति में, द्विबिन्दु (:) एवं अन्य विराम चिह्नों का कार्य मेकेनो सेट के नट एवं वोल्टों के समान है।

इस वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक विधि का उद्देश्य, विषय एवं वर्ग-चिह्न की समव्याप्तता, ग्रन्थालय में प्रत्येक ग्रन्थ के लिए व्यक्तित्व, निश्चित क्रम में परिवर्तन किए बिना नवीन विषयों के लिए असीमित ग्राह्यता तथा वर्गकार के लिए सर्वोच्च स्वायत्तता प्राप्त करना है।

प्रारम्भिक जीवन (Early History) :

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के निर्माता शियाली रामामृत रंगनाथन (Shiyali **Ramamrita Ranganathan**) का जन्म मद्रास राज्य के तंजौर जिले के शियाली नामक ग्राम में 9 अगस्त 1892 को हुआ था। शियाली के हिन्दू हाई स्कूल में 1908 तक आपकी माध्यमिक शिक्षा पूर्ण हुई। उच्च शिक्षा के लिए आप 1909 में क्रिश्चियन कॉलेज, मद्रास में दाखिल हुए तथा 1913 में यहीं से प्रथम उपाधि प्राप्त की। स्नातक उपाधि में आप प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए.) आपने गणित विषय लेकर 1916 में उच्च श्रेणी में प्राप्त की। गणित, संस्कृत एवं अंग्रेजी तीनों विषयों में आपका अधिकार वस्तुतः अतुलनीय है। तदुपरान्त 1917 में आपने अध्यापन शास्त्र की एल. टी. परीक्षा भी पास की।

पच्चीस वर्ष की आयु में शिक्षण समाप्त कर 1917 से 1920 तक गवर्नमेण्ट कॉलेज, मद्रास में गणित के व्याख्याता तथा 1920 से 1923 तक प्रेसीडेन्सी कॉलेज में सहायक प्राध्यापक के रूप में अध्यापन कार्य किया। कुशल एवं आदर्श प्राध्यापक के रूप में आपकी ख्याति इतनी फैली कि महाविद्यालय में गणित विषय लेने वाले छात्रों की संख्या बढ़ने लगी। लगभग छः वर्ष के अध्यापन के पश्चात्, बिना पूर्व ग्रन्थालय अनुभव के, जनवरी 1924 में आपको मद्रास विश्वविद्यालय के ग्रन्थालय का प्रथम ग्रन्थपाल नियुक्त किया गया। इसी निमित्त आपको ब्रिटिश म्यूजियम की ग्रन्थालय कार्य-पद्धति का ज्ञान प्राप्त करने के लिए लंदन जाने का सुयोग प्राप्त हुआ। वहीं म्यूजियम के डायरेक्टर ने आपको यह सुझाव दिया कि 'लंदन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ लायब्रेरियनशिप' (University of London School of Librarianship) में ग्रन्थालय-विज्ञान की शिक्षा ग्रहण करना अनेक दृष्टिकोणों से लाभप्रद रहेगा। आपने तुरन्त उक्त संस्था में प्रवेश ले लिया। किन्तु वहाँ आपने देखा कि लैटिन, अंग्रेजी तथा योरोपीय एवं एशियाई साहित्य पर अधिक बल दिया जाता है तथा वर्गीकरण, प्रसूचीकरण एवं ग्रन्थालय व्यवस्था को कम महत्व दिया जाता है। विविध प्रकार के साहित्य की आवश्यकता नहीं होने के कारण रंगनाथन ने अपने प्राध्यापक डब्ल्यू सी बर्विक सेयर्स से विचार-विमर्श किया। उनके परामर्श के अनुसार आपने इस संस्था में केवल ग्रन्थालय विज्ञान के विषयों का अध्ययन करने तथा शेष समय में लन्दन के विविध ग्रन्थालय की कार्य प्रणाली का सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त करने का निश्चय किया। अपने लंदन प्रवास के विषय में डॉ॰ रंगनाथन ने लिखा है कि "उन्होंने पहले स्कूल ऑफ लायब्रेरियनशिप में ग्रन्थालय विज्ञान पर संग्रहीत श्रेष्ठ साहित्य का अध्ययन किया। इसके पश्चात् क्रायडन सार्वजनिक ग्रन्थालय (Crydon Public Library) में क्रियात्मक

अभ्यास किया, इसके बाद ग्रेट-ब्रिटेन का विस्तृत भ्रमण किया तथा समस्त प्रकार के ग्रन्थालयों का निरीक्षण कर इनमें प्रयुक्त विधियों का तुलनात्मक अध्ययन किया ।''

सेयर्स महोदय ने लिखा है कि ''मेरे सम्पर्क में आये विद्यार्थियों में से रंगनाथन ने स्वयं को अत्यधिक जागरूक, विवेचनात्मक एवं अन्वेषणीय विद्यार्थी सिद्ध किया । वे आवश्यक तथ्य को ही यथार्थतः जानना चाहते थे एवं इसी के लिए उन्होंने इंग्लैण्ड का भ्रमण किया ।''.........अपने देश की जनता के लिए ग्रन्थालयों के विस्तार एवं सुधार के लिए एक विशेष ध्येय को लेकर रंगनाथन 1925 में मद्रास वापस लौटकर आये । अपने एक वर्ष के अध्ययन में आपने दशमलव वर्गीकरण, विषय वर्गीकरण, विस्तारशील वर्गीकरण तथा लायब्रेरी ऑफ कॉंग्रेस वर्गीकरण पद्धतियों का सूक्ष्मता से अध्ययन किया । उक्त पद्धतियों में आपको अनेक मूलभूत दोष दिखाई दिए तथा आपने यह अनुभव किया कि प्रचलित पद्धतियों में से एक भी वर्तमान में ज्ञान-जगत् की विस्तृत शाखोपशाखाओं का वर्गीकरण करने में पूर्णतया समर्थ नहीं हैं । भारत में उपलब्ध विशिष्ट ज्ञान भण्डार के लिए तो ये पद्धतियाँ सर्वथा अनुपयुक्त दिखाई दीं । अन्त में आप इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि भारत के गूढ़ दार्शनिक ग्रन्थों का वर्गीकरण करने के लिए अत्यन्त विस्तारशील एवं स्वतन्त्र नवीन वर्गीकरण पद्धति का निर्माण आवश्यक है ।

इंग्लैण्ड के विभिन्न ग्रन्थालयों का भ्रमण करते समय रंगनाथन ने पाया कि दशमलव पद्धति का ''व्यापक प्रयोग होते हुए भी लगभग प्रत्येक ग्रन्थालय में यह पद्धति अत्यन्त विकृत हो गई है ।'' उन्होंने यह अनुभव किया कि प्रत्येक ग्रन्थालय द्वारा दशमलव पद्धति में सुधार करने का कुछ मूलभूत कारण है । आपका कथन था कि उन मूलभूत सिद्धान्तों में परिवर्तन अनिवार्य है, जिन पर कि वर्गीकरण पद्धतियाँ आधारित हैं । सर्वप्रथम सिद्धान्त सांश्लेषिक अथवा मेकनो (**Synthetic or Meccano**) सिद्धान्त था.........किन्तु अंकन एक रुकावट सिद्ध हुआ । इसके बाद उन्हें यह विचार आया कि ''वर्गांक केवल क्रमिक अंक (**Ordinal Numbers**) है न कि मूल अंक (**Cardinal Numbers**) । नवीन क्रमिक अंकों का आविष्कार किया जा सकता है, यद्यपि उनका मूल महत्व नहीं होगा । इससे शीघ्र ही यह प्रमाणित हुआ कि शून्य एवं ऐक्य (**Zero and unity**)—जिसे एक वृहत् शून्य कहा जा सकता है—के मध्य स्थित क्रमिक अंकों का आविष्कार ही इस समस्या को सुलझाने के लिए पर्याप्त है । अत्यन्त सरल चिह्न बिन्दु (.) को दशमलव पद्धति में अन्य प्रयोग के लिए लिया गया है, द्विबिन्दु अथवा कोलन (:) को नवीन शून्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है ।''

द्विबिन्दु पद्धति की रूपरेखा : अपने लन्दन प्रवास में ही रंगनाथन ने नवीन पद्धति की रूपरेखा तैयार कर कुछ विषयों की अनुसूचियाँ भी निर्मित कर लीं । इस विषय में आपने पहले ड्यूई महोदय की सलाह ली । उन्होंने दशमलव पद्धति से भारतीय ग्रन्थों का वर्गीकरण करने की तथा उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन न करने की सलाह दी । रंगनाथन को यह सुझाव मान्य नहीं हुआ । आपने सेयर्स महोदय से

भी इस सम्बन्ध में परामर्श लिया। उन्होंने स्वतन्त्र वर्गीकरण पद्धति निर्माण के अनेक संभावित कठिनाइयाँ उनके सामने व्यक्त कीं। आपने सेयर्स महोदय का बहुमूल्य परामर्श स्वीकार किया। इंग्लैण्ड से वापस लौटते समय जहाज में ही डॉ० रंगनाथन ने द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति की रूपरेखा तैयार कर ली। 1925 ई० में वे मद्रास वापस पहुँचे तथा मद्रास विश्वविद्यालय के ग्रन्थालय का कार्यभार सँभालते ही ग्रन्थालय में संग्रहीत लगभग 30,000 ग्रन्थों का वर्गीकरण प्रारम्भ कर दिया। "एक वर्ष में द्विबिन्दु पद्धति ने अपनी योग्यता सिद्ध कर दी। इसे अधिक ठोस बनाया गया तथा प्रयोगात्मक नियम निर्मित किए गए। इन नियमों के आधार पर अधिकांश ग्रन्थों का वर्गीकरण कर फलकों पर व्यवस्थित किया गया। इसके पश्चात् मुक्त प्रवेश व्यवस्था प्रचलित की गई तथा कई महीनों तक इस व्यवस्था से सम्बन्धित पाठकों की प्रतिक्रिया का सूक्ष्मता से निरीक्षण किया गया। विपरीत प्रतिक्रियाओं के विषय में कार्यवाही कर विभिन्न सुधार किए गए। अन्य विधियाँ भी तरंग के रूप में मस्तिष्क में प्रवाहित होने लगीं।

डॉ० रंगनाथन ने लिखा है कि "1929 से 1931 के वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण वर्ष थे। इस कार्य में चमत्कार एवं कठिनाइयाँ थीं तथा अतिश्रम असह्य प्रतीत हो रहा था। इसके पश्चात्.........अचानक, सब कुछ स्वयं व्यवस्थित हो गया। एक द्विबिन्दु पद्धति के साथ अन्य सात पद्धतियाँ भी सामने आ गईं। एक बार यह विचार आने पर सब कुछ चेतन स्तर पर स्पष्ट हो गया।" इस पद्धति पर लगभग चार वर्ष तक निरन्तर कार्य चलता रहा। इसी बीच 1931 में डॉ० रंगनाथन का वास्तविक ग्रन्थ "ग्रन्थालय-विज्ञान के पाँच सूत्र" (**Five Laws of Library Science**) प्रकाशित हुआ। उनके द्वारा लिखे गए लगभग पचास ग्रन्थ एवं दो हजार लेख इन्हीं पाँच सर्वव्यापी सिद्धान्तों पर आधारित हैं। ये पाँच सूत्र निम्न हैं :

1	ग्रन्थ प्रयोगार्थ हैं	Books are for Use
2	ग्रन्थ प्रत्येक के लिए हैं	Books are for All
3	प्रत्येक ग्रन्थ का पाठक है	Every Book has its Readers
4	पाठक के समय की बचत की जाय	Save the Time of the Reader
5	ग्रन्थालय एक विकासशील अवयव है	Libray is a Growing Organism

मद्रास विश्वविद्यालय के ग्रन्थालय में पूर्णतया जाँच-पड़ताल करने के पश्चात् द्विबिन्दु पद्धति दो अत्यन्त सूक्ष्म खण्डों में 1933 में सर्वप्रथम प्रकाशित हुई :

प्रथम खण्ड	127	पृष्ठ भूमिका
द्वितीय खण्ड	135	पृष्ठ अनुसूचियाँ
	45	पृष्ठ अनुक्रमणी

इस पद्धति के द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ एवं संशोधित षष्ठ संस्करण क्रमशः 1939, 1950, 1952, 1957, 1960 एवं 1963 में प्रकाशित हो चुके हैं। इसका पूर्णतया संशोधित एवं विस्तृत सातवाँ संस्करण का प्रकाशन कार्य शीघ्र

ही प्रारम्भ होने वाला है। इससे यह स्पष्ट है कि विश्व में यह पद्धति तीव्र गति से प्रचलित हो रही है।

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति का छठा संस्करण चार भागों में विभक्त है :

प्रथम भाग में वर्गीकरण के लिए प्रत्येक विषय से सम्बन्धित नियम दिए गए हैं।

द्वितीय भाग में वर्गीकरण पद्धति में व्यवस्थित विषयों की मुख्य अनुसूचियाँ दी गई हैं। इसी भाग में मुख्य वर्ग, विभाजन के सामान्य वर्ग, भौगोलिक विभाजन, भाषानुसार विभाजन एवं कालक्रम विभाजन के अंकन अक्षर एवं संख्याएँ दी गई हैं।

तृतीय भाग में अंग्रेजी वर्णमाला के अनुवर्णिक क्रम में एक अनुक्रमणी की व्यवस्था की गई है।

चतुर्थ भाग में कुछ विषयों के साहित्य को कुछ उत्कृष्ट एवं सर्वमान्य कृतियों की क्रमिक संख्या के उदाहरण दिए गए हैं।

अपने प्रथम संस्करण में अंकन के अक्षरों एवं संख्याओं के द्विबिन्दु (:) चिह्न द्वारा जोड़ा जाता था। इसी कारण इसे द्विबिन्दु पद्धति कहा जाता है। पाँचवें संस्करण में योजक चिह्नों में द्विबिन्दु के अतिरिक्त अन्य विराम चिह्नों का भी प्रयोग किया गया।

ग्रन्थालय-क्षेत्र में कार्य : ग्रन्थालय वर्गीकरण की प्रथम भारतीय पद्धति के रचयिता डॉ० रंगनाथन ने ग्रन्थालय विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। 1928 में आपने "मद्रास ग्रन्थालय संघ" की स्थापना की। इसी वर्ष सैकड़ों शिक्षकों के समक्ष ग्रन्थालय विज्ञान पर अनेक व्याख्यान दिए। इसी के फलस्वरूप 1929 में ग्रन्थालय विज्ञान का ग्रीष्मकालीन सत्र आरम्भ किया। इसी का रूपान्तर बाद में मद्रास विश्वविद्यालय के ग्रन्थालय विज्ञान विभाग के रूप में हुआ। 1937 तक यह सत्र केवल तीन माह का ही था। उसके बाद 1944 तक आपने मद्रास विश्वविद्यालय में एक वर्ष का डिप्लोमा कोर्स भी चलाया। जिसमें केवल स्नातक उपाधि प्राप्त छात्र ही प्रवेश पा सकते थे।

1945 में डॉ० राधाकृष्णन् ने रंगनाथन महोदय को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के ग्रन्थालय के पुनर्गठन के लिए आमन्त्रित किया। इस विश्वविद्यालय में केवल दो वर्ष आपने ग्रन्थपाल एवं ग्रन्थालय-विज्ञान के प्राध्यापक के रूप में अविभान्त भाव से कार्य किया। 1947 में दिल्ली विश्वविद्यालय के तत्कालीन उपकुलपति सर मॉरिस ग्वायर ने आपको ग्रन्थालय-विज्ञान के प्राध्यापक पद के लिए आमन्त्रित किया। इस विश्वविद्यालय में आपने ग्रन्थालय-विज्ञान का एक वर्ष का डिप्लोमा पाठ्यक्रम तथा दो वर्ष का स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम आरम्भ किया। अपने दिल्ली प्रवास में ही 1933 में स्थापित भारतीय ग्रन्थालय संघ के आप **1947** से **1953** तक अध्यक्ष थे। इस संघ का मुख्यपत्र भी आपके सम्पादन में ही प्रारम्भ हुआ था। ग्रन्थालय विज्ञान के क्षेत्र में आपके द्वारा की गई सेवाओं के उपलक्ष में तथा भारतीय

ग्रन्थालय आन्दोलन का महान् कार्य देखकर 1948 में दिल्ली विश्वविद्यालय ने आपको "डॉक्टर आफ लेटर्स" की उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया। 1957 में भारत शासन ने आपको "पद्मश्री" की उपाधि से विभूषित किया। आपकी आयु के सत्तर वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में आपके शिष्यों एवं हितैषियों ने दो खण्डों में एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित किया था।

1957 से 1960 तक आप विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ग्रन्थालय समिति के अध्यक्ष रहे। 1957 में विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन द्वारा स्थापित ग्रन्थालय-विज्ञान विभाग में अध्यापन के लिए दो वर्ष तक प्राध्यापक के रूप में आते रहे। आपने 1962 में इंडियन स्टेटिस्टीकल इंस्टीट्यूट, कलकत्ता के तत्वावधान में बैंगलौर में डी० आर० टी० सी०--"प्रलेखन अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण केन्द्र" Documentation Research and Training Centre) की स्थापना की।

विश्व के ग्रन्थालय-विज्ञान क्षेत्र में भारत को प्रमुख स्थान प्रदान कराने वाले तथा "भारत में ग्रन्थालय-विज्ञान के जनक" डॉ० रंगनाथन को भारत-शासन ने अत्यधिक महत्त्वपूर्ण सम्मान प्रदान किया। आपको 1965 में ग्रन्थालय-विज्ञान का राष्ट्रीय अनुसन्धान प्राध्यापक" (National Research Professor of Library Science) नियुक्त किया गया। विश्व के देशों में भारत प्रथम देश है, जहाँ इस प्रकार की नियुक्ति की गई है। यहाँ यह उल्लेख करना उचित होगा कि डॉ० रंगनाथन ने इस पद की व्यवस्था अपने ग्रन्थ "लायब्रेरी डवलपमेण्ट प्लान" में बीस वर्ष पूर्व ही कर दी थी।

सारे देश में सार्वजनिक ग्रन्थालयों के संगठन एवं संचालन में एकरूपता लाने के लिए तथा इनको जनता के लिए अधिक उपयोगी बनाने के लिए डॉ० रंगनाथन ने प्रत्येक राज्य के लिए सार्वजनिक ग्रन्थालय विधेयक की रूपरेखा तैयार की। इसी के आधार पर अब तक चार राज्यों में सार्वजनिक ग्रन्थालय अधिनियम पारित हो चुके हैं :

मद्रास	1948	आंध्र	1960
मैसूर	1965	महाराष्ट्र	1967

विदेशों में सम्मान : डॉ० रंगनाथन द्वारा निर्मित द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के कारण आपको अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई है। विशेष निमन्त्रण प्राप्त होने पर 1948 से आप प्रतिवर्ष ही पाश्चात्य देशों में जाते रहे हैं। विश्व के अनेक देशों—विशेषतया अमेरिका, इंग्लैण्ड, जापान—में आपने सैकड़ों व्याख्यान दिए हैं, ग्रन्थालय-विज्ञान से सम्बन्धित अनेक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया है तथा विश्व के प्रमुख ग्रन्थालयों एवं शिक्षा-शास्त्रियों के साथ विचार-विनिमय एवं वाद-विवाद किया है। "ब्रिटिश लायब्रेरी एसोसिएशन" के आप आजीवन उपाध्यक्ष थे। अमेरिका के पिटर्सबर्ग विश्वविद्यालय ने आपको "डॉक्टरेट" की उपाधि से विभूषित किया। इसी वर्ष अमेरिकन लायब्रेरी एसोसिएशन द्वारा आपको "मारग्रेट मन अवार्ड" प्रदान किया गया। यह प्रथम अवसर है, जब कि अमेरिका से बाहर किसी व्यक्ति को यह सम्मान दिया गया।

डॉ० रंगनाथन ने अपने द्वारा स्वयं अर्जित धन में से एक लाख रुपया 1965 में ग्रन्थालय-विज्ञान में "शारदा-रंगनाथन पीठिका" की स्थापना करने के लिए मद्रास विश्वविद्यालय को दान में दिया। इससे ग्रन्थालय-विज्ञान के प्रति आपके अनुराग एवं अगाध प्रेम का अनुमान लगाया जा सकता है। अपने बंगलौर प्रवास में आप ग्रन्थालय-विज्ञान पर लिखित अपनी पुस्तकों को संशोधित करने तथा द्विबिन्दु वर्गीकरण को अधिक वैज्ञानिक बनाने में व्यस्त थे। अस्सी वर्ष की आयु में भी आप बारह-तेरह घण्टे प्रतिदिन कार्य करते थे तथा ग्रन्थालय-विज्ञान विषय को अधिक सक्षम, सुस्पष्ट एवं उपयुक्त बनाने में लगे हुए थे।

ग्रन्थालय-जगत् के इस महान् तपस्वी ने मृत्यु-पर्यन्त ग्रन्थालय-विज्ञान विषय की सेवा कर इस व्यवसाय को अधिक गौरवपूर्ण एवं उत्कृष्ट बना कर भारत को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है।

मुख्य वर्गों की रूप-रेखा (Outline of the Main Classes) :

द्विबिन्दु पद्धति के मुख्य वर्गों का वर्णन करने से पूर्व यह स्पष्ट करना उचित है कि डॉ० रंगनाथन ज्ञान-जगत् के लिए एक वर्गीकरण पद्धति निर्मित करना चाहते हैं; इस ज्ञान-जगत् के अन्तर्गत भूतकालीन, वर्तमान एवं भविष्य का समस्त ज्ञान अर्थात् ज्ञात एवं अज्ञात ज्ञान सम्मिलित किया जाता है। यह एक अनन्त जगत् है। इस प्रकार की वर्गीकरण पद्धति में निम्नांकित व्यवस्थाएँ होनी चाहिए :

1 अनिश्चित विस्तृत वर्गों की संख्या, जो अनन्त है,

2 यथासमय आवश्यकता पड़ने पर नवीन वर्गों का किसी भी संख्या में निर्माण;

3 पद्धति में संसर्ग अनुक्रम एवं सहायक अनुक्रम के सिद्धान्तों का उल्लंघन किये बिना तथा वर्तमान वर्गांकों में किसी प्रकार का परिवर्तन किये बिना नवीन वर्गों को स्थान प्रदान करना।

इससे यह सिद्ध होता है कि ज्ञान का क्षेत्र अर्थात् वर्गीकरण में सम्बन्धित विशिष्ट विषयों की संख्या सम्भाव्यतया अनन्त है, एक पद्धति में किन्हीं दो विषयों के मध्य असीमित संख्या में नवीन विषयों को प्रविष्ट किए जाने की सम्भावना है। इसके अतिरिक्त ज्ञान विस्तारशील है, प्रत्येक धारणा के पारस्परिक सम्बन्ध अनेक दिशाओं में व्याप्त हैं तथा सामान्यतः प्रत्येक विषय अनेक बहुसम्बन्धित धारणाओं का संश्लेषण है।

डॉ० रंगनाथन ने ऐसी पद्धति का निर्माण किया, जिसमें प्रारम्भिक धारणाओं के संश्लेषण से मिश्रित विषयों को निर्मित किया जाता है। उन्होंने सत्वों (वास्तविक एवं काल्पनिक अस्तित्वों) के 'जगत्' से प्रारम्भ किया। प्रत्येक सत्व में अनेक गुण हैं तथा इनमें से कुछ का विशेषताओं के रूप में प्रयोग कर ज्ञान को समूहों अथवा वर्गों में विभाजित कर इन व्युत्पन्न वर्गों को पंक्ति में सहायक क्रम प्रदान किया जा सकता है। इस प्रकार व्यवस्थित प्रत्येक वर्ग स्वयं एक अतिरिक्त 'जगत' (**Universe**) है, जिसका अन्य विशेषता द्वारा विभाजन किया जा सकता है।

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में मुख्य वर्गों की संख्या अन्य समस्त पद्धतियों से अधिक है। डॉ० रंगनाथन ने सर्वप्रथम Annals of Library Science नामक त्रैमासिक पत्रिका (1955-56) के द्वितीय एवं तृतीय अंकों में मुख्य वर्गों का विस्तृत विवेचन किया है। आपने मुख्य वर्गों के चार क्षेत्र (Zones) बनाए हैं। चारों क्षेत्रों में समाविष्ट मुख्य वर्गों के संकेत चिह्न भी निश्चित किए हैं। 1963 में पुन: कुछ मुख्य वर्गों को इसमें समाविष्ट किया है। मुख्य वर्गों को निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट किया जाता है :

क्षेत्र Zone		मुख्य वर्ग Main Classes	अंकन Notation
प्रथम क्षेत्र First Zone	1	सामान्य उपगम मुख्य वर्ग Generalia Approach Main Classes	छोटे रोमन वर्ण Roman Small Alphabets
	2	सामान्य मुख्य वर्ग Generalia Main Classes	वही
द्वितीय क्षेत्र Second Zone		अर्वाचीन काल में मान्यता प्राप्त मुख्य वर्ग Recently recognised Main Classes	अरबी अंक Arabic Numerals
तृतीय क्षेत्र Third Zone		यथार्थ मुख्य वर्ग Proper Main Classes	दीर्घ रोमन वर्ण Roman Capital Alphabets
चतुर्थ क्षेत्र Fourth Zone		नवनिर्मित विधि विधाएँ एवं यंत्रशिल्प विधियाँ Newly emerging Methodologies and Techniques	वेष्टित अंकन Packeted Notation

उपर्युक्त चारों क्षेत्रों में समाविष्ट मुख्य वर्गों का विस्तृत विवेचन किया जा सकता है :

प्रथम क्षेत्र : सामान्य उपगम मुख्य वर्ग (Generalia Approach Main Classes)। इसमें निम्नांकित मुख्य वर्ग समाविष्ट हैं :

मुख्य वर्ग	Main Classes	अंकन Notation
सामान्य ग्रन्थसूची	Generalia Bibliography	a
सामान्य विश्वकोश	Generalia Encylopaedia	k
सामान्य सामयिक पत्रिका	Generalia Periodicals	m

सामान्य क्रमबद्ध प्रकाशन वार्षिकी	Generalia Serial Year Book, Directory	n
सामान्य जीवनी	Generalia Biography	w
सामान्य विविध लेख, संग्रह	Generalia Miscellaneous Collection	x

उपर्युक्त मुख्य वर्ग, वास्तव में सामान्य (**Generalia**) **z** मूलवर्ग का विस्तार है, अतः इनके अंकन के पहले **z** चिह्न अनुमानित है, जैसे **za, zk** आदि । इन मुख्य वर्गों से पूर्व z लिखने अथवा नहीं लिखने से उसके स्थान में कोई अन्तर नहीं पड़ता । अतः यह लिखा नहीं जाता अथवा उसे लिखने की आवश्यकता नहीं होती ।

सामान्य मुख्य वर्ग : आजकल इस श्रेणी के मुख्य वर्गों की अत्यन्त आवश्यकता होती है तथा इस पर अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हो रहे हैं । यथार्थ मुख्य वर्गों में इन ग्रन्थों को स्थान नहीं दिया जाता, इसलिए इनके लिए एक भिन्न वर्ग का निर्माण कर अंग्रेजी वर्णमाला का अन्तिम वर्ण 'z' अंकन निश्चित किया गया । इसका विस्तार तीन विधियों से किया जाता है :

1 भौगोलिक विधि द्वारा	(by Geographical Device)—	
भारतीय विद्या	Indology	z2
चीनी विद्या	Sinology	z41

इसमें 2 भारत के लिए तथा 41 चीन के लिए है ।

2 वर्णक्रम विधि द्वारा	(by Alphabetical Device)—	
गांधियाना	Gandhiana	zG
नेहरूयाना	Nehruana	zN
1 विषय विधि द्वारा	(by Subject Device)—	
जैनी विद्या	Jainology	z(Q3)
कैथोलिक विद्या	Catholicology	z(Q62)
इस्लामी विद्या	Islamology	z(Q7)

इसमें मुख्य वर्ग धर्म 'Q' से विभिन्न धर्मों का वर्गांक लेकर विषय विधि में प्रयुक्त किया है ।

द्वितीय क्षेत्र : अर्वाचीन काल में मान्यता प्राप्त मुख्य वर्ग (**Recently recognised Main Classes**) : अर्वाचीन काल में मान्यता प्राप्त मुख्य वर्ग इस क्षेत्र में समाविष्ट होते हैं । अरबी अंक 1 से 8 इसके अंकन निश्चित किए गए हैं :

मुख्य वर्ग	Main Classes	अंकन Notation
ज्ञान-जगत	Universe of knowledege	1
ग्रन्थालय विज्ञान	Library Science	2
ग्रन्थ विज्ञान	Book Science	3
पत्रकारिता	Journalism	4

मानकीकरण	Standardisation	5
विशेषीकरण	Specification	6
आदर्शीकरण	Modelisation	7

ज्ञान शाखोपशाखाओं पर विविध प्रकार के ग्रन्थ निर्मित करने के लिए इन विद्याओं की आवश्यकता होती है। अतः इनकी व्यवस्था यथार्थ मुख्य वर्ग से पूर्व की गई है।

तृतीय क्षेत्र : यथार्थ मुख्य वर्ग (Proper Main Classes)। इस क्षेत्र में निम्न मुख्य वर्गों को समाविष्ट किया गया है :

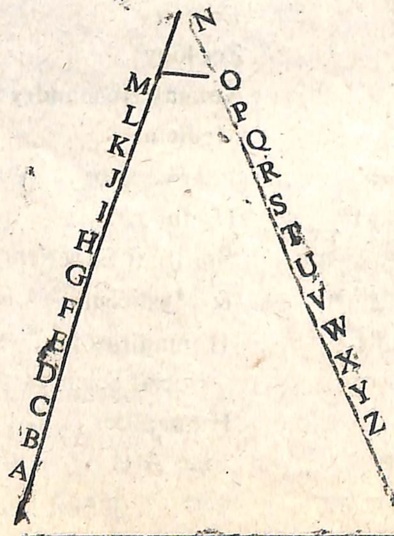
यथार्थ मुख्य वर्ग	Proper Main Class	अंकन Notation
विज्ञान	Science	A
गणित विज्ञान	Mathematical Sciences	AZ
गणित	Mathematics	B
भौतिकीय विज्ञान	Physical Sciences	BZ
भौतिकी	Physics	C
यांत्रिकी	Engineering	D
रसायन	Chemistry	E
रासायनिक शिल्प	Technology	F
जीव विज्ञान	Biology	G
भौमिकी	Geology	H
खनिज विज्ञान	Mining	HX
वनस्पति विज्ञान	Botany	I
कृषि	Agriculture	J
वन विज्ञान	Forestry	JX
प्राणिकी	Zoology	K
पशुपालन	Animal Husbandry	KX
चिकित्सा	Medicine	L
औषध विज्ञान	Pharmacology	LX
उपयोगी कलाएँ	Useful Arts	M
आध्यात्मिक अनुभूति तथा ब्रह्मविद्या	Spiritual Experience & Mysticism	Δ
मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र	Humanities and Social Sciences	M
मानविकी	Humanities	MZA
ललित कलाएँ	Fine Arts	N
साहित्य तथा भाषा	Literature and Language	NZ

साहित्य	Literature	O
भाषा विज्ञान	Linguistics	P
हस्त लेखन कला	Calligraphy	PU1
लघु लेखन	Short Hand	PU3
टंकण कला	Typewriting	PU6
धर्मशास्त्र तथा दर्शन	Religion and Philosophy	PZ
धर्मशास्त्र	Religion	Q
दर्शन	Philosophy	R
मनोविज्ञान	Psychology	S
सामाजिक शास्त्र	Social Sciences	SZ
शिक्षा	Education	T
भूगोल	Gcography	U
इतिहास	History	V
राजनीतिशास्त्र	Political Science	W
अर्थशास्त्र	Economics	X
व्यवस्थाशास्त्र	Management	XX
समाजशास्त्र	Sociology	Y
समाजकार्य	Social work	YX
विधि	Law	Z

डॉ० रंगनाथन ने प्रथमतः केवल ग्रीक भाषा के एक ही वर्ण का प्रयोग किया था। △ (Delta) आध्यात्मिक अनुभूति एवं ब्रह्म विद्या विषय का अंकन निश्चित किया गया। इसके पश्चात् उन्होंने सात अन्य ग्रीक वर्णों का समावेश यथार्थ मुख्य वर्ग की अनुसूची में किया। इन ग्रीक वर्णों के प्रयोग के विषय में भारत तथा योरोप में अत्यधिक आलोचना हुई। यह सिद्ध किया गया कि ग्रीक वर्ण लिखने में कठिन है अतः मुख्य वर्गों के अंकन में इनका प्रयोग उपयोगी नहीं है। इन्हीं सब कारणों से

विज्ञान
Sciences

मानविकी एवं
सामाजिकशास्त्र
Humanities
and Social
Scienecs



डॉ० रंगनाथन ने 1960 में प्रकाशित द्विबिन्दु पद्धति के छठे संस्करण में ग्रीक वर्णों को निकाल कर उनके स्थान पर दो-दो बड़े रोमन वर्णों का प्रयोग किया। इस समय यथार्थ मुख्य वर्गों की अनुसूची में पूर्ववत् एक ही ग्रीक वर्ण △ (Delta) रखा गया है।

उपर्युक्त वर्गों की व्यवस्था का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि डॉ० रंगनाथन ने मुख्यतः ज्ञान को 26 शाखाओं में विभाजित किया है। इनमें से प्रथम 13 विज्ञान तथा अन्तिम 13 मानविकी एवं सामाजिक शास्त्रों को प्रदान किए गए हैं। ग्रीक वर्ण △ इन दोनों विभाजनों के मध्य है :

इस प्रकार मुख्य वर्गों की व्यवस्था तार्किक ढंग से की गई है :

A--M	विज्ञान (उपयोगी कलाएँ सहित) Science (including Useful Arts) C--F भौतिकीय विज्ञान Physical Sciences C--L जीव-विज्ञान Biological Sciences
N--S	मानविकी (ललित कलाएँ, साहित्य एवं भाषा सहित) Humanities (including Fine Arts, Literature and Languages)
T--Z	सामाजिक शास्त्र (शिक्षा, धर्म, इतिहास, राजनीतिशास्त्र एवं विधि सहित) Social Sciences (including Education, Religion, History, Political Science and Law)

चतुर्थ क्षेत्र : इस क्षेत्र के अन्तर्गत विविध प्रकार की नवनिर्मित विधि विद्याएँ अथवा शिल्प विधियाँ समाविष्ट की गई हैं। आजकल इन विषयों पर भी अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हो रहे हैं। पूर्वचर्चित तीनों क्षेत्रों के कुछ मुख्य वर्गों से चतुर्थ क्षेत्र के मुख्य वर्गों का निर्माण किया गया है तथा इनके अंकन को कोष्ठित कर दिया जाता है। इस क्षेत्र के मुख्य वर्गों का स्थान यथार्थ मुख्य वर्गों के पश्चात् निश्चित किया गया है। सम्प्रति इसमें निम्न मुख्य वर्ग समाविष्ट हैं :

मूल्यांकन शिल्पविधि	Evaluation Technique	(: g)
ग्रन्थसूची विद्या	Bibliographilogy	(a)
सम्मेलन शिल्पविधि	Conference Technique	(P)
प्रशासन निवेदन शिल्पविधि	Administration Report Technique	(r)
जीवन-विद्या	Biographology	(w)
जन-सम्पर्क विधि विद्या	Methodology of Public Relations	(y)

उपर्युक्त चारों क्षेत्रों में समाविष्ट मुख्य वर्गों के विवरण से स्पष्ट है कि द्विबिन्दु पद्धति में व्यवस्थित मुख्य वर्गों की संख्या अत्यन्त व्यापक है। विश्व की प्रचलित किसी पद्धति में मुख्य वर्गों की संख्या इतनी व्यापक नहीं है।

पाँच मूलभूत श्रेणियाँ (Five Fundamental Categories) :

डॉ० रंगनाथन ने वर्गीकरण की मुख्य पद्धतियों का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि समस्त पद्धतियाँ कुछ सिद्धान्तों पर आधारित हैं उन्होंने यह भी पाया कि इन पद्धतियों में विभाजन के लिए प्रयुक्त समस्त सम्बन्धित विशेषताएँ पाँच मूल धारणाओं की व्यावहारिक अभिव्यक्ति मात्र है। इसी आधार पर उन्होंने ज्ञान की शाखोपशाखाओं की पाँच मूलभूत श्रेणियाँ निश्चित कर दी हैं। प्रत्येक श्रेणी की अभिव्यक्ति एक पक्ष द्वारा की जाती है तथा विभिन्न विषयों के विस्तार का मूल आधार पाँच श्रेणियाँ अथवा पाँच पक्ष ही हैं। विषयों के विभाजन के लिए निर्धारित पक्ष का मूल सम्बन्ध किसी न किसी मूल श्रेणी से अवश्य होता है। पाँच प्रकार के पक्ष तथा उनके योजक चिह्न निम्न हैं :

,[P] , [M] : [E] . [S] ' [T]

पक्ष Facet		योजक चिह्न	Connecting Symbol
व्यक्तित्व	Personality	,	Comma
पदार्थ	Matter	;	Semi colon
ऊर्जा/क्रिया	Energy/Problem	:	Colon
देश	Space	.	Dot
काल	Time	'	Single inverted comma

मूर्तता के ह्रास क्रम (Decreasing sequence of Concreteness) के अनुसार पाँचों पक्षों को भिन्न प्रकार रखा जा सकता है :

' [व्य] ; [प] : [ऊ] . [दे] ' [का]
' [P] ; [M] : [E] . [S] ' [T]

सबसे अधिक मूर्त अथवा महत्त्व का पक्ष व्यक्तित्व तथा सबसे कम मूर्त पक्ष काल है। किसी भी मुख्य वर्ग में पक्षों को ज्ञात करने के लिए अभ्यास की आवश्यकता है। सबसे कम कठिनाई शायद **काल** पक्ष में होगी, क्योंकि यह अपने आप से स्पष्ट है। **देश** पक्ष की अभिव्यक्ति प्रायः भौगोलिक क्षेत्र के रूप में हुआ करती है। किसी भी विषय में इस पक्ष के आने पर इसे पहचानने में कोई कठिनाई नहीं होती। **ऊर्जा** पक्ष में थोड़ी सावधानी की आवश्यकता है। वास्तव में जहाँ किसी न किसी प्रकार के कार्य का होना पाया जाता है, वहाँ **ऊर्जा** पक्ष होता है। **पदार्थ** पक्ष की अभिव्यक्ति किसी वस्तु अथवा इसी के समान किसी चीज के रूप में होती है। **व्यक्तित्व** पक्ष की धारणा अवश्य कुछ कठिन है। किसी विषय में से काल, देश, ऊर्जा तथा पदार्थ की अभिव्यक्तियों को पृथक् करने के पश्चात् जो शेष रह जाता है, वह प्रायः व्यक्तित्व ही होता है।

उपर्युक्त पाँचों पक्षों का स्पष्टीकरण एक उदाहरण द्वारा किया जा सकता है :

ग्रन्थालय विज्ञान　　　　मुख्य वर्ग
　　　　)
सार्वजनिक ग्रन्थालय　　　　) व्यक्तित्व पक्ष

विश्वविद्यालय ग्रन्थालय)	
राष्ट्रीय ग्रन्थालय)	Personality Facet
ग्रन्थ, पत्र-पत्रिकाएँ)	पदार्थ/वस्तु पक्ष
हस्तलिखित ग्रन्थ, फिल्में)	Matter/Material Facet
ग्रन्थ-चयन, ग्रन्थ प्राप्ति)	ऊर्जा पक्ष
वर्गीकरण, प्रसूचीकरण)	
ग्रन्थालय-संगठन आदि)	Energy Facet
उज्जैन, दिल्ली, बम्बई)	देश पक्ष
में स्थित ग्रन्थालय)	Space Facet
1958, 1962, 1969)	काल पक्ष
में ग्रन्थालय की स्थापना)	Time Facet

इस प्रकार किसी विषय अथवा मुख्य वर्ग से वर्गांक का निर्माण करते समय सम्बन्धित पक्ष पर विचार करना होता है ।

द्विबिन्दु पद्धति में प्रयुक्त पाँच पक्षों का विवेचन कर पृथक्-पृथक् स्पष्ट किया जा सकता है ।

1 **व्यक्तित्व पक्ष** (Personality Facet) : किसी मुख्य वर्ग के व्यक्तित्व पक्ष के विभाग उसके मूल लक्ष्य अथवा केन्द्र बिन्दुओं (**Barics Foci**) से बनाये जाते हैं । विषयों के 'व्यक्तित्व' पक्ष का प्रयोग मनुष्य के व्यक्तित्व के समान महत्वपूर्ण है। जिस प्रकार मनुष्य में जो विविध गुण स्थित होते हैं, उनसे उसका व्यक्तित्व स्पष्ट होता है; उसी प्रकार विषयों का व्यक्तित्व भी उनमें स्थित गुण से स्पष्ट होता है । वास्तव में श्रेणियों के लिए उपयुक्त प्रत्येक मुख्य वर्ग में व्यक्तित्व पक्ष अवश्य होता है । प्रत्येक मुख्य वर्ग में सर्वप्रथम इसी पक्ष का विकास होता है तथा इसके पश्चात् ही मुख्य वर्ग के अन्य पक्ष अध्ययन एवं अनुसंधान आदि के लिए महत्त्वपूर्ण समझे जाते हैं ।

कुछ मुख्य वर्ग तथा उनके व्यक्तित्व पक्ष में प्रयुक्त व्यक्तित्व गुण निम्न हैं :

मुख्य वर्ग Main Class		संकेत चिह्न Symbol	व्यक्तित्व गुण Personality Characteristic	
रसायन	Chemistry	D	द्रव	Substance
जीवशास्त्र	Biology	G	इन्द्रिय	Organ
वनस्पति	Botany	I	वनस्पति वंश	Families of Plants
कृषि	Agriculture	J	उपज	Crops

चिकित्सा	Medicine	L	मानव-शरीर के अंग	Oragans of Human Body
ललित कला	Fine Arts	N	देश या पद्धति	Country or Style
साहित्य	Literature	O	भाषा	Language
शिक्षा	Education	T	विद्यार्जन करने वाला	Educand
इतिहास	History	V	जाति	Community
राजनीतिशास्त्र	Political Science	W	राज्य तथा शासन	States and Governments
अर्थशास्त्र	Economics	X	व्यवसाय	Business
समाजशास्त्र	Sociology	Y	समूह	Group
विधि	Law	Z	जाति/विषय	Community/ Subject

कुछ मुख्य वर्गों के व्यक्तित्व पक्ष में से अंक लेकर निम्न प्रकार से वर्गांक निर्मित किए जा सकते हैं :

उदाहरण : (1) मनोविज्ञान

अनियमित मनोविज्ञान 56

(2) शिक्षा

विश्वविद्यालयीन शिक्षा T4

(3) अर्थशास्त्र

सार्वजनिक अर्थकोष X7

(4) इतिहास

भारत का इतिहास V44

(5) समाजशास्त्र

सैनिक समाजशास्त्र Y54

(6) विधि

हिन्दू विधि Z (Q2)

2 **पदार्थ अथवा वस्तु पक्ष** (Matter of Material Facet) : किसी भी विषय के वर्गांक में इस पक्ष का प्रयोग वर्ग के पदार्थ अथवा वस्तु के लिए आवश्यक होता है। समस्त प्रकार के मौलिक तत्वों का संयुक्त रूप पदार्थ कहलाता है। पदार्थ पक्ष के कुछ मुख्य वर्गों के विषय में निहित है। द्विबिन्दु पद्धति में निम्न मुख्य वर्गों में आवश्यकतानुसार इस पक्ष का समावेश किया गया है। पदार्थ पक्ष का योजक चिह्न (;) है :

उदाहरण : (1) ग्रन्थालय विज्ञान

ग्रन्थालय 2

विश्वविद्यालय ग्रन्थालय 234

विश्वविद्यालय ग्रन्थालय में सन्दर्भ ग्रन्थ 234;47

(2) ललित कलाएँ

चित्रकला	NQ
लकड़ी पर चित्रकला	NQ;1
हाथी दाँत पर चित्रकला	NQ;8

(3) अर्थशास्त्र

मुद्रा	X61
स्वर्ण मुद्रा	X61;1
कागजी मुद्रा	X61;4

3 **ऊर्जा अथवा क्रिया पक्ष** (Energy or Problem Facet) : विभिन्न मुख्य वर्गों में ऊर्जा पक्ष कार्य (actions), समस्या (Problems), कार्य-दक्षता आदि धारणाओं को स्पष्ट करता है। इस पक्ष का योजक चिह्न (;) है।

उदाहरण : (1) ग्रन्थालय विज्ञान

ग्रन्थालय	2
राष्ट्रीय ग्रन्थालय	213
राष्ट्रीय ग्रन्थालय में सन्दर्भ सेवा	213:7

(2) शिक्षा

विश्वविद्यालयीन शिक्षा	T4
विश्वविद्यालयीन अध्यापन पद्धति	T4:3
विद्यार्थियों का जीवन	T:7

(3) अर्थशास्त्र

आयात-निर्यात कर-नीति	X:53
विदेशी बैंक	X 6295
विदेशी बैंकों का प्रबन्ध	X6295:8

4 **देश पक्ष** (Space Facet) : जिस स्थान पर विषय के स्पष्टीकरण में देश का निर्देश आवश्यक होता है, वहाँ देश पक्ष प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी किसी विशिष्ट विषय की अभिव्यक्ति एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र से होती है, तब उसको स्पष्ट करना अनिवार्य हो जाता है। द्विबिन्दु पद्धति में भौगोलिक विभाजनों की एक पृथक् अनुसूची दी गई है, जिसमें से देश पक्ष के लिए अंक लिए जाते हैं। इस पक्ष का योजक चिह्न (.) निश्चित किया गया है।

उदाहरण : (1) भूगोल

राजनीतिक भूगोल	U5
भारत का राजनीतिक भूगोल	U5.44

(2) अर्थशास्त्र

आयकर	X 724
भारत में आयकर	X 724.44

(3) राजनीति विज्ञान

साम्यवाद	W 591
रूसी साम्यवाद	W 691.58

(4) शिक्षाशास्त्र

पाठ्यक्रम	T:2
अमेरिका में पाठ्यक्रम	T:2.73

5 **काल पक्ष (Time Facet)** : कभी-कभी वर्गांक में विषय के स्पष्टीकरण के लिए काल पक्ष का प्रयोग भी किया जाता है। किसी विशिष्ट विषय की अभिव्यक्ति एक विशेष काल से सम्बन्धित होने पर उसको स्पष्ट करना अनिवार्य हो जाता है। द्विबिन्दु पद्धति में काल-विभाजनों की एक पृथक् अनुसूची दी गई है, जिसमें से काल पक्ष के लिए अंक लिए जाते हैं। इस पक्ष का योजक चिह्न (') निश्चित किया गया हैं। द्विबिन्दु पद्धति के पाँचवें संस्करण तक इस पक्ष का योजक चिह्न (.) ही था; किन्तु पुनर्मुद्रित छठे संस्करण के परिशिष्ट में इसमें परिवर्तन समाविष्ट किया है :

उदाहरण : (1) शिक्षा

विश्वविद्यालयीन शिक्षा	T4
1950 में विश्वविद्यालयीन शिक्षा	T4'N5

(2) अर्थशास्त्र

व्यापार	X : 5
अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार	X : 5. 1
बीसवीं सदी में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार	X : 5. 1 'N

पाँचों पक्षों का पृथक्-पृथक् स्पष्टीकरण करने के बाद अब एक वर्गांक में पाँचों पक्षों का पारस्परिक सम्बन्ध दर्शाया जा सकता है।

उदाहरण :

विषय—बीसवीं सदी में भारतीय राष्ट्रीय ग्रन्थालय में शोध ग्रन्थों का वर्गीकरण
Classification of Thesis in Indian National Library during 20th Century.

वर्गांक—213; 494; 51.44 'N

स्पष्टीकरण—

2	आधार वर्ग (Basic class)	ग्रन्थालय विज्ञान
13	[व्य] [P]	राष्ट्रीय ग्रन्थालय
		पदार्थ का योजक चिह्न
494	[प] [M]	राष्ट्रीय ग्रन्थालय में शोध ग्रन्थ
		ऊर्जा पक्ष का योजक चिह्न
51	[ऊ] [E]	राष्ट्रीय ग्रन्थालय में शोध ग्रन्थों का वर्गीकरण
		देश पक्ष का योजक चिह्न

44 [दे] [S]	भारतीय राष्ट्रीय ग्रन्थालय में शोध ग्रन्थों का वर्गीकरण
'	काल पक्ष का योजक चिह्न
N [का] [T]	बीसवीं सदी में भारतीय ग्रन्थालय में शोध ग्रन्थों का वर्गीकरण

यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित है कि प्रत्येक वर्गांक में सभी पक्षों का अस्तित्व आवश्यक नहीं है। प्रत्येक मुख्य वर्ग की अनुसूची में उस विषय में आवश्यक पक्षों का उल्लेख कर दिया गया है, जिसे विषय का पक्ष उपनियम (**Facet Formula**) कहा जाता है।

उदाहरण : (1) ग्रन्थालय-विज्ञान मुख्य वर्ग के लिए निम्न पक्ष उपनियम दिया गया है :

2[P]; [M] : [E] [2P]

(2) साहित्य मुख्य वर्ग के लिए निम्न पक्ष उपनियम दिया गया है :

O [P], [P2] [P3],]P4]

भूगोल मुख्य वर्ग के लिए निम्न पक्ष उपनियम दिया गया है :

U[P]. [S] ' [T]

विषय अभिव्यक्ति के आवर्तन तथा स्तर (Round and Levels of Manifestation) :

(1) **आवर्तन (Rounds)** : कभी-कभी किसी विषय में पक्ष का विस्तार दो या दो से अधिक आवर्तनों से अभिव्यक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए, "चिकित्साशास्त्र" मुख्य वर्ग में ऊर्जा पक्ष की अभिव्यक्ति दो बार की गई है। प्रथम आवर्तन में 'मनुष्य के रोग' तथा द्वितीय आवर्तन में उनके उपचार एवं निवारण निश्चित किए गए हैं :

[E]	प्रथम आवर्तन ऊर्जा पक्ष	First Round Energy Facet
[2E]	द्वितीय आवर्तन ऊर्जा पक्ष	Second Round Energy Facet
[3E]	तृतीय आवर्तन ऊर्जा पक्ष	Third Round Energy Facet
[2P]	द्वितीय आवर्तन व्यक्तित्व पक्ष	Second Round Personality Facet
[3P]	तृतीय आवर्तन व्यक्तित्व पक्ष	Third Round Personality Facet
[2M]	द्वितीय आवर्तन पदार्थ पक्ष	Second Round Matter Facet

यहाँ यह ध्यान में रखना उचित है कि [P] [M] एवं [E] पक्षों के ही आवर्तन सम्भव हैं। साथ ही [E] पक्ष के विस्तार के लिए [2P] पक्ष का तथा [2E] के विस्तार के लिए [3P] पक्ष का प्रयोग किया जाता है तथा इनके मध्य किसी प्रकार का योजक चिह्न आवश्यक नहीं है। जैसे [E] [2P] तथा [2E] [3P]।

विभिन्न पक्षों के आवर्तन का स्पष्टीकरण एक उदाहरण से किया जा सकता है :

विषय— क्षय-रोग का एक्स-रे उपचार
X-Ray Treatment of Tuberculosis

वर्गांक— L45:421:6253

स्पष्टीकरण—

L	आधार वर्ग (Basic class)		चिकित्साशास्त्र
45	[व्य]	[P]	फेफड़े
:			ऊर्जा पक्ष का योजक चिह्न
4	[ऊ]	[1E]	रोग—प्रथम आवर्तन ऊर्जा पक्ष
21	[2व्य]	[2P]	क्षय के कीटाणु—द्वितीय आवर्तन व्यक्तित्व पक्ष
:			ऊर्जा पक्ष का योजक चिह्न
6	[2ऊ]	[2E]	उपचार--द्वितीय आवर्तन ऊर्जा पक्ष
253	[3व्य]	[3P]	एक्स-रे–तृतीय आवर्तन व्यक्तित्व पक्ष

ऊर्जा पक्ष के द्वितीय आवर्तन [2E] की अभिव्यक्ति प्रथम आवर्तन के बाद हो सकती है। इस प्रकार के आवर्तनों का निर्देश वर्गीकरण की अनुसूचियों में मुख्य वर्ग के पक्ष उपनियम में होता है :

L [P] : [E] [2P] : [2E] [3P]

Y [P] : [E] [2P] : [2E] [3P]

(2) **स्तर** (Levels) : व्यक्तित्व, पदार्थ, देश, काल की अभिव्यक्ति किसी भी विषय के एक ही आवर्तन में एक से अधिक समय अर्थात् दो या अधिक स्तरों पर हो सकती है। इस प्रकार की अभिव्यक्ति को उस पक्ष के स्तर कहते हैं। किसी विषय में व्यक्तित्व की द्वितीय, तृतीय, अभिव्यक्तियाँ क्रम से निम्न प्रकार हैं :

द्वितीय स्तर का व्यक्तित्व पक्ष	[P2]	**Second Level Personality**
तृतीय स्तर का व्यक्तित्व पक्ष	[P3]	**Third " "**
चतुर्थ स्तर का व्यक्तित्व पक्ष	[P4]	**Fourth " "**

यही बात पदार्थ, देश तथा काल की इस प्रकार की अभिव्यक्तियों के साथ भी है।

स्तर समुदाय के सम्बन्ध में यह ध्यान रहे कि एक मूल-श्रेणी को साथ-साथ रखना चाहिए। निम्न उदाहरण द्वारा इसका स्पष्टीकरण किया जा सकता है :

विषय—तुलसीदास का रामचरित मानस

Ramcharit Manas–Tulsidas

वर्गांक—O152, 1J34,1

स्पष्टीकरण—

O	आधार वर्ग (Basic class)		साहित्य
152	[व्य]	[P]	हिन्दी साहित्य—प्रथम स्तर व्यक्तित्व पक्ष
,			व्यक्तित्व पक्ष का योजक चिह्न
1	[व्य2]	[P2]	काव्य-द्वितीय स्तर व्यक्तित्व पक्ष
J34	[व्य3]	[P3]	तुलसीदास का जन्म वर्ष—तृतीय स्तर पर व्यक्तित्व पक्ष

,	व्यक्तित्व पक्ष का योजक चिह्न
1 [व्य4] [P4]	प्रथम कृति—रामचरितमानस—चतुर्थ स्तर व्यक्तित्व पक्ष

इस वर्गांक में व्यक्तित्व पक्ष के चार स्तर एक ही आवर्तन में हैं।

अंत में, यह कहा जा सकता है कि मूल श्रेणियों की व्यवस्था एक अद्वितीय धारणा है। यह अत्यन्त उपयोगी है तथा इसका प्रभाव सर्वव्यापी है। इसी धारणा के कारण ही सेयर्स ने कहा था कि यदि कोई मेलविल ड्यूई का युग था तो यह (आधुनिक) निःसंदेह रंगनाथन का युग है। मूल श्रेणियों की अभिधारणा ने एक नवीन पथ प्रदर्शित किया है। यदि 19वीं शताब्दी के ग्रन्थों में एक दृष्टिकोण को समाविष्ट किया गया था तो 20वीं शताब्दी के अधिकांश ग्रन्थों में अनेक पक्षों को सम्मिलित किया जाता है। पाँच मूल श्रेणियों की धारणा द्वारा विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रदर्शित किया जा सकता है।

मूल श्रेणियों—**PMEST**—की धारणा को एक दृष्टान्त द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। हम स्वयं को क्षण भर के लिए एक विषय के समान समझें। हमारा शरीर **व्यक्तित्व** है; जिन तत्वों से हमारा शरीर निर्मित हुआ है; वह **पदार्थ** है; हमारी शक्ति, समस्याएँ, कार्यशीलता आदि **ऊर्जा** अथवा **क्रिया** है; भारत, इंगलैण्ड अथवा अमेरिका में हमारी उपस्थिति **देश** है; तथा 1955, 1960 तथा 1970 से हमारे सम्बन्ध **काल** की अभिव्यक्ति हैं। उसी प्रकार एक विषय का शरीर व्यक्तित्व है, उस शरीर का निर्माण करने वाले तत्व पदार्थ हैं, उसकी समस्याएँ एवं क्रियाएँ ऊर्जा की अभिव्यक्ति हैं; एक भौगोलिक खण्ड से उसका प्रसंग देश पक्ष है; तथा कालक्रम से उसका सम्बन्ध काल पक्ष है। ये पाँच मूलभूत श्रेणियाँ हैं।

विशिष्ट तथा प्रणाली (Specials and Systems) : विश्व के विभिन्न स्थानों पर ज्ञान-जगत् में मुख्य वर्गों को अनेक आकारों में व्यवस्थित किया गया है। जब एक विषय में अभिरुचि रखने वाले तथा एक ही स्थान पर निवास करने वाले व्यक्ति के लिए अन्य स्थानों पर उसी विषय के विवरण पर जानकारी प्राप्त करना असम्भव नहीं था, तब उस विषय पर अनेक विचारधाराओं का विकास हुआ। उदाहरणार्थ, चिकित्सा-शास्त्र से मनुष्य का सदैव गहन सम्बन्ध रहा है। विश्व के अनेक स्थानों पर इस विषय में समय-समय पर विभिन्न पद्धतियों का विकास हुआ है, जैसे होमियोपैथी, यूनानी, आयुर्वेद तथा एलोपैथी आदि। यद्यपि इन पद्धतियों का ध्येय मानव स्वास्थ्य ही है तथापि इसका अध्ययन विभिन्न दृष्टिकोणों से किया गया है। ज्ञान के विकास में इस विशेषता का महत्त्वपूर्ण स्थान है, अतः इससे सम्बन्धित ग्रन्थों को मुख्य वर्ग से पृथक् करना उचित है।

इसी के साथ, किसी विषय के कुछ उप-खण्ड विशिष्ट वर्ग बन जाते हैं। उस उपखण्ड से सम्बन्धित समस्त समस्याओं को एकत्रित कर एक ही ग्रन्थ में प्रकाशित किया जाता है। ज्ञान की इस विशेषता को भी पृथक् स्थान प्रदान करना उचित है। डॉ० रंगनाथन ने दोनों प्रकार की विशेषताओं को मान्यता प्रदान कर विन्यस्त पक्ष

(Amplified Facet) कहा है। शाब्दिक स्तर पर इनको विशिष्ट (Specials) तथा प्रणाली (Systems) की संज्ञा दी है।

विशिष्ट (Specials) : किसी मूल **वर्ग** के जिस विषय में व्यक्ति विशेष योग्यता प्राप्त कर लेते हैं, उसे विशिष्ट कहा जाता है। विशेषतया के दृष्टिकोण से ही उस विषय पर विचार किया जाता है। डॉ॰ रंगनाथन के अनुसार एक विषय का किसी एक दृष्टिकोण से किया गया स्पष्टीकरण ही विशिष्ट कहा जा सकता है। द्विबिन्दु पद्धति में विभिन्न मुख्य वर्गों के अन्तर्गत विशिष्ट की सूची दी गई है :

(1) चिकित्सा Medicine

L9A	विशिष्ट	Specials
L9C	शिशु	Child
L9E	वृद्धावस्था	Old Age
L9F	महिला	Female
L9H	ऊष्ण कटिबन्ध	Tropical
L9V	युद्ध	War
L9X	औद्योगिक	Industrial

(2) भौतिकी

C9A	विशिष्ट	Specials
C9B2	अणु	Atom
C9B3	न्यैष्टिक	Nucleus

उपर्युक्त प्रत्येक विशिष्ट में विषय के एक निश्चित दृष्टिकोण से विचार किया गया है तथा उसका सम्पूर्ण क्षेत्र एक विशेषज्ञ से ही सम्बन्धित है। शिशु-चिकित्सा का विशेषज्ञ केवल शिशु के शरीर के विभिन्न अंगों एवं उसकी समस्त समस्याओं में ही अभिरुचि रखता है। अन्य विशिष्टों से उसका सम्बन्ध अधिक नहीं है।

द्विबिन्दु पद्धति में विशिष्ट का उल्लेख अंक 9A/9Z की सहायता से किया है। किसी मुख्य वर्ग के अन्तर्गत विशिष्ट निर्मित करने के लिए मुख्य वर्ग के अंकन के साथ अंक 9 जोड़कर अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में से एक अक्षर लगा दिया जाता है :

विशिष्ट के उपविभाजन के लिए मूल वर्ग का पक्ष उपनियम उपलब्ध है :

उदाहरण :

L	चिकित्सा	Medicine
L9C	शिशु-चिकित्सा	Child Medicine
L9C,2	शिशुओं की पाचन-क्रिया	Digestive system of Children
L9C:4	शिशुओं का रोग	Diseases of Children

L आधार वर्ग (Basic class)			9C	विशिष्ट Specials	
2	[व्य]	[P]	4	[ऊ]	[E]

प्रणाली (Systems) : किसी विषय में अभिव्यक्त विचारधारा को ही प्रणाली कहा जा सकता है। प्रणाली शब्द से तात्पर्य एक ऐसे विषय से है, जिसका अध्ययन

विभिन्न दृष्टिकोणों से किया गया हो। दृष्टिकोणों की संख्या के अनुसार ही प्रणालियों की संख्या होगी तथा प्रत्येक दृष्टिकोण के अन्तर्गत विषय के सम्पूर्ण क्षेत्र पर विचार किया जाता है। उदाहरणार्थ, शिक्षा से मान्टेसरी प्रणाली; अर्थशास्त्र में साम्यवादी दृष्टिकोण; चिकित्सा में आयुर्वेदिक आदि। द्विबिन्दु पद्धति में विभिन्न मुख्य वर्गों के अन्तर्गत प्रणाली की सूची दी गई है :

(1) चिकित्सा Medicine

LA	प्रणालियाँ	Systems
LB	आयुर्वेद	Ayurveda
LC	सिद्धा	Siddha
LD	यूनानी	Unani
LL	होम्योपैथी	Homeopathy
LM	प्राकृतिक	Naturopathy

(2) अर्थशास्त्र Economics

XA	प्रणालियाँ	Systems
XB	युद्ध अर्थशास्त्र	War Economics
XM	सहकारिता	Co-operative
XN17	साम्यवाद	Communism

द्विबिन्दु पद्धति में प्रणाली का उल्लेख कालक्रम विधि की सहायता से किया जाता है। किसी प्रणाली की उत्पत्ति का काल उसकी विशेषता मानी जाती है। अतः किसी मुख्य वर्ग के अन्तर्गत प्रणाली निर्मित करने के लिए मुख्य वर्ग के अंकन के साथ कालक्रम का अंकन जोड़ दिया जाता है।

प्रणाली के उपविभाजन के लिए मुख्य वर्ग का पक्ष उपनियम उपलब्ध है।

उदाहरण :

L	चिकित्सा	Medicine
LL	होम्योपैथिक	Homeopathic
LL,2	होम्योपैथिक चिकित्सा में पाचन-क्रिया	Digestive System in Homeopathy
LL,2:4	होम्योपैथिक चिकित्सा में पाचन-क्रिया के रोग	Diseases of Digestive System in Homeopathy
LL,2:4:6	होम्योपैथिक चिकित्सा में पाचन-क्रिया के रोगों का उपचार	Treatment of Diseases of Digestive System in Homeopathy

L	आधार वर्ग (Basic class)		L	प्रणाली	System
2	[व्य]	[P]	4	[ऊ]	[E]
6	[2ऊ]	[2E]			

विषयांग सम्बन्ध (Phase Relation) :

ज्ञान-वर्गीकरण में विभिन्न स्तर पर ज्ञान-तत्वों के मध्य अनेक प्रकार के सम्बन्ध स्थापित होते हैं। इस प्रकार के सम्बन्ध दो मूल वर्गों के मध्य; एक मूल वर्ग के दो पक्षों के मध्य; एक पक्ष के दो एकलों के मध्य; तथा एक एकल के दो उप-एकलों के मध्य हो सकते हैं। एक विशिष्ट विषय में उपर्युक्त में से कोई एक सम्बन्ध हो सकता है। डॉ० रंगनाथन ने निम्न प्रकार के दशा सम्बन्ध अथवा विषयांग सम्बन्ध निश्चित किए हैं :

1 अन्तर-वर्ग विषयांग सम्बन्ध—**Intra-Class Phase Relation**
2 अन्तर-पक्ष विषयांग सम्बन्ध—**Intra-Facet Phase Relation**
3 अन्तर-पंक्ति विषयांग सम्बन्ध—**Intra-Array Phase Relation**

प्रत्येक प्रकार का विषयांग सम्बन्ध पुनः पाँच प्रकार के सम्बन्धों में विभाजित किया गया है :

1 सामान्य **General**
2 दृष्टिकोण **Bias**
3 तुलना Comparision
4 भेद **Difference**
5 प्रभाव **Influence**

उपर्युक्त विषयांग सम्बन्धों का क्रमशः विवेचन प्रत्येक प्रकार के सम्बन्ध के लिए निश्चित योजक चिह्नों के द्वारा किया जा सकता है :

1 **अन्तर-वर्ग-विषयांग सम्बन्ध** (Intra-Class Phase Relation) : किन्हीं दो या दो से अधिक मुख्य वर्गों में सम्बन्ध स्थापित कर संयुक्त विषय बनाया जा सकता है। एक ही विषय से सम्बन्धित ग्रन्थ को एक अंगी (**one phased**) विषय कहते हैं। किन्तु जब ग्रन्थ का विषय दो या दो से अधिक विषयों से युक्त होता है, तब उसको मिश्रित (complex) अथवा बहुअंगी (multiphased) विषय कहते हैं। मिश्रित वर्ग का निर्माण निम्न प्रकार किया जा सकता है :

1 एक साधारण वर्ग तथा दूसरा साधारण वर्ग— B+C
2 एक साधारण वर्ग तथा दूसरा संयुक्त वर्ग— B+C62
3 एक संयुक्त वर्ग तथा दूसरा संयुक्त वर्ग— C62+B
4 एक संयुक्त वर्ग तथा दूसरा साधारण वर्ग— C62+B22

उपर्युक्त सम्बन्धों को निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :

योजक चिह्न Connecting Symbol	सम्बन्ध Type of Relation	वर्ग Class	वर्गांक Class Number
0a	सामान्य राजनीतिशास्त्र तथा अर्थशास्त्र General Political Sc. and Economics		**W0aX**

0b	दृष्टिकोण Bias	राजनीतिज्ञों के लिए अर्थशास्त्र Economics for Politicians	X0bW
0c	तुलना Comparision	राजनीति व अर्थशास्त्र की तुलना Politics and Economics Compared	W0cX
0d	भेद Difference	राजनीति व अर्थशास्त्र में अन्तर Difference between Politics and Economics	W0dX
0g	प्रभाव Influence	अर्थशास्त्र का राजनीति पर प्रभाव Influence of Economics on Politics	W0gX

(प्रभावित वर्ग को प्रथम स्थान दिया जायेगा)

सम्बन्धों की सम्भावित संख्या निश्चित नहीं की जा सकती है। सम्प्रति डॉ० रंगनाथन ने पाँच ही सम्बन्ध निश्चित किए हैं।

2 **अन्तर-पक्ष विषयांग सम्बन्ध** (Intra-Facet Phase Relation) : अनेक ग्रन्थों का विषय एक मुख्य वर्ग के एक ही पक्ष में से दो एकलों के सम्बन्ध पर आधारित होता है। इस प्रकार का सम्बन्ध दो भिन्न पंक्ति के एकलों में दिखाया जाता है।·इसको अन्तर-पक्ष विषयांग सम्बन्ध कहते हैं।

यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि इस प्रकार का सम्बन्ध काल पक्ष को छोड़कर किसी भी पक्ष में हो सकता है। काल प्रवाह एक ही होता है; उसकी समस्त पृथक् संज्ञाएँ एक ही पंक्ति में रखी गई हैं।

विभिश्न प्रकार के अन्तर-पक्ष विषयांग सम्बन्धों को निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :

योजक चिह्न Connecting Symbol	सम्बन्ध Type of Relation	वर्ग Class	वर्गांक Class Number
0j	सामान्य General	शरीर-रचना तथा शरीर-विज्ञान Anatomy and Physiology	G:20j3
0k	दृष्टिकोण Bias	चिकित्सक के लिए शरीर-विज्ञान Physiology for Pathologist	G:30k4
0m	तुलना Comparision	शरीर-रचना व शरीर-विज्ञान की तुलना Anatomy and Physiology Compared	G:20m3
0n	भेद Difference	शरीर-रचना व शरीर-विज्ञान में अन्तर Difference between Anatomy and Physiology	G:20n3

0r	प्रभाव Influence	शरीर-विज्ञान पर शरीर-रचना का प्रभाव Influence of Anatomy on Physiology	G:30r2

(प्रभावित एकल को प्रथम स्थान दिया जायेगा)

3 अन्तर-पंक्ति विषयांग सम्बन्ध (Intra-Array Phase Relation) : अनेक ग्रन्थों का विषय एक पक्ष के पंक्तीय एकलों से ही सम्बन्धित होता है। इस प्रकार का सम्बन्ध एक पंक्ति के दो उपएकलों के मध्य दिखाया जाता है। इसको अन्तर-पंक्ति विषयांग कहते हैं।

विभिन्न प्रकार के अन्तर-पंक्ति विषयांग सम्बन्धों को निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :

योजक चिह्न Connecting Symbol	सम्बन्ध Type of Relation	वर्ग Class	वर्गांक Class Number
0t	सामान्य General	ग्रामीण तथा शहरी जनता की संस्कृति Rural and City folk Culture	Y310t5:1
0u	दृष्टिकोण Bias	ग्रामीण जनता के लिए शहरी संस्कृति City folk Culture for Rural People	Y350u1:1
0v	तुलना Comparision	ग्रामीण व शहरी संस्कृतियों की तुलना Rural and City Cultures Compared	Y310v5:1
0w	भेद Difference	ग्रामीण व शहरी जीवन में अन्तर Difference between Rural and City Life	Y310w5:1
0y	प्रभाव Influence	ग्रामीण जीवन पर शहरी जीवन का प्रभाव Influence of City life on Rural life	Y310y5:1

(प्रभावित उपएकल को प्रथम स्थान दिया जायेगा)

अनुसूचियाँ (Schedules) :

प्रत्येक वर्गीकरण पद्धति में मुख्य वर्गों की अनुसूचियों के साथ कुछ सहायक अनुसूचियों की व्यवस्था भी की जाती है। इनकी सहायता से विषयों का पारस्परिक

सम्बन्ध तथा विषयों पर सामान्य दृष्टिकोण से काल, भौगोलिक क्षेत्र तथा भाषा आदि का वोध कराने में सुविधा होती है। द्विबिन्दु पद्धति में निम्न सहायक अनुसूचियों की व्यवस्था की गई है।

1	कालक्रमिक विभाजन	Chronological Division
2	भौगोलिक विभाजन	Geographical Division
3	भाषात्मक विभाजन	Language Division

उपर्युक्त तीनों प्रकार की अनुसूचियों की विवेचना कर स्पष्ट किया जा सकता है।

1 **कालक्रमिक विभाजन** (Chronological Division) : विषय के वर्गीकरण में काल का निर्देश भी करना पड़ता है। मुख्य वर्ग 'इतिहास' के पक्ष उपनियम में काल को आवश्यक स्थान दिया गया है। अन्यत्र भी आवश्यकतानुसार काल पक्ष का प्रयोग वर्गांक में किया जा सकता है। कालक्रमिक विभाजन में से अंक लेकर काल पक्ष में प्रयुक्त करने के लिए (') योजक चिह्न निश्चित किया गया है।

कालक्रमिक विभाजन की अनुसूची में प्रत्येक शतक के लिए अंग्रेजी वर्णमाला का एक दीर्घ अक्षर प्रयुक्त किया गया है।

A	ई० सं० पूर्व	9999	T	2400	से	2499	तक
B	9999	से 1000 ई० पू०	U	2500	से	2599	तक
C	999	से 1 ई० पू०	V	2600	से	2699	तक
D	1	से 999 तक		...		...	
E	1000	से 1099 तक	Z	3000	से	3099	तक
	......	......	ZA	3100	से	3199	तक
L	1700	से 1799 तक					
M	1800	से 1899 तक				आदि	
N	1900	से 1999 तक					
	......	......					

इस प्रकार अनुसूची ZZ तक बढ़ सकती है। यद्यपि काल अनन्त है तथापि यहाँ काल का मापन भविष्य में कुछ हजार वर्षों तक कर दिया गया है तथा उनके अंकन भी निश्चित कर दिए गए हैं। काल पक्ष का अंकन निर्मित करते समय सम्बन्धित शतक के अंकन के साथ इच्छित वर्ष के अन्तिम दो अंक (दहाई तथा इकाई के अंक) जोड़ दिए जाते हैं। मान लीजिए सन् 1970 का अंकन निर्मित करना है। सन् 1970 वर्ष सन् 1900 से 1999 के शतक में से है। इस शतक का अंकन N है। अतः N के साथ 1970 के अन्तिम दो अंक लिखने से N70 अंकन निर्मित हो गया। कुछ अन्य उदाहरणों द्वारा इसे स्पष्ट किया जा सकता है :

सन्	1024	E24	सन्	1903	N03
,,	1526	K26	,,	1947	N47
,,	1857	M57	,,	1960	N60

विषय—विश्वविद्यालयीन ग्रन्थालय में वर्गीकरण 1965
Classification in University Library 1965

वर्गांक— 234 : 15 ' N65

[व्य] [ऊ] [का]

उपर्युक्त सर्वसामान्य कालक्रमिक विभाजन के अतिरिक्त कभी-कभी दिन, रात्रि, ऋतु इत्यादि के छोटे-छोटे काल खण्डों का समावेश भी वर्गांक में करना आवश्यक होता है । इनके लिए अंग्रेजी वर्णमाला के कुछ ह्रस्व अक्षर काल पक्ष के द्वितीय स्तर [का2] [T2] में निश्चित किए गये हैं :

दिन	Day	c	ऋतु	Season	n
रात्रि	Night	d	वसंत	Spring	n1
संधिकाल	Twilight	e	ग्रीष्म	Summer	n2
			शरद	Autumn	n5
			शिशिर	Winter	n7

शुष्क दिन	Dry days	p1
आद्र दिन	Wet days	p5
बर्फ गिरने का काल	Snow period	p8

विषय—इंगलैण्ड में 1968 का शुष्क दिन

Dry day in England in 1968

वर्गांक—U. 56 'N68· 'p1

[देश] [का] [का2]

द्विबिन्दु पद्धति में भूत, या भविष्य के कुछ वर्ष भी वर्गांक में दर्शाये जा सकते हैं । विषय वर्गीकरण में निर्धारित समय की भी समय-समय पर आवश्यकता होती है । इसके लिए वाणाकृति अंकन की व्यवस्था की गई हैं :

1) भूतकालीन कुछ वर्षों के लिए परांगमुख वाणाकृति

Backward Arrow ←

2) भविष्यकालीन कुछ वर्षों के लिए अभिमुख वाणाकृति

Forward Arrow →

1) विषय—रूस का आर्थिक विकास (1921 से 1950 तक)

Russia's Economic Development (1921 to 1950)

वर्गांक—X.58 'N50←N21

2) विषय—भारतवर्ष का इतिहास (1526 से 1707 तक)

History of India (1526 to 1707)

वर्गांक—V44 'L07←J26

3) विषय—भारत की औद्योगिक प्रगति (1960 से 1975 तक)

India's Industrial Development (1960 to 1975)

वर्गांक—X8 (A).44 'N60→N75

4) विषय—भारत की संभाव्य वैज्ञानिक प्रगति—आज से सौ वर्ष तक (1970 से 2069)

2069) India's Scientific Development—for next hunderd years (1970 to 2069)

वर्गांक—A.44 'N70→P69

कभी-कभी कुछ ग्रन्थों में भविष्यत् काल निर्धारित वर्षों तक मर्यादित नहीं होता है। इस प्रकार के ग्रन्थों का वर्गांक इस प्रकार दिया जा सकता है :

विषय—कालकी अथवा सभ्यता का भविष्य

Kalki or the Future of Civilisation

वर्गांक—Y : 1 'N→

2 **भौगोलिक विभाजन** (Geographical Divisions) : प्रत्येक वर्गीकरण पद्धति में देश अथवा स्थान का प्रयोग भी आवश्यक होता है। द्विबिन्दु पद्धति में मुख्य वर्ग 'इतिहास' तथा 'विधि' के पक्ष उपनियम में देश को व्यक्तित्व पक्ष में स्थान दिया गया है। अन्यत्र भी आवश्यकतानुसार देश पक्ष का प्रयोग वर्गांक में किया जा सकता है।

भौगोलिक विभाजन में से अंक लेकर देश पक्ष में प्रयुक्त करने के लिये (.) योजक चिह्न निश्चित किया गया है। इसकी अनुसूची में निम्न व्यवस्था है :

1	विश्व	World	5	योरोप	Europe
2	मातृ देश	Mother Country	6	अफ्रीका	Africa
3	विशिष्ट देश	Favoured Country	7	अमेरिका	America
4	एशिया	Asia	8	ऑस्ट्रेलिया	Australia

1) मुख्य वर्ग 'इतिहास' के [व्य] पक्ष में देशानुसार प्रयोग इस प्रकार किया जाता है :

विश्व का इतिहास	V1
भारत का इतिहास	V44
इंगलैण्ड का इतिहास	V56 इत्यादि

2) मुख्य वर्ग 'विधि' के [व्य] पक्ष में देशानुसार प्रयोग इस प्रकार किया जाता है :

अन्तर्राष्ट्रीय विधि	Z1
भारतीय विधि	Z44

3) मुख्य वर्ग 'ललित कला' की पद्धति अथवा शैली व्यक्त करने के लिए भी [व्य] पक्ष में देशानुसार प्रयोग किया जाता है :

भारतीय कला	N44
रोमन कला	N52
भारतीय वास्तुकला	NA44
ग्रीक वास्तुकला	NA51

कुछ मुख्य वर्गों को छोड़कर अन्य विषयों के वर्गांक निर्मित करने के लिए (दे) पक्ष का प्रयोग नियमानुसार योजक चिह्न के साथ किया जाता है :

जापान की अध्यापन पद्धति	T:3.42
इंगलैण्ड का राजनीतिक भूगोल	U5.56

रूस की महिलाएँ	Y15.58
भारतीय अर्थशास्त्र	X.44

डॉ० रंगनाथन ने भौगोलिक विभाजन को निम्न भूखण्डों में बाँट दिया है :

1) राजकीय भूखण्ड (Political Division) : किसी विषय में वर्गांक के देश पक्ष में राजकीय भूखण्डों का योजक चिह्न (.) के साथ प्रयोग किया जा सकता है :

1–0	साम्राज्य (अध्यारोपण विधि से निर्मित विभाग)
1–52	रोमन साम्राज्य **Romman Empire**
1N	राष्ट्र संघ (कालक्रमिक विधि से विभाजित)
1N48	राष्ट्र मण्डल **Commonwealth of Nations**
1(J382)	विश्व के गेहूँ पैदा करने वाले देश (विषय विधि से विभाजित)
1(P111)	आंग्लभाषी देश **English speaking Countries**
1(W6)	प्रजातांत्रिक देश **Democratic Countries**
1(Y.42)	अविकसित देश **Underdeveloped Countries**

2) जनसंख्यानुसार भूखण्ड (Population Clusters) : कभी-कभी वर्गांक में किसी स्थान विशेष का शहर, नगर, गाँव आदि का भी समावेश करना आवश्यक होता है। इन सब भूखण्डों का निर्माण जनसंख्यानुसार किया जाता है। वर्गांक में इस प्रकार के भूखण्डों को राजकीय भूखण्डों के पश्चात् पुनः (.) [दे] पक्ष में लिखा जाता है। ऐसा करते समय यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि किसी गाँव का निर्देश करने के लिए राजकीय भूखण्ड के तहसील का, नगर के लिए जिले का तथा शहर का निर्देश करने के लिए राज्य का या देश का अंकन लिया जाना चाहिए :

भोपाल का क्षेत्रीय ग्रन्थालय	2.4.4455.B
कलकत्ता का राष्ट्रीय ग्रन्थालय	213.4475.C
हरिद्वार के साधु-महात्मा (नैनीताल जिला)	Q2:332.445265.H

3) दिशामानानुसार भूखण्ड (Orientation Division) : राजकीय भूखण्ड में व्यवस्थित 1 'जगत' के दिशानुरूप विभाग किए गए हैं। अंक 1 के साथ दिशाओं के लिए अंकन लगा दिए गए हैं :

9B	पूर्व	East	9M	पश्चिम	West
9G	दक्षिण	South	9S	उत्तर	North आदि

विश्व के दिशानुरूप विभागों के लिए उपर्युक्त अंकन 1 के साथ बिना योजक चिह्न के जोड़े जा सकते हैं। अन्यथा उन्हें भिन्न स्तर का मानकर देश पक्ष के योजक चिह्न के साथ लिखा जाता है। स्तरक्रम में इनका क्रम तीसरा है :

2.19M	पाश्चात्य देशों के ग्रन्थालय
W.19B	पूर्वी देशों की राजनीतिक स्थिति
X.44,9S	भारत के उत्तरी भाग की आर्थिक स्थिति
J.4455.B.9G	भोपाल के दणिणी भाग में कृषि व्यवस्था

4) प्रातृतिक भूखण्ड (Physiographical Features) : द्विबिन्दु पद्धति में देश पक्ष के वर्गीकरण में अधिक सूक्ष्मता प्राप्त करने के लिए देश के प्राकृतिक भूखण्डों— अरण्य, नदी, पर्वत, झील आदि का निर्देश करने की व्यवस्था की गई है। स्तरक्रम में इनका स्थान चतुर्थ है तथा देश पक्ष के योजक चिह्न के साथ इसका प्रयोग वर्गांक में किया जाता है। इन भूखण्डों की तालिका निम्न है :

a	भूमि	Geosphere	gl	घाटी	Valley
d	मरुभूमि	Desert	g7	पर्वत	Mountain
e5	नदी का मुख	Delta	pl	नदी	River
e6	द्वीप, टापू	Island	p6	झील	Lake
f	अरण्य	Forest	r	समुद्र	Ocean

निम्न उदाहरणों द्वारा इनका प्रयोग स्पष्ट किया जा सकता है :

J. 4437.d	राजस्थान की मरुभूमि में कृषि
U2.44.9G.pl	दक्षिण भारत की नदियाँ

व्यक्तिगत पर्वत या नदी के लिए नाम के आद्याक्षर का प्रयोग किया जा सकता है :

J382.44.plY	यमुना के तट में गेहूँ की खेती
J481.4.g7H	हिमालय में चावल का उत्पादन
K96:13.44.g7Y	विंध्य पर्वत के पक्षी तथा उनका वर्णन

जिस ग्रन्थ में प्राकृतिक भूखण्डों का सामान्य विवेचन होता है, उसके वर्गांक में राजकीय भूखण्ड देने की आवश्यकता नहीं है :

J.d	मरुभूमि में कृषि व्यवस्था
Y.l.pl	नदी तट की संस्कृति
U8.g7	पर्वतारोहण के सिद्धान्त

3 **भाषानुसार विभाजन** (Language Division) : द्विबिन्दु पद्धति में भाषाओं के प्रयोग के लिए एक विशेष रीति निश्चित की गई है। साहित्य एवं भाषाशास्त्र मुख्य वर्गों में भाषा का प्रयोग [व्य] पक्ष में किया गया है। साथ ही अन्य विषयों के ग्रन्थ भी विविध भाषाओं में लिखे जाते हैं तथा ऐसे ग्रन्थों में उन भाषाओं का ग्रन्थांक में निर्देश कर दिया जाता है। एक विषय पर विविध भाषाओं में लिखे हुए ग्रन्थ एक स्थान पर व्यवस्थित किए जाते हैं, किन्तु ग्रन्थांक में भाषा का अंक देने से उनमें भिन्नता भी रहती है।

डॉ॰ रंगनाथन ने भाषा की अनुसूची में अंक 1, 2, 3 विश्व के तीन प्रमुख भाषा समूहों को दिए हैं :

1 आर्यांग्ल	Indo-European
2 सैमिटिक	Semitic
3 द्राविड़ी	Dravidian

इन भाषा समूहों को भाषा विशेष के लिए पुनः विभाजित किया गया है :

15 संस्कृत	11 ट्यूटोनिक
152 हिन्दी	111 आंग्ल
155 मराठी	113 जर्मन

उपर्युक्त व्यवस्था के अतिरिक्त विश्व की शेष भाषाओं को [दे] से अंक में विभाजित किया गया है। यह विभाजन देशानुसार किया जाता है।

4	अन्य एशियाई भाषाएँ
441	चीनी भाषा
442	जापानी भाषा

साहित्य एवं भाषाशास्त्र के ग्रन्थों के वर्गांक में भाषा का निर्देश [व्य] पक्ष में किया जाता है :

O152	हिन्दी साहित्य	P152	हिन्दी भाषा
O111	आंग्ल साहित्य	P111	आंग्ल भाषा
O152,2	हिन्दी नाटक	0152,4	हिन्दी मुहावरे

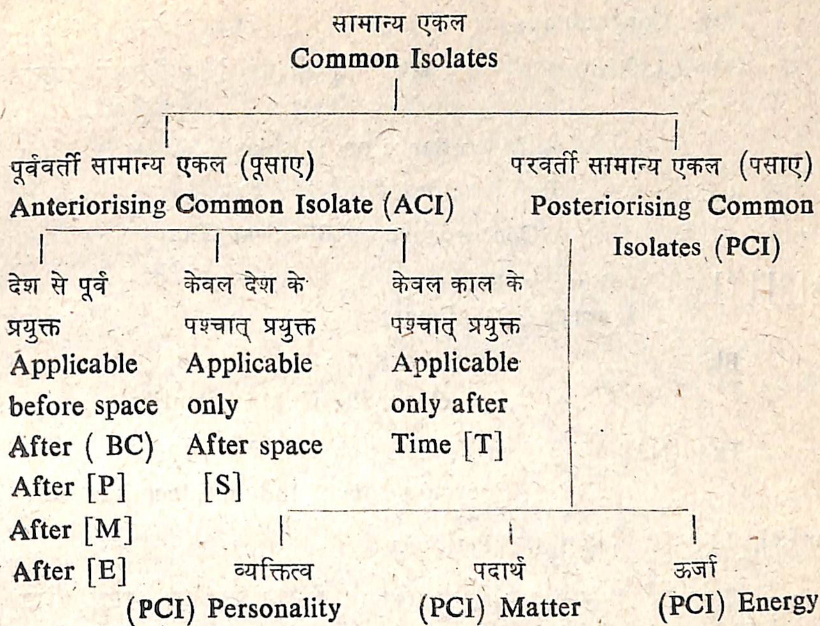
सामान्य एकल (Common Isolate) :

डॉ॰ रंगनाथन ने सामान्य एकल की व्याख्या इस प्रकार की है, "जिस एकल को समस्त अथवा बहुसंख्यक वर्गों के पक्षों में से किसी भी विषय के साथ संलग्न किया जा सकता है, जिसके पृथक् अंकन से एक ही प्रकार का अर्थ स्पष्ट होता है अथवा एक ही प्रकार की कल्पना व्यक्त होती है तथा जिसका वर्गांक में एक ही प्रकार का कार्य है, उसे सामान्य एकल कहते हैं।" ज्ञान के निर्माण में सामान्य एकल ऐसे सूक्ष्म तत्त्व हैं जो वर्गीकरण पद्धति में प्रत्येक स्थान पर एक ही अंक तथा एक ही पद द्वारा व्यक्त किए जाते हैं।

सामान्य एकल, वर्गीकरण की महत्त्वपूर्ण एवं प्राचीन विशेषता है। मेलविल ड्यूई ने दशमलव पद्धति में इसका प्रयोग रूप विभाजन (Form Divisions) के रूप में किया था। ब्लिस ने सामान्य एकलों को दो भागों—पूर्व वर्ग (anterior) तथा सहायक वर्ग (ancilliary)—में बाँटा था। ब्राउन ने अपनी वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकलों के सिद्धान्त को स्थिर रखने के अतिरिक्त कुछ ऐसे एकलों की सूची तैयार की, जो सबकी अपेक्षा केवल कुछ विषयों के लिए सामान्य थे। विभिन्न पद्धतियों द्वारा प्रयुक्त सामान्य एकलों के क्षेत्र का विश्लेषण कर डॉ॰ रंगनाथन ने अपनी द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकलों की वैज्ञानिक व्यवस्था की है।

हेनरी ई॰ ब्लिस का कथन है कि "सामान्य एकल केवल व्यवस्थित ही नहीं है, किन्तु उनका प्रयोग, कम या अधिक, पूरी पद्धति में किया गया है। कुछ का प्रयोग किसी एक वर्ग अथवा कुछ वर्गों अथवा खण्डों में अंशतः अथवा पूर्णतः किया गया है ....इनमें से कुछ का प्रयोग प्रत्येक विषय में किया जा सकता है।"

मेलविल ड्यूई के समय से रंगनाथन के समय तक सामान्य एकलों के स्वरूप में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। डॉ॰ रंगनाथन ने इसका सूक्ष्मता से अध्ययन किया है तथा इनके निम्न प्रकार निश्चित किये हैं।



1 **पूर्ववर्ती सामान्य एकल** (Anteriorising Common Isolates) : इस प्रकार के एकल बिना किसी योजक चिह्न के वर्गांक में लगाये जाते हैं। इनसे युक्त वर्गांक का स्थान सदैव विषय के अन्य वर्गांकों से पूर्व रहता है। ये एकल तीन प्रकार के हैं :

11 देश से पूर्व प्रयुक्त
12 केवल देश के पश्चात् प्रयुक्त
13 केवल काल के पश्चात् प्रयुक्त

11 **देश से पूर्व** प्रयुक्त सामान्य एकल सदैव पक्ष के पूर्व ही किया जाता है। अर्थात् आधार वर्ग (BC) अथवा [व्य] [प] या [ऊ] पक्ष किसी के भी पश्चात् किया जा सकता है। इस प्रकार के सामान्य एकलों की सूची उनके पक्ष उपनियम सहित द्विबिन्दु पद्धति (छठा संस्करण) के अध्याय दो में दी गई है। इनको देखने से ज्ञात होता है कि देश अथवा काल के पश्चात् इनका प्रयोग उपयोगी नहीं होता। कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नांकित हैं :

aT	ग्रन्थसूची Bibliography
Da	यन्त्रशास्त्रों की ग्रन्थसूची Bibliography-Engineering
D65a	विद्युत-यंत्रशास्त्र की ग्रन्थसूची Bibliography-Electrical Engineering
D65aN38	1938 में प्रकाशित विद्युत-यंत्रशास्त्र की ग्रन्थसूची Bibliography of Electrical Enginerring-1938

कोश Concordance

O152.1J34c तुलसी शब्द-सागर (तुलसीदास के साहित्य में प्रयुक्त कठिन शब्दों का कोश)
A Concordance on Tulsidas

R65,6c श्रीमद्भगवद्गीता कोश
A Concordance on Bhagwat Gita

k[S],[T] { विश्वकोश Encyclopaedia
शब्दकोश Dictionary

Bk गणित विश्वकोश
Encyclopaedia of Mathematics

Tk44,N38 भारतीय शिक्षा का विश्वकोश 1938
Encyclopaedia of Indian Education-1938

m[S],]T] सामयिक पत्रिका Periodicals

(इसमें देश एवं काल पक्ष को व्यक्तित्व-पक्ष के स्तर पर रखा गया है। जिस भूखण्ड के लिए पत्रिका मर्यादित है उसका अंकन [दे] में दिया जाता है। पत्रिका के प्रथम प्रकाशन का वर्ष अथवा पत्रिका के किसी संस्था से सम्बन्धित होने पर संस्था का स्थापन-वर्ष दिया जाता है।)

2m44, N70 ग्रन्थालय विज्ञान (प्रथम प्रकाशन 1970)

O152mM93 नागरी प्रचारिणी सभा पत्रिका
(संस्था का स्थापना वर्ष-1893)

n[S],[T] { शब्दकोश Year Book
धारावाहिक Serial

Wn1,L58 विश्व की घटनाओं की वार्षिक पञ्जिका (1758)
Annual Register of World Events (1758)

w[S],[T] { जीवनी Biography
आत्मकथा Autobiography
व्यक्ति सूक्ति संग्रह Ana
व्यक्ति के पत्र Letters

O 152w44,N हिन्दी साहित्य के लेखक (1900 तक)
AwM67 'Madam Curie'
V44wM89,1 मेरी कहानी—जवाहरलाल नेहरू
V44wM84,1 Autobiography—Rajendra Prasad
Q4:33wC436,2 Sayings of Lord Buddha
O157,1M61w,4 रवीन्द्रनाथ टैगोर पत्रावली

x[S], [T] लेख संग्रह Collection

Xx44,N भारतीय अर्थशास्त्र के लेखों का संग्रह (1900 तक)

O152, 1M86x मैथिलीशरण गुप्त का काव्य-संग्रह

y7 [P] व्यक्ति के जीवन का अध्ययन Case Study

V53yL69 नैपोलियन का चरित्र

V44y7M89 प्रधानमन्त्री नेहरू—एक अध्ययन

y8 सारग्रन्थ Digest

पुस्तिका Hand Book, Manual

Q2:4y8 हिन्दू धार्मिक विधियों का सारग्रन्थ

2y8 Manual of Library Science

T:3y8 Handbook of Teaching Techniques

12 **केवल देश के पश्चात्** प्रयुक्त सामान्य एकल का प्रयोग देश पक्ष के पश्चात् ही किया जाता है। इसके उदाहरण निम्नांकित हैं :

r प्रशासन प्रतिवेदन Administrative Report

T.44r भारत के शिक्षा विभाग का प्रतिवेदन

X415.44r भारतीय रेलवे मंत्रालय का आर्थिक प्रतिवेदन

s[T] सांख्यिकी (यदि सामयिक हो) Statistics (if periodical)

X415.44sN52 Passengers on Indian Railways 1952

13 **केवल काल के पश्चात्** प्रयुक्त सामान्य एकल का प्रयोग काल पक्ष के पश्चात् ही किया जाता है। इनके कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नांकित हैं :

s सांख्यिकी (अनियमित) Statistics (if stray)

T4.44'N69s Statistics of University Education in India 1969

t आयोग का प्रतिवेदन Commission Report

X:75.44'N65t योजना आयोग, भारत शासन का प्रतिवेदन, 1965

t4 सर्वेक्षण Survey

2.44'N67t4 भारत में ग्रन्थालयों का सर्वेक्षण, 1967

t6 आदर्श Ideals

TN2 44'N6t6 Ideals of Basic Education, 1960

2 **परवर्ती सामान्य एकल** (Posteriorising Common Isolates) : इस प्रकार के एकल वर्गांक में योजक चिह्न के साथ लगाये जाते हैं। इनसे युक्त विषय का विस्तार संकीर्ण हो जाता है तथा इनका स्थान वर्ग से सम्बन्धित विषय के पश्चात् रहता है। ये एकल तीन प्रकार के हैं :

21 परवर्ती सामान्य एकल (व्यक्तित्व)

22 परवर्ती सामान्य एकल (पदार्थ)

23 परवर्ती सामान्य एकल (ऊर्जा)

21 **पसाए (व्यक्तित्व)** का प्रयोग देश पक्ष के पश्चात् (.) योजक चिह्न लगा कर किया जाता है। इस प्रकार के सामान्य एकलों की सूची पक्ष उपनियम सहित दी गई है। इनके कुछ प्रमुख उदाहरण निम्न हैं :

b	व्यवसाय	Profession
	2 44,b	Library Profession in India
d	संस्था	Institution
	U8.44,d	भारतीय यात्रा संस्था
f2	निरीक्षणात्मक	Observational
	B9,44,f2	भारत की प्रमुख वेधशालाएँ
f3	प्रयोगात्मक	Experimental
	C.44,f3,D	National Physical Laboratory, Delhi
g	विद्वत्समिति	Learned Society
	2.44,g	Indian Library Association
t	शिक्षण संस्था	Educational Institution
	T4.44,t,U	विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
w	शासन का प्रशासकीय विभाग	Administrative Department of Government
	T.44,w.D	Ministry of Education, Government of India, Delhi

22 पक्षाए (पदार्थ) पर अनुसंधान कार्य चल रहा है। सम्प्रति इस श्रेणी में एक भी एकल निश्चित नहीं किया गया है।

23 पक्षाए (ऊर्जा) का प्रयोग देश पक्ष के पूर्व (:) योजक चिह्न लगा कर किया जाता है। इनके कुछ प्रमुख उदाहरण निम्न हैं :

f	अनुसंधान Investigation	
	C9B2:f अणुशक्ति अनुसंधान केन्द्र	
4	वादविवाद	
	T:3f4.44	भारतीय शिक्षा पद्धति पर वादविवाद
g	मूल्यांकन/आलोचना	Evaluation/Criticism
	O152g	हिन्दी साहित्य का मूल्यांकन
	O152,1M86:g	मैथिलीशरण गुप्त के काव्य का मूल्यांकन
	O152,1M8911:g	कामायनी का मूल्यांकन

अंकन (Notation) :

द्विबिन्दु पद्धति का अंकन मिश्रित है। यह अन्य ज्ञात पद्धतियों से अधिक मिश्रित है। इसका आधार अधिक व्यापक है; इसमें परिवर्तन किया जा सकता है। यह रेखा से सम्बन्धित (Linear), दाहिनी ओर बढ़ने वाला (Right handed) तथा दशमलव भिन्न वाला (Decimal fractional) है। अंकन में प्रयुक्त समस्त अंकों का निरपेक्ष मूल्य नियमों द्वारा निश्चित किया गया है। इस पद्धति में प्रयुक्त पाँच वर्ग निम्न हैं :

1) अरबी के अंक 10

Arabic Numerals 10

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

2) रोमन अक्षर (दीर्घ) 26

Roman Capitals 26

A B C D............X Y Z

3) रोमन अक्षर (ह्रस्व) 23

(i, l एवं o को छोड़कर)

Roman Smalls 23

(excluding i, l and o)

a b c d...............x y z

4) ग्रीक वर्णमाला का अक्षर I

Greek alphabet △

5) विराम चिह्न, वाणाकृति युग्रेखा तथा कोष्ठक

Punctuation marks, Arrows, Hyphen and Brackets

, ; : . ' ← → – ( )

इन अंकों का क्रम इस प्रकार निश्चित किया गया है :

0← — — → ' : ; , – a b c d............x y z

1 2 3... ...9 A B C D............X Y Z ( )

प्रारम्भिक '(कोष्ठक को आरम्भक (Starter) एवं अंतिम कोष्ठक)' को बंधक (Arrester) कहते हैं। इसी प्रकार → अग्रमुख वाण (Forward arrow) एवं— पराङ्मुख वाण (Backward arrow) कहलाता है। इनका प्रयोग सूक्ष्म वर्गीकरण में किया जाता है।

द्विबिन्दु पद्धति में प्रयुक्त अंकन की कुछ विद्वानों ने आलोचना करते हुए कहा है कि इसका अंकन दशमलव पद्धति से अधिक विस्तीर्ण है। इसका प्रतिपादन करते हुए डॉ॰ रंगनाथन ने कहा है कि "संक्षिप्त एवं विस्तीर्ण अंकन का प्रश्न दृष्टिभ्रम है, जब तक कि इसका वर्णन विशेष सावधानी से न किया जाय। एक वर्गीकरण पद्धति में वर्गों का प्रतिनिधित्व करने के लिये प्रयुक्त अंकों की व्यवस्था को अंकन कहा जाता है। अंकन के विस्तार (Length of Notation) पद का कोई अर्थ नहीं है, जब तक कि समस्त अंक समान विस्तार के नहीं हैं।" सांख्यिकीय विश्लेषण के पश्चात् डॉ॰ रंगनाथन ने सिद्ध किया है कि द्विबिन्दु पद्धति का अंकन दशमलव पद्धति से अधिक विस्तीर्ण नहीं है। किन्तु, इसके विपरीत, निश्चित रूप से संक्षिप्त है। उनका कथन है कि दशमलव पद्धति में कृत्रिमता की ओर अधिक झुकाव है; द्विबिन्दु पद्धति में ग्रन्थों की प्रकृति की उचित अभिव्यक्ति की ओर अधिक झुकाव है।

मिल्स महोदय ने द्विबिन्दु एवं ग्रन्थात्मक पद्धतियों की तुलना करते हुए लिखा है कि "यदि द्विबिन्दु अंकन (Colon Notation) की महत्ता विस्तीर्ण एवं जटिल होने में है तो ग्रन्थात्मक अंकन (Bibliographic Notation) की महत्ता संक्षिप्त एवं सरल होने में है।" साथ ही मिल्स का कथन है कि एक विशिष्ट विषय का उसके

अवयभूत अंकों में विश्लेषण तथा एक आवश्यक क्रम में उनका संश्लेषण आदर्श रूप से केवल द्विबिन्दु पद्धति में ही सम्भव है।..........वर्गीकरण के प्राथमिक उद्देश्य के रूप में सहविस्तृता की धारणा (अर्थात् ग्रन्थ की विषय-सूची का पूर्णरूपेण पृथक्-करण) द्विबिन्दु पद्धति के लिए मौलिक है। किसी भी मूल्य पर इसकी प्राप्ति के प्रयास में द्विबिन्दु वर्गांक बहुधा विस्तीर्ण एवं जटिल हो गए हैं।......जटिल अंकन के कारण ही कदाचित् द्विबिन्दु पद्धति इस देश में व्यावहारिक पद्धति के रूप में मान्य नहीं है।

अंततः, मिल्स महोदय ने द्विबिन्दु को ग्रन्थात्मक पद्धति से अधिक ग्राह्य माना है, "एक बार द्विबिन्दु के मौलिक नियमों एवं सिद्धान्तों को समझने के पश्चात् (जो कि कठिन नहीं है) यह पद्धति प्रयोग के लिये अत्यधिक सरल हो जाती है........ ग्रन्थात्मक से सरल, क्योंकि यह अधिक तर्कपूर्ण है तथा वर्गकार को निर्णय लेने के लिये न्यूनतम अवसर हैं।" तथापि, उनका मत है कि द्विबिन्दु पद्धति का अंकन एक बाधा उपस्थित करता है, "अंकों को क्रमिक मूल्य, साधारणतया न होते हुए भी प्रदान किया गया है।......इसमें स्पष्टीकरण की संभावनाएँ हैं......उदाहरणार्थ दृष्टिकोण दशा सम्बन्ध में विभिन्न भेद करना संदेहात्मक है, क्योंकि इससे अंकन में अतिरिक्त जटिलता आती है। किन्तु अंकन के विस्तार को संक्षिप्त करने में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप सहविस्तृता की व्यवस्था में बाधा उत्पन्न करता है।"

स्मृति सहायक विधियाँ (Mnemonic Devices) :

किसी वर्गीकरण पद्धति का निर्माण करते समय वर्गाचार्य विभिन्न वर्गों, विभागों, उपविभागों आदि के बोध चिह्न निश्चित करता है। तत्पश्चात् इनको अनुसूचियों में समाविष्ट कर दिया जाता है, जिससे वे सुसंगठित एवं स्मृति-सुलभ हो जाते हैं। अनुसूचियों की सहायता से वर्गकार इच्छित विषयों के वर्गांक का निर्माण कर सकता है। परन्तु यदि वर्गीकरण पद्धति में मुख्य अनुसूचियों के अतिरिक्त कुछ अन्य योजनाओं अथवा विधियों की भी व्यवस्था हो तो वर्गकार को वर्गांक का निर्माण करने में अधिक सुविधा होती है। वर्गांक के निर्माण में सहायक होने के कारण ही इन विधियों को स्मृति सहायक विधियाँ कहा जाता है।

द्विबिन्दु पद्धति में निम्न प्रमुख विधियों की व्यवस्था है :

1	भौगोलिक विधि	Geographical Device
2	कालक्रम विधि	Chronological Device
3	विषय विधि	Subject Device
4	अध्यारोपण विधि	Superimposition Device
5	वर्णक्रम विधि	Alphabetical Device

किसी नवीन विषय का वर्गांक पूर्णतया सहविस्तृत बनाने के लिए विषय के पाँचों पक्षों के केन्द्र बिन्दुओं (Foci) को अधिक सूक्ष्म (Sharpen) करने का कार्य इन विधियों से लिया जाता है। इन विधियों के द्वारा वर्गाचार्य से निर्देश प्राप्त करने की प्रतीक्षा किए बिना ही वर्गकार परिस्थिति का सामना कर सकता है। इन

विधियों के उचित प्रयोग द्वारा नवीन विषय की एकल कल्पना (Isolate Idea) तथा उसके लिए निर्मित एकल संख्या (Isolate Number) सामान्यतः समान ही होती हैं।

उपर्युक्त विधियों का क्रमशः विवेचन किया जा सकता है :

1 **भौगोलिक विधि** (Geographical Device) : कभी-कभी इस विधि से वर्गों के विभाग करना उचित होता है। प्रमुख विभागों के पश्चात् अन्य विभाग भौगोलिक एकलों से किए जाते हैं :

अ) भाषा-विज्ञान **Linguistics** **P**

विश्व की भाषाओं के तीन समूहों (आर्यांग्ल, सेमिटिक एवं द्राविड़ी) के अतिरिक्त अन्य विभाग भौगोलिक एकलों से किए जाते हैं :

एशिया की अन्य भाषाएँ **P4**
जापानी भाषा **P42**
(यहाँ 42 जापान के लिए है)

ब) इतिहास History **V**
भारतवर्ष का इतिहास **V44**
इंगलैण्ड का इतिहास **V56**
(यहाँ 44 भारतवर्ष तथा 56 इंगलैण्ड के लिए है)

स) मनोविज्ञान Psychology **S**
किसी विशिष्ट वंश का मनोविज्ञान **S7**
तिब्बती वंश के व्यक्तियों का मनोविज्ञान **S7498**
(यहाँ 498 तिब्बत के लिए है)

2 **कालक्रम विधि** (Chronological Device) : अनेक मुख्य वर्गों को अनुसूचियों में विविध स्थानों पर विषय के विभाजन के लिए इस विधि का प्रयोग किया गया है :

अ) गणित **Mathematics** **B**

इस मुख्य वर्ग में अनेक विशेष कार्य (Special Function) तथा विशेष सिद्धान्तों (Special Theories) के लिए इस विधि का अनेक स्थानों पर प्रयोग किया गया है :

विशेष कार्य **B39**
बीजीय कार्य का समाहार **B392**
हाइपरबोलिक कार्य **B392L**
(यहाँ L अठारहवीं शताब्दी के लिए है)

ब) वास्तुकला Architecture **NA**
भारतीय वास्तुकला **NA44**
मुगलकालीन भारत की-वास्तुकला **NA44,J**
(यहाँ J सोलहवीं शताब्दी के लिए है)
आधुनिक भारत की वास्तुकला **NA44,N**
(यहाँ N बीसवीं शताब्दी के लिए है)

3 **विषय विधि** (Subject Device) : मुख्य वर्ग के कुछ विभाग इस विधि के द्वारा बनाये जाते हैं। इस विधि से विभाग रचना में व्यवस्था रहती है तथा नवनिर्मित विषयों को सुलभता से वर्गांक दिए जा सकते हैं :

अ) अर्थशास्त्र Economics	X
उद्योग	X8 (A)
कृषि उद्योग	X8 (J)
इस्पात उद्योग	X8 (F182)
ब) यान्त्रिकी Engineering	D
अन्य यन्त्र	D6,8 (A)
मुद्रण यन्त्र	D6,8 (M14)
वस्त्र बुनने का यन्त्र	D6,8 (M7)

इस विधि के प्रसंग में यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि विशिष्ट विषय के अंकों को गोल कोष्ठक (round bracket) में रखा जाता है।

द्विबिन्दु पद्धति में इस प्रकार वर्गाचार्य ने भौगोलिक विधि, कालक्रम विधि तथा विषय विधि द्वारा विशिष्ट विषयों के लिए वर्गांकों का निर्माण करने के लिए वर्गकार को स्वतन्त्रता प्रदान की है। इसी कारण मुख्य वर्ग की अनुसूचियों में आवश्यक स्थानों पर निम्न निर्देश दिए हैं :

भौगोलिक विधि से प्राप्त करें	To be got by	(GD)
कालक्रम विधि से प्राप्त करें	To be got by	(CD)
विषय विधि से प्राप्त करें	To be got by	(SD)

4. **अध्यारोपण विधि** (Superimposition Device) : किसी विषय के एक ही पक्ष में से दो एकलों का सम्बन्ध इस विधि द्वारा दिखाया जाता है। यह सम्बन्ध केवल पारस्परिक स्पष्टीकरण (Mutual Denundation) के स्वरूप का होता है। एक ही पक्ष के दो एकलों का संयोग छोटी आड़ी रेखा "–" से दिखाया जाता है। दो एकलों में से एक प्रधान एवं दूसरा गौण रहता है। जो प्रधान है वह पहले एवं गौण बाद में लिखा जाता है। यह विषय का अर्थ लगाने पर निर्भर है। उदाहरणार्थ:

चिकित्सा Medicine	L
हाथों की नसें	L167–36
(यहाँ 167 हाथ तथा 36 नसों के लिए है)	
नसों के कोषाणु	L11–36
(यहाँ 11 कोषाणु तथा 36 नसों के लिए है)	
छाती की हड्डियाँ	L15–82
(यहाँ 15 छाती तथा 82 हड्डियों के लिए है)	

5 **वर्णक्रम विधि** (Alphabetical Device) : जब अन्य किसी विधि से वर्गांक निर्मित करना कठिन होता है तथा विषय के केन्द्र बिन्दुओं को अधिक सूक्ष्म करने की आवश्यकता होती है, तब इस विधि का प्रयोग किया जाता है। दूसरे शब्दों में, इस विधि का प्रयोग अत्यन्त आवश्यकता पड़ने पर ही किया जाता है।

सामान्यतः व्यक्तिवाचक संज्ञाओं, व्यापारी संस्थाओं तथा विविध वस्तुओं के नामों का निर्देश वर्गांक में करने के लिए इस विधि का प्रयोग किया जाता है :

अ)	कृषि Agriculture	J
	चावल	J381
	बासुमति चावल	J381 B
ब)	यान्त्रिकी Engineering	D
	साइकिल	D5125
	हिन्द साइकिल	D5125H
	रेले साइकिल	D5125R

अनुसूचियों में जहाँ आवश्यक है वहाँ वर्णक्रम विधि से विभाजित करने (Divided by AD) का निर्देश दिया गया है ।

ग्रन्थांक (Book Number):

किसी ग्रन्थालय में एक ही वर्गांक की अनेक पुस्तकें एकत्रित हो जाने पर उनको फलकों पर व्यवस्थित करने में कठिनाई होती है । समान वर्गांक होने के कारण उनकी भिन्नता को स्पष्ट नहीं किया जा सकता । इस समस्या को हल करने के लिए ग्रन्थांक की व्यवस्था की गई है । ग्रन्थ के एक समान वर्ग में अन्य ग्रन्थों के साथ किसी ग्रन्थ का स्थान निर्धारित करने वाले अंकन को ग्रन्थांक कहते हैं । समान वर्गांक के अन्तर्गत ग्रन्थों में इसके द्वारा पृथक्करण किया जा सकता है ।

अमेरिका के सुविख्यात ग्रन्थपाल चार्ल्स ए० कटर ने ग्रन्थांक के लिए नामावली की एक विस्तृत तालिका निर्मित की है । इसमें कुल नामों के प्रथम तीन अक्षर समाविष्ट हैं । परन्तु कटर की यह व्यवस्था अपूर्ण है । उसके द्वारा ग्रन्थ के खण्ड, प्रतियाँ, भाषाएँ आदि विषयक भिन्नता को स्पष्ट नहीं किया जा सकता ।

डॉ० रंगनाथन ने ग्रन्थांक के विषय में सूक्ष्म विचार किया तथा इसे द्विबिन्दु पद्धति में महत्वपूर्ण स्थान दिया । आपने नौ प्रकार के विशिष्ट वाह्य रूप निश्चित कर उनको ग्रन्थांक में प्रस्तुत किया तथा इसके लिए एक पक्ष उपनियम बनाया :

[L] [F] [Y] [A] . [V]—[S] : [E] [EA] ; [C]

इनमें प्रकाशन वर्ष अंक विशेष महत्वपूर्ण है तथा सम्पूर्ण पक्षों का प्रयोग उसके पहले या उसके बाद में किया जाता है । उपनियम में दिये गए समस्त अंकन को ग्रन्थांक में देने की आवश्यकता नहीं होती । भिन्नता स्पष्ट करने के लिए आवश्यक अंकन ही उसमें समाविष्ट किए जाते हैं । परन्तु उनका प्रयोग निश्चित क्रम के अनुसार किया जाना चाहिए । उदाहरण देकर इसे स्पष्ट किया जा सकता है :

[L] भाषांक Language Number

Y73 (P1) : 1	111K8
आर्य संस्कृति	आंग्ल भाषा में, 1968 में प्रकाशित ग्रन्थ
015,2D40,1 : g	152K0
कालिदास का शाकुन्तल	हिन्दी भाषा में मूल्यांकन, 1960 में प्रकाशित

[F] रूप अंक Form Number

V44'N68←N57 fK9

Pictorial History of India (1957 to 1968) Published in 1969

2:55 qK7

Classified Catalogue Code Published in 1967

[Y] वर्षांक Year Number

ग्रन्थ के प्रकाशन वर्ष का अनुवाद काल-सारिणी से कर वर्षांक बनाया जाता है।

T4.44 J8

University Education in India Published in 1958

213:7 K5

Reference Service in National Libraries Published in 1965

[A] ग्रन्थ परिग्रहण क्रमांक Accession Part of Book Number

एक ही विषय पर एक वर्ष में एक ही भाषा में कभी-कभी अनेक ग्रन्थ प्रकाशित होते हैं। ऐसे ग्रन्थों का पृथक्करण करने के लिए ग्रन्थों पर वर्षांक के बाद परिग्रहण क्रमांक का प्रयोग किया जा सकता हैं :

R6 152K6

हिन्दू दर्शन पर हिन्दी भाषा में 1966 में प्रकाशित

ग्रन्थालय में परिग्रहण किया प्रथम ग्रन्थ

R6 152K61 ,, ,, द्वितीय ग्रन्थ

R6 152K62 ,, ,, तृतीय ग्रन्थ

[V] खण्ड अंक Volume Number

पृथक्-पृथक् समय पर एक ही ग्रन्थ के अनेक खण्ड प्रकाशित होने पर ग्रन्थांक में खण्ड अंक का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए बिन्दु (.) का योजक चिह्न निश्चित किया गया है :

Tv44 J8.1

History of Education in India Volume 1 Published in 1958

Tv44 J8.2

History of Education in india Volume 2 Published in 1960

जिस वर्ष में प्रथम खण्ड प्रकाशित होता है, वही प्रकाशन वर्ष सभी खण्डों के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

[S] परिशिष्ट अंक Supplement Number

प्रकाशित ग्रन्थ के पश्चात् जब उसका परिशिष्ट प्रकाशित होता है, तब यह परिशिष्ट सम्बन्धित ग्रन्थ के साथ व्यवस्थित करने के लिए परिशिष्टांक का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए (—) योजक चिह्न निश्चित किया गया है :

215:8 K8
Administration of State Libraries Published in 1968
215:8 K8--1
Administration of State Libraries Published in 1969
First Supplement

[E] मूल्यांकन अंक Evaluation Number

R65,6 Jl
भागवद्गीता 1951 में प्रकाशित
R65,6 Jl:g
भागवद्गीता का मूल्यांकन ,,

[C] प्रति अंक Copy Number

Elements of Library Classification				Published in 1964
2:51	K4;1	,,	,,	Second copy
2:51	K4;2	,,	,,	Third copy

समीक्षा (Evaluation) :

डॉ० रंगनाथन ने वैश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति का निर्माण कर उसका नाम द्विबिन्दु वर्गीकरण रखा। इस पद्धति के अन्तर्गत मूल पदों की अनुसूचियों की सहायता से निर्धारित नियमों एवं उपनियमों के अनुसार वर्गांकों का निर्माण किया जाता है। इसी कारण यह समस्त प्रचलित परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धतियों से पूर्णतया नवीन पद्धति है। ग्रन्थालय विज्ञान के क्षेत्र में इस पद्धति को डॉ० रंगनाथन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कृति माना गया है। एक अनूठी वर्गीकरण पद्धति होने के नाते द्विबिन्दु पद्धति पर विश्व के अनेक ख्यातिप्राप्त विद्वानों ने अपने मत व्यक्त किए हैं :

विकरी (बी० सी०)

"बीसवीं सदी में वर्गीकरण के सैद्धान्तिक विकास को डॉ० रंगनाथन ने अत्यन्त स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया है तथा ज्ञान के सामान्य आकार पर लगभग उचित रीति से ध्यान केन्द्रित किया है। उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि ज्ञान-जगत अर्थात् वर्गीकरण में सम्बन्धित विशिष्ट विषयों की संख्या अनन्त है; किन्हीं भी दो विषयों के मध्य नवीन विषयों का अन्तर्न्यास किया जा सकता है। ज्ञान बहुधातीय है...... तथा सामान्यतः प्रत्येक विषय अनेक बहु-सम्बन्धित धारणाओं का संश्लेषण है।"

"रंगनाथन ने ऐसी पद्धति का निर्माण किया, जिसमें प्रारम्भिक धारणाओं के संश्लेषण द्वारा मिश्रित विषयों को निर्मित किया जा सकता है। इस प्रकार के संश्लेषण

को क्रमिक अंकों की व्यवस्था द्वारा व्यक्त करने के लिए अंकन विधियों का प्रतिपादन उनका अत्यन्त मौलिक कार्य है।...रंगनाथन से सत्वों (मूर्त अथवा अमूर्त अस्तित्व) के 'जगत' (Universe) से प्रारम्भ किया। प्रत्येक सत्व में अनेक गुण हैं तथा जगत को समूहों अथवा वर्गों में विभाजित करने के लिए इनमें से कुछ को विशेषताओं के रूप में रखा जा सकता है।......इस प्रकार व्युत्पन्न वर्गों को कुछ प्रमाणित सिद्धांतों के अनुसार पंक्ति में सहायक क्रम प्रदान किया जा सकता है।......इस प्रकार व्यवस्थित प्रत्येक वर्ग स्वयं में अतिरिक्त जगत है, जिसका अन्य विशेषता द्वारा विभाजन किया जा सकता है। विभिन्न विशेषताओं द्वारा क्रमबद्ध विभाजन से वर्गों की शृंखला का निर्माण होता है।......इस प्रकार का विकास निरन्तर होता रहता है।"

"रंगनाथन के अनेक प्रस्ताव स्वस्थ वायु की भाँति प्रकट हुए, जिसने वर्गीकरण को विचारों की कठोरता से मुक्त किया तथा नवीन, एवं नम्य विधियों के निर्माण में मार्गदर्शन दिया, जिसमें वर्गीकृत विषय के जटिल सम्बन्धों को सम्बद्ध करने की क्षमता है। तथापि, उनके विचारों का आलोचनात्मक परीक्षण आवश्यक है...... विशेषतया उनके द्वारा मल "श्रेणियों" का प्रतिबन्धित प्रयोग तथा परम्परागत विषयों का मुख्य वर्गों के रूप में निरन्तर प्रयोग।"

पामर (बी० आई०)

"दी लायब्रेरी वर्ल्ड" (वर्ष 51, 1949) में प्रकाशित लेख 'ए शार्ट इन्ट्रोडक्शन टू कोलन' में पामर ने यह अस्वीकार किया है कि वे द्विबिन्दु पद्धति को "समस्त पद्धतियों को समाप्त करने वाली पद्धति" मानते हैं। उनका मत था कि "द्विबिन्दु एक अत्यन्त रोचक पद्धति है, क्योंकि व्यवस्थित संश्लेषण के सिद्धांत को सर्वप्रथम इसी में अपनाया गया है तथा उससे व्युत्पन्न वर्गीकरण के सिद्धान्तों ने अभी तक के सिद्धान्तों की सीमा को पार कर लिया है। यह एक ऐसी पद्धति है जिसका भविष्य है ....इसलिए नहीं कि इसके व्यापक प्रयोग की संभावना है; बल्कि इसलिए कि यह किसी भी भावी पद्धतियों का अंकुर होगी, जिसमें प्रतिदिन विकसित होने वाले ज्ञान को समावेश करने की क्षमता होगी।"

"कुछ विषयों में द्विबिन्दु अद्वितीय है (विशेषरूप से गणित, विज्ञान एवं चिकित्सा); किन्तु अन्य विषयों में पक्षों की व्यवस्था केवल प्रारम्भिक स्तर पर है (उदाहरणार्थ यान्त्रिकी)।"

हैंकिन (डेविड जे०)

"ग्रन्थालय-विज्ञान को व्यवस्थित एवं तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने में डॉ० रंगनाथन का स्थान अन्यों से महत्वपूर्ण है। "फाइव लाज ऑफ लायब्रेरी सायंस (1931), कोलन क्लासिफिकेशन (1933), क्लासीफाइड केटेलॉग कोड (1934), प्रोलेगोमेना टू लायब्रेरी क्लासिफिकेशन (1937) एवं थ्योरी ऑफ लायब्रेरी केटेलॉग (1938) आदि ग्रन्थों से इसकी प्रामाणिकता सिद्ध होती है।"

शेरा (जे० एच०)

द्विबिन्दु वर्गीकरण के तृतीय संस्करण (1948) की समीक्षा में शेरा ने मत प्रकट किया था कि "अतलान्तिक महासागर के इस ओर द्विबिन्दु पद्धति का संदेह की

दृष्टि से परीक्षण किया जाता है, इससे इसके गुण अत्यधिक अन्धकारमय स्थिति में हो गए हैं।......इस पद्धति की दार्शनिक जागृति हमारे सिद्धान्तों से इस मत में भिन्न है कि ग्रन्थालय वर्गीकरण का स्वरूप क्या होना चाहिए......; इसमें व्यवस्थित अनुसूचियों का समावेश है (जिसमें विषयों की अनुसूचियाँ प्रमुख हैं), जिनको असीमित समूहों के निर्माण हेतु जोड़ा जा सकता है; जबकि दशमलव एवं लायब्रेरी ऑफ काँग्रेस की अनुसूचियाँ पदों की परम्परागत व्यवस्था हैं।''

सेयर्स (डब्ल्यू सी बरविक)

सेयर्स का कथन है कि लेखक की कृतियों का अध्ययन करना ही द्विबिन्दु वर्गीकरण को समझने की सर्वोत्तम रीति है।

''द्विबिन्दु पद्धति, विशेषतया उससे सम्बन्धित विश्लेषण एवं संश्लेषण सम्बन्धी विधियों ने आधुनिक वर्गीकरण अध्ययन को अत्यधिक प्रभावित किया है।......... इसमें महत्वपूर्ण विचारों को प्रस्तुत किया गया है, जिसमें से अष्टक-विधि (**Octave Device**) अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है तथा इसको **FID** द्वारा सार्वभौम वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त करने के लिए अंगीकृत किया गया है।......वास्तव में एक साधारण व्यक्ति विधियों को पद्धति से अधिक महत्त्वपूर्ण समझता है।''

ब्लिस (हेनरी ई)

द्विबिन्दु वर्गीकरण का ''प्रमुख सिद्धान्त जटिल अथवा मिश्रित वर्गीकरण है। ......यह सिद्धान्त इस पद्धति में मौलिक से भी अधिक है; यह व्यापक है।...... द्विबिन्दु वर्गीकरण की महत्ता न द्विबिन्दु में है न वर्गीकरण में है; किन्तु दो अथवा अधिक विशेषताओं के जटिल विषयों के विस्तृत विवरण में तथा समय-समय पर होने वाले उपविभाजन के लिए व्यवस्थित एवं संश्लेषित मिश्रित वर्गीकरण के प्रमाणित सिद्धान्तों के दृष्टान्त में है। तथापि, यह पद्धति व्यवस्थित विधियों का प्रयोग सीमित करने में असफल रही है तथा इसका जटिल आभासी-स्मृति सहायक अंकन (**Pseudomnemonic notation**) ग्रन्थात्मक वर्गीकरण के लिए अधिक भारस्वरूप हो गया है। इतना होने पर भी यह कहना उचित है कि लेखक का पाण्डित्य, परिश्रम अन्तर्दृष्टि एवं प्रतिभा वास्तव में प्रशंसनीय है। ग्रन्थात्मक वर्गीकरण के रचनात्मक, विकास में अभिरुचि रखने वाले विद्वानों द्वारा इस पद्धति का अध्ययन अवश्य किया जाना चाहिए।''

''इस पद्धति का निर्माण प्रामाणिक सिद्धान्तों तथा मुख्य वर्गों के समान क्रम पर आधारित है। मूलभूत वर्गीकरण अपने विभागों में तार्किक है, विवरण में वैज्ञानिक है, तथा विस्तार में पाण्डित्यपूर्ण है। यह पद्धति, वास्तव में, एशियाई संग्रह के लिए विशेष रूप से उपयोगी है।''

मेटकाफ (जॉन)

मेटकाफ ने डॉ॰ रंगनाथन के सिद्धान्तों के विषय में आलोचनात्मक रूप से लिखा है। उसका कथन है कि ''रंगनाथन के व्यक्तित्व को दो विशेषणों, प्रतिभावान एवं सरल, में रखा जा सकता है। उनमें आत्मविद्या सम्बन्धी सिद्धान्त इतने मिलजुल

गए हैं कि उनकी आत्मविद्या पर विचार किए बिना उनसे विचार-विमर्श करना सम्भव नहीं है।.........किन्तु ग्रेट ब्रिटेन के विशेष ग्रन्थालयों में रंगनाथन का अनालोचनात्मक अनुसरण नहीं होते हुए भी उनका प्रभाव अवश्य है।"

2 ग्रन्थ वर्गीकरण
(Bibliographic Classification)

हेनरी एव्लिन ब्लिस (Henry Evelyn Bliss) द्वारा निर्मित ग्रन्थ वर्गीकरण पद्धति अमेरिका की सबसे आधुनिक पद्धति है। ब्लिस ने अपनी दो पुस्तकों के आधार पर इस पद्धति का निर्माण किया। इस पद्धति का प्रयोग सामान्य अथवा विशेष (विषय) ग्रन्थ सूचियों में करने के कारण इसे ग्रन्थ वर्गीकरण कहा जाता है। ज्ञान के संगठन तथा प्रलेखन के अनेक क्षेत्रों से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की विशिष्ट ग्रन्थ सामग्री में भी इसका प्रयोग किया जाता है; किन्तु प्रधानतः इसको ग्रन्थालयों में ग्रन्थों एवं विषय-प्रसूचियों के वर्गीकरण के लिए प्रयुक्त किया जाता है। ब्लिस ने ग्रन्थ वर्गीकरण एवं ज्ञान वर्गीकरण के मध्य स्थित सम्बन्ध पर विशेष महत्त्व दिया। उनका कथन था कि ग्रन्थ वर्गों से तात्पर्य ग्रन्थों, प्रलेखों अथवा अन्य ग्रन्थ सामग्री से है तथा विषयों से तात्पर्य विषय अथवा विषयवस्तु तथा ज्ञान एवं विचार की शाखाओं से है। इस प्रकार ग्रन्थ सामग्री का वर्गीकरण ग्रन्थ विषयों का वर्गीकरण है। संक्षेप में, ग्रन्थ वर्गीकरण वस्तुतः ज्ञान एवं विचार का वर्गीकरण है। विपरीत क्रम से, ज्ञान वर्गीकरण ग्रन्थ वर्गीकरण के हेतु उपलब्ध है। ब्लिस ने ग्रन्थ वर्गीकरण अध्ययन हेतु वैज्ञानिक, दार्शनिक एवं तार्किक आधार एकत्रित किया।

प्रारम्भिक जीवन (Early Life) :

हेनरी एव्लिन ब्लिस (1870--1955) का जन्म 29 जनवरी 1870 को न्यूयॉर्क नगर में हुआ था। न्यूयॉर्क सिटी कॉलिज में शिक्षा प्राप्त कर ब्लिस उसी कॉलिज में 1891 में ग्रन्थपाल नियुक्त किए गए तथा 1940 में सेवा निवृत्त होने के समय तक इसी कॉलिज में कार्यरत रहे। ब्लिस का जीवन प्रभावशाली न होते हुए भी यहाँ यह स्पष्ट करना उचित है कि वे सदैव साहित्यिक एवं वैज्ञानिक तथ्यों की खोज में व्यस्त रहे। उन्होंने अपने ग्रन्थों में वर्गीकरण के सिद्धान्तों को निर्दिष्ट किया, उनकी व्याख्या की तथा उनको विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया। ये पाँच सिद्धान्त :

अधीनता	(Subordination)
क्रमबद्धता	(Collocation)
सूत्र सम्बन्धी निपुणता	(Maximal Efficiency)
वर्गीकरण की सापेक्षिकता	(Relativity of Classification)
विकल्प स्थान	(Alternative Location)

प्रस्तावित ग्रन्थ वर्गीकरण के आधार हैं।

ग्रन्थ वर्गीकरण पद्धति की प्रथम रूपरेखा 1910 में "लायब्रेरी जर्नल" में प्रकाशित हुई थी। "दी ऑर्गनाइजेशन ऑफ नॉलेज एण्ड दी सिस्टम ऑफ दी सायंस" नामक प्रथम पुस्तक 1929 में प्रकाशित हुई। छः वर्ष बाद संक्षिप्त रूप में "सिस्टम

ऑफ बिब्लियोग्राफिक क्लासिफिकेशन" प्रकाशित की गई यद्यपि वर्गीकरण को संक्षिप्त रूप में प्रकाशित करने की योजना 1913 में ही बना ली गई थी; तथापि प्रथम विश्वयुद्ध (1914–18) ने इस प्रकार की ग्रन्थ-वर्गीकरण की योजना को विलम्बित कर दिया। इस प्रकार प्रथम रूपरेखा के विकास की अवधि लगभग पच्चीस वर्ष हो गई तथा 1935 में यह पद्धति प्रकाशित की जा सकी। मुख्य वर्गों, विभागों एवं सहायक सूचियों सहित इस पद्धति का द्वितीय संस्करण 1930 में प्रकाशित हुआ था। इस पद्धति का विस्तृत संस्करण चार खण्डों में 1940 एवं 1953 के मध्य प्रकाशित किया गया था।

प्रथम खण्ड—प्रस्तावना, पूर्ववर्ती सारणी तथा व्यवस्थित अनुसूचियाँ एवं वर्ग **A–G** 1940

द्वितीय खंड—वर्ग **H–K** मानवशास्त्र, प्रस्तावना एवं अनुक्रमणी सहित 1947

तृतीय खण्ड— वर्ग **L–Z** विशेष मानवशास्त्र, जनता एवं राष्ट्रों का इतिहास, धर्म, नीतिशास्त्र एवं विशेष सामाजिक अध्ययन, भाषा एवं साहित्य ग्रन्थ सूची एवं ग्रन्थालय 1953

चतुर्थ खण्ड—सामान्य अनुक्रमणी, खण्ड प्रथम, द्वितीय, तृतीय सम्मिलित 1953

मुख्य वर्गों की रूपरेखा (Outline of Main Classes) :

ब्लिस ने समस्त मुख्य वर्गों को निम्न संक्षिप्त रूपरेखा पर आधारित-किया है।

दर्शन (Philosophy), विज्ञान (Science), इतिहास (History) तथा शिल्प-कला एवं कलाएँ (Technology and Arts)।

ब्लिस महोदय ने 1 से 9 तक के अंकों का प्रयोग कर बाह्य संख्यक वर्गों (Anterior Numeral Classes) का निर्माण किया है, जो निम्न है :

1 वाचनालय संग्रह, मुख्यतः संदर्भ के लिए
2 ग्रन्थ सूची, ग्रन्थालय विज्ञान
3 विशेष संग्रह अथवा विशिष्ट संग्रह
4 विभागीय अथवा विशिष्ट संग्रह
5 शासन, संस्थागत अभिलेख एवं पुरालेख
6 पत्रिकाएँ (संस्थाओं के क्रमिक प्रकाशनों सहित)
7 विविध
8 संग्रह—स्थानीय ऐतिहासिक अथवा संस्थागत
9 प्राचीन ग्रन्थ अथवा ऐतिहासिक संग्रह

उपर्युक्त वर्ग अन्य पद्धतियों के सामान्य कृषि वर्ग के सदृश्य हैं। तीन वर्ग-2, 5, 6 सामान्य कृतियों को सम्मिलित करते हैं। शेष 'वर्ग' ग्रन्थों के विशेष संग्रह की व्यवस्था करते हैं, जिनको ग्रन्थपाल कुछ कारणवश ग्रन्थों के मुख्य संग्रह से पृथक् रखना चाहते हैं।

इस पद्धति में मुख्य विषय वर्गों की उत्पत्ति चार विशेष समूहों से हुई है तथा उनकी व्यवस्था निम्न प्रकार हुई है :

A दर्शन तथा सामान्य विज्ञान (तर्कशास्त्र, गणित, अन्तरिक्ष विज्ञान, सांख्यिकी सहित)

B भौतिकी (व्यावहारिक, विशिष्ट भौतिकीय शिल्पकला)

C रसायन

D ज्योतिष, भौमिकी, भूगोल

E जीवशास्त्र

F वनस्पति विज्ञान

G प्राणिकी

H नरतत्वीय विज्ञान

I मनोविज्ञान

J शिक्षा

K सामाजिक शास्त्र (समाजशास्त्र, मानवजाति शास्त्र)

L इतिहास, सामाजिक, राजनीति एवं आर्थिक, (ऐतिहासिक, राष्ट्रीय एवं जातिगत भूगोल सहित)

M योरोप

N अमेरिका

O ऑस्ट्रेलिया, एशिया, अफ्रीका

P धर्म, ईश्वर ज्ञान, नीतिशास्त्र

Q व्यावहारिक समाजशास्त्र एवं नीतिशास्त्र

R राजनीतिशास्त्र, दर्शन एवं नीतिशास्त्र

S न्यायशास्त्र एवं विधि

T अर्थशास्त्र

U कलाएँ, उपयोगी एवं औद्योगिक

V ललित कलाएँ, मनोरंजन एवं आमोद-प्रमोद

W भाषा-शास्त्र, भाषा (भारत-योरोपीय छोड़कर)

X भारत-योरोपीय भाषा-शास्त्र, भाषा एवं साहित्य

Y आंग्ल एवं अन्य भाषा एवं साहित्य

Z ग्रन्थ सूची एवं ग्रन्थालय

उपर्युक्त विशिष्ट मुख्य वर्गों का क्रम विषयों की श्रृंखला में अनुरूपता प्रदान करता है। इनका विभाजन विषय के घनिष्ठ सम्बन्ध के अनुसार उचित वर्गों में सावधानी से किया गया है। उसी सिद्धान्त के आधार पर विभागों में पुनः विभाजन करके विषयवस्तु में समन्वयन एवं अधीनता को स्थिर रखा गया है।

उदाहरण : AM–AW गणित

AM सामान्य

AN अंकगणित

AO बीजगणित

AP	समीकरण
AQ	उच्च बीजगणित

AN	अंकगणित, सामान्य
ANA	प्रामाणिक ग्रन्थ
ANB	प्रायोगिक अंकगणित
ANC	अंक
AND	दशमलव अंक

अनुसूचियाँ (Schedules) :

मुख्य वर्गों की अनुसूचियों के अतिरिक्त कुछ अतिरिक्त सारणियाँ हैं, जिन्हें व्यवस्थित सहायक सूचियाँ (**Systematic Auxiliary Schedules**) कहा जाता है। इस प्रकार की सारणियों की संख्या लगभग 46 है। वस्तुतः इनमें से केवल 1 तथा 2 अनुसूची का ही पूरी पद्धति में प्रयोग किया गया है। अनुसूची 1 में अंकों का प्रयोग किया गया है तथा ये रूप वर्गांकों के समान ही हैं।

1 संदर्भ ग्रन्थ (शब्दकोश आदि)
2 ग्रन्थ सूची
3 इतिहास
4 जीवनी (विषय से सम्बन्धित)
5 प्रलेख (मानचित्र, रिपोर्ट, बुलेटिन आदि)
6 पत्रिकाएँ
7 विविध
8 विषय का अध्ययन
9 प्राचीन अथवा अनावश्यक ग्रन्थ अथवा अन्य सामग्री

इसमें से 1, 2 एवं 6 का प्रयोग किसी भी वर्ग, खण्ड अथवा उपखण्ड में किया जा सकता है।

BOR1	बेतार-यन्त्र के पदों का शब्दकोश
BOV3	बी० बी० सी० का इतिहास
BOC8	प्रसारण की कला
BT 6	वायुयान विद्या की पत्रिका
C 2	रसायन की ग्रन्थ सूची

अनुसूची 2 भौगोलिक उपविभाजन के लिए है तथा इसमें छोटे अक्षरों का प्रयोग किया गया है।

a	अमेरिका	**b**	संयुक्त राज्य अमेरिका
aa	उत्तरी अमेरिका		
ac	कनाडा		
ad	पूर्वी कनाडा		
adu	न्यूफाउण्डलैण्ड		

अनुसूची 3 भाषानुसार उपविभाजन के लिए है तथा इसमें बड़े अक्षरों का प्रयोग (,) के बाद किया गया है।

,A	प्राचीन	,R	रूसी
,C	लेटिन	,W	चीनी
,F	फ्रेंच	,Y	जापानी
,I	इटैलियन		

अनुसूची 4 में कालक्रमानुसार उपविभाजन किया गया है तथा इसका प्रयोग इतिहास वर्ग तक ही सीमित है।

A	प्राचीन	N	उन्नीसवीं शताब्दी
B	मध्यकालीन	R	बीसवीं शताब्दी
C	आधुनिक		

उपर्युक्त अनुसूचियों के अतिरिक्त अन्य सूचियों की भी व्यवस्था है, किन्तु उनका प्रयोग एक वर्ग अथवा उपवर्गों तक ही सीमित है।

अंकन (Notation) :

इस पद्धति में मिश्रित अंकन का प्रयोग किया गया है। विषयों को अंग्रेजी भाषा के बड़े अक्षरों A से Z द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। साथ ही 1 से 9 अंकों को सामान्य उपविभाजन के लिए प्रयुक्त किया गया है। ब्लिस ने भौगोलिक अंकों तथा अन्य विशेष सारणी के लिए छोटे अक्षरों का भी प्रयोग किया है।

ग्रन्थ वर्गीकरण पद्धति का अंकन छोटा है तथा मितव्ययिता से किया गया है। अंकन का बँटवारा भी उत्तम है।

अनुक्रमणी (Index) :

दशमलव पद्धति की भाँति इस पद्धति की अनुक्रमणी सापेक्षिक है। इसमें लगभग 45,000 प्रविष्टियों को संग्रहीत किया गया है तथा इसमें व्यक्तियों के नामों, स्थानों एवं विषयों का उल्लेख किया गया है। इस कारण यह अत्यधिक विस्तृत है।

समीक्षा (Evaluation) :

ब्लिस की ग्रन्थ वर्गीकरण पद्धति अत्यन्त नम्य पद्धति है। इस पद्धति में विषयों का सूक्ष्म वर्गीकरण बिना विषयों की श्रृंखला को हानि पहुँचाये किया जा सकता है। वर्गीकरण की विकल्प व्यवस्था (Alternative arrangements) इस पद्धति की असाधारण विशेषता है ? इसके द्वारा नवीन विषयों को स्थान प्राप्त करने में, किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती तथा अनेक विषयों को सम्बन्धित विषयों के साथ रखा जा सकता है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से यह पद्धति अधिक उपयुक्त एवं उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकी। ग्रंथों की अपेक्षा केवल आलेखों के सारांशीकरण एवं उनके वर्गीकरण के लिए ही इस पद्धति का प्रयोग किया जा सकता है।

इस पद्धति का प्रयोग केवल न्यूयॉर्क सिटी के कॉलिज ग्रन्थालय में ही किया जा रहा है, जहाँ ब्लिस ने इसको सर्वप्रथम प्रयुक्त किया था। सामान्य रूप से इस पद्धति का प्रयोग अमेरिका में नहीं किया है।

अष्टम अध्याय

ग्रन्थालय वर्गीकरण के मूलतत्त्व

(Elements of Library Classification)

1 अंकन

(Notation)

ग्रन्थालय-विज्ञान का आधार वर्गीकरण है तथा व्यावहारिक ग्रन्थ वर्गीकरण का आधार अंकन है। ''अंकन के अभाव में ग्रन्थों का वर्गीकरण करना असम्भव है। सेयर्स के अनुसार'' जिस समय वर्गीकरण के अन्तर्गत 'सामान्य' (Generalia) तथा रूप वर्गों एवं विभाजनों (Form Classes and Divisions) को समाविष्ट किया गया, तब उसको ग्रन्थों के लिए व्यवहार्य साध्य बनाने के लिए दो सहायक वस्तुओं की आवश्यकता हुई। ये दो वस्तुएँ अंकन तथा अनुक्रमणी थीं, इसमें से अधिक महत्त्वपूर्ण अंकन था। ''इस प्रकार अंकन वर्गीकरण के लिए अत्यन्त आवश्यक है। ग्रन्थों में वर्णित विशिष्ट विषय के नाम की प्राकृतिक भाषा से वर्गीकरण की कृत्रिम भाषा में अनुवाद करना अनिवार्य है। इस कृत्रिम भाषा का निर्माण अंकन द्वारा ही किया जाता है।''

सेयर्स का मत है कि ''इंगलैण्ड एवं अमेरिका दोनों स्थानों के समीक्षक अंकन एवं वर्गीकरण में भेद करने में असफल रहे हैं।.........पूर्णतया वर्गीकरण के दृष्टिकोण से मुख्य वर्गों की संख्या अथवा न्यनत्व का कोई महत्त्व नहीं है। वर्गकार अपने समक्ष पूर्व निर्धारित क्रम के अनुसार ज्ञान का पूरा क्षेत्र फैला लेता है।...... इसके बाद वह यह निर्धारित करता है कि कुछ संकेतों से उसको मानचित्रों की बाधाएँ दूर करने में सहायता प्राप्त हो सकती है। इन संकेतों को वह मुख्य वर्ग की संज्ञा देता है। किन्तु तीन अथवा तीस संकेतों से उसके मानचित्र के क्रम में कोई परिवर्तन नहीं होता। मुख्य वर्ग केवल क्षेत्र के निश्चित भाग को प्रकट करने वाला प्रदर्शक है। अंकन के दृष्टिकोण से मुख्य वर्गों की संख्या महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि अंकन चिह्नों की संख्या के विपरीत अनुपात में बढ़ती है।''

अंकन की परिभाषा : किसी वर्ग, उपवर्ग, विभाग अथवा उपविभाग का प्रतिनिधित्व करने के लिए अंकन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। अनेक विद्वानों ने अंकन की परिभाषा की है :

"अंकन प्रत्येक वर्ग के लिए वास्तव में एक संक्षिप्त शब्द है, किन्तु जो केवल विभागों की अपेक्षा उसके क्रम का तथा केवल कृत्रिम क्रम की अपेक्षा तार्किक क्रम का भी प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ तक कि उसकी अभिव्यक्ति सम्भव है।"—(रिचार्डसन)

"अंकन पदों को निर्दिष्ट करने में प्रयुक्त किसी क्रम में व्यवस्थित अंक अथवा चिह्न को अंकन कहा जाता है।" —(ब्लिस)

"वर्गों अथवा उसके उप विभागों के लिए निर्धारित चिह्नों को उस पद्धति का अंकन कहा जाता है।" —(माग्रेट मन)

"वर्गीकरण में पदों के लिए निर्धारित चिह्नों की शृंखला अथवा सांकेतिक चिह्नों को अंकन कहा जाता है ।......अंकन अपनी व्यवस्था द्वारा वर्गीकरण की व्यवस्था को प्रदर्शित करता है।" —(सेयर्स)

"अंकन यांत्रिक व्यवस्था के लिए एक विधि है तथा इसका निर्माण निर्धारित क्रम में लिखित चिह्नों द्वारा किया जाना चाहिए।" —(पॉमर एण्ड वेल्स)

"किसी वर्ग अथवा वर्ग के विभाजन अथवा उपविभाजन के नामों के लिए निर्धारित चिह्नों की शृंखला को अंकन कहा जाता है। अंकन वर्गीकरण की व्यवस्था की ओर संकेत करने का सुगम साधन है।" —(फिलिप्स)

"एक वर्गीकरण पद्धति में वर्गों का प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रयुक्त क्रमिक अंकों की व्यवस्था को अंकन कहा जाता है।" —(रंगनाथन)

उपर्युक्त भाषाओं से यह स्पष्ट है कि अंकन एक कृत्रिम भाषा है। इसका निर्माण वैज्ञानिक ढंग से विस्तार में किया जाना चाहिए, जिससे प्राकृतिक भाषा के मूल पदों का अनुवाद सरलता से किया जा सके।

अंकन के प्रकार : व्यापक रूप से अंकन के दो प्रकार हैं :

प्रथम, शुद्ध अंकन **Pure Notation**

द्वितीय, मिश्रित अंकन **Mixed Notation**

प्रथम, शुद्ध अंकन—एक ही प्रकार के चिह्नों का प्रयोग करने पर शुद्ध अंकन का निर्माण होता है। उदाहरणार्थ :

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

अथवा

A B C D E F.........X Y Z

शुद्ध अंकन का प्रयोग सर्वप्रथम मेलविल ड्यूई ने अपनी दशमलव पद्धति में किया था। उसने केवल संख्याओं का प्रयोग किया था। कटर ने अपनी विस्तारशील पद्धति में केवल अक्षरों को प्रयुक्त किया था। सेयर्स ने तो शुद्ध अंकन का सूत्र निर्धारित किया। तथापि शीघ्र ही यह अनुभव किया गया कि शुद्ध अंकन का प्रयोग अधिक सफल नहीं है।

द्वितीय, मिश्रित अंकन—दो या दो से अधिक प्रकार के चिह्नों का प्रयोग करने पर मिश्रित अंकन का निर्माण होता है। उदाहरणार्थ :

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0 तथा

A B C D E F.........X Y Z तथा

; ; : . !

a b c d e f..........x y z आदि

रिचार्डसन ने मिश्रित अंकन व्यवस्था को विशेष महत्त्व दिया, जिसके अन्तर्गत संख्याओं एवं अक्षरों, दोनों का ही प्रयोग किया जा सके। ब्लिस ने भी यह सुझाव दिया कि अंकन में आवश्यकतानुसार संख्याओं एवं अक्षरों को सम्मिलित करना चाहिए। रिचार्डसन एवं ब्लिस द्वारा व्यक्त सुझावों के फलस्वरूप सेयर्स भी मिश्रित अंकन के समर्थक बन गए। रिचार्डसन ने तो यह भविष्यवाणी की कि प्रत्येक व्यावहारिक पद्धति को किसी न किसी समय मिश्रित अंकन ग्रहण करना पड़ेगा।

डॉ० रंगनाथन ने अपनी द्विबिन्दु पद्धति में विभिन्न प्रकार के चिह्नों का प्रयोग कर मिश्रित अंकन का सूत्र प्रतिपादित किया। वास्तव में, ज्ञान के क्षेत्र में सक्रिय वृद्धि के फलस्वरूप मिश्रित अंकन आवश्यक हो गया। शुद्ध अंकन की धारणा अब केवल एक ऐतिहासिक महत्त्व की वस्तु एवं मिश्रित अंकन के पूर्वज के रूप में ही शेष है। शुद्ध अंकन की मुख्य समर्थक दशमलव पद्धति में भी अब अक्षरों का प्रयोग किया जाने लगा है।

डॉ० रंगनाथन ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि "वर्गीकृत ज्ञान सीमित होने तथा अंकन की योजना बनाने से पहले समस्त सत्व ज्ञात होने पर ही शुद्ध अंकन व्यवहार्य हो सकता है।......यदि ज्ञान के सत्वों की भविष्य में ज्ञात होने की सम्भावना है तथा ज्ञान अनन्त है, तब शुद्ध अंकन असम्भव है। मिश्रित अंकन अनिवार्य है।" उन्होंने यह भी दावा किया है कि उपयुक्त स्थानों पर निर्दिष्ट अनुकूल विराम चिह्नों सहित अक्षरों अथवा अंकों की लम्बी पंक्ति अधिक स्पष्ट एवं सुविधाजनक है। विराम चिह्न नेत्रों के लिए सुखद हैं तथा वर्गांक को पर्याप्त रूप से छोटे आकार में विभाजित कर देते हैं, जिन्हें आसानी से मस्तिष्क में रखा जा सकता है।

डॉ० रंगनाथन के मतानुसार "अंकन में सर्वत्र विकसित होने की क्षमता होनी चाहिए। यह एक ऐसे वृक्ष के समान होना चाहिए; जिसकी समस्त टहनियों, शाखाओं एवं तनों पर अनन्त अंकुर बिखरे हुए हैं। इसे एक बरगद के वृक्ष के समान होना चाहिए, न कि खजूर के वृक्ष के समान। उसके आकार में किसी भी स्थान पर कठोरता नहीं होनी चाहिए।

अंकन के गुण : उत्तम एवं घटिया अंकन के मध्य तुलना करते समय ही अंकन के गुणों का प्रश्न उपस्थित होता है तथा इसका अर्थ है; वे विशेषताएँ जिनसे उत्तम वर्गीकरण पद्धति का निर्माण होता है। हम इससे इस धारणा पर पहुँचते हैं कि उत्तम वर्गीकरण पद्धति वही है, जिसमें प्रत्येक ग्रन्थ को पृथक् करना सम्भव हो। यह उसी समय सम्भव है, जब अंकन इतना संग्राहक हो कि ज्ञान की प्रत्येक शाखोपशाखा को समान पद प्रदान कर सके। अंकन को संग्राहक बनाने वाली विशेषताएँ ही अंकन के गुण हैं।

सेयर्स के मतानुसार अंकन के निम्न गुण हैं :

1 संक्षिप्तता **Brevity**
2 सरलता **Simplicity**

3 नम्यता Flexibility

4 स्मरणशीलता Mnemonic

अंकन के अन्य गुण निम्न हैं :

1 यह लिखने में सरल होना चाहिए ।

2 यह याद रखने में सरल होना चाहिएं ।

3 इसका अत्यधिक सामान्य रूप से प्रयोग होना चाहिए ।

4 यह बोलने में सरल होना चाहिए ।

डॉ० रंगनाथन ने अंकन में निम्न गुणों को आवश्यक माना है :

1 इसे पंक्ति एवं श्रृंखला में नवीन विषयों को ग्राह्य करना चाहिए ।

2 इसमें संश्लेषण सम्भव होना चाहिए ।

3 उसकी अभिव्यंजकता बनी रहनी चाहिए ।

4 अंकन की लम्बाई प्रतिनिधित्व वर्ग की सूक्ष्मता से सापेक्षिक होनी चाहिए; तथा

5 इसे अपनी बनावट में स्मरणशील होना चाहिए :

इस प्रकार अंकन के मुख्य गुण नम्यता एवं स्मरणशीलता है । ज्ञान क्षेत्र का निरन्तर विकास होता रहता है । प्रायः ज्ञान के नवीन दृष्टिकोण से ग्रन्थ लिखे जाते हैं । इन ग्रन्थों को समाविष्ट करने के लिए प्रत्येक सारिणी में विस्तार की आवश्यकता पड़ती है । अंकन की नम्यता द्वारा ही क्रम को अव्यवस्थित किए बिना ही नवीन विषयों को सारिणी में स्व-सम्बन्धित स्थान पर समाविष्ट किया जा सकता है ।

अंकन की बनावट : अंकन का निर्माण अंकों से होता है । अंकन में प्रत्येक चिह्न अंक होता है । अंकन में अंकों की संख्या उसका आधार होता है । डॉ० रंगनाथन के अनुसार अंकों की व्यवस्था निम्न प्रकार की जा सकती है :

1 अंकों को एक सीधी रेखा में व्यवस्थित किया जा सकता है; इसे अंकन का रेखा आकार (Linear Structure) कहा जाता है :

015, 2D40, 1 : g

2 अंकों को एक अनुप्रस्थ सीधी रेखा में व्यवस्थित किया जा सकता है; इसे अंकन का अनुप्रस्थ आकार (Horizontal Structure) कहा जाता है । यह दो प्रकार का होता है :

(अ) अंकों के बाईं ओर से दाईं ओर अनुप्रस्थ रेखा में व्यवस्थित किया जाता है; यह दाहिनी ओर का अंकन (Right handed notation) कहलाता है :

X8 (J311).44

(ब) अंकों को दाईं ओर से बाईं ओर अनुप्रस्थ रेखा में व्यवस्थित किया जाता है; यह बाईं ओर का अंकन (Left handed notation) कहलाता है :

44. (J311)3X

3 अंकों को एक लम्बमान सीधी रेखा में व्यवस्थित किया जा सकता है; इसे अंकन का लम्बमान आकार (**Vertical Structure**) कहा जाता है। यह दो प्रकार का होता है :

(अ) नीचे की ओर लम्बमान रेखा अंकन :

X
6
2
1

(ब) ऊपर की ओर लम्बमान रेखा अंकन :

1
2
6
X

4 जब अंकों को टेढ़ी रेखा में व्यवस्थित किया जाता है, तब वह टेढ़ी-रेखा अंकन (**Curved notation**) कहलाता है :



5 जब अंकों को दो अंशों में व्यवस्थित किया जाता है, तब वह अनुविक्षेप अंकन (**Plane notation**) कहलाता है :

7345
6231

निष्कर्ष : अंकन की सरलता प्रयुक्त चिह्नों के प्रकार पर निर्भर है। दशमलव वर्गीकरण का अंकन समस्त प्रमुख पद्धतियों से सरल है। मिश्रित अंकन प्रयुक्त करने वाली अन्य पद्धतियों में विस्तारशील वर्गीकरण भी सरल है। लायब्रेरी ऑफ काँग्रेस तथा विषयात्मक वर्गीकरण पद्धतियों का अंकन भी सामान्यतः सरल है। सार्वभौम दशमलव वर्गीकरण तथा द्विबिन्दु वर्गीकरण में अंकन की सरलता यथार्थ में शून्य है।

संक्षिप्तता अंकन के आधार पर निर्भर है। अंकन का आधार जितना लम्बा अर्थात् प्रयुक्त प्रारम्भिक चिह्नों की संख्या जितनी अधिक होगी, उतना ही पद्धति का अंकन छोटा होगा। लम्बे आधार वाला मिश्रित अंकन सदैव शुद्ध अंकन से संक्षिप्त होगा। इस प्रकार अंकन की लम्बाई मुख्य वर्गों की संख्या पर निर्भर है। इसी आधार पर यह कहा जा सकता है कि विस्तारशील वर्गीकरण का अंकन दशमलव से कहीं अधिक संक्षिप्त है। दशमलव वर्गीकरण पर आधारित होने के कारण सर्वभौम

दशमलव वर्गीकरण में छोटे आधार के कारण वर्गांकों की लम्बाई अधिक है। अंकन का आधार विस्तृत होने के कारण विषयात्मक, लायब्रेरी ऑफ कॉंग्रेस, द्विबिन्दु तथा ग्रन्थात्मक वर्गीकरण पद्धतियों में अंकन की औसत लम्बाई कम है। दशमलव पद्धति में अधिक लम्बे वर्गांकों का मुख्य कारण चिह्नों एवं विषयों का अनुपयुक्त संस्थापन है।

जहाँ तक ग्राह्यता का सम्बन्ध है, दशमलव पद्धति में इसे विस्तारपूर्वक प्राप्त किया गया है। प्रत्येक मुख्य वर्गांक 0 से 9 को 0 से 9 द्वारा तथा इन्हें पुनः 0 से 9 द्वारा विभाजित किया जा सकता है। विस्तारशील एवं विषयात्मक पद्धतियों में ग्राह्यता अधिक नहीं है। अनुसूचियों में उल्लिखित विस्तृत विवरण तथा सामान्य एवं विशेष अनुसूचियों के संश्लेषण के परिणामस्वरूप सार्वभौम दशमलव पद्धति में ग्राह्यता अत्यधिक है। द्विबिन्दु वर्गीकरण में अष्टक विधि के कारण ग्राह्यता अनन्त है। इस विधि को सार्वभौम दशमलव वर्गीकरण में प्रयोग के लिए **FID** द्वारा अंगीकृत किया गया है। लायब्रेरी ऑफ कॉंग्रेस में अंकन द्वारा निवेशित ग्राह्यता नगण्य है, यद्यपि इस पद्धति के निर्माताओं ने पूर्णांक अंकन अर्थात् 1, 2, 3.........9,10,11 ......19, 20, 21 आदि का प्रयोग किया है।

अंकन का विकास : आधुनिक वर्गीकरण की उत्पत्ति केवल कल्पना मात्र से ही नहीं हुई है, न ही डॉ० रंगनाथन, विकरी आदि विद्वानों के लेखों के परिणामस्वरूप इसका उत्थान हुआ है। ज्ञान को पहिचानने एवं वर्गीकृत करने की विद्वानों की अभिलाषा के कारण ही वर्गीकरण का विकास हुआ है। वास्तव में इसका विकास ज्ञान की बहुविधि वृद्धि के समानान्तर है। विषयों को विचारने की शक्ति, निःसंदेह, डॉ० रंगनाथन की अविभक्त निष्ठा तथा वैज्ञानिक विचारधारा एवं विश्लेषण का ही परिणाम है। सम्पूर्ण विश्व के वर्गकारों ने अंकन की वर्तमान बनावट पर विचार-विमर्श किया है। इस विचार-विमर्श का परिणाम प्रशंसा एवं आलोचना दोनों ही है।

अंकन पद्धतियों के विकास को निम्न श्रेणियों में रखा जा सकता है :

1 प्राचीन युग — अंकन रहित वर्गीकरण।
2 मध्य युग — निश्चित एवं अर्ध-नम्य अंकन सहित वर्गीकरण।
3 आधुनिक युग — नम्य एवं परिवर्तन अंकन सहित वर्गीकरण।

उपर्युक्त तीनों श्रेणियों को स्पष्ट किया जा सकता है :

1 अंकन रहित वर्गीकरण : अठारहवीं शताब्दी से पूर्व ग्रन्थालय वर्गीकरण के साथ अंकन का कोई अस्तित्व नहीं था। इसके निम्न कारण थे :

(अ) विशिष्ट विषयों का विस्तार सीमित था।

(ब) ग्रन्थालय में पाठकों की संख्या सीमित थी तथा उन्हें किसी प्रकार की सुव्यवस्था की आवश्यकता नहीं थी।

(स) गणतन्त्र के सिद्धान्त, ग्रन्थ सबके लिए हैं, के महत्त्व से ग्रन्थालय एवं ग्रन्थपाल अनभिज्ञ थे।

वास्तव में इस युग में सूक्ष्म वर्गीकरण अथवा अंकन की आवश्यकता नहीं थी। इस समय केवल वर्णानुक्रमण एवं दशमलव-रहित अंकों का प्रयोग किया जाता था।

2 निश्चित एवं अर्ध-नम्य अंकन सहित वर्गीकरण : उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में गणतंत्र की धारणा अत्यधिक व्यापक हो गई थी तथा सर्वव्यापी शिक्षा के प्रसार की माँग प्रबल थी। औद्योगीकरण का लाभ भी दिखाई देने लगा था। सत्रहवीं शताब्दी में स्थापित विद्वत्-संस्थाओं ने ज्ञान का व्यापक प्रसार प्रारम्भ कर दिया था। जनसंख्या में भी वृद्धि हो रही थी तथा विश्व के विभिन्न देशों में माल्थस के सिद्धान्त को अपनाने का प्रयत्न किया जा रहा था। स्व-शासन के अवसर, औद्योगिक विकास एवं अन्य कारणों के फलस्वरूप व्यक्ति को अपने अधिकार एवं कर्तव्यों को जानना आवश्यक हो गया। इसी समय मेलविल ड्यूई ने अपने ग्रन्थालयों में ग्रन्थों को सहायक क्रम में व्यवस्थित करने की आवश्यकता को अनुभव किया तथा ग्रन्थालय वर्गीकरण को वर्णानुक्रम व्यवस्था से मुक्त करने का प्रयत्न किया। ड्यूई ने ज्ञान की शाखा एवं उपशाखाओं को अंकित करने के लिए दशमलव अंकन के प्रयोग को महत्त्व दिया तथा इसके द्वारा ग्रन्थालय में ग्रन्थों की सहायक व्यवस्था का सूत्रपात किया।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में ज्ञान का विकास अत्यधिक संचरणशील होकर गहनता की ओर अग्रसर हुआ। सूक्ष्म से सूक्ष्म विषयों से सम्बन्धित ग्रन्थों का तीव्र गति से उत्पादन होने लगा। मेलविल ड्यूई द्वारा निर्मित दशमलव वर्गीकरण पद्धति इस प्रकार के ग्रन्थों का समावेश करने में सफल नहीं हो सकी। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ग्रन्थपाल वर्गीकरण में (विशेष रूप से दशमलव वर्गीकरण में) अपना विश्वास खो बैठे थे तथा ग्रन्थों को व्यक्तित्व प्रदान करना असम्भव हो गया था।

ग्रन्थों एवं पत्रिकाओं के लेखों को सहायक क्रम प्रदान करने की आवश्यकता को पूरा करने के उद्देश्य से 1895 में सार्वभौम दशमलव वर्गीकरण का निर्माण किया गया। मुख्यतः दशमलव वर्गीकरण पर आधारित इस पद्धति में कुछ नवीन विशेषताओं को सम्मिलित किया गया। शुद्ध अंकन व्यवस्था का त्याग कर मिश्रित अंकन को अपनाया गया, ताकि ग्रंथों में वर्णित सूक्ष्म विषयों को अभिव्यक्त किया जा सके। साथ ही, एक विशिष्ट विषय के विभिन्न उप-विभागों के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करना भी आवश्यक हो गया था। इसी उद्देश्य से इस नवीन पद्धति में योजक चिह्नों एवं अनेक सहायक सूचियों का प्रयोग किया गया। वर्गीकरण पद्धति में मिश्रित अंकन का प्रयोग अनिवार्य हो गया।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से दशमलव एवं सार्वभौम दशमलव पद्धतियों का आविष्कार 'निश्चित अंकन सहित वर्गीकरण' की श्रेणी में ही रखा जा सकता है। सार्वभौम दशमलव पद्धति को, किसी सीमा तक, अर्ध-नम्य वर्गीकरण की श्रेणी में रखना उचित हो सकता है।

3 नम्य एवं परिवर्तनीय अंकन सहित वर्गीकरण : ज्ञान-जगत के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित समस्याओं को हल करने के लिए दशमलव एवं सार्वभौम दशमलव पद्धतियों द्वारा किए गए प्रयासों के समय ही यह अनुभव किया जाने लगा था कि यह पद्धतियाँ ग्रन्थों का व्यक्तित्व प्रदान करने में सफल नहीं हो सकतीं। इसी समय ग्रन्थालय वर्गीकरण को ब्लिस, रिचार्डसन, ह्यूम एवं सेयर्स आदि द्वारा वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया गया। ग्रन्थालय वर्गीकरण की अनुसूचियों के निर्माण के लिए

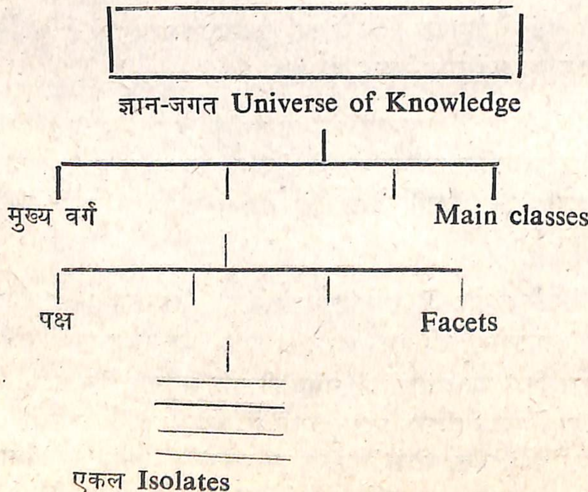
सेयर्स ने कुछ सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया। इसी समय डॉ० रंगनाथन ने ग्रन्थालय वर्गीकरण के क्षेत्र में प्रवेश किया तथा इसे पूर्णतया वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया। अध्ययन के अनेक क्षेत्रों के अन्तर्गत विभिन्न श्रेणियों का आविष्कार उनकी सबसे महत्त्वपूर्ण देन है। उन्होंने अनेक योजक चिह्नों की व्यवस्था की। अंकन में अन्तर्विषय, अन्तर्पक्ष, अन्तर-पंक्ति आदि सम्बन्धों की व्यवस्था कर अंकन को अधिक समृद्धशाली बनाया गया। पंक्ति एवं श्रृंखला में अंकन की अनन्त ग्राह्यता को प्रचलित किया गया। इन समस्त व्यवस्थाओं के फलस्वरूप ज्ञान क्षेत्र से उत्पन्न विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने में नम्य अंकन सक्षम हो गया।

इस प्रकार शनैः-शनैः वर्गीकरण में मिश्रित अंकन का प्रयोग किया जाने लगा। इसके द्वारा ग्रन्थों में वर्णित विषयों का अनुवाद किया जा सकता था। कुछ समय पश्चात् अंकन अर्द्ध-भाषा के रूप में विकसित हो गया। रंगनाथन द्वारा इसे 'क्रमिक अंकों की कृत्रिम भाषा' कहा गया।

2 पक्ष-विश्लेषण
(Facet Analysis)

सम्पूर्ण ज्ञान-जगत को तीन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है--प्रकृति विज्ञान, मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र। इन्हीं तीन क्षेत्रों से मुख्य वर्गों की उत्पत्ति होती है। समस्त मुख्य वर्गों की स्थापना परम्परा द्वारा की गई है। विभिन्न देशों में ज्ञान एवं अनुसंधान के विभागों के रूप में विद्वानों द्वारा इन मुख्य वर्गों का निर्माण किया गया था। इसी उद्देश्य के लिए ये मुख्य वर्ग आज भी विद्यमान हैं।

ज्ञान-जगत को निश्चित मुख्य वर्गों में संगठित करने के पश्चात् प्रत्येक मुख्य वर्ग के लिए पक्षों की सीमा निश्चित कर दी जाती है। मुख्य वर्ग में सम्भावित पक्षों के अन्तर्गत विषयों को रखा जाता है। प्रत्येक पक्ष में विशिष्ट विषय को एकल के रूप में सहायक क्रम में व्यवस्थित कर दिया जाता है। आवश्यकतानुसार एकलों को उप-एकलों में भी विभाजित किया जा सकता है।



डॉ० रंगनाथन ने पक्ष के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिया है, "पक्ष केवल वर्गांकों की ही विशेषता नहीं है, न ही वे प्रयुक्त वर्गीकरण पद्धति के लिए असाधारण हैं। इसके विपरीत, पक्ष, विषय में ही निहित हैं, चाहे वे हमें ज्ञात हों अथवा न हों। पक्ष विश्लेषण पर वर्गीकरण पद्धति को आधारित करने तथा वर्गांक पक्षों को उचित ढंग से व्यक्त करने पर ही विषयों को उपयोगी रूप में दर्शाया जा सकता है एवं वर्गीकरण पद्धति के अन्तर्गत इनकी व्यवस्था संसर्ग एवं सहायक क्रम में की जा सकती है। यदि वर्गांक की निर्माण विधि में प्रत्येक पक्ष को अखण्ड रखा जाय, तब यह क्रम अधिक उपयोगी हो सकता है।"

उपर्युक्त परिभाषा से यह स्पष्ट है कि ज्ञान-जगत के विभाजन की क्रिया में एक विशिष्ट स्तर पर 'पक्ष' पद का प्रयोग किया जाता है। जब ज्ञान-जगत का विभाजन मुख्य वर्गों के स्तर तक किया जाता है, तब 'पक्ष' दृष्टिगोचर नहीं होते हैं। किन्तु जब मुख्य वर्ग का विभाजन किया जाता है, तब पक्ष की धारणा दृष्टिगोचर होती है। वास्तव में पक्षों का उद्देश्य एक मुख्य वर्ग को सम्भावित दृष्टिकोणों में विभाजित करना है। एक मुख्य वर्ग निहित असंख्य सूक्ष्म विचारों अथवा सत्वों को पक्षों में संग्रहीत किया जाता है। विषयों के विभाजन के लिए प्रयुक्त विशेषताओं की सहायता से एक वर्ग के पक्षों को निर्धारित किया जाता है। एक विषय को विभाजित करने के लिए असंख्य विशेषताएँ हैं तथा एक विशेषता की सहायता से एक पक्ष की उत्पत्ति होती है।

इतना सब होने पर भी 'पक्ष' एवं 'पक्ष-विश्लेषण' पद आसान नहीं हैं। 'पक्ष विश्लेषण' पद की व्याख्या अनेक विद्वानों ने की है :

"पक्ष-विश्लेषण को विशिष्ट ग्रन्थों का विषय विश्लेषण कहा जा सकता है, जिसकी अभिव्यक्ति वर्गांकों के द्वारा की जा सकती है। विषय के लिए परिगणनात्मक अथवा वैश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण का आधार ढूंढ़ने के लिए किया गया विषय का विश्लेषण भी पक्ष-विश्लेषण कहा जाता है।" —**(मैटकॉफ)**

"विभिन्न विशेषताओं के प्रयोग द्वारा उत्पन्न पक्षों में विशिष्ट विषय के विश्लेषण को ही पक्ष-विश्लेषण कहा जाता है।" —**(पॉमर तथा वेल्स)**

"पक्ष-विश्लेषण का तात्पर्य विषय का विभिन्न पक्षों अथवा श्रेणियों में विश्लेषण करना है।" —**(फास्कट)**

"पक्ष-विश्लेषण एक मानसिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक विषय के वर्गीकरण की आधारभूत सम्भावित विशेषताओं की श्रृंखला को तथा विषय के प्रत्येक पक्ष में सम्बन्धित विशेषताओं के यथार्थ माप को निश्चित किया जा सकता है।" —**(रंगनाथन)**

वास्तव में, एक विषय के पक्षों को निश्चित करने की सम्पूर्ण प्रक्रिया को पक्ष-विश्लेषण कहा जाता है। एक विषय को विभाजित करते समय उसे विभिन्न पक्षों में पृथक् कर उनमें समस्त सम्भावित सत्वों का उल्लेख कर दिया जाता है। ग्रन्थ का वर्गीकरण करते समय उसमें निहित सत्वों एवं सम्बन्धित पक्षों की जाँच की जाती है। अधिकांश ग्रन्थों में एक पक्ष का दूसरे पक्ष के एकल एवं अन्य पक्ष के एकल के साथ सम्बन्ध रहता है। इस प्रकार के सम्बन्ध को पृथक् करने में पक्ष-विश्लेषण अत्यन्त

सहायक होता है। इसे एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। उदाहरण के लिए वर्गीकरण के तीन ग्रन्थ हैं :

(अ) सपुष्प पौध	**Flowering Plants**
(ब) पौधों का स्वाध्याय	**Ecology of Plants**
(स) सपुष्ष पौधों का स्वाध्याय	**Ecology of Flowering Plants**

इन तीनों ग्रन्थों का सम्बन्ध मुख्य वर्ग वनस्पतिशास्त्र से है। ग्रन्थ (अ) मुख्य वर्ग के एक पक्ष—पौधों के परिवार—से सम्बन्धित है। ग्रन्थ (ब) मुख्य वर्ग के अन्य पक्ष—अध्ययन की समस्याओं—से सम्बन्धित है। इन दोनों ग्रन्थों को पृथक् पक्षों के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है। परन्तु तीसरे ग्रन्थों में दो तत्त्वों—स्वाध्याय एवं सपुष्प पौधों—के सम्बन्ध का वर्णन है। यदि इस ग्रन्थ को किसी एक पक्ष के साथ रख दें, तब वह उचित वर्गीकरण नहीं है। इस समस्या का हल केवल पक्ष-विश्लेषण की धारणा से ही प्राप्त होता है, जिसके अनुसार तीनों ग्रन्थों का निम्न प्रकार वर्गीकरण किया जा सकता है :

(अ) वनस्पतिशास्त्र	+	सपुष्प पौधे	I5
(ब) वनस्पतिशास्त्र	+	पौधों का स्वाध्याय	I:5
(स) वनस्पतिशास्त्र	+	सपुष्प पौधे + पौधों का स्वाध्याय	I5:5

इस प्रकार (अ) ग्रन्थ में मुख्य वर्ग के साथ व्यक्तित्व पक्ष का, (ब) ग्रन्थ में मुख्य वर्ग के साथ ऊर्जा पक्ष का तथा (स) ग्रन्थ में मुख्य वर्ग के साथ व्यक्तित्व एवं ऊर्जा पक्षों का प्रयोग किया गया है। (द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के अनुसार)

द्विबिन्दु वर्गीकरण में एक विषय को विश्लेषित करने की विधि का समान रूप से अनुसरण किया गया है। वास्तव में, इस पद्धति का सम्पूर्ण ढाँचा पक्ष-विश्लेषण पर आधारित है। प्रत्येक मुख्य वर्ग के वर्गीकरण की सहायता के लिए पद्धति में पक्ष उपनियम की व्यवस्था की गई है। प्रत्येक पक्ष के अन्तर्गत एक विशेषता से व्युत्पन्न मौलिक मूल पदों की अनुसूची की व्यवस्था की गई है। डॉ० रंगनाथन ने अपनी वर्गीकरण पद्धति में पाँच पक्षों—व्यक्तित्व, पदार्थ, ऊर्जा, देश एवं काल—का प्रयोग किया है। प्रत्येक पक्ष के अन्तर्गत एकलों का उल्लेख किया गया है।

3 सामान्य एकल
(Common Isolates)

किसी भी लेखक द्वारा पुस्तक को विभिन्न दृष्टिकोण से अथवा विभिन्न रूप में लिखा जा सकता है। दूसरे शब्दों में, लेखक किसी भी विषय को विभिन्न रीतियों से प्रस्तुत कर सकता है। प्रत्येक वर्गीकरण पद्धति का आविष्कारक अपनी पद्धति में इस प्रकार की पुस्तकों के लिए व्यवस्था करता है। जिस तत्त्व द्वारा यह व्यवस्था की जाती है, उसे ''सामान्य एकल'' कहते हैं। ज्ञान की रचना में सामान्य एकल ऐसे सूक्ष्म तत्त्व हैं, जिनकी अभिव्यक्ति वर्गीकरण पद्धति में किसी भी स्थान पर समान पद द्वारा तथा समान अंक द्वारा की जाती है। डॉ० रंगनाथन ने सामान्य एकल की व्याख्या इस प्रकार की है—''समस्त अथवा बहुसंख्यक वर्गों में से किसी भी

विषय के साथ जिसे संलग्न किया जा सकता है, जिसके पृथक् बोधांक से एक ही प्रकार का अर्थ स्पष्ट होता है अथवा एक ही प्रकार की कल्पना व्यक्त होती है तथा जो वर्गांक में सदैव एक ही प्रकार का कार्य करता है, उसे सामान्य एकल कहा जाता है।''

सामान्य एकल वर्गीकरण का एक अत्यन्त प्राचीन तत्त्व है। मेलविल ड्यूई ने इसको 'रूप विभाजन' की संज्ञा देकर दशमलव वर्गीकरण में प्रस्तुत किया था। चार्ल्स कटर ने विस्तारशील वर्गीकरण में इस विचारधारा को अंगीकृत किया था। विषय वर्गीकरण में ब्राउन ने, न केवल सामान्य एकल के सिद्धान्त को अपनाया, बल्कि केवल कुछ वर्गों के लिए प्रयुक्त एकलों की सूची भी प्रस्तुत की। हेनरी ब्लिस ने सामान्य एकल व्यवस्था पर विस्तृत प्रकाश डाला तथा इसके लिए व्यवस्थित अनुसूचियों (Systematic schedules) पद का प्रयोग किया। ब्लिस ने सामान्य एकलों को दो श्रेणियों—पूर्व (anterior) एवं सहायक (ancillary)–में विभाजित किया। सामान्य एकल के विषय में ब्लिस का कथन है कि, ''ये न केवल साधारण अर्थ में व्यवस्थित (सामान्य) हैं, बल्कि ये सम्पूर्ण पद्धति में कम या अधिक विस्तार से सम्बद्ध हैं। कुछ, एक वर्ग से, पूर्णतः अथवा अंशतः सम्बद्ध हैं तथा कुछ केवल निश्चित वर्गों अथवा खण्डों से सम्बद्ध हैं।'' इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सामान्य एकल की विचारधारा ज्ञान के विभिन्न दृष्टिकोणों के लिए आवश्यक है। इस दृष्टिकोणों को व्यक्तित्व प्रदान करने के लिए अधिकांश ग्रन्थालय वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकलों की व्यवस्था की गई है :

सामान्य एकलों के प्रकार : मेलविल ड्यूई के समय से लेकर डॉ० रंगनाथन के समय तक सामान्य एकल का महत्त्वपूर्ण विकास हुआ है। इसका विश्लेषण समुचित सावधानी से किया गया है। वर्तमान समय में सामान्य एकल को निम्न तीन श्रेणियों में रखा गया है :

(क) ग्रन्थों के भौतिक रूप से सम्बन्धित अनुक्रम वर्गीकरण में सामान्य एकल। उदाहरणार्थ, सामान्य से बड़े अथवा छोटे आकार के ग्रन्थ। (संग्राहकों में प्रयुक्त)

W691	$\overline{\text{J5}}$	सन् 1955 में प्रकाशित साम्यवाद पर सामान्य से बड़े आकार का ग्रन्थ
X	$\underline{\text{K2}}$	सन् 1962 में प्रकाशित अर्थशास्त्र पर छोटे आकार की पुस्तिका
L	H5	सन् 1935 में प्रकाशित चिकित्साशास्त्र का फटा हुआ ग्रन्थ

(ख) ग्रन्थों में भाषा एवं विवरण के रूपों में सामान्य एकल। उदाहरणार्थ, अनुक्रमणी, सूची, व्याख्यान, वाद-विवाद, कविता, नाटक, उद्धरण आदि। (ग्रन्थांकों में प्रयुक्त) सेयर्स ने इन्हें बाह्य रूप विभाजन की संज्ञा दी है।

Ba	गणित की ग्रन्थसूची
2m	ग्रन्थालय विज्ञान की पत्रिका

(ग) मुख्य वर्गों के अन्तर्गत ज्ञान की रचना में प्रयुक्त सामान्य एकल।

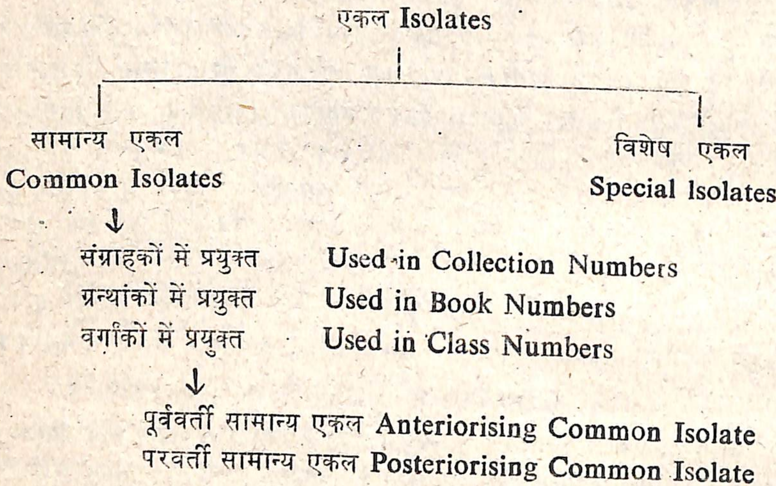
(वर्गांकों में प्रयुक्त) सेयर्स ने इन्हें आन्तरिक रूप विभाजन कहा है।

इस श्रेणी के सामान्य एकल दो प्रकार के होते हैं,

(अ) पूर्ववर्ती सामान्य एकल, और

(ब) परवर्ती सामान्य एकल।

इस प्रकार समस्त सामान्य एकलों को निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :



उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि सामान्य एकल को ज्ञान का विभिन्न विभाग नहीं कहा जा सकता। इन्हें एकल कहना तो एक प्रचलित बात है। इस प्रकार के एकलों में दो बातें समान रूप से पाई जाती हैं :

प्रथम, इनमें से किसी भी एकल को किसी भी वर्ग के साथ जोड़ा जा सकता है। सच पूछा जाय तो एकल सर्वव्यापक हैं। इसी कारण इन्हें 'सामान्य एकल' कहा जाता है।

द्वितीय, जिन ग्रन्थों में इस प्रकार के एकल जुड़े होते हैं, वे सामान्य रूप से पूरे नहीं पढ़े जाते। इस प्रकार के ग्रन्थ (जैसे कोई ग्रन्थसूची) यदा-कदा किसी विशिष्ट सूचना के लिए ही प्रयोग में आते हैं अथवा उस वर्ग में व्यवस्थित सामान्य ग्रन्थों की जानकारी प्राप्त करने में सहायक होते हैं।

4 रूप विभाजन
(Form Divisions)

दशमलव वर्गीकरण के सोलहवें संस्करण में सामान्य एकल को रूप विभाजन की संज्ञा दी गई है। रूप विभाजनों को एक अनुसूची में रखा गया है तथा इनका प्रयोग '0' योजक-चिह्न की सहायता से समस्त वर्गों में किया जा सकता है। रूप विभाजनों का प्रयोग निम्न उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :

(अ) 574	जीवशास्त्र	Biology
07	अध्यापन	Teaching रूप विभाजन

	574.07	जीवशास्त्र का अध्यापन Teaching of Biology
(ब)	821.3	अंग्रेजी काव्य English Poetry
	05	पत्रिका Periodical रूप विभाजन
	821.305	अंग्रेजी काव्य की पत्रिका Periodical on English Poetry

यहाँ यह ध्यान रखना उचित है कि एक विषय के साथ केवल एक ही रूप-विभाजन का प्रयोग किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त दशमलव पद्धति की अनुसूचियों में वर्णित कुछ वर्गांकों में रूप विभाजन का अंक भी दिया गया है।

उदाहरणार्थ :

655. 1 मुद्रणकला का इतिहास History of Printing—इस वर्गांक में 'इतिहास' रूप-विभाजन को वर्ग में ही पृथक् कर दिया गया है तथा निश्चित रूप-विभाजन 09 का प्रयोग नहीं किया गया है।

रूप-विभाजन को दो श्रेणियों में रखा गया है :

(अ) वाह्य रूप (Outer form) : इसके अन्तर्गत ग्रन्थ का भौतिक रूप रखा जाता है। उदाहरणार्थ, शब्दकोश, विश्वकोश, पत्रिका आदि को वाह्य रूप द्वारा निश्चित किया जा सकता है।

500	विज्ञान	Science
503	वैज्ञानिक शब्दकोश	Scientific Dictionary
505	वैज्ञानिक पत्रिकाएँ	Scientific Periodicals

(ब) आन्तरिक रूप (Inner form) : इसके अन्तर्गत विषय को प्रस्तुत करने वाले दृष्टिकोण का अध्ययन किया जाता है। उदाहरणार्थ, राजनीति के सिद्धान्त, संगीत का इतिहास, विज्ञान का इतिहास आदि। यद्यपि इन ग्रन्थों में एक विशिष्ट विषय का वर्णन है, तथापि इनकी रचना एक विशेष दृष्टिकोण से की गई है।

500	विज्ञान	Science
501	विज्ञान के सिद्धान्त	Theory of Science

रूप विभाजनों का प्रयोग प्रत्येक वर्ग में किया जा सकता है। अतः इन्हें सामान्य उप-विभाग (Common Sub-divisions) भी कहा जाता है। व्यावहारिक रूप में ये अत्यन्त उपयोगी हैं तथा इनसे विस्तृत एवं सुविधाजनक रीति से ग्रन्थों का वर्गीकरण किया जा सकता है।

चार्ल्स ए० कटर ने भी अपनी विस्तारशील वर्गीकरण पद्धति में सामान्य उप-विभागों का प्रयोग किया है :

A	विज्ञान	Science
A.1	विज्ञान के सिद्धान्त	Theory of Science
A.5	वैज्ञानिक शब्दकोश	Scientific Dictionary
A.7	वैज्ञानिक पत्रिकाएँ	Scientific Periodicals

लायब्रेरी ऑफ काँग्रेस वर्गीकरण पद्धति में इस प्रकार के उप-विभागों का उल्लेख है, किन्तु उनका प्रयोग सामान्य रूप से सम्पूर्ण पद्धति में नहीं किया जाता है। प्रत्येक वर्ग में कुछ परिवर्तनों के साथ इनका प्रयोग किया जाता है।

ग्रन्थ वर्गीकरण में हेनरी ब्लिस ने रूप-विभाजनों को "सहायक विभाग" (ancillary divisions) अथवा "व्यवस्थित अनुसूचियाँ" (systematic schedules) कहा है। इनका प्रयोग सामान्यतः समस्त वर्गों, खण्डों एवं उपखण्डों में किया जाता है। इन रूप विभाजनों को सीधा वर्गांक के साथ जोड़ दिया जाता है।

BT	वायुयान विद्या	Aviation
BT2	वायुयान विद्या की ग्रन्थसूची	Bibliography of aviation

5 अनुक्रमणी
(Index)

वर्गीकरण पद्धति के मुख्य वर्गों की अनुसूचियों में उल्लिखित पदों की अनुवर्णित सूची को अनुक्रमणी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक पद के सामने अंकन दिया जाता है। इसकी सहायता से उपयोगकर्त्ता को विषयों को खोजने में सुविधा होती है; किन्तु इसे वर्गीकरण का मुख्य साधन कदापि नहीं बनाना चाहिए। अनुक्रमणी किसी वर्गीकरण पद्धति का सहायक यंत्र है। इसके द्वारा यह स्पष्ट किया जाता है कि अनुसूचियों के अन्तर्गत उल्लिखित विषयों का केवल अपने निर्धारित स्थान पर ही वर्गीकरण हो।

अनुक्रमणी दो प्रकार की होती हैं :

(अ) विशिष्ट **Specific**

(ब) सापेक्ष **Relative**

विशिष्ट : इसके अन्तर्गत अनुसूचियों से उल्लिखित प्रत्येक विषय के लिए केवल एक प्रविष्टि दी जाती है। इसके साथ ही उसके पर्यायवाची पद भी दिये जाते हैं, परन्तु इसमें विषयों के सम्बन्ध का उल्लेख नहीं होता है। द्विबिन्दु तथा विषय वर्गीकरण पद्धतियों में विशिष्ट अनुक्रमणी का ही प्रयोग किया गया है।

विषय वर्गीकरण पद्धति

Eggs F601

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति

Book Selection 2 [E] 8 1
University Education .T [P] 4
Eggs G [P] 5515 KZ [P] 2

विशिष्ट अनुक्रमण, सिद्धान्त रूप में, वर्गीकरण के लिए "एक स्थान" निर्धारित करने में उपयुक्त है। इसमें द्विविधा एवं संदेह की कम गुन्जाइश रहती है।

सापेक्ष : इसके अन्तर्गत वर्गीकरण की अनुसूचियों में वर्णित समस्त विषयों का उल्लेख रहता है। साथ ही, विषय के पर्यायवाची शब्द एवं प्रत्येक विषय के दूसरे विषयों से सम्बन्ध भी दिये जाते हैं : सर्वप्रथम मेलविल ड्यूई ने अपनी दशमलव वर्गीकरण पद्धति में सापेक्ष अनुक्रमणी का प्रयोग किया था :

Eggs	
and nutrition physiology	612.39283
domestic economy	614.12
as food hygiene	613.28
Cookery	614.665
Poultry farming	636.513

लायब्रेरी ऑफ कांग्रेस वर्गीकरण पद्धति में भी कुछ अंश तक सापेक्ष अनुक्रमणी का प्रयोग किया गया है।

सापेक्ष अनुक्रमणी में प्रत्येक शीर्षक के विषय से सम्बन्धित विभिन्न रूपों का उल्लेख किया जाता है। साथ ही उसका वर्गांक भी दे दिया जाता है। परन्तु किसी विषय के लिए अधिक विकल्प देने से अशुद्ध निर्णय भी हो जाता है। इसका प्रयोग सुगमता से नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसका आकार अत्यधिक विस्तृत होता है।

वास्तव में यह कहा गया है कि जब तक विषयों को उचित ढंग से अनुक्रमणी में रखा जाता है, तब तक यह कम महत्त्वपूर्ण है कि उस विषय का वर्गीकरण की अनुसूची में किस स्थान पर उल्लेख है। इस उद्देश्य से ग्रन्थों के वर्गीकरण के लिए अनुक्रमणी अनिवार्य है। किन्तु यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि केवल अनुक्रमणी की सहायता से ग्रन्थों का वर्गीकरण करना सदैव उचित नहीं है, क्योंकि इससे विषय के विभिन्न स्थानों पर वर्गीकृत किये जाने की सम्भावना रहती है। अनुक्रमणी को ग्रन्थों के वर्गीकरण का मुख्य आधार नहीं माना जा सकता। ग्रन्थों का वर्गीकरण सदैव मुख्य अनुसूचियों के अध्ययन के पश्चात् ही किया जाना चाहिए।

⊙

नवम अध्याय

ग्रन्थ वर्गीकरण

(Book Classification)

ग्रन्थालय-विज्ञान के पाँच सूत्रों में यह स्पष्ट किया गया है कि ग्रन्थालय में ग्रन्थों की अत्यन्त सहायक व्यवस्था, विषयानुसार वर्गीकृत व्यवस्था ही है। अनुभव के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पाठकों में विषय-प्रवेश ही सर्वमान्य प्रवेश है। प्रत्येक पाठक किसी विशिष्ट विषय से सम्बन्धित ग्रन्थ की ही माँग करता है। अतः यह आवश्यक है कि ग्रन्थालय में ग्रन्थों की व्यवस्था विषयानुसार की जाय।

ग्रन्थालय में वर्गीकरण के द्वारा प्रत्येक ग्रन्थ के विषय के नाम का मानित कृत्रिम भाषा में अनुवाद कर दिया जाता है। इसके साथ ही वर्गीकरण एक ही विशिष्ट विषय पर बहुत से ग्रन्थों का पृथक्करण भी है, जो कुछ अन्य क्रमिक संख्याओं (Ordinal numbers) की सहायता से होता है। ग्रन्थ के विशिष्ट विषय के लिए प्रयुक्त क्रमिक संख्या को वर्ग-संख्या तथा ग्रन्थ की रूप-रेखाओं को प्रस्तुत करने के लिए प्रयुक्त क्रमिक संख्या को ग्रन्थ-संख्या कहा जाता है। किसी ग्रन्थ की वर्ग-संख्या एवं ग्रन्थ-संख्या दोनों से क्रामक-संख्या बन जाती है। एक ग्रन्थालय के सम्बन्धित ग्रन्थों में किसी भी ग्रन्थ का स्थान क्रामक संख्या ही निर्धारित करती है।

1 क्रामक संख्या
(Call Number)

ग्रन्थालय में वर्गीकरण का उद्देश्य प्रत्येक ग्रन्थ को स्वयं की व्यक्तिगत संख्या प्रदान करना है। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि किन्हीं भी दो अथवा अधिक ग्रन्थों की एक ही क्रामक संख्या नहीं होनी चाहिए। ग्रन्थालय में "एक ग्रन्थ, एक व्यक्तिगत संख्या" के सिद्धांत का पालन न करने पर अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है। ग्रन्थ की क्रामक संख्या एक ग्रन्थ को अन्य ग्रन्थों से पृथक् कर देती है। कुछ पाश्चात्य वर्गीकरण पद्धतियों में क्रामक संख्या की व्यवस्था अत्यन्त स्थूल रूप से की गई है। सम्बन्धित विषयों के अन्य ग्रन्थों से इच्छित ग्रन्थों का पृथकत्व दिखलाने में यह व्यवस्था असमर्थ है। फलकों पर एक साथ व्यवस्थित अनेक ग्रन्थों की क्रामक संख्या एक ही दिखाई देती है। मेलविल ड्यूई ने क्रामक संख्या पर विचार व्यक्त करते

हुए लिखा है कि, ''ग्रन्थ की क्रामक संख्या सामान्यत: वर्ग संख्या तथा ग्रन्थ संख्या दोनों से मिलकर बनती है। एक ही विषय से सम्बन्धित समस्त ग्रन्थों को एक ही वर्ग संख्या दी जाती है। एक वर्ग की समस्त रचनाओं में से प्रत्येक रचना को ग्रन्थ संख्या द्वारा पृथक् कर दिया जाता है। एक ही रचना के समस्त अंकों एवं प्रतियों पर एक ही क्रामक संख्या दी जाती है।'' इससे यह स्पष्ट है कि ड्यूई भी ग्रन्थों को पृथकत्व प्रदान करने के सिद्धान्त में विश्वास रखते थे। किन्तु उन्होंने अपनी वर्गीकरण पद्धति में वर्ग संख्या के साथ ग्रन्थ संख्या का निर्माण करने की कोई व्यवस्था नहीं की। ग्रन्थ संख्या के लिए कटर समंक (Cutter Numbers) एवं बिसको समंक (Biscoe Numbers) आदि का प्रयोग किया जाता है।

क्रामक संख्या के भाग : डॉ० रंगनाथन ने क्रामक संख्या को अधिक विस्तृत कर वर्ग संख्या के साथ ग्रन्थ संख्या तथा संग्रह संख्या देने की व्यवस्था प्रारम्भ की। उन्होंने ग्रन्थालय वर्गीकरण को तीन क्षेत्रों में विभाजित किया :

(अ) ज्ञान वर्गीकरण = वर्ग संख्या
Knowledge Classification = Class Number

(ब) ग्रन्थ वर्गीकरण = ग्रन्थ संख्या
Book Classification = Book Number

(स) अनुक्रम वर्गीकरण = संग्रह संख्या
Sequence Classification = Collection Number

इस प्रकार के ग्रन्थालय वर्गीकरण के अन्तर्गत ग्रन्थालय में उपलब्ध प्रत्येक ग्रन्थ को पृथक् करना सम्भव है। इसको निम्न भिन्न द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :

ग्रन्थालय वर्गीकरण = ज्ञान वर्गीकरण + ग्रन्थ वर्गीकरण + अनुक्रम वर्गीकरण
ग्रन्थालय वर्गीकरण = ग्रन्थों की क्रामक संख्या
क्रामक संख्या = वर्ग संख्या + ग्रन्थ संख्या + संग्रह संख्या

डॉ० रंगनाथन के अनुसार क्रामक संख्या का निर्माण तीन भागों से मिलकर होता है :

(अ) वर्ग संख्या (Class Number) : (ब) ग्रन्थ संख्या (Book Number) तथा (स) संग्रह संख्या (Collection Number)।

क्रामक संख्या लिखने की पद्धति : ग्रन्थ के ऊपर अथवा उसके मुख-पृष्ठ के पीछे क्रामक संख्या लिखते समय वर्ग संख्या के नीचे ग्रन्थ संख्या लिखी जाती है :

Q21	B43	L3
152J6	F6	p7J2

प्रसूचीपत्र आदि अन्य स्थान पर क्रामक संख्या एक रेखा में लिखी जा सकती है। केवल वर्ग संख्या तथा ग्रन्थ संख्या के मध्य कुछ स्थान छोड़ना आवश्यक है, जिससे उनकी भिन्नता स्पष्ट हो सके :

2:51N3 qJ7 I:13 K2

इस प्रकार एक ही विशिष्ट विषय से सम्बन्धित असंख्य ग्रन्थों को क्रामक संख्या द्वारा पृथक् किया जा सकता है। कृत्रिम भाषा द्वारा क्रामक संख्या का निर्माण करते

समय पहली संख्या, वर्ग संख्या तथा दूसरी संख्या, ग्रन्थ संख्या कहलाती है। व्यवहार में, ग्रन्थ संख्या को वर्ग संख्या से सदैव पृथक् रखा जाता है। एक ग्रन्थालय के सम्बन्धित ग्रन्थों में किसी भी ग्रन्थ का स्थान क्रामक संख्या द्वारा ही निर्धारित किया जाता है।

क्रामक संख्या के विभिन्न भागों को पृथक्-पृथक् स्पष्ट किया जा सकता है।

वर्ग संख्या (Class Numbers) :

किसी वर्गीकरण पद्धति में वर्गों के लिए प्रयुक्त द्योतक सांकेतिक अंक को वर्ग संख्या अथवा वर्गांक कहा जाता है। प्रत्येक ग्रन्थालय में एक स्वीकृत वर्गीकरण पद्धति के अनुसार प्रत्येक ग्रन्थ में वर्णित विशिष्ट विषय के लिये प्रयुक्त बोधांक को वर्ग संख्या कहते हैं। वर्ग संख्या द्वारा विषयों का वर्गीकरण किया जाता है। वास्तव में, किसी ग्रन्थ का वर्गीकरण करने के लिए एक निश्चित वर्गीकरण पद्धति के अनुसार उस ग्रन्थ के विशिष्ट विषय की वर्ग संख्या निश्चित कर दी जाती है। इससे यह स्पष्ट है कि ग्रन्थ का विशिष्ट विषय वर्ग संख्या में प्रयुक्त संकेत चिह्नों में रूपान्तरित किया जाता है अथवा ग्रन्थ को वर्ग संख्या प्रदान करने के लिए ग्रंथ में वर्णित विषय का क्रमिक संख्या की कृत्रिम भाषा (**Artificial language of ordinal numbers**) में अनुवाद किया जाता है। इस भाषा को वर्गीकरण सांकेतिक भाषा द्वारा निर्मित वर्ग संख्या के संकेत चिह्नों का अर्थ लगाने से विशिष्ट वर्गीकृत विषय का ज्ञान हो जाता है।

उदाहरणार्थ :

विषय	द्विबिन्दु	दशमलव
विश्वविद्यालयीन शिक्षा	**T4**	378

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के अनुसार—

T 'शिक्षा' मुख्य वर्ग का संकेत चिह्न है।

4 'विश्वविद्यालय' का संकेत चिह्न है।

अतः वर्गीकरण की कृत्रिम भाषा में वर्ग संख्या **T4** का अर्थ 'विश्वविद्यालयीन शिक्षा' हुआ।

दशमलव पद्धति के अनुसार—

370 'शिक्षा' मुख्य वर्ग का संकेत चिह्न है।

378 'विश्वविद्यालय' का संकेत चिह्न है।

अतः वर्गीकरण की कृत्रिम भाषा में वर्ग संख्या 378 का अर्थ 'विश्वविद्यालयीन शिक्षा' हुआ।

अंक (Digit) : वर्गीकरण पद्धति में वर्ग संख्या के लिए प्रयुक्त विविध संकेत चिह्नों को अंक कहा जाता है। इस प्रकार के एक या अनेक संकेत चिह्नों के समूह को 'वर्ग संख्या' या 'वर्गांक' कहते हैं।

वर्ग संख्या के अङ्कों को बायीं ओर से दाहिनी ओर लिखा जाता है। अंक दो प्रकार के होते हैं :

1 गणन संख्या **Cardinal Number**

2 क्रमिक संख्या **Ordinal Number**

वर्गीकरण पद्धति में केवल क्रमिक संख्या का ही प्रयोग किया जाता है। तथापि दोनों प्रकार के अंकों का स्पष्टीकरण किया जाना आवश्यक है :

गणन संख्या : इस प्रकार की संख्या एक दूसरे के आगे रखने से मूल संख्या का स्थान मूल्य बढ़ता जाता है। उदाहरणार्थ, मूल संख्या 1 का मूल्य जब तक वह इकाई में है, तब तक 1 ही रहता है। किन्तु 1 के आगे 4 रखते ही 1 का स्थान मूल्य 10 हो जाता है तथा 4 का स्थान इकाई में रहने के कारण 4 हो जाता है। परन्तु 4 के आगे 6 लिखने पर 1 का स्थान मूल्य 100 तथा 4 का 40 होगा। 6 का स्थान इकाई में रहने के कारण उसका स्थान मूल्य 6 रहेगा।

क्रमिक संख्या : इस प्रकार की संख्या को एक के आगे दूसरी रखने पर संख्याओं के स्थान मूल्य में परिवर्तन नहीं होता, केवल उनका क्रम बढ़ता जाता है। उदाहरणार्थ, क्रमिक संख्या 8 का मूल्य सदैव 1 ही रहता है। 1 के आगे 4 रखने पर 1 का स्थान मूल्य 1 तथा 4 का स्थान मूल्य 4 ही रहेगा। 4 के आगे 6 रखने पर भी 1 का स्थान मूल्य 1, 4 का स्थान मूल्य 4 तथा 6 का स्थान मूल्य 6 ही रहेगा।

ज्ञान का निरन्तर विकास होता रहता है। कालान्तर में विविध विषयों में अनेक शाखोपशाखाएँ निर्मित होती रहती हैं। ग्रन्थ वर्गीकरण पद्धति में नवनिर्मित विषयों को समाविष्ट कर लेने की व्यवस्था होना अनिवार्य है। यदि ग्रन्थ वर्गीकरण में गणन संख्या का प्रयोग किया जाय तो संख्याओं द्वारा विषय के विभागों या शाखाओं को स्थान देना असम्भव है। क्रमिक संख्या का प्रयोग करने पर विषयों के विभागों को मध्य में अथवा अन्त में समाविष्ट करने की सुविधा प्राप्त हो जाती है।

उदाहरणार्थ, मुख्य विषय 1 तथा 2 में कालान्तर में उत्पन्न विभागों को निम्न प्रकार निर्मित किया जा सकता है :

1	1441	18
11	16	181
111	161	1811
12	1613	182
121	1616	183
1211	172	185
12	1721	1851
124	173	187
14	174	2

जिन संख्याओं को मध्य में छोड़ दिया है, उन्हें भी आवश्यकता पड़ने पर समाविष्ट किया जा सकता है। कालान्तर में अधिक संख्याओं का निर्माण भी किया जा सकता है। इस प्रकार क्रमिक संख्या के प्रयोग द्वारा किन्हीं संख्याओं के मध्य में कितनी ही संख्याओं का निर्माण कर विषयों के मध्य में अनेक संलग्न विभागों को स्थान दिया जा सकता है।

वर्ग संख्या का निर्माण : वर्ग संख्या का निर्माण करते समय वर्गकार निम्नांकित क्रम से क्रियाशील हो सकता है :

1 आवश्यकतानुसार सम्पूर्ण पुस्तक पढ़कर उसका विशिष्ट विषय निश्चित करना।

2 ग्रन्थ के विशिष्ट विषय में प्रयुक्त शब्दों (अथवा शब्द समूहों) का वर्गीकरण के नियमानुसार क्रम निश्चित करना।

3 विशिष्ट विषय अथवा विषयों का पारिभाषिक पदावली में रूपांतर करना।

4 योजक चिह्नों का निवेश करना।

5 सम्पूर्ण वर्ग संख्या का निर्माण करना।

दशमलव पद्धति में वर्ग संख्या के निर्माण हेतु निम्न संकेत चिह्नों का प्रयोग किया गया है :

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

द्विबिन्दु पद्धति में वर्ग संख्या के निर्माण हेतु निम्न संकेत चिह्नों का प्रयोग किया गया है :

A B C D............X Y Z
a b c d............x y z
. ; : . ‘ —
0 ← → ( )

ग्रन्थ संख्या (Book Number) :

किसी ग्रन्थालय में समान वर्ग संख्या वाले अनेक ग्रन्थ एकत्रित हो जाने पर उनकी भिन्नता स्पष्ट करना तथा उनकी फलकों पर सहायक क्रम में व्यवस्थित करना कठिन हो जाता है। इस कठिनाई को हल करने के लिए ग्रन्थ संख्या की व्यवस्था की गई है। ग्रन्थों का विषयानुसार वर्गीकरण करने के पश्चात् कुछ निश्चित शीर्षकों के अन्तर्गत उन्हें व्यवस्थित करने के लिए ग्रन्थ संख्या आवश्यक है। डॉ० रंगनाथन ने ग्रन्थ संख्या की व्याख्या करते हुए लिखा है कि, ''ग्रन्थ वर्गीकरण की पद्धति में ग्रन्थ संख्या की व्यवस्था की जानी चाहिए, ताकि ज्ञान के समान वर्ग वाले ग्रन्थों को व्यक्तित्व प्रदान किया जा सके।'' वास्तव में ग्रन्थों को व्यक्तित्व प्रदान करते समय एक ऐसी अवस्था आ जाती है, जब विषय के वर्गीकरण के साथ ग्रन्थ के भौतिक रूपों का वर्गीकरण भी आवश्यक हो जाता है। डॉ० रंगनाथन ने ग्रन्थ संख्या के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि, ''ग्रन्थ संख्या ग्रन्थ को उस स्थान पर व्यक्तित्व प्रदान करती है, जहाँ वर्ग संख्या व्यक्तित्व प्रदान करने में असमर्थ है।''

फलकों पर वर्ग संख्या के अन्तर्गत ग्रन्थों को व्यवस्थित करने हेतु अनेक विधियों का प्रयोग किया जाता है। इनमें से निम्न विधियाँ प्रामाणिक हैं :

1 लेखक के कुलनाम के प्रथम तीन अक्षरों का प्रयोग कर;

2 लेखक के नाम का क्रमिक संख्या में अनुवाद कर;

3 ग्रन्थ के प्रकाशन वर्ष का अनुवाद कर;

4 द्विबिन्दु ग्रन्थ संख्या पद्धति द्वारा अनुवाद कर।

1 किसी वर्ग के ग्रन्थों को व्यक्तित्व प्रदान करने की सम्भव एवं सरल विधि

लेखक के कुलनाम के प्रथम तीन अक्षरों का प्रयोग है। उदाहरणार्थ, 'अर्थशास्त्र' के निम्न चार ग्रन्थों को लिया जा सकता है :

लेखक का नाम	द्विबिन्दु	दशमलव
Basu AN	**X** **Bas**	**330** **Bas**
Jones RT	**X** **Jon**	**330** **Jon**
Tandon BP	**X** **Tan**	**330** **Tan**
Tandon RS	**X** **Tan**	**330** **Tan**

इस विधि का दोष यह है कि समान कुलनाम के दो या अधिक लेखकों के ग्रन्थों को अथवा समान विशिष्ट विषय पर एक ही लेखक द्वारा लिखित दो से अधिक ग्रन्थों को व्यक्तित्व प्रदान करना सम्भव नहीं है। इस विधि द्वारा ग्रन्थ के विभिन्न संस्करणों को भी भिन्नता प्रदान नहीं की जा सकती।

2 लेखक के नाम का क्रमिक संख्या में अनुवाद कर ग्रन्थ संख्या का निर्माण करना पाश्चात्य देशों में अधिक प्रचलित है। ग्रंथालय जगत के चार प्रमुख महानुभावों कटर (Cutter), मेरिल (Merill), जास्ट (Jast) एवं ब्राउन (Brown) ने अनुवाद की विभिन्न पद्धतियों का निर्माण किया है। इन पद्धतियों के अनुसार लेखक के नाम का मिश्रित अथवा शुद्ध अंकों में अनुवाद कर दिया जाता है। अपनी विस्तारशील वर्गीकरण पद्धति में कटर ने ग्रंथ संख्या के लिए लेखक के नाम के प्रारम्भिक अक्षर अथवा अक्षरों के आधार पर एक लेखक सारिणी (Author's Table) का निर्माण किया है। इसमें मिश्रित अंक का प्रयोग किया गया है। उदाहरणार्थ :

यदि लेखक का नाम किसी व्यंजन अक्षर से प्रारम्भ होता है तो उसका पहला अक्षर लिया जाता है :

Holmes	H73
Huxley	H98
Lowell	L95

यदि लेखक का नाम स्वर अक्षर से अथवा S अक्षर से प्रारम्भ होता है तो प्रथम दो अक्षर लिये जाते हैं :

Anne	AN7
Upton	UP1
Semmes	SE5

यदि लेखक का नाम Sc से प्रारम्भ होता है तो प्रथम तीन अक्षर लिये जाते हैं :

Scammon	SCA5

लेखक का यह चिह्न वर्ग संख्या के साथ जोड़ दिया जाता है : 330
B34

इसमें 330 अर्थशास्त्र तथा B34 लेखक Beard है। यद्यपि इस सारिणी में बारह सौ से ऊपर चुने हुए नामों की प्रतीक संख्याएँ दी गई हैं; तथापि बहुत से ऐसे नाम आ जाते हैं, जिनके लिए सोच-समझ कर निकटतम नाम का अंकन लेना पड़ता है। इस लेखक सारिणी का प्रयोग किसी भी वर्गीकरण पद्धति द्वारा निर्मित वर्ग संख्या के साथ किया जा सकता है।

इस विधि द्वारा एक विषय के ग्रन्थों के लेखकों का कुलनाम एक ही होने पर अथवा एक ही ग्रन्थ की विभिन्न प्रतियाँ होने पर अथवा ग्रन्थ के विभिन्न संस्करण होने पर उनको व्यक्तित्व प्रदान करना सम्भव नहीं है।

3 बिसको संख्याओं (Biscoe Numbers) द्वारा अधिक उपयोगी विधि को निर्माण किया गया। इसके अन्तर्गत लेखक के नाम की उपेक्षा की गई तथा ग्रन्थों को व्यक्तित्व प्रदान करने के लिए ग्रन्थों के प्रकाशन वर्ष का अनुवाद करना निश्चित किया गया। इसके लिए एक कालक्रमिक सारिणी को अंगीकृत किया गया। इस विधि के द्वारा जो ग्रन्थ पहले प्रकाशित हुआ है, वह पहले तथा बाद में प्रकाशित ग्रन्थ बाद में रखा जाता है। बिसको सारिणी को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है :

A	ईसा पूर्व (BC)	Q	1900—1909
B	0 —999	R	1910—1919
C	1000—1499	S	1920—1929
D	1500—1599	T	1930—1939
E	1620—1699	U	1940—1949
F	1700—1799	V	1950—1959
G	1800—1899	W	1960—1969
....		X	1970—1979

उदाहरणार्थ, राजनीतिशास्त्र के निम्न दो ग्रन्थ प्रकाशित हुए :

		दशमलव वर्ग संख्या	ग्रन्थ संख्या
द्वितीय	1907 में	320	Q7
तृतीय	1945 में	320	U5

उपर्युक्त दोनों ग्रन्थों का क्रम निम्न प्रकार होगा :

320   320
Q7   U5

डॉ० रंगनाथन ने समान वर्गसंख्या के ग्रन्थों को ग्रन्थ संख्या द्वारा व्यक्तित्व प्रदान करने की समस्या पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया। उन्होंने ग्रन्थ के आठ विशिष्ट बाह्यांगों (Specified features) को स्पष्ट कर इनका प्रयोग ग्रन्थ संख्या के लिए किया। इससे प्रत्येक ग्रन्थ की भिन्नता स्पष्ट होती है तथा फलकों पर ग्रन्थ का एक स्थान निश्चित हो जाता है। इस प्रकार डॉ० रंगनाथन ने ग्रन्थ संख्या की समस्या का विश्लेषण कर ग्रन्थ वर्गीकरण के लिए एक पक्ष उपनियम (Facet formula) का निर्माण किया :

[L] [F] [Y] [A] . [V]–[S] ; [C] : [Cr]

उपर्युक्त पक्ष उपनियम को निम्न प्रकार स्पष्ट किया गया है :

[L]	भाषा संख्या	Language Number
[F]	रूप संख्या	Form Number
[Y]	वर्ष संख्या	Year Number
[A]	ग्रन्थ समावेश संख्या	Accession Part of Book Number
[V]	खण्ड संख्या	Volume Number
[S]	परिशिष्ट संख्या	Supplement Number
[C]	प्रति संख्या	Copy Number
[Cr]	समालोचना संख्या	Criticism Number

भाषा संख्या : किसी ग्रन्थालय में मान्य भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में लिखे गए ग्रन्थों के लिए इस संख्या का प्रयोग किया जाता है । उदाहरणार्थ, 'भारत में विश्वविद्यालयीन शिक्षा' विषय पर चार भाषाओं में ग्रन्थ लिखे गए हैं तथा इन चारों ग्रन्थों की व्यवस्था ग्रन्थालय में करना है, तब प्रत्येक में भाषा संख्या को दर्शाया जा सकता है ।

T4.44 111H5	भारत में विश्वविद्यालयीन शिक्षा अंग्रेजी भाषा में 1945 में प्रकाशित
T4.44 152H9	भारत में विश्वविद्यालयीन शिक्षा हिन्दी भाषा में 1949 में प्रकाशित
T4.44 155J1	भारत में विश्वविद्यालयीन शिक्षा मराठी भाषा में 1951 में प्रकाशित

साहित्य के ग्रन्थों में मूल भाषा को वर्ष संख्या में रखा जाता है तथा जिस भाषा में मूल ग्रन्थ का भाषान्तर किया जाता है, उसका निर्देश ग्रन्थ संख्या में किया जाता है । उदाहरणार्थ,

O15,2D40,1 152K4	शाकुन्तल नाटक का हिन्दी भाषान्तर 1964 में प्रकाशित

रूप संख्या : कुछ ग्रन्थ सामान्य न होकर किसी विशेष रूप को व्यक्त करते हैं । रूप संख्या के लिए विशेष तालिका प्रस्तुत की गई है । उदाहरणार्थ,

b	अनुक्रमणी	Index
c	सूची	List
f	चित्र	Pictures
fs	चित्रकला	Paintings
g	ढाँचा	Plan
h	आलेख	Graph
q	नियमावली	Code

2:55qK2	ग्रन्थालय प्रसूची नियमावली–1962
234.2fL2	विश्वविद्यालयीन ग्रन्थालय संगठन चित्रावली–1972

अधिकांश ग्रन्थ सामान्य गद्य में लिखे होने के कारण अधिकांश ग्रन्थों में रूप संख्या देने की आवश्यकता नहीं होती है।

वर्ष संख्या : ग्रन्थ संख्या में सबसे महत्त्वपूर्ण वर्ष संख्या है। प्रत्येक ग्रन्थ की ग्रन्थ संख्या में वर्ष संख्या अवश्य होती है। वर्ष संख्या में ग्रन्थ के प्रकाशन वर्ष का अनुवाद निम्न तालिका के अनुसार दिया जाता है :

A	1880	ई० स० से पूर्व		P	2000	से	2009
B	1880	से	1889	....			
....				X	2080	से	2089
C	1930	से	1939	Y	2090	से	2099
H	1940	से	1949	Z	2000	से	2109
J	1950	से	1959	ZA	2110	से	2119
K	1960	से	1969	ZB	2120	से	2129
L	1970	से	1979	ZC	2130	से	2139
M	1980	से	1989	ZD	2140	से	2149
N	1990	से	1999	ZE	2150	से	2159 आदि

उपर्युक्त तालिका का प्रयोग केवल वर्ष संख्या के लिए किया जाता है। उदाहरणार्थ, 'भारतीय दर्शन' R6 विषय पर विभिन्न वर्षों में प्रकाशित ग्रन्थों की वर्ग संख्या एवं ग्रन्थ संख्या निम्न होगी :

R6	F5	1925 में प्रकाशित
R6	G3	1933 में प्रकाशित
R6	J4	1954 में प्रकाशित
R6	K1	1961 में प्रकाशित

ग्रन्थ-समावेश संख्या : कभी-कभी एक विषय पर एक ही वर्ष में प्रकाशित तथा एक ही भाषा में अनेक ग्रन्थ ग्रन्थालय में क्रय किए जाते हैं। उनमें भिन्नता दिखाना आवश्यक है। यह भिन्नता ग्रन्थ-समावेश संख्या द्वारा स्पष्ट की जा सकती है। यह संख्या प्रथम समाविष्ट ग्रन्थ को नहीं दी जाती। जब उसी प्रकार का दूसरा ग्रन्थ आता है, तब वर्ष संख्या के साथ बिना किसी योजक चिह्न के ग्रन्थ-समावेश संख्या 1 दी जाती है। इसी प्रकार तीसरे ग्रन्थ को संख्या 2, चौथे को 3, पाँचवें को 4 संख्या दी जाती है।

उदाहरणार्थ, "हिन्दू धर्म" पर 1961 में हिन्दी में प्रकाशित जो ग्रन्थ ग्रन्थालय में समाविष्ट किए गए हैं, उनकी ग्रन्थ संख्या में निम्न प्रकार भेद स्पष्ट किया जा सकता है :

Q6	152K1	हिन्दू धर्म पर ग्रन्थालय में समाविष्ट प्रथम हिन्दी ग्रन्थ
Q6	152K11	,, ,, द्वितीय ,, ,,
Q6	152K12	,, ,, तृतीय ,, ,,
Q6	152K13	,, ,, चतुर्थ ,, ,,

खण्ड संख्या : कभी-कभी कोई ग्रन्थ अनेक खण्डों में प्रकाशित होता है। ग्रन्थों

के पृथक् खण्डों के लिए खण्ड संख्या देना आवश्यक है। इसके लिए बिन्दु (.) का योजक चिह्न निश्चित किया गया है।

उदाहरणार्थ, "भारतीय संस्कृति" Y73 (P15) : 1 विषय पर चार खण्डों में प्रकाशित (ई० स० 1959 में) ग्रन्थ को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है :

Y73(P15) : 1	J9.1	प्रथम खण्ड
Y73(P15) : 1	J9.2	द्वितीय खण्ड
Y73(P15) : 1	J9.3	तृतीय खण्ड
Y73(P15) : 1	J9.4	चतुर्थ खण्ड

कभी-कभी ग्रन्थ के समस्त खण्ड एक ही वर्ष में प्रकाशित नहीं होते हैं। अतः प्रथम खण्ड के प्रकाशन वर्ष का प्रयोग ही समस्त खण्डों के लिए माना जाता है। उदाहरणार्थ, 'विश्वविद्यालयीन शिक्षा का संगठन' विषय पर ग्रन्थ चार खण्डों में निम्नांकित वर्षों में प्रकाशित हुआ है :

प्रथम खण्ड	ई० स०	1948 में
द्वितीय ,,	,,	1956 में
तृतीय ,,	,,	1965 में
चतुर्थ ,,	,,	1971 में

उपर्युक्त चारों खण्डों की खण्ड संख्या निम्न प्रकार दी जा सकती है। इनकी खण्ड संख्या निर्मित करते समय प्रथम खण्ड प्रकाशन वर्ष का ही प्रयोग किया जाता है :

T4 : 8	H8.1	1948 में प्रकाशित प्रथम खण्ड
T4 : 8	H8.2	1956 में प्रकाशित द्वितीय खण्ड
T4 : 8	H8.3	1965 में प्रकाशित तृतीय खण्ड
T4 : 8	H8.4	1971 में प्रकाशित चतुर्थ खण्ड

सुविधा के लिए तथा वर्ष संख्या में नित्य परिवर्तन न करना पड़े, इस विचार से प्रथम प्रकाशित खण्ड की वर्ष संख्या समस्त खण्डों को देने की यह अनुमति डॉ० रंगनाथन ने दी है।

परिशिष्ट संख्या : मुख्य ग्रन्थ के पश्चात् कभी-कभी उसका परिशिष्ट प्रकाशित होता है। इस परिशिष्ट को सम्बन्धित ग्रन्थ के साथ रखने के लिए परिशिष्ट संख्या दी जाती है। इसका योजक चिह्न छोटी रेखा (-) है। उदाहरणार्थ, ई० स० 1969 में 'अर्थशास्त्र' विषय पर प्रकाशित मुख्य ग्रन्थ तथा उसके परिशिष्ट को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है :

अर्थशास्त्र (मुख्य ग्रन्थ)	X K9
अर्थशास्त्र का प्रथम परिशिष्ट	X K9-1
अर्थशास्त्र का द्वितीय परिशिष्ट	X K9-2

इस प्रकार मुख्य ग्रन्थ के जितने परिशिष्ट प्रकाशित हों, उनको परिशिष्ट-संख्या दी जा सकती है।

कभी-कभी मुख्य ग्रन्थ के किसी खण्ड का परिशिष्ट भी प्रकाशित होता है। तब खण्ड संख्या के पश्चात् परिशिष्ट संख्या दी जाती है। उदाहरणार्थ,

अर्थशास्त्र के तृतीय खण्ड (ई० स० 1969 में प्रकाशित)	**X K9.3**
अर्थशास्त्र के तृतीय खण्ड का प्रथम परिशिष्ट	**X K9.3-1**

प्रति संख्या : ग्रन्थालय में कभी-कभी एक ग्रन्थ की अनेक प्रतियाँ क्रय की जाती हैं। इन प्रतियों को प्रति संख्या दी जाती है। इसका योजक चिह्न अर्धविराम (;) है। उदाहरणार्थ, 'भारतवर्ष का इतिहास' विषय पर-ई० स० 1969 में प्रकाशित ग्रन्थ की चार प्रतियों को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है :

भारतवर्ष का इतिहास	प्रथम प्रति	**V44 K9**
भारतवर्ष का इतिहास	द्वितीय प्रति	**V44 K9;1**
भारतवर्ष का इतिहास	तृतीय प्रति	**V44 K9;2**
भारतवर्ष का इतिहास	चतुर्थ प्रति	**V44 K9;3**

यहाँ यह स्पष्ट करना अनिवार्य है कि प्रति संख्या दूसरी प्रति से दी जाती है। दूसरी प्रति को क्रमांक ;1 तीसरे को ;2 चौथी को ;3........आदि दिया जा सकता है।

जब किसी ग्रन्थ का नवीन संस्करण शुद्धिकृत तथा पूर्णतया भिन्न प्रकार का होता है, तब उनको भी प्रति समझकर प्रति की संख्या अथवा संस्करण संख्या दी जा सकती है। संस्करण का योजक चिह्न भी अर्धविराम (;) होता है। योजक चिह्न के आगे नये संस्करण का प्रकाशन वर्ष दिया जाता है; उदाहरणार्थ, **1955** में प्रकाशित "भारत की केन्द्रीय बैंक" **X621** विषय पर ग्रन्थ के **1957, 1959** तथा **1961** में प्रकाशित संस्करण निम्न प्रकार दिखाये जा सकते हैं :

X	621	J5	ग्रन्थ का प्रथम संस्करण में
X	621	J5;J7	ग्रन्थ का द्वितीय संस्करण 1957 में
X	621	J5;J9	ग्रन्थ का तृतीय संस्करण 1959 में
X	621	J5,K1	ग्रन्थ का चतुर्थ संस्करण 1961 में

समालोचना संख्या : जब किसी ग्रन्थ विशेष की समालोचना करने वाले अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हो जाते हैं, तब ग्रन्थ संख्या में उसके लिए समालोचना संख्या दी जा सकती है। जिस ग्रन्थ के ऊपर समालोचनात्मक ग्रन्थ लिखा जाता है, उस ग्रन्थ को मूल ग्रन्थ (Host Book) तथा समालोचना ग्रन्थ को सम्बन्धित ग्रन्थ (Associated Book) कहते हैं। दोनों ग्रन्थों को मूल ग्रन्थ की वर्ष संख्या ही दी जाती है तथा उसके पश्चात् योजक चिह्न कोलन (:) के साथ समालोचना संख्या लिख दी जाती है। उदाहरणार्थ, "भारतीय राजनीति" **W.44** विषय पर मूल ग्रन्थ तथा समालोचना ग्रन्थ को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है :

मूल ग्रन्थ	(1968 में प्रकाशित)	**W.44 K8**
मूल ग्रन्थ की समालोचना	(1970 में प्रकाशित)	**W.44 K8:g**

संग्रह संख्या (Collection Number) : कभी-कभी केवल वर्ग संख्या तथा ग्रन्थ संख्या से ग्रन्थ का निश्चित स्थान दिखाना कठिन होता है। इसका कारण यह है कि कुछ ग्रन्थ सामान्य आकार से बड़े तथा कुछ पूर्णतया छोटे होते हैं। किसी ग्रन्थालय में छोटे आकार के ग्रन्थों एवं पुस्तिकाओं को सामान्य से बड़े आकार के ग्रन्थों के साथ रखना उपयुक्त नहीं होता। ऐसे ग्रन्थ को भिन्न-भिन्न स्थानों पर रखना आवश्यक है। उनके स्थान की भिन्नता स्पष्ट करने के लिए कुछ विशेष चिह्नों का प्रयोग किया जा सकता है। असाधारण ग्रन्थों के संग्रह विशेष को कुछ संख्या प्रदान कर ग्रन्थ का स्थान अधिक निश्चित किया जा सकता है। इस प्रकार के ग्रन्थों को दी गई संख्या को संग्रह संख्या कहते हैं।

डॉ० रंगनाथन के अनुसार अधिकांश ग्रन्थालयों में निम्न संग्रह संख्या उपयोगी है :

1. छोटे आकार के ग्रन्थ अथवा पुस्तिकाएँ — **Undersized books or Pamphlets** — **X** $\underline{J2}$
   ग्रन्थ संख्या के नीचे छोटी रेखा खींचकर
   Underline the Book Number
2. सामान्य से बड़े आकार के ग्रन्थ — **Oversized books** — X $\overline{J2}$
   ग्रन्थ संख्या के ऊपर छोटी रेखा खींचकर
   Overline the Book Number
3. असाधारण आकार के ग्रन्थ — **Abnormal Books** — h $\overline{\underline{H5}}$
   ग्रन्थ संख्या के ऊपर एवं नीचे छोटी रेखा खींचकर
   Underline and Overline the Book Number
4. फटे हुए ग्रन्थ — **Wornout books** — T4 K8 (circled)
   ग्रन्थ संख्या को पर्यवेष्टित कर
   Encircle the Book Number
5. वाचनालय में रखे ग्रन्थों का संग्रह — **Books in Reading Room** — **RR J9**
   ग्रन्थ संख्या के ऊपर RR लिखकर
   RR over the Book Number
6. पाठ्यक्रम के ग्रन्थों का संग्रह — **Collection of Text Books** — **TC** K2
   ग्रन्थ संख्या के ऊपर TC लिखकर
   TC over the Book Number
7. राजनीति विज्ञान विभाग का संग्रह — **Political Science Department** — **WD** K8
   ग्रन्थ संख्या के ऊपर **WD** लिखकर
   WD over the Book Number

2 ज्ञान वर्गीकरण एवं ग्रन्थ वर्गीकरण
(Knowledge Classification and Book Classification)

सामान्य वर्गीकरण के अन्तर्गत केवल ज्ञात सत्वों (known entities) के वर्गीकरण का ही वर्णन किया जाता है। ज्ञान वर्गीकरण के अन्तर्गत ऐसे समस्त सत्वों (all entities) का अध्ययन किया जाता है, जिसमें से कुछ अज्ञात हैं अथवा केवल भविष्य में ही ज्ञात हो सकता है। ज्ञान-जगत से अनेक सत्वों के ज्ञात होने पर उनका भी समावेश किए जाने की योजना ज्ञान वर्गीकरण में की जानी चाहिए। वास्तव में, ज्ञान वर्गीकरण एवं ग्रन्थ वर्गीकरण विषय का अध्ययन विभिन्न दृष्टि-कोणों से किया गया है :

डॉ० रंगनाथन का दृष्टिकोण

ग्रन्थालय वर्गीकरण = ज्ञान वर्गीकरण + ग्रन्थ वर्गीकरण + अनुक्रम वर्गीकरण

पाश्चात्य दृष्टिकोण

ग्रन्थ वर्गीकरण = ज्ञान वर्गीकरण + निश्चित तथ्य (सामान्य वर्ग, रूप वर्ग एवं विभाजन, अंकन, अनुक्रमणी)

उपर्युक्त दृष्टिकोणों पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि ज्ञान के साथ ग्रन्थों के निश्चित तत्वों को सम्मिलित करना अधिक उपयुक्त है। सेयर्स का कथन है कि "ग्रन्थों को व्यवस्थित करने के लिए वर्गीकरण पद्धति को प्रमुख यंत्र के रूप में ग्रन्थों की प्रकृति पर भी ध्यान देना चाहिए।" सेयर्स महोदय ग्रन्थों के निम्नांकित निश्चित तथ्यों को ज्ञान वर्गीकरण में सम्मिलित करना चाहते हैं :

सामान्य वर्ग	Generalia class
रूप वर्ग एवं विभाजन	Form classes and Divisions
अंकन	A Notation
अनुक्रमणी	An Index

किन्तु इन तथ्यों के वास्तविक प्रयोग के सम्बन्ध में सेयर्स का कथन है कि "परिस्थिति के अनुसार ग्रन्थों के वाह्य रूपों द्वारा व्यवस्थित ग्रन्थों का वर्गीकरण ही ज्ञान का वर्गीकरण है।" व्यापक रूप में ज्ञान वर्गीकरण तथा ग्रन्थ वर्गीकरण को इस प्रकार रखा जा सकता है :

ज्ञान वर्गीकरण	= विशिष्ट विषय वर्ग संख्या	Specific subject Class Number
ग्रन्थ वर्गीकरण	= ग्रन्थ की विशिष्ट आकृति ग्रन्थ संख्या	Specific feature of book Book Number
ग्रन्थालय वर्गीकरण	= ज्ञान वर्गीकरण + ग्रन्थ वर्गीकरण	Knowledge Classification + Book Classification

ज्ञान वर्गीकरण तथा ग्रन्थ वर्गीकरण के मध्य मुख्य भिन्नताओं को इस प्रकार रखा जा सकता है :

	ज्ञान वर्गीकरण		**ग्रन्थ वर्गीकरण**
1	स्वयं ज्ञान को व्यवस्थित किय जाता है। ज्ञान क्षेत्र के समस्त ग्रहणीय खण्डों को सुगम क्रम में रखा जाता है।	1	ज्ञान की अभिव्यक्ति को लिखित अथवा अन्य रूपों में व्यवस्थित किया जाता है। ग्रंथों को फलकों पर सहायकक्रम में रखा जाता है जिससे कि पाठक सुगमतापूर्वक उन्हें ढूँढ सकें।
2	यह अधिक अमूर्त है केवल भावनाओं को विषय अथवा उप विषय के रूप में व्यवस्थित किया जाता है।	2	यह अधिक मूर्त है। यह भावनाओं की लिखित अभिव्यक्ति से सम्बन्धित है जिन्हें ग्रंथ एवं पत्र-पत्रिकाओं में व्यक्त किया जाता है।
3	यह पूर्वनिर्णित भावनाओं पर आधारित है। व्यक्तिगत अथवा प्रचलित सिद्धांतों पर आश्रित है।		वास्तविक एवं अविभाज्य उद्देश्यों अथवा उनके रूपों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
4	यह मुख्यतया वास्तविक है।	4	यह अधिक सीमा तक कृत्रिम है।
5	आत्मा अथवा विषय पर ध्यान दिया जाता है।	5	शरीर अथवा भौतिक विशेषताओं पर ध्यान दिया जाता है।
6	एक विशिष्ट विषय तथा दूसरे के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।	6	एक रूप अथवा दूसरे के मध्य सम्बन्ध है।
7	विषयों की व्यवस्था में कोई क्रम आवश्यक नहीं है।	7	विभिन्न ग्रन्थों एवं पत्रिकाओं का उपयोगी क्रम आवश्यक है।
8	सम्पूर्ण ज्ञान क्षेत्र अनिवार्यतः सामर्थ्य से बाहर है।	8	ग्रन्थों का भौतिक रूप पूर्णतया निश्चित है।

दशम अध्याय

वर्गकार की स्वायत्तता

(Autonomy to Classifier)

वर्गीकरण की परिभाषा करते हुए यह स्पष्ट किया जा चुका है कि ग्रन्थ में वर्णित विषय का, प्राकृतिक भाषा से सांकेतिक भाषा में, किया गया अनुवाद ही वर्गीकरण कहलाता है। यह अनुवाद मूल का सह-विस्तृत हो सकता है अथवा उसका विस्तार मूल से अधिक हो सकता है। उदाहरणार्थ, "गुलाब के लिए खाद" **Manure for Rose** विषय का वर्गीकरण करने में वर्ग संख्या, एकल पक्षों (**Isolate facets**) खाद एवं गुलाब—का तथा निहित मूल पक्ष (**Basic Facets**)—कृषि का प्रतिनिधित्व करती है। इस प्रकार की वर्ग संख्या विषय्र के नाम की सह-विस्तृत है। किन्तु वर्गीकरण की कोई पद्धति सह-विस्तृत वर्ग संख्या देने में समर्थ नहीं हो सकती। उदाहरणार्थ, इस पद्धति की वर्ग संख्या में केवल "गुलाब की कृषि" विषय का प्रतिनिधित्व ही होगा। इस वर्ग संख्या में विषय का अधिक विस्तार होता है। वास्तव में, विषय के अनुरूप वर्ग संख्या निर्मित करने का उत्तरदायित्व वर्गकार पर है, तथा उसे ऐसा करने के लिए पूर्ण स्वायत्तता प्रदान की जानी चाहिए।

1 स्वायत्तता की परिभाषा
(Definition of Autonomy)

'वर्गकार' शब्द का प्रयोग ग्रन्थालय वर्गीकरण से सम्बन्धित दो कार्यों के लिए प्रायः होता आया है। इन दोनों कार्यों में अन्तर समझाने के लिए यहाँ यह स्पष्ट करना उचित है कि जो व्यक्ति वर्गीकरण की किसी पद्धति का आविष्कार करता है, वह 'वर्गाचार्य' **Classificationist** कहलाता है। जो व्यक्ति किसी प्रामाणिक वर्गीकरण पद्धति के अनुसार ग्रन्थों में वर्णित विषयों के लिए वर्ग संख्या बनाता है, वह 'वर्गकार' **Classifier** कहलाता है।

'स्वायत्तता' शब्द का अर्थ स्व-शासन का अधिकार है। वर्गकार के लिए स्व-शासन का अर्थ वर्गीकरण के कार्य में स्वयं समर्थ होना है। वास्तव में वर्गाचार्य के क्षेत्र में आने वाले कुछ कर्तव्यों का वर्गकार द्वारा प्रयोग करना वर्गकार की स्वायत्तता कहलाता है। एक महत्वपूर्ण अधिकार होने के कारण वर्गाचार्य एवं वर्गकार दोनों की सम्मति से स्वायत्तता को सौंपा जाना चाहिए।

2 स्वायत्तता की आवश्यकता
(Need for Autonomy)

यह सर्वमान्य है कि ज्ञान-जगत संचरणशील है। ज्ञान में निरन्तर विकास होता रहता है तथा नवीन विषयों की सर्वत्र उत्पत्ति होती है। इसके विपरीत वर्गीकरण पद्धति का संस्करण प्रतिदिन अथवा प्रतिवर्ष प्रकाशित नहीं हो सकता। दूसरे शब्दों में, नवीन विषयों का वर्गीकरण करने के लिए वर्गाचार्य के निर्देशों की प्रतीक्षा करना सम्भव नहीं है। साथ ही वर्गाचार्य की स्वयं की कुछ सीमाएँ होती हैं। ग्रन्थों में ज्ञान के विभिन्न दृष्टिकोणों के विभिन्न प्रकार के संसर्गों को पहले से ही जान लेना वर्गाचार्य के लिए सम्भव नहीं है। प्रत्येक ग्रन्थ की कुछ विचित्र विशेषताएँ होती हैं। इन विशेषताओं की संख्या इतनी अधिक है कि वर्गाचार्य उन सबका अनुभव नहीं कर सकता।

ग्रन्थालय विज्ञान के सूत्रों के अनुसार नवीन विषयों को समावेश करने वाले ग्रन्थों को उपयुक्त वर्ग संख्या प्रदान कर फलकों पर व्यवस्थित करना आवश्यक है। इस प्रकार के ग्रन्थों को वर्गाचार्य से वर्ग संख्या प्राप्त करने तक पाठकों से दूर रखना अनुचित है। सामान्यत: वर्गकार एक वर्गीकरण पद्धति की सहायता से वर्गीकरण करने में समर्थ है, किन्तु वर्गीकरण पद्धति की सीमा के बाहर की समस्या उत्पन्न होने पर वर्गकार को कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार की कठिनाई को हल करने के लिये वर्गकार को स्वायत्तता दी जाना आवश्यक है।

इस कार्य के लिए वर्गीकरण पद्धति में कुछ सामान्य नियमों, विधियों आदि का प्रावधान किया जाता है। वर्गकार द्वारा इनका पालन कर विभिन्न स्थानों पर वर्गीकरण में एकरूपता लाना सम्भव है। नियम एवं विधियाँ वर्गकार के लिए निर्देशक सिद्धान्तों का कार्य करते हैं।

3 विभिन्न पद्धतियों में स्वायत्तता
(Autonomy in various Schemes)

यह स्पष्ट करना उचित है कि जिस पद्धति में अनुसूचित एवं अन्य स्मृति-सहायक, दशमलव भिन्न विधि, पक्ष विधि तथा दशा विधि आदि का प्रावधान होता है, उसमें वर्गकार को कुछ स्वायत्तता दी जाती है। ऐसी दशा में प्रत्येक वर्गकार द्वारा नवीन विषय की वर्ग संख्या निर्मित करना असम्भव है। किन्तु इसके लिए वर्गकार को वर्गीकरण भाषा की उचित जानकारी आवश्यक है।

परिगणनात्मक वर्गीकरण : इस पद्धति के अन्तर्गत वर्गकार को किसी प्रकार की स्वायत्तता प्रदान नहीं की जाती है। वर्गकार केवल अनुक्रमणी के पृष्ठों में से ही विस्तृत विस्तार के विषयों के लिए वर्गांक खोजने का प्रयत्न करता है। यदि वह यह अनुभव करता है कि वर्गांक वर्गीकृत विषय का सह-विस्तृत नहीं है, तब वर्गीकरण पद्धति का केवल यही निर्देश है कि "इसको ग्रहण करो अथवा त्याग दो। आपको स्वयं की स्वायत्तता प्राप्त नहीं है। आप सह-विस्तृत वर्गांक का निर्माण नहीं कर सकते।"

इस पद्धति में ग्रन्थ के वर्गीकृत विषय को निर्धारित करने में वर्गकार को किसी प्रकार का मार्गदर्शन नहीं दिया जाता है। वर्गीकरण के सूत्रों तथा सिद्धान्तों से वर्गकार किसी प्रकार की सहायता प्राप्त नहीं कर सकता है।

वास्तव में किसी प्रकार ग्रन्थ के विषय में लिए गए निर्णय की तुलना किसी एक विशेष स्थान पर पहुँचने से की जा सकती है। परिगणनात्मक वर्गीकरण में ऐसे मार्गों पर यात्रा करना है, जहाँ दो अथवा अधिक मार्गों के संगम पर किसी प्रकार के संकेत-स्तम्भ की व्यवस्था नहीं है। केवल अनुमान अथवा परीक्षण द्वारा ही उचित मार्ग चुना जा सकता है।

कठोर पक्षात्मक वर्गीकरण : इस पद्धति के अन्तर्गत वर्गकार को कुछ स्वायत्तता प्रदान की जाती हैं। उसे आधार वर्ग की अनुसूची में कुछ सम्मिलित करने की स्वायत्तता नहीं है। किन्तु उसे यह सन्तोष है कि वह स्वयं के प्रयत्न से वर्ग संख्या निर्मित कर सकता है। किन्तु यहाँ भी स्वायत्तता केवल सीमित है। यदि पक्ष उपनियम से निर्धारित पक्षों के अतिरिक्त अन्य पक्षों की किसी विषय में आवश्यकता होती है तो इस स्थिति में वर्गकार को सह-विस्तृत वर्ग संख्या निर्मित करने की स्वतन्त्रता नहीं है।

इस पद्धति में वर्गीकरण करने योग्य ग्रन्थ के विषय को निर्धारित करने में वर्गकार को मार्गदर्शन दिया जाता है। पक्ष उपनियम वर्गकार को यह स्पष्ट करा देता है कि संयुक्त विषय के लिए कौन से एकलों का प्रयोग किया जा सकता है।

इस पद्धति में किसी ग्रन्थ के विषय को निर्धारित करने की तुलना संकेत-चिह्नों सहित मार्गों पर यात्रा करने से की जा सकती है।

वैश्लेषणी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण : इस पद्धति के अन्तर्गत वर्गकार को अत्यधिक स्वायत्तता प्रदान की जाती है। इसमें वह पक्ष उपनियम द्वारा सीमित नहीं है। किसी भी संयुक्त विषय द्वारा प्रस्तुत समस्त पक्षों का विषय की वर्ग संख्या में प्रावधान किया जा सकता है। किसी भी पक्षात्मक वर्गीकरण में प्रत्येक अंकित अनुसूची संक्षिप्त होती है। अतः किसी भी पक्ष के लिए उचित पक्ष संख्या को चुनना अधिक सुगम है। इसके अतिरिक्त, यदि किसी संयुक्त विषय में विद्यमान किसी पक्ष का, वर्गीकरण पद्धति की अनुसूची में प्रावधान नहीं है तो वर्गकार को निर्धारित सूत्रों एवं सिद्धान्तों के अनुसार अनुसूची में नवीन संख्या की रचना करने की स्वतन्त्रता है।

इस पद्धति में किसी संयुक्त विषय के विभिन्न पक्षों को निश्चित करने के लिए वर्गाकार को मार्ग-दर्शन दिया गया है। ग्रन्थ में वर्णित मूल विषय अथवा वर्गीकृत विषय के लिए विभिन्न पक्षों को सुविधापूर्वक व्यवस्थित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त स्मृति सहायक सूत्रों की सहायता से वर्गकार नवीन संकेन्द्र की रचना अथवा किसी भी संकेन्द्र का विस्तार कर सकता है। वास्तव में, वैश्लेषी संश्लेषणात्मक पद्धति द्वारा वर्गकार को अत्यधिक स्वायत्तता प्रदान की गई है।

इस पद्धति में किसी भी ग्रन्थ के विषय को निर्धारित करने की तुलना विभिन्न प्रकार के संकेत चिह्नों सहित मार्गों पर यात्रा करने से की जा सकती है।

4 क्या वर्गकार की स्वायत्तता वांछनीय है ?
(Is Autonomy of Classifier justified)

एक कुण्ठित बुद्धि वाले व्यक्ति (Cynic) का विचार है कि "वैश्लेषी संश्लेषणात्मक पद्धति के अनुसार वर्गीकरण करने के लिए विद्वानों की आवश्यकता होगी। क्या छोटे ग्रन्थालयों में इनकी व्यवस्था सम्भव है ? हमारे देश में अधिकांश ग्रन्थालयों के ग्रन्थपाल केवल शिक्षित हैं। वैश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण से मानसिक सामन्तशाही (Intellectual aristocracy) की गंध आती है। यह जनतन्त्र के लिए घातक है।"

इसके विपरीत कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जो बिल्ली तथा चूहे दोनों के साथ खेलने के इच्छुक हैं। उनका कथन है कि "हम कुछ विशेषित ग्रन्थालयों में वर्गकारों के लिए अत्यधिक स्वायत्तता के इच्छुक हैं। हम अनगिनत छोटे ग्रन्थालयों के लिए वर्ग संख्या की पूर्णतया पूर्वनिर्मित पद्धति के भी इच्छुक हैं। पूर्वकथित ग्रन्थालयों के लिए वैश्लेषी संश्लेषणात्मक पद्धति तथा अन्य प्रकार के ग्रन्थालयों के लिए साधारण परिगणनात्मक पद्धति चाहते हैं। दोनों प्रकार के ग्रन्थालयों के लिए एक ही प्रकार की पद्धति की व्यवस्था करना असम्भव है।"

इसके साथ ही समय पर सहायता करने वाला एक व्यक्ति (Samaritan) है, जो व्यवसाय को संगठित रखने तथा सबके साथ उत्तम व्यवहार करने का इच्छुक है। उसका सुझाव है कि "वैश्लेषी संश्लेषणात्मक पद्धति सर्वथा अनिवार्य है। कोई भी परिगणनात्मक पद्धति छोटे ग्रन्थालयों में भी निरर्थक हो जायगी। अतः यह आवश्यक है कि, समय-समय पर, वैश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण के अनुसार समुचित परिगणनात्मक अनुसूचियों में पूर्वनिर्मित वर्ग संख्याओं को सम्मिलित किया जाय। इससे छोटे ग्रन्थालयों के लिए केवल शिक्षित ग्रन्थालयों को भी लाभ हो सकेगा।

उपर्युक्त तीनों प्रकार के व्यक्ति वर्गकार की उपयुक्तता को स्वीकार करते हैं, किन्तु स्वायत्तता के विषय में भिन्न-भिन्न मत प्रकट करते हैं। वर्तमान समय में विश्व के विभिन्न देशों ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि ग्रन्थालय को पाठकों के लिए उपयोगी बनाने के लिए पाठ्य-सामग्री को सहायक क्रम में व्यवस्थित करना अनिवार्य है। इसकी प्राप्ति के लिए वर्गकार को स्वायत्तता प्रदान करना वांछनीय एवं हितकारी है।

अनन्त ज्ञान क्षेत्र की विलक्षणता यह है कि वर्तमान में अज्ञात असंख्य वर्ग भविष्य में ज्ञात हो जायेंगे तथा उन्हें समुचित वर्ग संख्या एवं अनुकूल स्थान की आवश्यकता होगी। एक नवीन वर्ग को ऐसी वर्ग संख्या की आवश्यकता हो सकती है जो अनुसूची में अंकित नहीं है। ऐसी दशा में दो में से एक कार्य किया जा सकता है—या तो नवीन विषय को पूर्व में अंकित पंक्ति में रखा जा सकता है या उसके लिए नवीन पंक्ति का निर्माण करने की आवश्यकता होती है।

परिगणनात्मक पद्धति में, वर्गकार को नवीन वर्ग की संख्या प्राप्त करने के लिए वर्गाचार्य पर निर्भर रहना पड़ता है। वह स्वयं उसका निर्माण नहीं कर सकता।

वर्गाचार्य से नवीन संख्या प्राप्त होने तक उसे अस्थायी संख्या प्रदान करनी होगी। ये संख्या नवीन वर्ग के लिए अधिक विस्तृत हो सकती है। इसके विपरीत वैश्लेषी संश्लेषणात्मक पद्धति में वर्गाचार्य द्वारा विषय का विश्लेषण करने की प्रक्रिया दी जाती है। विषय को निर्धारित करने के पश्चात् उसे वर्ग संख्या में अनुवाद करने की भी व्यवस्था होती है। इसके साथ ही वर्गीकरण के सूत्रों, विशेषतया स्मृति सहायक से सम्बन्धित, की सहायता से नवीन वर्ग की माँग पर नवीन अनुसूचियों का निर्माण, अनुसूची के विद्यमान पंक्तियों का विस्तार अथवा श्रृंखलाओं का फैलाव किया जा सकता है। वर्गाचार्य द्वारा संख्या प्रदान करने तक वर्गकार को प्रतीक्षा करना आवश्यक नहीं है। वर्गकार स्वयं वर्ग संख्या का निर्माण कर सकता है। वैश्लेषी संश्लेषणात्मक पद्धतियों में स्थूल-विचारों से सम्बन्धित ग्रन्थों के वर्गीकरण के लिए वर्गकार को अत्यधिक स्वायत्तता प्रदान की गई है।

उपयुक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि ग्रन्थालय वर्गीकरण पद्धति को अधिक व्यापक, श्रेष्ठ एवं उपयुक्त बनाने के लिए ग्रन्थों में वर्णित विषय के अनुरूप वर्ग संख्या निर्मित करने के लिए वर्गकार को स्वायत्तता प्रदान करना आवश्यक है। स्वायत्तता के लिए वर्गीकरण पद्धति में विभिन्न विधियों (Devices) का प्रावधान किया जाता है। यहाँ केवल दशमलव तथा द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धतियों में दी गई विधियों को स्पष्ट किया जा रहा है।

5 दशमलव पद्धतियों में स्वायत्तता
(Autonomy in Decimal Scheme)

परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धति होने के कारण दशमलव पद्धति में अधिक स्वायत्तता की आशा नहीं की जा सकती। इस पद्धति में वर्गकार को स्वायत्तता प्रदान करने के लिए अधिक विधियों का प्रावधान नहीं है। इस पद्धति में विश्लेषण की व्यवस्था नहीं है तथा संश्लेषण की रीतियाँ नहीं हैं। पंक्तियों तथा श्रृंखलाओं में ग्राह्यता सीमित है। एकलों का विस्तार केवल अंशतः ही सम्भव है। अभिधारणाओं (postulates) द्वारा वर्ग संख्या की जाँच प्रायः असम्भव है। उपर्युक्त परिस्थितियों में वर्गकार की स्वायत्तता अधिक सीमा तक असम्भव है, तथापि दशमलव पद्धति में स्वायत्तता का अभाव नहीं है। वर्गकार की स्वायत्तता के लिए भिन्न विधियों का प्रावधान किया गया है :

1. अनुसूचित स्मृति-सहायक विधि
   Scheduled Mnemonic Device
2. दशमलव भिन्न विधि
   Decimal Fraction Device
3. रिक्त-स्थान विधि
   Gap Device
4. अनुवर्णिक विधि
   Alphabetical Device

उपर्युक्त विधियों को उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :

1 अनुसूचित स्मृति-सहायक विधि : यद्यपि वर्गीकरण सामान्यतः विषयानुसार किया जाता है, तथापि विषय की प्रस्तुति के रूप के अनुसार भी व्यवस्था करना वांछनीय है। ग्रन्थों को विभिन्न रूपों में एवं विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रकाशित किया जाता है। कुछ ग्रन्थों में विषय के सिद्धान्तों का तथा कुछ में सामान्य रूप-रेखा का वर्णन रहता है। कुछ ग्रन्थ विश्वकोश होते हैं। दशमलव पद्धति में कुछ "रूप विभाजनों" (**Form Divisions**) का प्रावधान है, जिनका प्रयोग वर्गकार आवश्यकतानुसार कर सकता है। कुछ प्रमुख रूप विभाजन निम्न हैं :

01	दर्शन, सिद्धान्त	**Philosophy, Theory**
02	रूपरेखा, पाठ्यक्रम	**Outlines, Syllabus**
03	कोश, विश्वकोश	**Dictionary, Encyclopaedia**
05	पत्रिका	**Periodical**
07	अध्ययन एवं शिक्षा	**Study and Teaching**

उपर्युक्त रूप विभाजनों को आवश्यकतानुसार समस्त मुख्य वर्गों के साथ लगाया जा सकता है :

320 राजनीति विज्ञान + 05 पत्रिका = 320.5 राजनीति विज्ञान की पत्रिका

181 प्राच्य दर्शन + 02 पाठ्यक्रम = प्राच्य दर्शन का पाठ्यक्रम

कुछ अंकों के प्रयोग द्वारा भाषा-शास्त्र के उपवर्गों में विशेष दृष्टिकोण अपनाया गया है :

2 व्युत्पत्ति	**Etymology**	422	आंग्ल भाषा की व्युत्पत्ति
5 व्याकरण	**Grammer**	425	,, ,, की व्याकरण
		491.25	संस्कृत व्याकरण
		491.465	मराठी व्याकरण

दशमलव पद्धति में साहित्य के उपवर्गों में कुछ निश्चित अंकों का विभिन्न रूपों के लिए प्रयोग किया गया है :

1 काव्य	**Poetry**	821	आंग्ल काव्य
2 नाटक	**Drama**	852	इटेलियन भाषा के नाटक
3 निबन्ध	**Essays**	834	जर्मन भाषा के निबन्ध
		891.14	संस्कृत भाषा के निबन्ध

2 दशमलव भिन्न विधि : वर्गीकरण की पद्धति में भूत एवं वर्तमान के विषयों का ही प्रावधान किया जाता है; किन्तु भविष्य में भी विषयों की उत्पत्ति होती रहती है। भविष्य में ज्ञात विषयों की व्यवस्था करने हेतु, अंकन में दशमलव भिन्न विधि का प्रयोग किया जाता है। इस विधि के अन्तर्गत किसी भी पंक्ति एवं शृंखला में अंकित संख्या को आगे बढ़ाया जा सकता है।

इस विधि के विषय में डॉ॰ रंगनाथन का कथन है कि "ग्रन्थालय वर्गीकरण के प्रति दशमलव वर्गीकरण (मुख्यतः मेलविन ड्यूई) का महत्त्वपूर्ण एवं स्थायी

योगदान दशमलव भिन्न अंकन का प्रावधान है।'' जिस प्रकार एक वर्ग विभिन्न उपवर्गों में विभाज्य है, उसी प्रकार अनुवादित क्रमिक संख्या भी उप-विभाज्य होनी चाहिए। ऐसा दशमलव भिन्न विधि की सहायता से सुगमतापूर्वक किया जा सकता है :

शुद्ध विज्ञान	500
गणित	511
व्यापारिक गणित	511.8
	511.81
	आदि

3 **रिक्त-स्थान विधि** : इस विधि के अन्तर्गत अंकन के विभिन्न स्तरों पर कुछ रिक्त स्थान छोड़ दिए जाते हैं। भविष्य में ज्ञात नवीन वर्गों अथवा उपवर्गों को विद्यमान अंकों के संदर्भ में सुगमता से स्थान प्रदान किया जा सकता है, तथापि इस विधि का क्षेत्र अत्यधिक संकुचित है।

4 **अनुवर्णिक विधि** : इस विधि के प्रयोग से अंकन में विचारों का पृथक्करण किया जा सकता है :

621.57	प्रशीतक	Refrigerator
621.57G	प्रशीतक (गोदरेज)	Refrigerator (Godrej)

इस विधि के अन्तर्गत पृथक्करण के लिए प्रथम, प्रथम दो अथवा प्रथम तीन वर्णों का प्रयोग किया जाता है। दशमलव पद्धति में इस विधि का प्रयोग चतुर्दश संस्करण (1942) से प्रारम्भ किया गया था तथा अब इसका प्रयोग बिना अवरोध के किया जा रहा है।

6 द्विबिन्दु पद्धति में स्वायत्तता
(Autonomy in Colon Scheme)

द्विबिन्दु वर्गीकरण की रचना विश्लेषण तथा संश्लेषण की धारणा पर आधारित है। इसकी कार्य-प्रणाली तीन विचार स्तरों में विभाजित है। इसी के फलस्वरूप विभिन्न दिशाओं में उत्पन्न समस्याओं को हल करने के लिए असंख्य नियमों, सूत्रों एवं विधियों का प्रावधान किया गया है। पंक्तियों तथा श्रृंखलाओं में ग्राह्यता असीमित है। एकलों का विस्तार पूर्णतः सम्भव है। अभिधारणाओं एवं सूत्रों की सहायता से वर्ग संख्या की पूर्ण जाँच सम्भव है। उपर्युक्त परिस्थितियों में वर्गकार को पूर्ण स्वायत्तता प्राप्त है तथा आवश्यकतानुसार इस स्वायत्तता का प्रयोग कर सकता है। इसके लिए निम्न विधियों का प्रावधान किया गया है :

1 अनुसूचित स्मृति-सहायक विधि
Scheduled Mnemonic Device

2 दशमलव भिन्न विधि
Decimal Fraction Device

3 रिक्त-स्थान विधि
Gap Device

4 पक्ष विधि
Facet Device
5 अष्टक विधि
Octave Device
6 विषय विधि
Subject Device
7 अनुवर्णिक विधि
Alphabetical Device

उपर्युक्त विधियों को उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है ।

1 **अनुसूचित-स्मृति-सहायक विधि :** सामान्यतः वर्गीकरण पद्धति में प्रत्येक मुख्य वर्ग से सम्बन्धित विषयों को अनुसूची में अंकित कर दिया जाता है । किन्तु वैश्लेषी संश्लेषणात्मक पद्धति में अंकित संख्याओं के अतिरिक्त विशिष्ट विषय के लिए सह-विस्तृत वर्ग संख्या का भी प्रावधान है । विषय की सह-विस्तृता द्विबिन्दु वर्गीकरण में निवेशित विभिन्न विधियों द्वारा प्राप्त की जा सकती है :

11 सामान्य एकल 12 काल क्रमिक 13 भौगोलिक

11 **सामान्य एकल :** इनका प्रयोग सम्पूर्ण पद्धति में किया गया है । कुछ का प्रयोग किसी एक वर्ग अथवा कुछ वर्गों अथवा खण्डों में अंशतः अथवा पूर्णतः किया गया है । इनमें से कुछ का प्रयोग प्रत्येक विषय में किया जा सकता है :

r	प्रशासन प्रतिवेदन
T.44r	भारत के शिक्षा विभाग का प्रतिवेदन
d	संस्था
U8.44,d	भारतीय यात्रा संस्था
a	ग्रन्थसूची
Da	यांत्रिकी ग्रन्थों की सूची
k	विश्वकोश
Bk	गणित विश्वकोश

12 **काल क्रमिक :** विषय की वर्ग संख्या में क्रमिक विशेषता द्वारा भी सह-विस्तृता प्राप्त की जा सकती है । द्विबिन्दु पद्धति में काल क्रमिक विधि का प्रयोग पृथक्करण के लिये विस्तार से किया गया है : साहित्य में लेखकों, धार्मिक सम्प्रदाय, भौतिकी, चिकित्सा, शिक्षा एवं अर्थशास्त्र में विभिन्न पद्धति, ललित कलाओं में शैली, आदि ।

O157,1	बंगला काव्य
O157,1M62	बंगला साहित्य के कवि—रवीन्द्रनाथ टैगोर
C	भौतिकी
CN1	प्रमात्रा सिद्धान्त
T	शिक्षा
TN3	बुनियादी शिक्षा पद्धति

NA	वास्तुकला	
NA44,J		वास्तुकला की मुगल पद्धति

13 **भौगोलिक :** विषय में भौगोलिक विशेषता के आधार पर भी पृथक्करण किया जा सकता है। द्विबिन्दु में इस विधि का प्रयोग अनेक मुख्य वर्गों में किया गया है : इतिहास तथा विधि में जनसमूह, ललित कलाओं में शैली, अनेक पूर्ववर्ती सामान्य एकलों, आदि।

V	इतिहास	
V44		भारत का इतिहास
NR	संगीत	
NR44		भारतीय संगीत

2 **दशमलव भिन्न विधि** : ज्ञान क्षेत्र में भविष्य में ज्ञात विषयों की व्यवस्था करने हेतु ग्रन्थालय वर्गीकरण के अंकन में दशमलव-भिन्न का प्रयोग किया जाता है। इस विधि के अन्तर्गत किसी भी पंक्ति एवं श्रृंखला में अंकित संख्या को आगे बढ़ाया जा सकता है। मुख्य वर्ग की अनुसूची में अंकित क्रमिक संख्या को इस विधि द्वारा विभाज्य किया जाता है।

2	ग्रन्थालय विज्ञान	
23	शैक्षणिक ग्रन्थालय	
233		महाविद्यालय ग्रन्थालय
234		विश्वविद्यालय ग्रन्थालय

3 **रिक्त-स्थान विधि :** इस विधि के अन्तर्गत अंकन के विभिन्न स्तरों पर कुछ रिक्त स्थान छोड़ दिए जाते हैं। भविष्य में ज्ञात नवीन वर्गों अथवा उपवर्गों को विद्यमान अंकों के सन्दर्भ में सुगमता से स्थान प्रदान किया जा सकता है।

T	शिक्षा
T3	बालिग शिक्षा
T31	शिक्षित
T32	
T33	
T34	
T35	विदेशियों की शिक्षा
T36	
T37	
T38	अशिक्षित

4 **पक्ष विधि :** इस विधि के अन्तर्गत एक वर्ग संख्या के पश्चात् किसी भी संस्था में विशेषताओं की श्रृंखला के आधार पर अंकों अथवा अंकों के समूह को रखा जा सकता है। अंकों के समूह को पक्ष तथा इसके पहले प्रयुक्त अंक को योजक चिह्न कहा जाता है। उदाहरण के लिए मुख्य वर्ग चिकित्सा के किसी विषय में शारीरिक

अंग पक्ष तथा समस्या पक्ष दोनों ही विद्यमान हैं। पक्ष विधि के प्रयोग द्वारा दोनों पक्षों को ही वर्ग संख्या में रखा जा सकता है।

L	चिकित्सा शास्त्र
L185	मानव-नेत्र
L185:3	नेत्र-रचना
L185:4	नेत्र-रोग

5 **अष्टक विधि** : जब पंक्तियों में वर्गों की संख्या नौ से अधिक होने पर एक संकटमय स्थिति उत्पन्न हो जाती है, तब उस स्थिति का सामना करने का प्रयत्न किया जाता है। डॉ॰ रंगनाथन ने इस समस्या का समाधान करने हेतु नौ अंकों में से एक अंक (अर्थात् अंक 9) का बलिदान करने का निश्चय किया। उन्होंने इस अंक का प्रयोग न कर उससे अनेक समान वर्गों का निर्माण किया :

1	2	3	4	5	6	7	8
91	92	93	94	95	96	97	98

इस प्रकार प्रत्येक अष्टक के पश्चात् अंक का प्रयोग न कर अनेक वर्गों को निर्मित किया जा सकता है।

इसी प्रकार अंग्रेजी भाषा के वर्णों के अन्तिम वर्ण का प्रयोग भी इसी प्रकार किया जा सकता है।

A B C D E F.........V W X Y
ZA ZB ZC ZD............... ZX ZY

6 **विषय विधि** : मुख्य वर्ग के कुछ विभाग इस विधि द्वारा निर्मित किए जाते हैं। इस विधि के अन्तर्गत वर्ग संख्या के निर्माण अथवा उपविभाग के हेतु समुचित वर्ग संख्या का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार की विषय-विधि संख्या गोल कोष्ठक में रखी जाती है :

सामान्य उद्योग	X8 (A)
कृषि उद्योग	X8 (J)
इस्पात उद्योग	X6 (F82)

7 **वर्णक्रम विधि** : अन्य किसी विधि से वर्ग संख्या निर्मित करने में कठिनाई उत्पन्न होने पर इस विधि का प्रयोग किया जाता है। सामान्यतः व्यक्तिवाचक संज्ञाओं, व्यापारी संस्थाओं तथा विचित्र वस्तुओं के नामों का निर्देश वर्ग संख्या में करने के लिए यह विधि वर्गकार को स्वायत्तता प्रदान करती है :

कृषि	J
चावल की कृषि	J381
बासुमती चावल की कृषि	J381B
यांत्रिकी	D
साइकिल	D5125
हिन्द साइकिल	D5125H
रेले साइकिल	D5125R

एकादश अध्याय

पाठ्य-सामग्री की व्यवस्था

(Arrangement of Reading Material)

प्रत्येक ग्रन्थपाल का प्रमुख कर्त्तव्य यह देखना है कि उसके पास उपलब्ध पाठ्य-सामग्री के संग्रह का अधिकतम प्रयोग हो—"प्रत्येक पाठक के लिए पुस्तक है तथा प्रत्येक पुस्तक के लिए पाठक है।" इस संग्रह में पुस्तक एवं अन्य लेख सम्मिलित होते हैं, प्रत्येक पुस्तक न केवल भिन्न है वरन् अन्य पुस्तकों से सम्बन्धित है। किन्तु यदि पाठ्य-सामग्री का सम्बन्ध ज्ञात न हो एवं सम्बन्ध स्पष्ट रूप से स्थापित न किया जाय तो पाठ्य-सामग्री का पूर्णरूपेण प्रयोग असम्भव है। पाठक को इन सम्बन्धों से अवगत कराया जाकर ही ग्रन्थालय की सामग्री का उचित प्रयोग किया जा सकता है।

1 पाठ्य सामग्री की व्यवस्था
(Arrangement of Reading Material)

पाठ्य-सामग्री का अत्यधिक प्रयोग निम्नांकित दो साधनों से प्राप्त किया जा सकता है :

(अ) पाठकों को व्यक्तिगत सहायता द्वारा,

(आ) पाठ्य-सामग्री की व्यवस्था एवं प्रदर्शन द्वारा (जिसमें उस सामग्री को यथासम्भव पाठक के लिए प्रत्यक्ष बनाया जा सके)।

प्रथम साधन की सम्भावनाएँ सीमित हैं। यह सम्भव नहीं है कि व्यक्तिगत सहायता प्रदान करने वाला अधिकारी समस्त विषयों की पूर्णतया जानकारी रखता हो। विशेष ग्रन्थालय में ऐसा सम्भव है, किन्तु सामान्य ग्रन्थालय में यह असम्भव है। अत: यह आवश्यक है कि ग्रन्थालय में उपलब्ध सामग्री को उचित ढंग से व्यवस्थित किया जाय, जिससे कि किसी भी ग्रन्थ को सुगमता से प्राप्त किया जा सके।

द्वितीय साधन द्वारा ग्रन्थ की प्रमुख विशेषता (विषय अथवा लेखक) को निश्चित कर व्यवस्था की जाती है तथा ग्रन्थों को समान विशेषता के आधार पर किसी क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। व्यवस्था के लिए प्रयुक्त आधार पाठकों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न प्रकार की माँगों के अनुरूप होने चाहिए :

(अ) किसी व्यक्ति अथवा संस्था द्वारा लिखित अथवा प्रकाशित पाठ्य-सामग्री की माँग अर्थात् लेखक दृष्टिकोण।

(आ) किसी विशेष विषय से सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री की माँग अर्थात् विषय दृष्टिकोण ।

उपर्युक्त दोनों दृष्टिकोणों से की गई माँग की पूर्ति पाठ्य-सामग्री की समुचित व्यवस्था द्वारा ही सम्भव है । वास्तव में एक ग्रन्थ अथवा सुलिखित लेख किसी भी निश्चित सूचना के हस्तांतरण का साधन है । अतः यह अनिवार्य है कि इन साधनों को सावधानीपूर्वक वर्गीकृत सहायक क्रम में रखा जाय । ग्रन्थालय वर्गीकरण की प्रमुख समस्या विषय के अनुसार सामग्री को निश्चित क्रम में व्यवस्थित कर सूचना की पुनः प्राप्ति को सुगम बनाना है ।

ग्रन्थालय वर्गीकरण द्वारा पाठकों के लिए विषयों का अत्यधिक सहायक क्रम एवं व्यवस्था निश्चित की जाती है । इसके अन्तर्गत दो मौलिक समस्याएँ हैं :

(अ) सहायक क्रम में एक जटिल विषय का अनुमानित स्थान निश्चित करना,

(आ) घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित विषयों को एक स्थान पर व्यवस्थित करना, जिससे विषय को निर्धारित करते समय उससे सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री उसके आस-पास ही प्राप्त की जा सके ।

ग्रन्थों में वर्णित प्रत्येक विषय को उसके मौलिक पक्षों में विभाजित कर तथा विभिन्न पक्षों में से केन्द्र बिन्दुओं के संयोजन से संयुक्त विषय की रचना कर उपर्युक्त दोनों समस्याओं का समाधान किया जा सकता है । इससे यह स्पष्ट है कि ग्रन्थ वर्गीकरण पद्धति द्वारा क्रामक संख्या निर्मित करने के लिए कुछ निश्चित सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है ।

2. विषय की समस्या
(Problem of Subject)

ग्रन्थ वर्गीकरण की समस्या विषयों के वर्गीकरण की समस्या है—दूसरे शब्दों में, विभिन्न विषयों में कुछ सामान्य विशेषताओं को प्रतिष्ठित करना है, जिससे कि उसे एक वर्ग मान लिया जाय । उदाहरणार्थ, प्रसूचीकरण, वर्गीकरण, पुस्तक-चयन आदि ग्रन्थालय विज्ञान में ऊर्जा विशेषता के अन्तर्गत हैं, भृत्ति-व्यवस्था श्रमिक-संघ, कार्य-व्यवस्था आदि अर्थशास्त्र में समस्या विशेषता के अन्तर्गत हैं । अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, विधि एवं साहित्य सभी समान शास्त्र हैं ।

उपर्युक्त उदाहरणों से यह प्रतीत होता है कि वर्गीकरण की प्रक्रिया व्याप्ति-मूलक है, अर्थात् सूक्ष्म वर्गों से व्यापक वर्गों की रचना अथवा विशेष से सामान्य की ओर अग्रसर होना—श्रमिक अर्थशास्त्र की विशेष समस्याओं से अर्थशास्त्र एवं अर्थशास्त्र की विशेष समस्याओं से अर्थशास्त्र सामान्य वर्ग आदि । वास्तव में वर्गीकरण पद से यही तात्पर्य है, तथापि व्यावहारिक दृष्टि से विभागों की विपरीत क्रिया द्वारा ग्रन्थ वर्गीकरण का निर्माण होता है—वियोजक रीति के अनुसार सामान्य से विशेष की ओर निर्माण किया जाता है । उदाहरणार्थ, सामान्य वर्ग ग्रन्थालय विज्ञान का उप-वर्गों में एवं उपवर्गों का अतिरिक्त उपवर्गों में विभाजन किया जाता है ।

इसका कारण यह है कि ज्ञान के स्वीकृत मुख्य वर्गों से प्रारम्भ करना सुगम है, क्योंकि मुख्य वर्गों द्वारा ही ज्ञान का निर्माण होता है। उदाहरणार्थ, पुस्तक-चयन वर्गीकरण, प्रसूचीकरण आदि समस्याओं की मान्यता स्वीकार करने से पूर्व इनको सामान्य वर्ग ग्रन्थालय-विज्ञान का भाग स्वीकार करना आवश्यक होगा। इस प्रकार वर्गीकरण द्वारा विस्तृत वर्गों को सूक्ष्म वर्गों में विभाजित कर स्पष्ट कर दिया जाता है।

यद्यपि विभाजन प्रक्रिया अथवा विषय विश्लेषण, ग्रन्थालय वर्गीकरण का आवश्यक अंग है, तथापि वर्गीकरण एवं विभाजन की परिपूरक प्रकृति को स्पष्ट रूप से स्वीकार करना चाहिए। यह स्पष्ट है कि एक विषय का मौलिक भागों में विभाजन तथा तत्पश्चात् उन्हें सम्मिलित कर संयुक्त वर्गों का निर्माण किया जा सकता है। उदाहरणार्थ, ग्रन्थालय विज्ञान का प्रसूचीकरण, वर्गीकरण, सार्वजनिक ग्रन्थालय, विशेष ग्रन्थालय आदि मूल तत्त्वों में विश्लेषण कर इनका सार्वजनिक ग्रन्थालय में प्रसूचीकरण जैसे संयुक्त विषयों में संश्लेषण किया जाता है।

पक्ष विश्लेषण (Facet Analysis) : यह निर्विवाद है कि ग्रन्थालय वर्गीकरण मुख्यतः विषयों का वर्गीकरण है तथा इस प्रक्रिया में विषय विश्लेषण अथवा विभाजन आवश्यक प्रारम्भिक चरण है। विषय विश्लेषण की प्रक्रिया को स्पष्ट करने से पूर्व कुछ मौलिक धारणाओं की व्याख्या करना उचित है :

(अ) विषय का विभाजन **विशेषता** (Principal of Characteristic) : का प्रयोग कर किया जा सकता है, जिसके द्वारा उपवर्गों की उत्पत्ति होती है, इन उपवर्गों में इस सिद्धान्त की विभिन्न मात्रा में अभिव्यक्ति होती है। उदाहरणार्थ, मुख्य वर्ग **साहित्य** को **भाषा** की विशेषता द्वारा आंग्ल साहित्य, फ्रांसीसी साहित्य आदि उपवर्गों में विभाजित किया जाता है।

(आ) एक विशेषता के प्रयोग द्वारा उत्पन्न उपवर्गों के योग को **पक्ष** (Facet) कहा जाता है। उदाहरणार्थ, मुख्य वर्ग साहित्य में एक पक्ष भाषा तथा दूसरा पक्ष साहित्यिक रूप को व्यक्त करता है।

(इ) एक पक्ष के अन्तर्गत, एक व्यक्तिगत उपवर्ग को **संकेन्द्र** (Focus) कहा जाता है। उदाहरणार्थ, मुख्य वर्ग साहित्य के भाषा पक्ष में आंग्ल साहित्य एक संकेन्द्र है। संकेन्द्र को **एकल** (Isolate) भी कहा जाता है।

(ई) किसी एक वर्ग के अन्तर्गत, केवल एक संकेन्द्र से गठित उपवर्ग को सरल विषय (Simple Subject) कहा जाता है। उदाहरणार्थ, मुख्य वर्ग साहित्य में आंग्ल साहित्य एक सरल विषय है। यदि एक उपवर्ग में एक से अधिक संकेन्द्र होते हैं तो उसे संयुक्त विषय (Compound Subject) कहा जाता है। उदाहरणार्थ, मुख्य वर्ग साहित्य में आंग्ल काव्य एक संयुक्त विषय है, क्योंकि इसमें भाषा पक्ष एवं साहित्यिक रूप पक्ष—दो संकेन्द्रों का समावेश है।

(ए) जब किसी विषय में एक से अधिक मुख्य वर्गों में से संकेन्द्रों का समावेश होता है तो उसे **जटिल** विषय (Complex subject) कहा जाता है। उदाहरणार्थ, **आंग्ल साहित्य पर बाइबिल का प्रभाव** एक जटिल विषय है, क्योंकि इसमें साहित्य एवं धर्म मुख्य वर्गों में से संकेन्द्रों को लिया गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ग्रन्थ वर्गीकरण के लिए उसमें वर्णित विषय ही सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है : ग्रन्थों के वर्गीकरण का उद्देश्य पाठकों द्वारा विषय को ढूँढने में सहायता प्रदान करना है। प्रत्येक वर्गकार अपनी इच्छानुसार इस उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकता। वर्गाचार्य द्वारा वर्गीकरण के लिए निश्चित सिद्धान्तों एवं अभिधारणाओं का प्रयोग करना प्रत्येक वर्गकार के लिए अनिवार्य है।

3 अभिधारणा का मार्ग
(Postulational Approach)

वर्गीकरण को कुछ अभिधारणाओं की सहायता से ही ठीक प्रकार समझा जा सकता है। ग्रन्थों के वर्गीकरण में तो अभिधारणाएँ अत्यन्त सहायक सिद्ध हुई हैं। वास्तव में वर्गीकरण को या तो एक कठिन विषय समझा जाता है अथवा ऐसा विषय, जिसमें तीर नहीं तो तुक्के से काम चलाया जाता है। डॉ० रंगनाथन ने अभिधारणाओं पर आधारित वर्गीकरण को सरल एवं रुचिकर अथवा "कष्ट रहित वर्गीकरण" (Classification withaut teors) कहा है।

धारणाओं को ठीक-ठीक समझने के लिए तथा शताब्दी एवं संकेतों का उचित प्रयोग करने के लिए पर्याप्त अभ्यास की आवश्यकता है। यह अभ्यास इस सीमा तक होना चाहिए कि जितनी सुगमता से हम रोटी एवं कपड़े जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं, उतनी सुगमता से ही इस शब्दावली का प्रयोग कर सकें। धारणाएँ वर्गाचार्य एवं वर्गकार दोनों के कार्यों में एक दृढ़ आधार का कार्य करती हैं। वर्गीकरण में धारणाओं का मार्ग अपनाने से दृष्टिकोण वस्तुपरक बनता है तथा विचारों में शिथिलता एवं अस्पष्टता नहीं आती। धारणाओं के आधार पर किए गए अभ्यास से मूल श्रेणियों तथा पक्षों के आवर्तनों एवं स्तरों को ठीक प्रकार से समझा जा सकता है, किसी भी विषय का पूरा नाम बनाकर उसका रूपान्तर किया जा सकता है। इसके साथ ही विचार, शाब्दिक एवं अंकन धरातल के कार्यों का ठीक-ठीक विभाजन कर आधार वर्ग (आव) एवं एकल शब्द का अनुवाद संख्या में तथा (आव) एवं एकल संख्याओं का संश्लेषण वर्ग संख्याओं में किया जा सकता है। इस प्रकार वर्गीकरण एक रुचिकर कार्य हो जाता है। अभिधारणाओं से हमें विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों की क्षमता की तुलना करने में भी सहायता मिलती है।

ग्रन्थ-वर्गीकरण को क्रियान्वित करने के लिए इस तथ्य की जानकारी आवश्यक है कि किसी ग्रन्थ में वर्णित विषय में या तो केवल एक ही आधार वर्ग होता है अथवा फिर एक आधार वर्ग एवं एक या इससे अधिक मूल श्रेणियों की अभिव्यक्ति होती है। विषय का आधार वर्ग सर्वप्रथम तथा इसके बाद ही अन्य पक्षों को रखा जा सकता है। जो पक्ष जिस मूल श्रेणी को अभिव्यक्त करे, उसे इस प्रकार व्यवस्थित किया जाना चाहिए कि वह मूल श्रेणियों की मूर्तता के ह्रास के क्रम में आ जाय। ऐसा करने में शर्त यह है कि एक विषय में एक से अधिक आधार वर्ग न हों तथा किसी एक मूल श्रेणी की एक से अधिक अभिव्यक्ति भी न हो। साथ ही यह भी ध्यान रखना है कि एक (आव) एक पक्ष से सर्वथा भिन्न है। एक (आव) तो स्वयं में एक

विषय हो सकता है, किन्तु कोई एक पक्ष कभी भी एक विषय नहीं हो सकता। पक्ष को पूरा विषय बनाने के लिए (आव) के साथ जोड़ना आवश्यक है।

डॉ० रंगनाथन ने संक्षिप्तता के लिए ग्रन्थ वर्गीकरण में निम्न संक्षिप्त शब्दों एवं संकेतों का प्रयोग किया है :

[P]	[व्य]	व्यक्तित्व पक्ष	Personality Facet
[M]	[प]	पदार्थ पक्ष	Matter Facet
[E]	[ऊ]	ऊर्जा पक्ष	Energy Facet
[S]	[दे]	देश पक्ष	Space Facet
[T]	[का]	काल पक्ष	Time Facet
[P2]	[व्य2]	व्यक्तित्व पक्ष द्वितीय स्तर	Personality Facet Second level
[P3]	[व्य3]	व्यक्तित्व पक्ष तृतीय स्तर	Personality Facet Third level
[P4]	[व्य4[	व्यक्तित्व पक्ष चतुर्थ स्तर	Personality Facet Fourth level
[2P]	[2व्य]	व्यक्तित्व पक्ष द्वितीय आवर्तन	Personality Facet Second round
[3P]	[3व्य]	व्यक्तित्व पक्ष तृतीय आवर्तन	Personality Facet Third round
[2P2]	[2व्य2]	व्यक्तित्व पक्ष द्वितीय आवर्तन द्वितीय स्तर	Personality Facet Second round Second level
[2E]	[2ऊ]	ऊर्जा पक्ष द्वितीय आवर्तन	Energy Facet Second round
[3E]	[3ऊ]	ऊर्जा पक्ष तृतीय आवर्तन	Energy Facet Third round
[MC]	(मुव)	मुख्य वर्ग	Main Class
[CC]	(प्राव)	प्रामाणिक वर्ग	Canonical Class
[BC]	(आव)	आधार वर्ग	Basic Class
	(आव)	आधार वर्ग = मुख्य वर्ग = प्रामाणिक वर्ग	

अभिधारणा की आवश्यकता (Need for Postulates) : अभिधारणाओं की सहायता से वर्गीकरण करने का उद्देश्य वर्गीकरण की पद्धति को योजनाबद्ध अथवा अनुशासित बनाना है। इसके द्वारा अव्यवस्थित विचारधारा को भी नियन्त्रित किया जा सकता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कुछ अभिधारणाओं अर्थात् किसी क्षेत्र में सर्वव्यापक एवं पुष्ट मौलिक सिद्धान्तों को स्पष्ट कर दिया जाता है। डॉ० रंगनाथन का कथन है कि अभिधारणा-विधि के अन्तर्गत कुछ अभिधारणाओं को

स्वीकृत कर उनसे सम्बन्धित समस्त अनुमानों को हल कर लिया जाता है। वास्तविकता तो यह है कि निर्धारित परिस्थितियों में प्रत्येक अभिधारणा निश्चित एवं पुष्ट होती है।

ग्रन्थ वर्गीकरण हेतु सम्पूर्ण ज्ञान-क्षेत्र का सर्वेक्षण कर कुछ सिद्धान्त निश्चित कर उनके आधार पर नौ चरण निर्धारित किए गए हैं। इन चरणों की सहायता से ग्रन्थ के विशिष्ट विषय को निश्चित किया जाता है तथा विषय को प्राकृतिक भाषा से वर्गीकरण की भाषा में अनुवाद कर ग्रन्थ को वर्ग संख्या प्रदान की जाती है।

4 वर्गीकरण के नौ चरण
(9 Steps of Classification)

ग्रन्थों का वर्गीकरण सीखने वाले व्यक्तियों को क्रमिक रूप से ही अभ्यास करना चाहिए। धीरे-धीरे एक-एक चरण बढ़ाकर ही उचित अभ्यास किया जा सकता है। डॉ० रंगनाथन द्वारा प्रयोगात्मक वर्गीकरण के लिए सामान्य रूप से नौ चरण निश्चित किए गए हैं। वर्गकार को एक-एक चरण पर ठहर कर सोचना-समझना उचित है। यद्यपि ऐसा करने से वर्गीकरण के कार्य की गति धीमी तो अवश्य हो जायगी, तथापि वर्गकार को वर्गीकरण करते समय अपने मस्तिष्क की कुशलता को परखने का लाभ मिल सकेगा। वास्तव में, धीमी गति से किन्तु सावधानी के साथ चुनी हुई पुस्तकों का वर्गीकरण कर लेने के पश्चात् समस्त चरणों, अभिधारणाओं, सूत्रों एवं नियमों आदि में से किसी को भी ठीक-ठीक चुन लेना एक स्वाभाविक कार्य बन जायगा। इस कार्य की पक्की नींव पड़ जाने पर सामान्य ग्रन्थ वर्गीकरण अत्यन्त सुगमता से किया जा सकता है। यहाँ यह कहना कठिन है कि किसी एक व्यक्ति को इस कार्य में कुशलता प्राप्त करने में कितना समय लगेगा। यह तो व्यक्ति विशेष पर ही निर्भर करता है। कुछ व्यक्तियों के लिए तो यह कार्य शीघ्र ही इतना सरल बन सकता है जितना कि बतख के लिए पानी पर तैरना। वैसे अधिकांश व्यक्तियों को धैर्यपूर्वक प्रत्येक चरण पर धीरे-धीरे सावधानी के साथ बढ़कर प्रत्येक प्रकार के समस्या पूर्ण ग्रन्थों को वर्गीकृत करना चाहिए।

डॉ० रंगनाथन द्वारा प्रयोगात्मक वर्गीकरण के लिए नौ चरणों का प्रावधान किया गया है। इन चरणों की सहायता से शाब्दिक धरातल के माध्यम द्वारा विचार धरातल से अंकन धरातल तक पहुँचना सुगम हो जाता है। ये नौ चरण निम्न हैं :

0	चरण	मूल शीर्षक	Step 0	Raw Title
1	चरण	पूर्ण शीर्षक	Step 1	Full Title
2	चरण	बीज शीर्षक	Step 2	Kernel Title
3	चरण	विश्लेषित शीर्षक	Step 3	Analysed Title
4	चरण	रूपान्तरित शीर्षक	Step 4	Transformed Title
5	चरण	प्रामाणिक शब्दों में शीर्षक	Step 5	Title in Standard Terms
6	चरण	संकेन्द्रीय संख्या में शीर्षक	Step 6	Title in Focal Number

7 चरण संश्लेषित संख्या में शीर्षक अथवा वर्ग संख्या — Step 7 Title in Synthesised Number or Class Number

8 चरण अंक प्रति अंक व्याख्या — Step 8 Digit by digit interpretation

उपर्युक्त चरणों में चरण 0 से 4 विचार धरातल (**Idea Plane**) से, चरण 5 शाब्दिक धरातल (**Verbal Plane**) से तथा चरण 6 एवं 7 अंकन धरातल (**Notational Plane**) से सम्बन्धित हैं। चरण 0 ग्रन्थ के शीर्षक को व्यक्त करता है। चरण 1 में मुख्य वर्ग को सम्मिलित किया जाता है (यदि वह शीर्षक में निहित नहीं है) तथा संयुक्त पदों को उनके मूल पदों में पृथक् कर दिया जाता है। चरण 2 में केवल पदों को रखा जाता है (बीज विचारों को अभिव्यक्त करने वाले पदों को रखा जाता है) इसका अर्थ यह है कि 'का' 'में' 'के' लिए 'of' 'in' 'for' आदि सहायक शब्दों को, जिनका प्राकृतिक भाषा से वर्गीकृत भाषा में अनुवाद आवश्यक नहीं है, हटा दिया जाता है। चरण 3 में बीज विचारों का, उनसे सम्बन्धित पदों में, विश्लेषण किया जाता है। चरण 4 के अन्तर्गत एक निश्चित अभिधारणा द्वारा पदों को एक क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। चरण 5 के अन्तर्गत अप्रामाणिक पदों को वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त पदों में बदल दिया जाता है। चरण 6 में प्रत्येक पद का संख्याओं में अनुवाद कर दिया जाता है। चरण 7 के अन्तर्गत विभिन्न संख्याओं का अभिधारणाओं द्वारा निर्धारित चिह्नों द्वारा एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित कर दिया जाता है। चरण 8 अभिधारणाओं के सन्दर्भ में सम्पूर्ण प्रक्रिया का परीक्षण करता है।

5 नौ चरणों की गतिविधि
(Recipe of 9 Steps)

डॉ० रंगनाथन ने उपर्युक्त नौ चरणों को स्पष्ट किया है। ये नौ चरण अभिधारणाओं पर आधारित प्रयोगात्मक वर्गीकरण के हैं। किसी विषय के पक्ष अनुक्रम को निर्धारित करने में प्रयुक्त सिद्धान्त भी इसके मूल में हैं। नौ चरणों की गतिविधि को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है :

चरण 0 मूल शीर्षक — **Step 0 Raw Title**

मूल शीर्षक : वह शीर्षक, जो ग्रन्थ में दिया गया है। अधिकांश ग्रन्थों में शीर्षक अपने ग्रन्थ के विषय की ओर समुचित ढंग से संकेत कर देता है। दूसरे शब्दों में, शीर्षक से ही ग्रन्थ का विषय ज्ञात हो जाता है, तथापि शीर्षक में कुछ न्यून पद होते हैं। कुछ पक्ष स्पष्ट न होकर निहित होते हैं। निहित पक्ष का संकेन्द्र पूर्ण-रूप से स्पष्ट करना आवश्यक है। प्रायः आधार पक्ष (आधार वर्ग) का संकेन्द्र तो वर्गकार को ही लाना पड़ता है।

जिन ग्रन्थों में किसी विषय का इतिहास अथवा विवरण पाया जाता है, उनमें काल पक्ष [क] का संकेत प्रायः वर्गकार को ही लाना पड़ता है। कभी-कभी काल पक्ष के संकेन्द्र का संकेत अस्पष्ट शब्दों में भी दे दिया जाता है, जैसे विक्टोरिय,न

गांधियन तथा ब्रिटिश (काल) । और भी जब किसी पक्ष में कोई संकेन्द्र आता है तो उसका अर्थ यह होता है कि उससे पहले आए पक्ष में भी एक संकेन्द्र निहित है ।

उदाहरणार्थ पक्ष [ऊ] में आए संकेन्द्र "उपचार" का अर्थ यह लगाया जाएगा कि संकेन्द्र

1 "रोग" अन्य [ऊ] में,
2 रोग का "कारण" या "प्रकार" अन्य [व्य] में, तथा
3 रोग से प्रभावित "शरीरांग" अन्य [व्य] में निहित है ।

दूसरा उदाहरण सांविधानिक इतिहास या विवरण के ग्रन्थ में संकेन्द्र "मान्यता" का अर्थ यह लगाया जाएगा कि संकेन्द्र

1 राष्ट्र का प्रधान [व्य] में,
2 "विशिष्ट देश" अन्य [व्य] में, तथा
3 "विशिष्ट विधान" एक अन्य ही [व्य] में निहित है । इस प्रकार के समस्त संकेन्द्रों को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर देना चाहिए ।

कभी-कभी एक व्युत्पन्न मिश्रित शब्द में अनेक अंगभूत मूल शब्दों का समावेश होता है । तब उसके अंगभूत मूल शब्दों को स्पष्ट कर देना चाहिए । वास्तव में, एक व्युत्पन्न मिश्रित शब्द एक संयुक्त संकेन्द्र को प्रतिपादित करता है । उसे उसके सरल अंगभूत संकेन्द्रों में स्पष्ट कर देना चाहिए । संयुक्त संकेन्द्र तथा अंगभूत संकेन्द्र तो शब्दार्थ-विज्ञान की समस्याएँ हैं । सिद्धान्त रूप में इनका वस्तुपरक उत्तर अभी तक नहीं ढूँढ़ा जा सका है । किन्तु प्रयोग में, प्रयुक्त वर्गीकरण पद्धति से उचित सहायता प्राप्त होती है । साथ ही आधुनिक वर्गीकरण पद्धतियाँ भी बहुत कुछ इसी प्रकार का संकेत देती हैं ।

उदाहरणार्थ, "क्षय रोग" एक व्युत्पन्न मिश्रित शब्द है । इसे इसके अंगभूत मूल शब्दों में स्पष्ट किया जा सकता है; जैसे "रोग (फैलने का कारण) एवं "क्षय रोगाणु" । यहाँ "रोग" तो [ऊ] तथा "क्षय रोगाणु" [2व्य] पक्ष हैं ।

चरण 1 पूर्ण शीषर्क **Step 1 Full Title**

पूर्ण शीषर्क : ग्रन्थ का निरीक्षण कर मूल शीर्षक में पाए गए समस्त न्यून पदों की पूर्ति की जाती है । प्रत्येक व्युत्पन्न मिश्रित शब्द को पाँच मूल श्रेणियों के आधार पर अंगभूत मूल शब्दों में तथा, यदि आवश्यकता हो तो, विभिन्न एकलों की विशेषता के आधार पर भी स्पष्ट किया जाता है । इससे सम्बन्धित पक्ष एवं आधार पक्ष (आधार वर्ग) स्पष्ट रूप से सामने आ जाते हैं ।

यह तो आवश्यक ही है कि विषय से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों के प्रत्येक संकेन्द्र की ओर संकेत करने वाले शब्द पूर्ण शीर्षक में आ जायेंगे । साथ ही शीर्षक में गूढ़ार्थ को प्रकाश में लाने के लिए कारक चिह्नों अथवा समुच्चय बोधक गौण शब्दों का प्रयोग भी होता है । यह सब शीर्षक की प्राकृतिक भाषा पर निर्भर करता है । एक अन्य विधि यह भी है कि गौण शब्दों को आवश्यक शब्दों में सम्मिलित कर आवश्यक शब्दों की रूपरचना सम्बन्धी विभिन्नताओं को ही रहने दिया जाय, जैसा कि संस्कृत, जर्मन अथवा रूसी भाषाओं में होता है ।

पूर्ण शीर्षक में कुछ ऐसे व्याख्यात्मक या अतिरिक्त शब्द भी आ जाते हैं, जिनका प्रयोग मूल शीर्षक में किया जाता है। उदाहरणार्थ, 'टैक्स्ट-बुक ऑन लेबर प्रॉब्लम्स'' शीर्षक में शब्द ''टैक्स्ट-बुक'' अतिरिक्त शब्द है।

समस्त गौण तथा अतिरिक्त शब्दों को शीर्षक से निकाल लेना चाहिए।

चरण 2 बीज शीर्षक **Step 2 Kernel Title**

बीज शीर्षक : पूर्ण शीर्षक में से गौण एवं अतिरिक्त शब्दों को निकाल देने तथा आवश्यक संकेन्द्री शब्दों को कर्त्ता (कारक) में परिवर्तित करने के पश्चात् प्राप्त शीर्षक है। प्रत्येक संकेन्द्री अथवा आवश्यक शब्द को बीज शब्द कहा जाता है। विषय के नाम में आने वाला बीज शब्द तो शुद्ध संकेन्द्री शब्द ही होता है।

आधार वर्ग का संकेत देने वाले बीज शब्द के पश्चात् (आव) का चिह्न लगा देना चाहिए।

शेष बीज शब्दों में से प्रत्येक की अभिव्यक्ति की पहचान मूल श्रेणियों की धारणा के आधार पर कर लेनी चाहिए। प्रत्येक बीज शब्द के पश्चात् सम्बन्धित मूल श्रेणी का चिह्न लगा देना चाहिए; जैसे, [व्य] [प] [ऊ] [दे] [का] अर्थात् [P] [M] [E] [S] [T]।

यदि दो या दो से अधिक [ऊ] का प्रयोग हो तो प्रत्येक ऐसे चिह्न को इस प्रकार स्पष्ट करना चाहिए कि उसके आवर्तन (round) का पता लग जाय। जैसे, [ऊ], [2ऊ], [3ऊ] इत्यादि।

प्रत्येक [व्य] एवं प्रत्येक [प] को भी इस प्रकार स्पष्ट करना चाहिए कि उसके आवर्तन का पता लग जाय। जैसे, [व्य] [2व्य] [3व्य] अर्थात् [P] [2P] [3P] इत्यादि। यदि, [व्य] अथवा [प] एक ही आवर्तन में एक बार से अधिक आएँ तो उनमें उनका चिह्न लगाकार यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि वे किस स्तर पर आए हैं। जैसे, [व्य] [व्य2] [व्य3] यदि आवर्तन 1 में आएँ।

[2व्य], [2व्य2] यदि आवर्तन 2 में आएँ।

इसी प्रकार अन्य आवर्तनों में भी होगा।

[प] [दे] तथा [का] के स्तरों का संकेत इसी प्रकार किया जाना चाहिए यदि ये एक ही आवर्तन में एक बार से अधिक आएँ।

आवर्तनों तथा स्तरों पर चिह्न लगाने का कार्य पक्ष क्रम के नियमों एवं अभिधारणाओं के आधार पर ही किया जायगा। पक्ष क्रम इस प्रकार होना चाहिए : (आव) का निश्चय करना; अनेक [का] एवं उनके पृथक्-पृथक् स्तरों का निश्चय करना; अनेक [दे] एवं उनके पृथक्-पृथक् स्तरों का निश्चय करना; अनेक [ऊ] एवं उनके पृथक्-पृथक् आवर्तनों का निश्चय करना; अनेक [प] तथा [व्य] एवं उनके पृथक्-पृथक् आवर्तनों एवं स्तरों का निश्चय करना।

चरण 3 विश्लेषित शीर्षक **Step 3 Analysed Title**

विश्लेषित शीर्षक : यह बीज शीर्षक से लिए गए प्रत्येक बीज शब्द के पश्चात् अभिव्यक्ति को सूचित करने वाला चिह्न लगाकर प्राप्त शीर्षक है।

विश्लेषित शीर्षक में लगाए गए चिह्नों से बीज शब्दों की पुनर्व्यवस्था करने में सहायता मिलती है। यह व्यवस्था इनके क्रम के नियम एवं अभिधारणाओं के आधार पर की जाती है।

(आव) को प्रथम स्थान प्रदान किया जाना चाहिए।

इसके पश्चात् क्रम से [व्य], [व्य2], [व्य3], इत्यादि; इसके पश्चात् क्रम से [प], [प2], इत्यादि ; इसके पश्चात् [ऊ] ; इसके पश्चात् क्रम से [2व्य], [2व्य2] इत्यादि; इसके पश्चात् [2ऊ] को रखना चाहिए।

इसी प्रकार; इसके पश्चात् तीसरे, चौथे आदि आवर्तनों के बीच शब्द रखने चाहिए। अन्तिम आवर्तन के अन्त में क्रम से [दे], [दे2] इत्यादि तथा [का], [का2] इत्यादि रखने चाहिए।

चरण 4 रूपान्तरित शीर्षक **Step 4 Transformed Title**

रूपान्तरित शीर्षक : यह विश्लेषित शीर्षक से लिया गया शीर्षक है। इसके अन्तर्गत बीज शब्दों के क्रम को निर्धारित करने वाले नियमों एवं अभिधारणाओं के आधार पर बीज शब्दों को पुनर्व्यवस्थित किया जाता है तथा उनके विवरणात्मक चिह्नों को लगा रहने दिया जाता है।

रूपान्तरित शीर्षक में आने वाले समस्त बीज शब्द प्रायः मूल शीर्षक से ही लिए जाते हैं। समस्त बीज शब्दों के स्थान पर प्रामाणिक शब्दों को लाने में सुविधा रहती है। इसके लिए स्वीकृत वर्गीकरण पद्धति की अनुसूची दिए गए प्रामाणिक शब्दों को ही प्रामाणिक माना जाता है।

चरण 5 प्रामाणिक शब्दों में शीर्षक

Step 5 Title in Standard Terms

प्रामाणिक शब्दों में शीर्षक : यह रूपान्तरित शीर्षक से लिया गया शीर्षक है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक बीज शब्द के स्थान पर प्रामाणिक शब्द दिया जाता है। किन्तु, प्रत्येक के विवरणात्मक चिह्नों को लगा रहने दिया जाता है। चरण 4 से चरण 6 का परिवर्तन कार्य शाब्दिक धरातल के अन्तर्गत आता है।

इस शीर्षक के अन्तर्गत प्रयोग में आने वाली स्वीकृति वर्गीकरण पद्धति की सहायता से प्रत्येक बीज शब्द के स्थान पर क्रमिक संख्या को रखा जाता है।

जब कोई क्रमिक संख्या किसी बीज शब्द के समकक्ष हो जाये तो उसे संकेन्द्री संख्या कहा जाता है।

चरण 6 संकेन्द्री संख्या में शीर्षक

Step 6 Title in Focal Numbers

संकेन्द्री संख्या में शीर्षक : यह प्रामाणिक संख्या में दिए गए शीर्षक से लिया गया शीर्षक है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक बीज शब्द के स्थान पर संकेन्द्री संख्या रखी जाती है। किन्तु, विवरणात्मक चिह्न वैसे ही लगे रहने दिए जाते हैं।

चरण 5 से चरण 6 तक आने में प्राकृतिक भाषा का कृत्रिम भाषा में अनुवाद किया जाता है।

इसके अन्तर्गत सम्बन्धित अभिधारणाओं एवं नियमों के आधार पर प्रत्येक विवरणात्मक चिह्न को हटाकर संकेन्द्री संख्या के पूर्व उचित योजक चिह्न लगा दिया जाता है।

चरण 7 संकेन्द्री संख्या में संश्लेषित शीर्षक

Step 7 Synthesised title in Focal Numbers

वर्ग संख्या में शीर्षक : इस शीर्षक में संकेन्द्री संख्या में दिए गए शीर्षक से क्रमिक संख्या को लाया जाता है। इसमें विवरणात्मक चिह्नों को हटा दिया जाता है। सम्बन्धित अभिधारणाओं एवं नियमों के आधार पर प्रत्येक संकेन्द्री संख्या के पूर्व उचित योजक चिह्न लगा दिया जाता है।

चरण 6 से चरण 7 तक आने की सम्पूर्ण प्रक्रिया अंकन धरातल के अन्तर्गत आती है।

आधार पक्ष की संकेन्द्रीय संख्या को आधार वर्ग संख्या कहा जाता है। अन्य प्रत्येक पक्ष की संकेन्द्रीय संख्या को एकल संख्या कहा जाता है।

चरण 8 अंक प्रति अंक व्याख्या

Step 8 Digit by Digit interpretation

इस चरण में वर्ग संख्या को उसके पक्षों में विश्लेषित किया जाता है तथा प्रत्येक पक्ष का नाम दिया जाता है। इसके पश्चात् एक के बाद एक, अंकों का प्रतिपादन किया जाता है। वर्ग संख्या का अन्तिम प्रतिपादन ग्रन्थ के पूर्ण शीर्षक के समकक्ष होना चाहिए। ग्रन्थ के पूर्ण शीर्षक का अर्थ है, उसका विषय, जो वास्तव में ग्रन्थ के मूल शीर्षक के बराबर होता है।

चरण 8 में की गई प्रक्रिया ग्रन्थालय वर्गीकरण का प्रारम्भ करने वाले व्यक्तियों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

उदाहरण :

वाटसन (जे) : ग्राउन्ड वर्क ऑफ इनकम् टैक्स

चरण 0 : मूल शीर्षक

ग्राउन्ड वर्क ऑफ इनकम् टैक्स

इस शीर्षक में न्यून पद दिखाई देते हैं। ग्रन्थ को देखने से भी यह ज्ञात होता है कि इसका मूल शीर्षक ऐसा नहीं है। अतः इसके पूर्ण शीर्षक में विषय का न्यूनपद रखना होगा।

चरण 1 : पूर्ण शीर्षक

ग्राउन्ड वर्क ऑफ इनकम् टैक्स "इन इकनामिक्स"

इसमें "ऑफ" शब्द कारक चिह्न है। यह तो केवल गौण शब्द है, इससे ग्रन्थ के विषय का कोई संकेत नहीं मिलता। अतः इसे छोड़ा जा सकता है।

इसमें "ग्राउन्ड वर्क" शब्द एक अतिरिक्त शब्द है। ग्रन्थ के विषय का इससे कोई संकेत नहीं मिलता। अतः इसे भी छोड़ा जा सकता है।

इस शीर्षक में ऐसा कोई व्युत्पन्न मिश्रित शब्द नहीं है, जिसे अंगभूत मूल शब्द में खोला जाय।

इस प्रकार केन्द्रीय शव्द तो केवल "इकनामिक्स" तथा "इनकम् टैक्स" रह जाते हैं।

चरण 2 : बीज शीर्षक

इनकम् टैक्स इकनामिक्स

इकनामिक्स आधार पक्ष का संकेन्द्री शब्द है। यह आधार वर्ग को व्यक्त करता है : अतः इसे (आव) से चिह्नित किया जायेगा।

बीज शीर्षक में इनकम् टैक्स अन्य संकेन्द्री शब्द है।

चरण 3 : विश्लेषित शीर्षक

इनकम् टैक्स [व्य] इकनामिक्स (आव)

इस शीर्षक में केवल एक ही बीज शब्द है। अतः बीज शब्द की पुनर्व्यवस्था की आवश्यकता नहीं है।

चरण 4 : रूपान्तरित शीर्षक

इकनामिक्स (आव) इनकम् टैक्स [व्य]

इकनामिक्स वर्गीकरण पद्धति में एक प्रचलित तथा प्रामाणिक शब्द है।

चरण 5 : प्रामाणिक शब्दों में शीर्षक

इकनामिक्स के लिए द्विबिन्दु पद्धति की क्रमिक भाषा में X है।

शब्द इकनामिक्स के लिए दशमलव पद्धति की क्रमिक भाषा में 330 है।

चरण 6 : संकेन्द्री संख्या में शीर्षक

द्विबिन्दु पद्धति	X (आव)	724[व्य]
दशमलव पद्धति	330(आव)	

इस शीर्षक में आधार वर्ग संख्या के अतिरिक्त [व्य] पक्ष की संकेन्द्री संख्या है। नियमानुसार दोनों के मध्य योजक चिह्न लगाने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 7 : संकेन्द्री संख्या में संश्लेषित शीर्षक

द्विबिन्दु	X724
दशमलव	330

चरण 8 : अंक प्रति अंक व्याख्या

X	=	इकनामिक्स
X7	=	पब्लिक फाइनेन्स
X72	=	टैक्स
X724	=	इनकम् टैक्स

द्वादश अध्याय

प्रयोगात्मक वर्गीकरण

(Practical Classification)

प्रयोगात्मक वर्गीकरण में प्रयुक्त संक्षेपण

(Contractions used in Practical Classification)

द्विप	द्विबिन्दु पद्धति	Colon Scheme	CC
दप	दशमलव पद्धति	Decimal Scheme	DC
(आव)	आधार वर्ग	Basic Class	(BC)
(प्राव)	प्रामाणिक वर्ग	Canonical Class	(CC)
[व्य]	व्यक्तित्व	Personality	[P]
[प]	पदार्थ	Matter	[M]
[ऊ]	ऊर्जा	Energy	[E]
[दे]	देश	Space	[S]
[का]	काल	Time	[T]
(वि)	विशिष्ट	Special	(SpF)
(प्र)	प्रणाली	System	(SmF)
(विवि)	विषय विधि	Subject Device	(SD)
(भौवि)	भौगोलिक विधि	Geographical Device	(GD)
(कावि)	काल विधि	Chronological Device	(CD)
(ववि)	वर्ण विधि	Alphabetical Device	(AD)
(पूसाए)	पूर्ववर्ती सामान्य एकल	Anteriorising Common Isolate	(ACI)
(पसाए)	परवर्ती सामान्य एकल	Posteriorising Common Isolate	(PCI)
(विसं)	विषय सम्बन्ध	Phase Relation	(PR)
(पसं)	पक्ष सम्बन्ध	Intra-Facet Relation	(IFR)
(पंसं)	पंक्ति सम्बन्ध	Intra-Array Relation	(IAR)

अमूर्त/Abstract
अवाप्तिकरण/Accessioning
अष्टक विधि/Octave Device
आधार धारण, मूल धारणा/Basic Concept
आधार पक्ष, मूल पक्ष/Basic Facet
आधार वर्ग, मूल वर्ग/Basic Class
आधार विषय, मूल विषय/Basic Subject
आवर्तन/Rounds
आशय/Intention
अनुक्रमणिका, अनुक्रमणी/Index
अंक/Digit
अंकन/Notation
अंकन सम्बन्धी उपसूत्र/Canons for Notation
अंकन स्तर/Notational Plane
अंकित/Enumerated
अंगभूत मूलपद/Fundamental Constituent terms

उ

उपखण्ड/Sub Sections
उपसूत्र/Canon
उपविभाग/Sub-division

ए

एकल/Isolate
एकल पद/Isolate Term
एकल पहलू/Isolate Facet
एकल संख्या/Isolate Number

क

काल क्रमिक/Chronological
काल क्रमिक विधि/Chronological Device
कोष्ठित/Bracketed
केन्द्र/Foci
कुलनाम/Surname
क्रम/Order
क्रमबद्ध/Successive
क्रमिक संख्या, क्रमांक/Call Number
क्रमिक मूल्य/Ordinal Value
क्रमिक संख्या/Ordinal Number
कृत्रिम भाषा/Artificial Language

ग

गणन संख्या/Cardinal Number
ग्रन्थ संख्या/Book Number
ग्रन्थात्मक वर्गीकरण/Bibliographic Classification
ग्राह्यता/Hospitality
ग्राह्यता उपसूत्र/Canon of Hospitality

च

चेतन, ज्ञात, भिज्ञ/Conscious

ज

जटिल/Complex

त

तर्कपूर्ण/Logical
तात्कालिक/Immediate
तात्कालिक ज्ञान जगत/Immediate Universe of Knowledge

द

दशमलव अंकन/Decimal Notation
दशमलव द्वारा/Decimally
दशमलव भिन्न विधि/Decimal Fraction Device
दशमलव वर्गीकरण/Decimal Classification
दशा/Phase
दशा विश्लेषण/Phase Analysis
दशा सम्बन्ध/Phase Relation
द्वैतात्मक/Dichotomic

न

निर्दिष्ट करना/ Denote
नियंत्रक वर्ग/Host Class
नियंत्रक वर्गांक/Host Class Number
निरपेक्ष मूल्य/Absolute Value
नि:शेषता/Exhaustiveness
नि:शेषता उपसूत्र/Canon of Exhaustiveness
निहित शब्द/Implied Term

प

पद, शब्द/Term
पद की गहनता/Intension of the Term
पद का विस्तार/Extension of Term
पदावली सम्बन्धी उपसूत्र/Canons for Terminology
पद्धतियाँ/Schemes

पद्धतियां/Techniques
पर्यायवाची/Synonymous
परवर्ती सामान्य एकल/Posteriorising Common Isolate
परिगणन उपसूत्र/Canon of Enumeration
परिगणन/Enumeration
परिगणनात्मक वर्गीकरण/Enumerative Classification
परिग्रहण संख्या/Accession Number
परिमित/Finite
पक्ष/Facet
पक्ष अंक/Facet Number
पक्ष उपनियम/Facet Formula
पक्ष पद/Facet Term
पक्ष विश्लेषण/Facet Analysis
पक्षात्मक वर्गीकरण/Faceted Classification
पत्रिका/Periodical
पारिभाषिक पदावली/Terminology
पूर्ण शीर्षक/Full Title
पूर्णतया पक्षात्मक/Rigidly Faceted
पूर्णांक अंकन/Integer Notation
पूर्वनिर्णित/Preconceived
पूर्वनिर्मित/Readymade
पूर्ववर्ती/Anteriorising
पूर्ववर्ती सामान्य एकल/Anteriorising Common Isolate
प्रकृति विज्ञान/Natural Sciences
प्रक्रिया विधि/Device
प्रणाली/Systems
प्रचलन उपसूत्र/Canon of Currency
प्रतिनिधित्व/Representation
प्रतिपादित/Enunciated
पृथकत्व/Exclusiveness
पृथक्करण/Differentiation
पृथक्करण उपसूत्र/Canon of Differentiation
पृथकत्व उपसूत्र/Canon of Exclusiveness
प्रामाणिक वर्ग/Canonical Class
प्रामाणिक पद्धति/Standard Scheme
प्रामाणिक शब्द/Standard Term

प्रविभाजित/Sub-divided
प्रसंग उपसूत्र/Canon of Context
प्रविष्ट/Entry
प्रसूची/Catalogue
पंक्ति ग्राह्यता उपसूत्र/Canon of Hospitality in Array
पंक्ति/Array

ब

बहुत्व/Plurality
बहुघातीय/Multidimensional
बीज शीर्षक/Kernel Title

भ

भौगोलिक परिभाग/Geographical Division
भौगोलिक विधि/Geographical Device
भारतीय अरबी संख्या/Indo-Arabic Numerals
भावनाक्रम, धरातल, विचारस्तर/Idea Plane

म

मानित/Preferred
मिश्रित अंकन उपसूत्र/Canon of Mixed Notation
मिश्रित पद/Composite Term
मुक्त प्रवेश व्यवस्था/Open Access
मुख्य वर्ग/Main Class
मूर्त/Concrete
मूर्तता/Concreteness
मूर्तता उपसूत्र/Canon of Concreteness
मूर्तता ह्रास/Decreasing Concreteness
मूर्तता ह्रास उपसूत्र/Canon of Decreasing Concreteness
मूल केन्द्रबिन्दु, मूल लक्ष्य/Basic Foci
मूल तत्व/Constituent Elements
मूल पद/Constituent Term
मूलभूत/Fundamental
मूलभूत श्रेणी/Fundamental Category
मूलवर्गीय सारणी/Categorical Table

य

यथार्थ/Natural
योजक चिह्न/Connecting Symbol

र

रिक्त स्थान विधि/Gap Device

रूप वर्ग/Form Class
रूप विभाजन/Form Division

व

वर्णानुक्रमण/Alphabetisation
विन्यास पक्ष/Amplified Facet
विश्लेषित शीर्षक/Analysed Title
विश्लेषण/Analysis
वैश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण/Analytico-Synthetic Classification
वर्ग पंक्ति/Array of Classes
वर्ग श्रृंखला/Chain of Classes
वर्ग/Class
वर्ग चिह्न/Class Mark
वर्ग निर्माण/Classify
वर्ग पंक्ति सम्बन्धी उपसूत्र/Canon for Array of Classes
वर्ग संख्या, वर्गांक/Class Number
वर्ग श्रृंखला सम्बन्धी उपसूत्र/Canons for Chain of Classes
वर्गीकरण/Classification
वर्गाचार्य/Classificationist
वर्गीकरण सांकेतिक भाषा/Classificatory Language
वर्गीकरण पद्धति/Classification Scheme
वर्गीकृत व्यवस्था/Classified Arrangement
वर्गीकृत प्रसूची/Classified Catalogue
वर्गकार/Classifier
व्यक्ति बोध, द्रव्य बोध/Denotation
व्युत्पन्न/Derived
व्युत्पन्न मिश्रितपद/Derived Composite Term
विचारधारा, धारणा/Concept
विचार/Ideas
विचार स्तर/Idea Plane
विद्यमान/Existing
विधियां, रीतियां/Methods
विभाग, परिभाषा/Division
विस्तार/Extension
विस्तार ह्रास/Decreasing Extension
विस्तार ह्रास उपसूत्र/Canon of Decreasing Extension
विस्तारशील वर्गीकरण/Expansive Classification

विषयात्मक वर्गीकरण/Subject Classification
विषय वस्तु/Subject Matter
विषय विधि/Subject Device
विशिष्ट/Specials
विशिष्ट विषय/Specific Subject
विशेष ग्रन्थालय/Special Libraries
विशेषताओं की श्रृंखला/Train of Characteristics
विशेषित/Specialist
वेष्टित अंकन/Packeted Notation
व्यक्तित्व/Personality
व्यवस्थित/Systematic

स

सजातीय/Homogenous
सजीव/Existent
सत्व/Entity
सम्बद्ध अनुक्रम उपसूत्र/Canon of Relevant Sequence
समवर्ग उपसूत्र/Canon of Co-ordinate Sequenece
समूह/Group
सरल विषय/Simple Subject
सहायक क्रम/Helpful Order
सहायक अनुक्रम उपसूत्र/Canon of Helpful Sequence
सहायक अनुक्रम/Helpful Sequence
सम्बद्ध/Relevant
सम्बद्ध अनुक्रम/Relevant Sequence
सम्भाव्यतया/Potentially
सम्बद्धता/Relevance
समन्वयन/Co-ordination
समवर्ग/Co-ordinate Class
समवर्ग संख्या/Co-ordinate Class Number
सर्वोच्च/Maximum
सहविस्तृता, समव्याप्तता/Co-extensiveness
सहविस्तृत शब्द, समव्याप्त शब्द/Co-extensive Term
सहायक/Ancilliary
सापेक्षता/Relativity
सापेक्षता उपसूत्र/Canon of Relativity
सापेक्षित अनुक्रमणी/Relative Index

सामान्य/General
सामान्यतः/Usually
सामान्य एकल/Common Isolate
सामान्य ग्रंथालय/General Library
सामान्य वर्ग/Generalia Class
सार, पदार्थ, सत्व/Entity
सार्वभौम दशमलव वर्गीकरण/Universal Decimal Classification
सिद्धान्त/Principle
सूचना पुनः प्राप्ति/Information Retrieval
सूक्ष्म वर्गीकरण/Close Classification
सूक्ष्म विचार/Micro Thought
संकेन्द्र/Focus
संकेन्द्रिय पद/Focal Terms
संकेन्द्रिय अंक/Focal Number
संक्रमण/Modulation
संक्रमण उपसूत्र/Canon of Modulation
संग्रहीत रचनाएँ/Collected Works
संग्रह संख्या, संग्रहांक/Collection Number
संयतता उपसूत्र/Canon of Reticense
संयुक्त/Compound
संयोजित/Organised
संलग्नता/Concomitance
संलग्नता उपसूत्र/Canon of Concomitance
संस्थापन/Allocation
संसर्ग अनुक्रम/Filiatory Sequence
संसर्ग क्रम/Fillatory Order
संसर्ग व्यवस्था/Filiatory Arrangement
संश्लेषण/Synthesis
स्तर/Level
स्थानीय विभिन्नता उपसूत्र/Canon of Local Variation
स्थायित्व उपसूत्र/Canon of Permanence
स्थूल वर्गीकरण/Broad Classification
स्थूल विचार/Macro Thought
स्पष्ट शब्द, पद/Explicit Term
स्मृति सहायक/Mnemonic
स्मृति सहायक उपसूत्र/Canon of Mnemonics

स्वभाव बोध/Connotation

श

शब्दार्थ विज्ञान/Semantic
शब्दावली सम्बन्धी उपसूत्र/Canons for Terminology
शाब्दिक धरातल/Verbal Plane
श्रृंखला ग्राह्यता उपसूत्र/Canon of Hospitality in Chain

क्ष

क्षेत्र, जगत/Universe
क्षेत्र, मंडल/Zones

ज्ञ

ज्ञान जगत, ज्ञान क्षेत्र/Universe of Knowledge

आंग्ल भाषा के वर्तनी-क्रम से

Absolute Value/निरपेक्ष मूल्य
Abstract/अमूर्त
Abstraction/पृथक्करण
Accessioning/प्राप्तिकरण, अवाप्तिकरण
Accession Number/परिग्रहण-संख्या
Allocation/संस्थापन
Alphabetical/अनुवर्णिक
Alphabetical Device/अनुवर्णिक विधि, वर्ण विधि
Alphabetical Index/अनुवर्णिक अनुक्रमणी
Alphabetical Order/अनुवर्णिक क्रम
Alphabetisation/वर्णानुक्रमण
Amplified Facet/विन्यास पक्ष
Analysed Title/विश्लेषित शीर्षक
Analysis/विश्लेषण
Analytico Synthetic Classification/वैश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण
Ancilliary/सहायक
Anteriorising/पूर्ववर्ती
Anteriorising Common Isolate/पूर्ववर्ती सामान्य एकल
Applicable/सम्बद्ध
Array/पंक्ति
Array of Classes/वर्ग-पंक्ति

Artificial Language/कृत्रिम भाषा

B

Basic Class/आधार वर्ग, मूल वर्ग
Basic Concept/आधार धारणा, मूल धारणा
Basic Facet/आधार पक्ष, मूल पक्ष
Basic Foci/मूल केन्द्र बिन्दु, मूल पक्ष
Basic Subject/आधार विषय, मूल विषय
Bias Phase/अभिनत दशा
Bias Relation/अभिनत सम्बन्ध
Bibliographic Classification/ग्रन्थात्मक वर्गीकरण
Book Number/ग्रन्थ संख्या, ग्रन्थांक
Broad Classification/स्थूल वर्गीकरण

C

Canon/उपसूत्र
Canon of Ascertainability/निर्धार्यता उपसूत्र
Concomitance/संलग्नता उपसूत्र
Concreteness/मूर्तता उपसूत्र
Consistence/अनुरूप उपसूत्र
Consistency/अनुरूपता उपसूत्र
Consistent Sequence/अनुरूप अनुक्रम उपसूत्र
Context/प्रसंग उपसूत्र
Co-ordinate Classes/समवर्ग उपसूत्र
Currency/प्रचलन उपसूत्र
Decreasing Concreteness/मूर्तता ह्रास उपसूत्र
Decreasing Extension/विस्तार ह्रास उपसूत्र
Differentiation/पृथक्करण उपसूत्र
Enumeration/परिगणन उपसूत्र
Exclusiveness/पृथकत्व उपसूत्र
Exhaustiveness/अभिव्यंजकता उपसूत्र
Helpful Sequence/सहायक अनुक्रम उपसूत्र
Hospitality/ग्राह्यता उपसूत्र
Hospitality in Array/पंक्ति ग्राह्यता उपसूत्र
Hospitality in Chain/शृंखला ग्राह्यता उपसूत्र
Local Variation/स्थानीय विभिन्नता उपसूत्र
Mixed Notation/मिश्रित अंकन उपसूत्र
Mnemonics/स्मृति सहायक उपसूत्र
Modulation/संक्रमण उपसूत्र

Permanence/स्थायित्व उपसूत्र
Relativity/सापेक्षता उपसूत्र
Relevant Sequence/सम्बद्ध अनुक्रम उपसूत्र
Reticence/संयतता उपसूत्र
Subordinate Class/अधीनस्थ वर्ग उपसूत्र

Canons for Array of Classes/वर्ग पंक्ति सम्बन्धी उपसूत्र
Chain of Classes/वर्ग शृंखला सम्बन्धी उपसूत्र

Notation/अंकन सम्बन्धी उपसूत्र
Terminology/पदावली सम्बन्धी उपसूत्र

Call Number/क्रामक संख्या, क्रमांक
Canonical Class/प्रामाणिक वर्ग
Cardinal Number/गणन संख्या
Catalogue/प्रसूची
Categorical Table/मूलवर्गीय सारणी
Chain of Classes/वर्ग शृंखला
Chronological/काल क्रमिक
Chronological Device/काल क्रमिक विधि
Class/वर्ग
Classify/वर्ग-निर्माण
Class Mark/वर्ग-चिह्न
Class Number/वर्ग संख्या, वर्गांक
Classification/वर्गीकरण
Classificationist/वर्गाचार्य
Classificatory Language/वर्गीकरण सांकेतिक भाषा
Classification Scheme/वर्गीकरण पद्धति
Classified Arrangement/वर्गीकृत व्यवस्था
Classified Catalogue/वर्गीकृत प्रसूची
Classifier/वर्गकार
Close Classification/सूक्ष्म वर्गीकरण
Co-extensiveness/सह-विस्तृतता, समव्याप्तता
Co-extensive term/सह-विस्तृतता, समव्याप्त शब्द
Collected works/संग्रहीत रचनाएँ
Collection Number/संग्रह-संख्या, संग्रहांक
Common/सामान्य
Complex/जटिल
Common Isolate/सामान्य एकल

Composite Term/मिश्रित पद
Compound Term/संयुक्त पद
Concept/विचारधारा, धारणा
Concomitance/संलग्नता
Concrete/मूर्त
Concreteness/मूर्तता
Connecting Symbol/योजक चिह्न
Connotation/स्वभाव बोध
Conscious/चेतन, ज्ञात, भिज्ञ
Consistent/अनुरूप
Consistency/अनुरूपता
Constituent Elements/मूल तत्व
Constituent Term/मूल पद
Co-ordinate Class/समवर्ग
Co-ordinate Number/समवर्ग संख्या
Co-ordination/समन्वयन

D

Decimal Classification/दशमलव वर्गीकरण
Decimal Fraction Device/दशमलव भिन्न विधि
Decimally/दशमलव द्वारा
Decimal Notation/दशमलव अंकन
Decreasing Concreteness/मूर्तता ह्रास
Decreasing Extension/विस्तार ह्रास
Denotation/व्यक्ति बोध, द्रव्य बोध
Denote/निर्दिष्ट करना
Derived/व्युत्पन्न
Derived Composite Term/व्युत्पन्न मिश्रित पद
Device/प्रक्रिया, विधि
Dichotomic/द्वैतात्मक
Dictionary Catalogue/अनुवर्ग प्रसूची
Digit/अंक
Division/विभाग, परिभाग

E

Entity/सार, पदार्थ, सत्व
Entry/प्रविष्टि
Enumerated/अंकित
Enumeration/परिगणना

Enumerative Classification/परिगणनात्मक वर्गीकरण
Enunciation/प्रतिज्ञापित
Exclusiveness/पृथकत्व
Exhaustiveness/निःशेषता
Existing/विद्यमान
Existent/सजीव, विद्यमान
Expansive Classification/विस्तारशील वर्गीकरण
Explicit Term/स्पष्ट शब्द, पद
Expressiveness/अभिव्यंजकता
Expressive Term/अभिव्यंजक पद
Extension/विस्तार
Extension of Term/पद का विस्तार

F

Facet/पक्ष
Facet Analysis/पक्ष विश्लेषण
Faceted Classification/पक्षात्मक वर्गीकरण
Facet Formula/पक्ष उपनियम
Facet Number/पक्ष अंक
Facet Term/पक्ष पद
Filiatory Arrangement/संसर्ग व्यवस्था
Filiatory Order/संसर्ग क्रम
Filiatory Sequence/संसर्ग अनुक्रम
Finite/परिमित
Foci/केन्द्र बिन्दु
Focal Number/संकेन्द्रिय अंक
Focal Terms/संकेन्द्रिय पद
Focus/संकेन्द्र
Form Class/रूप वर्ग
Form Division/रूप विभाजन
Full Title/पूर्ण शीर्षक
Fundamental/मूलभूत
Fundamental Category/मूलभूत श्रेणी
Fundamental Constituent Term/अंगभूत मूल पद

G

Gap Device/रिक्त स्थान विधि
General/सामान्य
General Library/सामान्य ग्रन्थालय

Generalia Class/सामान्य वर्ग
Geographical Device/भौगोलिक विधि
Geographical Division/भौगोलिक परिभाग
Group/समूह

H

Helpful Order/सहायक क्रम
Helpful Sequence/सहायक अनुक्रम
Homogeneous/सजातीय
Hospitability/ग्राह्यता
Host Class/नियन्त्रक वर्ग
Host Class Number/नियन्त्रक वर्गांक
Idea/विचार
Idea Plane/भावना क्रम, धरातल विचारस्तर
Immediate/तात्कालिक
Immediate Universe/तात्कालिक ज्ञान-जगत
Implied Term/निहित शब्द
Index/अनुक्रमणिका, अनुक्रमणी
Individualisation/पृथक्करण
Indo-Arabic Numerals/भारतीय-अरबी संख्या
Infinite/अनन्त, असीम
Information Retrieval/सूचना पुनः प्राप्ति
Integer Notation/पूर्णांक अंकन
Intension of the Term/पद की गहनता
Intention/आशय
Intipolation/अन्तर्वेश
Isolate/एकल, व्युक्त
Isolate Facet/एकल पहलू
Isolate Number/एकल संख्या
Isolate Term/एकल पद

K

Kernel Title/बीज शीर्षक

L

Level/स्तर
Logical/तर्कपूर्ण, न्याय संगत

M

Macro Thought/स्थूल विचार
Main Class/मुख्य वर्ग

Manifestation/अभिव्यक्ति
Maximum/सर्वोच्च
Method/विधियाँ, रीतियाँ
Micro Thought/सूक्ष्म विचार
Minimum/न्यूनतम
Mnemonic/स्मृति सहायक
Multidimensional/बहुघातीय

N

Natural/यथार्थ
Natural Sciences/प्रकृति विज्ञान
Notation/अंकन
Notational Plane/अंकन स्तर

O

Octave Device/अष्टक विधि
Open Access/मुक्त प्रवेश
Order/क्रम
Organise/संयोजित
Ordinal Number/क्रमिक संख्या
Ordinal Value/क्रमिक मूल्य

P

Packeted Notation/वेष्टित अंकन
Periodical/पत्रिका
Personality/व्यक्तित्व
Phase/दशा
Phase Analysis/दशा विश्लेषण
Phase Relation/दशा सम्बन्ध
Plane/विचार स्तर
Plurality/बहुत्व
Posteriorising/परवर्ती
Posteriorising Common Isolate/परवर्ती सामान्य एकल
Postulate/अभिधारणा
Potentially/सम्भाव्यतया
Preconceived/पूर्व निर्णित
Preferred/मानित
Principle/सिद्धान्त

R

Readymade/पूर्व निर्मित

Relative Index/सापेक्षिक अनुक्रमण
Relativity/सापेक्षता
Relevance/सम्बद्धता
Relevant/सम्बद्ध
Relevant Sequence/सम्बद्ध अनुक्रम
Represents/प्रतिपादित
Rigidly Faceted/पूर्णतया-पक्षात्मक
Rounds/आवर्तन

S

Schedule/अनुसूची
Scheduled Mnemonic/अनुसूची स्मृति सहायक
Schemes/पद्धतियाँ
Sections/अनुविभाग, खण्ड
Semantic/शब्दार्थ विज्ञान
Sequence/अनुक्रम
Simple Subject/सरल विषय
Specials/विशिष्ट
Special Libraries/विशेष ग्रन्थालय
Specialist/विशेषित
Specific Subjects/विशिष्ट विषय
Standard Scheme/प्रामाणिक पद्धति
Standard Term/प्रामाणिक शब्द
Sub-divided/प्रविभाजित
Sub-Division/उप-विभाग
Subject Classification/विषय वर्गीकरण
Subject Device/विषय विधि
Subject Matter/विषय वस्तु
Subordinate/अधीनस्थ
Subordination/अधीनस्थता
Sub-sections/उपखण्ड
Successive/क्रमबद्ध
Superimposed/अध्यारोपित
Superimposition/अध्यारोपण
Surname/कुलनाम
Synonymous/पर्यायवाची
Synthesis/संश्लेषण

Systems/प्रणाली
Systematic/व्यवस्थित

T

Techniques/पद्धतियाँ
Terms/पद शब्द
Terminology/पारिभाषिक शब्दावली
Train of Characteristics/विशेषताओं की श्रृंखला

U

Ultimate Class/अन्त्यवर्ग
Universe/क्षेत्र, जगत
Universe of Knowledge/ज्ञान जगत, ज्ञान क्षेत्र
Universal Decimal Classification/सार्वभौम दशमलव वर्गीकरण
Usually/सामान्यत:

V

Verbal Plane/शाब्दिक धरातल

Z

Zones/क्षेत्र, मण्डल

⊙